3.2.2.1. Total number of books and chapters in edited volumes/books published and papers in national/ international conference proceedings year-wise during last five years

1. cover page, content page, first page and last page of the book/publication showing title, author name along with the content page, ISBN number and year of publication of all the books listed in all the 5 years, attested by the Principal. (other than journal excluded data in 3.2.1)

2020-21

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

Special Issue 3 Volume IV

November 2021

Akshara Publication
Plot No 143 Professors colony,
Near Biyani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon (Maharashtra) 425201
Website:www.aimrj.com Email:aimrj18@gmail.com

E- ISSN 2582-5429

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal SJIF Impac

November 2021 Special Issue 03 Vol. IV

Sr.No	*Title of the Paper* & Author's Name	Pg.No
29	साहित्य में नारी चित्रण : मैत्रेयी पुष्पा के संदर्भ में- **डॉ. काकासो बापूसो भोसले**	103
30	'स्त्री मेरे भीतर' **कविता संग्रह में चित्रित नारी संवेदना - प्रा. शैलजा टिळे**	105
31	सामंतवादी बर्बरता को कुरेदता यथार्थ - **डॉ. विकास विलासराव पाटील**	108
32	'गिलिगडु' उपन्यास में अभिव्यक्त वृध्द विमर्श – **डॉ. वैशाली विठ्ठल खेडकर**	110
33	हिंदी साहित्य के स्त्री साहित्यकारों की कहानियों में स्त्री–विमर्श - **प्रा. ज्ञानेश्वर किसन बगनर**	113
34	हिंदी उपन्यास साहित्य में चित्रित नारी शोषण ('एक पत्नी के नोट्स' और 'विजन' उपन्यास के संदर्भ में) - **डॉ.सविता शिवलिंग मेनकुदळे**	115
35	समकालीन हिंदी कविताओं में चित्रित नारी विमर्श – **लैफ्टनंट डॉ. रविंद्र पाटील**	119
36	ओमप्रकाश वाल्मीकि कृत 'दो चेहरे'नाटक में अभिव्यक्त दलित चेतना - **प्रा. जगन्नाथ आबासो पाटील**	122
37	कुसुम कुमार और हरिशंकर परसाई के साहित्य में व्यंग्य (दिल्ली उँचा सुनती है, भोलाराम का जीव) **-प्रा. डॉ. सौ. शकुंतला प्रताप वाघ**	125
38	भगवानदास मोरवाल कृत 'रेत' उपन्यास मे ग्रामीण जीवन' **-प्रा. सूर्यकांत विश्वनाथ आमलपुरे**	127
39	हिंदी साहित्य में आदिवासी का चित्रण - **डॉ. आर. पी. भोसले**	129
40	महिला उपन्यासकारों के उपन्यासो में नारी के विविध रूप- **प्रा. विश्वास निवृत्ती पाटील**	131
41	मैत्रेयी पुष्पा की कहानी 'फैसला' एक मौन विद्रोह- **अस्मिता अरविंद रुईकर**	134
42	काशिनाथ सिंह के 'महुआचरित' उपन्यास में शोषित वर्ग का चित्रण- **सोमनाथ तातोबा कोळी**	137
43	21वीं सदी में नारी शोषण के विविध रूप - **प्रा नितीन हिंदुराव कुंभार**	139
44	'साकेत' में कैकेयी का चित्रण - **कालियानंतम पी.**	143
45	हिंदी कहानी में दलित शोषण का चित्रण (प्रेमचंदकृत - ठाकुर का कुआं कहानी के विशेष संदर्भ में) - **डॉ.बलवंत बी.एस**	149
46	कमलेश्वर कृत 'अनबीता व्यतीत' उपन्यास में नारी चित्रण - **प्राजक्ता राजेंद्र प्रधान / डॉ. अशोक मोहन मरळे**	151
47	भारतीय का सबसे वंचित वर्ग : किसान (हिंदी कविताओं के परिप्रेक्ष्य में) - **प्रा. मारूफ समशेर मुजावर**	154
48	ज्योति जैन की कहानी में नारी अस्मिता का बदलता परिवेश - **माधवी बसवानी पिटुक**	157
49	दलित आत्मकथाओं में चित्रित भेदभाव - **डॉ. प्रकाश आठवले**	161
50	जगदंबा प्रसाद दीक्षित और मधु मंगेश कर्णिक के उपन्यासों में महानगरीय परिवेश की यथार्थता का तुलनात्मक अध्ययन - **सौ.वृषाली महादेव माळी**	165
51	'फाँस' किसान जीवन की संघर्षगाथा - **डॉ. सचिन राजाराम जाधव**	170

E- ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal SJIF Impact- 5.54

November 2021 Special Issue 03 Vol. IV

36 ओमप्रकाश वाल्मीकि कृत 'दो चेहरे' नाटक में अभिव्यक्त दलित चेतना

प्रा. जगन्नाथ आबासो पाटील

अध्यक्ष, हिंदी विभाग,

क्रांतिअग्रणी जी. डी. बापू लाड, महाविद्यालय, कुंडल जिला– सांगली (महाराष्ट्र)

भूमिका -

भारतीय साहित्य में संस्कृत भाषा में नाटक लिखे जाने के काफी अंतराल के बाद, एक बार फिर हिंदी साहित्य में जब नाटक लिखने का सिलसिला प्रारंभ होता है। तब वह अपने साथ नवजागरणकालीन नई चेतना को समाज के सामने रखने के लिए कटिबद्ध होता है। अत: आधुनिक संदर्भ में नाटक नई चेतना का वाहक है और दलित मुक्ति का सवाल आधुनिक काल की नई चेतना के सवालों में शामिल है। हिंदी में कई नाटक समाज में फैली जाति व्यवस्था को केंद्र में रखकर लिखे गए हैं। जिसमें दलितों के प्रति समाज में हो रहे अपमान और घृणा का अमानवीय चेहरा सामने आता है। आजादी के 69 साल बाद भी समाज में जातिगत भेदभाव बना हुआ है। आज भी भारत में सामाजिक न्याय – व्यवस्था पूर्णरूप से स्थापित नहीं हो पाई है। समाज में ऐसी अनेक घटनाएँ देखने को मिलती हैं, जिससे यह बात साफउजागर होती है। हमें यह कतई नहीं लगता कि हम इक्कीसवीं सदी में जी रहे हैं और विश्वशक्ति बनने का सपना देख रहे हैं। हम वैश्वीकरण के दौर में जी रहे हैं, जहाँ एक ओर सीमाओं को तोड़ने की बात हो रही हैं वहीं दूसरी ओर हम सीमाओं को बनाने वाली ब्राह्मणवादी व्यवस्था और जातीय विव्देष को पूर्णत: समाप्त नहीं कर पाये हैं। भारतीय समाज में सदियों से चली आ रही जाति – भेद की मानसिकता आज भी हमारे समाज में लगभग उसी रूप में विद्यमान है, जो अवसर पाते ही बाहर निकल आती है। दलितों पर हमेंशा अपना राज कायम रखने की मानसिकता वाले ऐसे लोगों की आज भी कमी नहीं हैं। वे निम्न जाति के लागों को दिशा – निर्देश देने में विश्वास रखते है परंतु उन्हें कभी समझने का प्रयास नहीं करते। उच्च जाति का व्यक्ति दलित को उसकी पुरानी अवस्था में ही देखने पर अभ्यस्त है।

हिंदी साहित्य में दलित नाटक के लेखक की विधा पुरानी नहीं है। दलित नाटकों की परंपरा में सर्वप्रथम नाम स्वामी अछूतानंद 'हरिहर' का आता है, जिन्होंने 1930 में 'रामराज्य न्याय' नामक नाटक लिखा है। इस नाटक के बाद और भी कई अन्य नाटक लिखे गए। सत्तर का दशक दलित थियेटर के लिए एक तरह से महत्त्वपूर्ण और प्रेरक कहा जा सकता है, क्योंकि इसी दशक में 'दलित पैंथर' नाम से जुझारू संगठन महाराष्ट्र में बना जो आंध्र प्रदेश, कर्नाटक के साथ उत्तर प्रदेश में भी अस्तित्व में आया। अम्बेडकर का क्रांतिकारी दर्शन जुझारू दलित युवकों के नाटकों के माध्यम से जन – जन तक पहुँचा। इसी दशक में नक्सलवादी आंदोलन एक ज्वालामुखी की तरह फुट पड़ा। इमरजेंसी की घोषणा भी इसी दशक में हुई। बाद के दशक में तो दलित उत्पीड़न की घटनाएँ और भी बढ़ी। परिणामस्वरूप दलितों के भीतर आक्रोश उभरा और उन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं में लिखना आरंभ किया।

बीसवीं सदीं का अंतिम दशक नाटक के इतिहास में स्वर्णयुग कहा जा सकता है। इस युग में दलित नाटक अधिक संख्या में लिखे गए। इन सभी नाटकों पर अंबेडकारवादी विचारधारा का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। इन नाटकों में ब्राह्मणवादी व सामंतवादी मानसिकता का वह अमानवीय चेहरा सामने आया है, जिसने दलितों को हमेशा घृणा की दृष्टि से देखा तथा उनका किसी न किसी रूप में शोषण किया। आज भारत के दलित तथा गैर दलित लेखकों ने इस विधा का प्रयोग कर समाज की मानसिकता बदल कर, नए समाज के निर्माण की तरफ अग्रसर हुए हैं।

युग बदलने के बाद भी कालजयी रचना की प्रासंगिकता खत्म नहीं होती हैं। इसी तरह कालजयी नाटक अपने समय की सीमा को तोड़कर बाद के युगों के लिए भी अनिवार्य बना रहता है। इक्कीसवीं सदी में प्रकाशित नाटक 'दो चेहरे' को ऐसी ही कालजयी रचना कह सकते है। जो मजदूर संगठनों के अंतर्विरोधों और भारतीय समाज – व्यवस्था के दोहरे चरित्र को सहज और सीधे – सीधे तरीके से उठाता है। 'दो चेहरे' नाट्यकृति ओमप्रकाश वाल्मीकि व्दारा रचित है, जिसमें

IMPACT FACTOR – 5.61 LangLit ISSN 2349-5189
An International Peer-Reviewed Open Access Journal
Latur (MS) India AIPROAJ

PAIN AND PROMISE IN FAIZ AHMED FAIZ'S "FREEDOM'S DAWN" AND NEHRU'S "A TRYST WITH DESTINY"

DR. WAGHMARE BALKRISHNA DADA
Krantiagrani G. D. Bapu Lad Mahavidyalaya, Kundal.
Tal. - Palus, Dist – Sangli. Maharashtra.
(Affiliated to Shivaji University Kolhapur)

ABSTRACT:

The partition of India in year 1947 was a bloody page in the history of Indian sub-continent which resulted into the greatest migration in human history. Due to it, approximately, 14 million people became refugees in the new countries formed on the basis of religion and two million people lost their lives during this migration. Faiz Ahmed Faiz's poem "Freedom's Dawn" is written in response to Nehru speech on Indian Independence Day. It records pain of partition and betrayal of goals of freedom movement, whereas Nehru's speech accepts past mistakes and gives hopes for better tomorrow. Both Nehru and Faiz Ahmed Faiz hope for betterment for their countrymen in their respective discourses.

Keywords: Partition, Pain, Suffering, Migration, Promise

The partition of India in year 1947 was a bloody page in the history of Indian sub-continent. After more than one hundred years of British East India Company rule and an additional 90 years of the British Raj, the Indian subcontinent had finally achieved Independence in that year. It crated two countries based on the religion, India for Hindu majority and Pakistan for Muslim majority. But that was the one-side on the partition that seems smooth and easy. After the second world war, British Empire was unable to manage the sub-continent and there were consistent demands for independence. On July 15 1947, British decided to hand over power only a month later on August 15, 1947, instead of full ten months earlier than expected. Another thing, Sir Cyril Radcliffe who lacked basic knowledge of India and was given only five weeks to redraw all the borders of these new countries. As a result, the province of Punjab and Bengal were split into half. Approximately, seven million Hindus and Sikhs and seven million Muslims found themselves in the wrong country. It resulted in the greatest migration in human history. Up to two million people lost their lives in the most horrific of manners during this migration from one country to another and approximately, 14 million refugees were in these countries. There were murders, rapes, looting, killing and burning of opposite religion groups. Hindus and Sikhs were thirsty of blood of Muslims and vice versa.

Partition narratives deal with these horrible experiences of partition. They underscore the fragility of our humanity. There are writers and poets from both sides like Sahadat Hasan Manto, Amrita Pritam, Bapsi Sidhwa, Chaman Nahal, Khushwant Singh, Faiz Ahmed Faiz etc. who uplift humanity above the religion and tried to shed light on the mistakes of partition in their works.

E- ISSN 2582-5429

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal SJIF Impact- 5.54
November 2021 Special Issue 03 Vol. III

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

Special Issue 3 Volume III

November 2021

Akshara Publication
Plot No 143 Professors colony,
Near Biyani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon (Maharashtra) 425201
Website:www.aimrj.com Email:aimrj18@gmail.com

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal **SJIF Impact- 5.54**
November 2021 Special Issue 03 Vol. III

23

Weeping Wounds of *Namantar Andolan* in Select Dalit Poems

Dr. Waghmare Balkrishna Dada
Associate Professor and Head, Department of English.
Krantiagrani G. D. Bapu Lad Mahavidyalaya, Kundal.
Tal. Palus, Dist. Sangli. Maharashtra.
(Affiliated to Shivaji University Kolhapur)

Abstract:
Namantar Andolan (Renaming Movement) was a Dalit and Buddhist movement to rename of Marathwada University in Aurangabad, Maharashtra, India, as Dr. Babasaheb Ambedkar University. It began in the year 1978 and achieved success in 1994, with the compromised name, "Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University". The movement was notable for the violence against Dalits and Buddhists. This violence get reflected and criticized by Dalit writers and poets. Two poems, "The weeping Wounds of Centuries" by Mina Gajbhiye and "Mother" by Jyoti Lanjewar depict wounds of this targeted violence against Dalits and Buddhists. What dalits had to sacrifice for renaming and the aftermath of movement is depicted in these two poems.

Key Words: Dalits, Budhists, Renaming, Violence etc.

Namantar Andolan was a Dalit and Buddhist movement to rename Marathwada University in Aurangabad, Maharashtra, India, as "Dr. Babasaheb Ambedkar University". It began in the year 1978 and achieved success in 1994, with the compromised name as 'Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University'. The movement was notable for the violence against Dalits and Buddhists. There were massive riots in 1978 over proposal to rename Marathawada University after Dr. Babasaheb Ambedkar. The riots cost several lives and much loss of Dalit and Buddhist homes and property in the Marathawada area. These riots affected 1200 villages, impacting on 25,000 Marathi Buddhists and Dalits in Marathwada. The terrorised Dalits seek refuge in jungles did not return to their villages, despite of starvation. This violence was allegedly organised by members of the Maratha community and targeted not all Dalits but particularly one caste, Mahars (now known as Budhists). It was organised on various forms to make Dalits aware about their low and subsidiary social status. It included killings, raping Dalit Women, burning of houses and huts, forcing Dalits out of villages, polluting drinking water sources, destruction of cattle, and refusal to employ etc.. To maintain caste supremacy and terror, the upper-castes even intentionally attacked government property including government hospitals, railway stations, gram panchayat offices, state transport buses, District Council-operated school buildings, the telephone system and the government go downs. The Marathwada region was under siege of violence for over two years.

Dalit literature is vocal to injustice caused to Dalits on day to day basis. The Namantar Andolan and its impact on Dalit community are also reflected in Dalit poems. Meena Gajbhiye's poem, "The weeping Wounds of Centuries" is an intense response to the violence and atrocities against dalits. It acutely describes how anti-dalits riots severely affected to the psyche of Dalits. The poet begins the poem with past reference to caste discrimination in pre-independence phase which was accepted with hope that after constitutional provisions there

About the Book:

Ngugi wa Thiong'o is one of the most significant writers from Africa. His life is a symbol of what Kenya has gone through pre-colonial and post-colonial period and his work provides an excellent starting point to understand the many inter-related cultural, political, linguistic, and developmental dilemmas that encompass the African continent and yet remains obscure to many. Present book is an attempt to analyse what Ngugi wants to achieve by employing his pen as a weapon of change to handle these issues and to depict his social consciousness reflected in his seven novels from *Weep Not, Child* to *Wizard of the Crow*.

About the Author:

Dr. Balkrishna Waghmare has been working as an Associate Professor and Head of department of English at Krantiagrani G. D. Bapu Lad Mahavidyalaya Kundal, Dist. Sangli, Maharashtra (India) since 2004. He has done his Doctoral Research in African Literature and completed a research project funded by UGC in the same area. He is a recognised research supervisor for Ph.D./M.Phil. and also, a visiting lecturer to P.G. classes. He has participated and presented research papers in more than hundred seminars, workshops and conferences in India and abroad. His more than forty research papers have been published in reputed books and international journals.

You may reach the author at:
waghmarebd@gmail.com

OrangeBooks Publication
www.orangebooks.in

Also available as an eBook
NON-FICTION
ISBN 978-93-91543-57-0
9 789391 543570 >

SOCIAL CONSCIOUSNESS AND NGUGI'S POST-COLONIAL FICTION

SOCIAL CONSCIOUSNESS AND NGUGI'S POST-COLONIAL FICTION

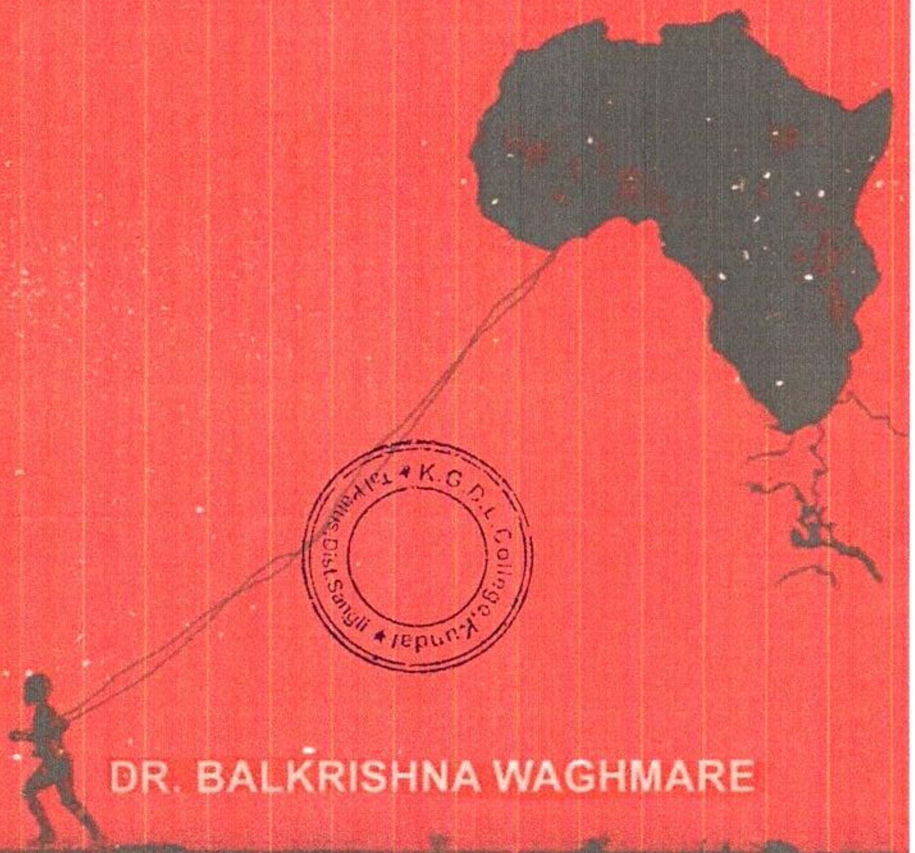

K.G.D.L. College, Kundal, Tal. Palus, Dist. Sangli

DR. BALKRISHNA WAGHMARE

DOI PREFIX 10.22183
JOURNAL DOI 10.22183/RN
SIF 5.411

RESEARCH NEBULA
An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

ISSN 2277-8071

RESEARCH NEBULA

An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

SPECIAL ISSUE FEBRUARY 2021

NATIONAL E-CONFERENCE

ON

"NEW TRENDS IN ICT, FILM, LITERATURE AND CULTURE"

12th February, 2021

Organized by

Department of English & IQAC,
Bapuraoji Butle Arts, Narayanrao Bhat Commerce and Bapusaheb Patil Science College,
Digras Yavatmal, Maharashtra, India-445203
Re-Accredited 'B' Grade by NAAC

affiliated to
Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati,
Maharashtra, India.

K.G.D.L. College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

DOI PREFIX 10.22183
JOURNAL DOI 10.22183/RN
SIF 5.411

RESEARCH NEBULA
An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly
Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

ISSN 2277-8071

RESEARCH PAPER

UNDERSTANDING THE CHARACTERISTICS OF ENGLISH ADVERTISEMENTS

DR BALRISHNA DADA WAGHMARE
Head, Department of English
Krantiagrani G. D. Bapu Lad Mahavidyalaya, Kundal
Dist- Sangli, Maharashtra.
bdwaghmare@yahoo.com

ABSTRACT:

Present paper aims at exploring characteristics of English advertising texts. English advertising texts display many unique features of wording, such as frequent use of simple words, clever use of coinages, loanwords, monosyllabic verbs, and simple adjectives, as well as compounds, etc. In this paper these characteristics are discussed in brief.

Key Words: *advertisements, coinage, borrowing, blending*

The word "advertise" has been derived from the Latin word "advertere" which means "to inform somebody of something", "to bring into notice" or "to draw attention to something", etc. With increase in IT enabled communication and acceleration of economic globalization, English advertisements has found its way into people's life. Every day, we are exposed to a large number of advertisements. Their aim is to persuade us to buy the advertised product. For it, advertisers use various means to get people to buy the products or services advertised. They make attempts to construct an advertisement that will fully attract the attention of the potential buyer and have persuasive effects. Therefore, they make full use of every word to draw readers' attention and arouse their interest in the advertised product.

If we closely examine these advertisements, we find that English advertisements display many unique features or characteristics, such as frequent use of simple words, clever use of coinages, loanwords, monosyllabic verbs, and simple adjectives, as well as compounds, etc. which can be discussed as follow:

1. SIMPLE AND INFORMAL WORDS:

Shakespeare has said, "Brevity is the soul of wit". The function of advertising is to provide information, attract consumer, exploit market, and promise the quality. A simple advertisement is intended not only to arouse the reader's attention and interest, but also to make consumers remember it. Therefore, an advertisement must pay attention to its language, and the first step is to use popular and oral language, the second step is to use some single-syllable words or fewer letters to make it easy to understand and memorize.

For example:

1. "Havells wires that don't catch fire" (Harvell wires)

2. BLENDING AND COINAGES:

In some advertisements, the advertiser copywriter misspells some words purposefully or adds some suffix or prefix to some common words. Sometime, they blend tow words to form the new word. First part of the first word and last part of the next word are blended together to form a new word. Coinages of this kind are nowhere to be found in dictionaries, but they seem familiar to readers. One can guess their meanings by means of the context. When customers come across newly coined words, their interest is stimulated, and they want to go on reading and take action. Thus, the aim of advertising is reached. Such new words are created to attract attention and to arouse curiosity and novelty. Such freshly made words and phrases may suggest that the product or service being advertised possesses peculiar qualities as well as the value of novelty.

For example:

1. "Give a *Timex* to all, and to all a good time." (Timex wrist watch advertisement)

(In above example, the word *Timex* is formed by using two parts form the words 'time' and 'excellent'.)

2. "Hi-*fi*, Hi-fun, Hi-fashion, only from Sony" (advertisement of Sony Audio)

Impact Factor 7.149

ISSN 2349-638x

Peer Reviewed And Indexed

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly e-Journal

VOL-VIII ISSUE-I Jan. 2021

Address
· Devgiri Nagar, Ambajogai Road, Latur.
· Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
· (+91) 9922455749, (+91) 8999250451

Email
· aiirjpramod@gmail.com
· aayushijournal@gmail.com

Website
· www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

K.G.D.L College ... Tal. ... Dist. Sangli

15	Dr. U.T. Gaikwad	Impact Of COVID-19 On Education Sector In India	67 To 69
16	Rajdhar Bedse	Effects of Sports Training on Physical Activity in Personality	70 To 74
17	Kulkarni S.V., Warghat S. R., Tidke P. S & Meshram S. A.	Morphometric Analysis of The Suryaganga River, Amravati District,Maharashtra Using GIS Techniques	75 To 79
18	Dr. T.G. Ghatage	Geographical Indication: A current Status of Maharashtra	80 To 82
19	Dr. Sangita Deshmukh	Plyometric exercises and its Effect on Physical fitness of Girl College Students	83 To 86
20	Dr.Kamal Kumar	An Approach to Learn Ayurvedic Clinical Skill with Special Reference to Panchavayava of Anumanpraman	87 To 90
21	Dr. Manisha Uttamrao Nikam	Shiroabhyanga: A Review	91 To 98
22	Dr. Marigouda B.Chobari	Health and Rural Women in India	99 To 100
23	Sarala Rajan Menon	Strategic Development of Higher Education in Pre And Post Colonial Era in Asia And Emergence of Global Universities	101 To 112
24	Dr. Shubhangi Damle	Effect Of Training Program On Improving Powerlifters Performance Of Washim City	113 To 118
25	Vda.Asmita S. Yesane	Evaluation of Efficacy of Shrungyadi Churna on Kasa in Children	119 To 121
26	Dr.Sarika S. Jadhav & Dr. Smita Dhurde	Review of Sadvrutta WSR Buddha Darshana	122 To 125
27	Sarala Rajan Menon	NPE 2020 and National Curriculam	126 To 130
28	Dr. Nitesh R. Swami	Does Physical Activity Influence Academic Performance?	131 To 132
29	Ramandeep Kaur	Relationship between Maharaja Duleep Singh and Namdhari	133 To 137
30	Dr. Waghmare Balkrishna Dada	Social Consciousness in Aravind Adiga's The White Tiger	138 To 140
31	Prof. Sarjerao S. Chile	Effects of HRM Practices on Small Scale Industries	141 To 145

K.G.D.L. College Talpalus, Dist.Sangli

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

VOL- VIII	ISSUE- I	JANUARY	2021	PEER REVIEW e-JOURNAL	IMPACT FACTOR 7.149	ISSN 2349-638x

Social Consciousness in Aravind Adiga's *The White Tiger*

Dr. Waghmare Balkrishna Dada
Krantiagrani G. D. Bapu Lad Mahavidyalaya, Kundal.
Tal. - Palus, Dist – Sangli. Maharashtra.
(Affiliated to Shivaji University Kolhapur)

Abstract:

Social consciousness is a response to social injustice experienced by the individual or in the lives of others around the individual. Aravind Adiga takes the huge responsibility of highlighting all the "brutal injustices" of India in this novel such as feudal society, caste discrimination, exploitation of Dalits and poor, the dark side of child-labour, pitiable condition of the Indian servants and humiliation at hands of their masters, and corruption and bribery at every level etc.

Key Words: consciousness, social evils, social consciousness

Consciousness is a basic concept in Philosophy, Sociology, and Psychology. It denotes the capacity for the ideal reproduction of reality, as well as the specific mechanisms and forms at various levels of this process. It is defined as an awareness of the self and the environment. *Oxford Advanced Learners* Dictionary defines consciousness as, "the state of being able to use your senses and mental powers to understand what is happening, the state of being aware of, awareness; the ideas and opinions of a person or group". 'When the consciousness is related with society, it becomes social consciousness. It is a consciousness shared within a society' (Scott). It can also be defined as social awareness; i.e. being aware of the problems that different societies and communities face on a day-to-day basis and being conscious of the difficulties and hardships of society. It is believed that social consciousness is a response to social injustice experienced by the individual or in the lives of others around the individual.

The White Tiger is Aravind Adiga's debut novel. He won the 2008 Bookers Prize for this novel. After Salman Rushdie, Arundhati Roy and Kiran Desai, he is the fourth Indian-born author to win the prize. The novel is presented in an epistolary form. It gives the account of the life of Balram Halwai. Along with it, it also presents the progress of India and simultaneously records the social evils exited in the Indian society. Aravind Adiga who is socially conscious writers makes his intention clear behind writing this novel. He says in his interview with Stuart Jeffries, in 'The Guardian' the day after he won the Man Booker Prize for this novel:

> *"At a time when India is going through great changes and, with China, is likely to inherit the world from the west, it is important that writers like me try to highlight the brutal injustices of society. That's what writers like Flaubert, Balzac and Dickens did in the 19th century and, as a result, England and France are better societies. That's what I'm trying to do - it's not an attack on the country, it's about the greater process of self-examination" (Jeffries).*

Here the writer takes the huge responsibility of highlighting all the "brutal injustices" of India. We can trace similarity between Dicken's *David Copperfield* and Adiga's *The White Tiger*. He has tried to show social evils of Indian society like what Dicken's has done in *David Copperfield*.

To begin with, the picture Aravind Adiga paints of India in *The White Tiger* is of a nearly feudal society disguised as a democratic society. Though, the country gained its independence from the Britain in the year 1947, but the majority of people in India are still trapped in servitude. The first lesson Balram, the narrator, has for us is the reality of rural life in India. In his small village everybody is

K. G.D.L. College, Tal. Palus, Dist. Sangli

'Journal of Research & Development'
Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal, Impact Factor 5.13, ISSN: 2230-9578, April 2021, Special Issue11, Volume-8 "Recent Trends in Social Sciences"

आर्य समाजाचे सामाजिक कार्य

प्रा. माणिकराव शामराव चव्हाण
सहाय्यक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, क्रांतिअग्रणी जी. डी. बापू लाड महाविद्यालय, कुंडल

प्रस्तावना-

जगामध्ये व भारतात १९ व्या शतकाच्या उत्तरार्धात सामाजिक सुधारणाच्या ज्या काही चळवळी झाल्या त्यामध्ये आर्य समाजाचे कार्य अत्यंत महत्वाचे आहे. हिंदू धर्मातील वाईट चालीरीती यांच्यावर प्रकाश टाकून त्या बंद कशा होतील त्यासाठी आर्य समाजाने महत्वाचे काम केलेले आहे. आर्या समाजाने प्राचीन भारतातील संस्कृतीतील शासन मानवी समाज मूल्यांचे महत्व सांगून त्यातील अमर तत्वज्ञान सांगण्याचे कार्य केले. स्वामी दयानंद सरस्वती व त्यांचा आर्य समाज यांनी पुन्हा हिंदू धर्माला उभारी आणली. हिंदी धर्मातील अनिष्ठप्रथांना विरोध करतानाच त्यांनी हिंदू संस्कृतीची महानता जगाला सांगितली. वैदिक काळात भारतीय संस्कृती चांगली प्रगत झालेली होती. वर्णश्रिम पद्धतीच्या समाज रचनेचे तत्वज्ञान त्यांनी स्पष्ट केले. अशा जेष्ठ आणि श्रेष्ठ धर्मातील दोष दूर करण्यासाठी पाश्चात्य धर्मातील तत्वज्ञानाची गरज होती. हिंदू धर्माला बदलण्याचा प्रयत्न करून हिंदू धर्माभिमान जागृत करण्याचा प्रयत्न केला.

स्वामी दयानंद सरस्वती -

आर्य समाजाची स्थापना स्वामी दयानंद सरस्वती यांनी केली. त्यांचा जन्म इ. स. १८२४ मध्ये गुजरात मधील टंकारा या लहानशा गावी झाला. त्यांचे घराणे ब्राह्मण होते. तसेच त्यांचे मूळ नाव मूळशंकर होते. त्यांचे वडील अंबा शंकर हे सनातनी व धार्मिक विचारांचे होते. शिव हे ह्या घराण्याचे कुल दैवत होते. त्यामुळे धार्मिक वातावरणात मूळशंकर हे लहानाचे मोठे झाले. त्यांच्या आयुष्याला कलाटणी देणारा प्रसंग महाशिवरात्री दिवशी त्यांच्या वयाच्या १४ व्या वर्षी घडला. ते वडिलांच्या बरोबर शिव उपासना करण्यासाठी रात्रीच्या वेळी शिव मंदिरात गेले असताना त्यांनी त्या मंदिरातील शिव पिंडीकडे एक चित्ताने पाहत असताना त्यांना एक विचित्र चित्र दिसले ते म्हणजे महादेवाच्या पिंडीवर उंदीर फिरत असलेला व देवापुढील नैवेद खात असलेला त्यांना दिसले. हे पाहिल्यानंतर मूर्ती पूजेबद्दल त्न्याच्या मनात शंका निर्माण झाली. मूर्ती मध्ये परमेश्वर नाही त्यामुळे मूर्तीपूजा योग्य नाही असे त्यांना वाटू लागले त्यामुळे त्यांनी वडिलांना काही गोष्टी विचारल्या परंतु त्या गोष्टीचे व शंकांचे उत्तर वडिलांच्याकडून मिळाले नाही. त्यमुळे स्वामी दयानंद सरस्वती यांच्या मनात धर्माबद्दल जिज्ञासा वाढीस लागली ती म्हणजे परमेश्वराचे सत्य स्वरूप समजून घ्यावे आणि देवाच्या नावाने चाललेले भ्रष्टाचार, वाईट चालीरीती दूर करावेत.

सन १८४५ साली त्यांच्या घरात त्यांच्या लग्नाची बोलणी सुरु झली त्यावेळी त्यांना वाटले कि आपण जर लग्नाच्या पाशात अडकलो तर आपल्या प्रश्नांची उत्तरे आपणास कधीच मिळू शकणार नाहीत म्हणून ते घरातून निघून गेले. सन १८६० पर्यंत त्यांनी भारतात ठिकठिकाणी संचार केला व सत्य ज्ञानाचा शोध घेण्याचा प्रयत्न केला व त्याच वर्षी त्यांनी थोर पंडित स्वामी विराजानंद सरस्वती यांना गुरु म्हणून स्वीकारले. मथुरा या ठिकाणी राहून हिंदू धर्माचे तत्वज्ञान प्राप्त केले. पाणिनी व पतंजली चा अभ्यास केला व सरस्वती संप्रदायातून संन्यास घेतला त्यानंतर त्यांनी दयानंद सरस्वती असे नाव धारण केले. हिंदू धर्माचे तत्वज्ञान लोकांना पटवून सागण्यासाठी त्यांनी संपूर्ण भारताचा प्रवास केला. ते संस्कृत मधून प्रवचने करीत आपल्या तत्वज्ञानाच्या प्रचारासाठी त्यांनी पुस्तके प्रकाशित केली. वैदिक धर्माचे पुनर्जीवन करण्यासाठी आणि वैदिक तत्वज्ञानाच्या प्रचारासाठी स्वामी दयानंद यांनी इ. स. १८७५ मध्ये मुंबौ येथे आर्य समाजाची स्थापना केली आणि त्या संघटनेमार्फत समाज सुधारणेची चळवळ राबवली.

आर्य समाज या संघटनेची भारतातील सर्व थरापर्यंत धार्मिक तत्वज्ञानाचा प्रसार होण्यास मदत झाली. ज्या रानडे व महाराष्ट्रातील इतर लोकांच्या सांगण्यावरून ते प्रवचन देण्यासाठी पुणे येथे आले. जाती भेद मानु नका, वेदांचे अध्ययन समाजातील सर्व लोक करू शकतात. मूर्तीपूजा करू नका असा संदेश त्यांनी लोकांना दिला. त्यांच्या प्रवचनाचा प्रभाव पडल्यामुळे लोकांनी त्यांची हत्तीवरून मिरवणूक काढण्याचे ठरविले पण सनातनी धर्म मार्तंडाना हे विचार मान्य नव्हते म्हणून त्यांनी गाढवाची मिरवणूक काढण्याचे ठरविले. गर्भानंद कि जय अशा घोषणा देवून त्यांनी स्वामींजीच्या मिरवणुकीवर हल्ला चढवला. स्वामींनी पुढे लाहोर येथे आर्य समाजाची एक शाखा काढली तीच पुढील काळात मुख्य झाली इ. स. १८८३ मध्ये स्वामी मृत्यू पावले त्यांच्या मृत्यू नंतर लाला लजपतराय, लाला हंसराज, श्रद्धानंद पंडित गुरुदत्त इ. नी हे कार्य पुढे नेटाने सुरु केले.आर्य समाज चळवळीने शिक्षण क्षेत्रात नेत्रदीपक प्रगती केली. स्वामींनी वैदिक वर्णाश्रम धर्माचा पुरस्कार केला. हिंदी धर्मातील वाईट प्रथांवर त्यांनी कठोर जाती व्यवस्थेची निर्भत्सना केली. यावेळी त्यांनी हिंदू धर्माला चांगले स्वरूप देण्याचा प्रयत्न केला. स्वामी दयानंद सरस्वती यांनी धार्मिक व सामाजिक सुधारणा करण्याबरोबर शैक्षणिक प्रसाराचे कार्य केले.

आर्य समाजाची तत्वे -

या संघटनेने भारतात वैदिक धर्मातील तत्वज्ञान आणि आधुनिक बुद्धीजीवी विचार यांची सांगड घालून आपले तत्वज्ञान तयार केले होते. या संघटनेने वेदांचा अभ्यास केला पाहिजे असे सांगितले. समाज रचनेसाठी वर्ण पद्धतीचा पुरस्कार केला. चातुर्य वर्ण जन्मावर आधारलेले नसून कर्मावर आधारलेले असणे गरजेचे आहे असे प्रतिपादन केले. आर्य समाजात सर्व जाती धर्मांच्या लोकांना प्रवेश होता. अशा या आर्य समाजाची तत्वे खालीलप्रमाणे

१. ईश्वर हाच खऱ्या तत्वज्ञानाचे मूळ असून सर्व वस्तू त्यांच्या स्वरुपात ज्ञात आहेत.

२. ईश्वर सच्चिदानंद असून तो आनंदी, अनंत, निराकार,, सर्व साक्षी, अमर व पवित्र आहे.

K.G.D.L.College, Kundal * Tal.Palus, Dist.Sangli *

'Journal of Research & Development'
Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal, Impact Factor 5.13, ISSN: 2230-9578, April 2021, Special Issue11, Volume-8 "Recent Trends in Social Sciences"

मुंबईचे शिल्पकार जगन्नाथ शंकर शेठ

प्रा. माणिकराव शामराव चव्हाण
सहाय्यक प्राध्यापक, इतिहास विभाग
क्रांतिअग्रणी जी. डी. बापू लाड महाविदयालय, कुंडल

प्रस्तावना-

मुंबई हि महाराष्ट्राची भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आणि आर्थिक राजधानी आहे. या मुंबईचे शिल्पकार म्हणून जगन्नाथ शंकर शेठ यांचेकडे पाहुले जाते. नाना म्हणजे बुद्धी, विद्वत्ता, आणि कर्तव्य याचे एक उत्तम उदाहरण होते. त्यांनी सामाजिक प्रबोधनात आणि सार्वजनिक जीवनात अत्यंत मोलाचे काम केले आहे. नाना हे स्वयंभू नेते होते. राजकर्ते व जनता यांच्यात नानाच्या बद्दल आदर होता. त्यांनी मुंबई मध्ये शैक्षणिक, राजकीय, सामाजिक,धार्मिक अशा विविध कार्यात भाग घेवून या शहराला गतिमान करण्याचा सतत प्रयत्न केला.

जीवन वृतांत -

जगन्नाथ शंकर शेठ उर्फ नाना यांचा जन्म ठाणे जिल्ह्यातील मूरवाड येथे दैवज्ञ ब्राह्मण कुटुंबात झाला. त्यांचे उपनाव मुरकुटे असे होते. त्यांच्या वडिलांनी जवाहिऱ्याच्या व्यवसायात खूप मोठी संपत्ती मिळवली होती. त्यांचे वय 18 वर्ष होई पर्येत त्यांचे आई व वडील हे मृत्यू पावले असल्याने त्यांच्या वर मोठ्या उदयोग व्यवसायाची जबाबदारी येवून ठेपली. प्रारंभापासून नानांना शिक्षणाची आवड असल्याने त्यांनी मराठी, इंग्रजी व संस्कृत भाषेत विशेष प्राविण्य मिळवले आणि त्यामिलेच त्यांनी आपल्या व्यक्तिमत्वाची छाप राज्यकर्त्यावर पाडली. त्यांनी आपल्या संपत्तीचा विनियोग जनतेच्या कल्याणासाठी केला. मुंबईच्या विकासासाठी त्यांनी तन मन आणि धनाने भाग घेतला. अनेक संस्थाना आणि गोर गरिबांना आर्थिक सहहाय करून आपले दातृत्व सिद्ध केले. मुंबई प्रांताच्या बोर्ड ऑफ एज्युकेशन चे ते १८५० ते १८५६ या कालावधीत सदस्य होते. मुंबई विद्यापीठाने त्याची फेलो म्हणून नेमणूक केली. याच वेळी सरकारने त्यांना जस्टीस ऑफ दी पीस हा सन्मान दिला होता. या पडला त्यांनी जनतेची गाऱ्हाणी सचोटीने सोडवून न्याय देण्याचा प्रयत्न केला.

शैक्षणिक कार्य -

नानांनी गव्हर्नर ऐल्फीस्टेन यांना स्पष्ठ सांगितले कि विद्यादानाखेरीज आमच्या लोक्राचा उद्धार हिणार नाही. गव्हर्नर ला हे विचार पटले व त्यांनी नानांच्या सहकार्याने मुंबई येथे शैक्षणिक कार्य करण्यास सुरुवात केली. याचा एक पहिला प्रयोग म्हणून नानांनी इ.स. १८२२ मध्ये बॉम्बे नेटिव्ह ऐजुकेशन सोसायटी हि संस्था स्थापन केली. संपूर्ण देशात शिक्षणाचा प्रसार व्हावा म्हणून स्थापन झालेली हि पहिलीच संस्था आहे. या संस्थेने मुंबई व मुंबई बाहेर अनेक शाळा सुरु केल्या. ऐल्फीस्टेन यांचे शैक्षणिक काम लोकांच्या स्मरणात राहावे म्हणून मुंबई येथे ऐल्फीस्टेन कॉलेज सुरु करण्यात आले. याच वेळी सरकारने शिक्षण प्रसाराच्या कामावर नियंत्रण ठेवण्यासाठी बोर्ड ऑफ एज्युकेशन ची स्थापना केली. इंग्रजी शिक्षणाच्या प्रसारामुळे जनतेत जागृती होत होती आणि ती जागृती आणखीन वाढावी म्हणून इ.स. १८४५ मध्ये दादाभाई नौरोजी, भाऊ दाजी लाड आणि विश्वनाथ नारायण मंडलिक यांनी स्टुडट लिटररी साय्न्तिफिक सोसायटी ची स्थापना केली. यावेळी मुलींच्या शिक्षणाबद्दलचा गैरसमज दूर व्हावा म्हणून नानांनी स्वतच्या जागेत जगन्नाथ शंकर शेठ मुलींची शाळा काढली व स्त्री शिक्षणाचा पाया घातला. हे त्यांचे कार्य धाडसाचे तसेच दूरदृष्टी चे उत्तम उदाहरण होते. रोबर्ट ग्रंट या गव्हर्नर च्या स्मृती प्रीत्यर्थ ग्रंट मेडीकल कॉलेज ची स्थापना केली. इ.स. १८५९ साली मुंबई विद्यापीठाची स्थापना झाली. त्याचे पहिले फेलो म्हणून नानांची नियुक्ती झाली यावरून त्यांच्या शैक्षणिक कार्याची जाणींव होते. नानाच्या शैक्षणिक कार्याचे स्मारक म्हणून इ.स. १८५७ मध्ये दि जगन्नाथ शंकर शेठ फस्ट ग्रेड अंग्लो व्हार्न्याकुलर स्कूल काढण्यात आले.भारतीयांना कला विषयक शिक्षण मिळावे म्हणून नानानी खूप प्रयत्न केले व त्यातूनच आजचे जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स आहे हे महाविद्यालय निर्माण झाले आहे.

सामाजिक कार्य -

शैक्षणिक सुधारणा बरोबरच सामाजिक सुधारना बाबत नानांचे विचार पुरोगामी होते. स्त्री शिक्षण, सतीबंदी , शुद्धीकरण चळवळ यांना त्यांनी प्रोत्साहन दिले. सतीबंदी च्या वेळी नानांनी हि चाल अमानुष आहे असे लोकांना पटवून दिले. मुंबई कौन्सिल मध्ये निवडून आल्यानंतर नानांनी मुन्सिपल अकट व्हावा म्हणून खूप प्रयत्न केले. इ.स. १८४६ मध्ये तो कायदा पास केला. त्यानंतर मुंबई शहराच्या आरोग्याची आणि सुख सोईची व्यवस्था करण्यसाठी स्वतंत्र मुन्सिपल कमिशन नेमण्यात आले. त्यावर नानाची नेमणूक करण्यात आली. रॉयल ऐशियातिक सोसायटी च्या मुंबई शाखेचे एक भव्य ग्रंथालय आहे. त्याला नानांनी फार मोठी मदत केली. अग्री, होर्टीकलचर सोसायटी आणि जाग्रफिकाल सोसायटी च्या स्थापनेत नानांचा सिंहाचा वाट होता. नानांचे सर्वात महत्वाचे कार्य म्हणजे बोरीबंदर ते पुणे अशी रेल्वे सुरु करण्यासाठी खूप मोठे प्रयत्न केले. इ.स. १८३७ मध्ये भिवंडीत जातीय दंगल झाली त्यावेळी नानानी हिंदू ची बाजू घेवून गव्हर्नर ला खटल्याची फेर तपासणी करण्यास सांगितले व दंगल खोरांना कडक शिक्षा देऊन हिंदुना न्याय मिळवून दिला. तसेच इ.स. १८३६ मध्ये सरकारने सोनापूरची स्मशानभूमी भिवंडीला हलविण्याचा निर्णय घेतला होता तो लोकांच्या गैर सोयीचा होता. तो गव्हर्नर सांगून रद्द केला असे मुंबई च्या हिताचे अनेक प्रश्न नानांनी सोडविले आहेत.

राजकीय कार्य -

नानांच्या लोकसेवेचा दृष्टीकोन व्यापक होता. ते शिर्मंत असून हि त्यांनी जनसेवेचे व्रत स्वीकारले होते. जनतेच्या प्रत्येक कार्यक्षेत्रात सुधारणा व्हावी असे त्यांना वाटत होते. जनतेची दु:खे सरकारला दाखविण्यसाठी व सरकारला लोकहिताच्या योजना राबविण्यासाठी नाना व दादाभाई नौरोजी यांनी पुढाकार घेवून इ.स. १८५२ अंधे बॉम्बे असोसिएशन हि संस्था मुंबई

K.G.D.L.College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

30	Need For Changing the Farming System in Agricultural Development **Assit. Prof. B.R. Gunde**	103-105
31	Glycerol: Green Solvent for Synthetic Organic Chemistry **Muley D.B., Reddy P. S.**	106-109
32	Sustainable development of the environment **Ekta keshari**	110-116
33	The Role of Women Self Help Groups in Sustainable Development Goals. Special Reference to Roha Taluka **Dr. Kamlakar E. Kamble**	117-120
34	Revisiting the role of Muslim organisations in the political revival of the Mappila Muslims of Kerala **Dr. Hassan J, Dr. Manu T, Fazil Shameem K. S**	121-124
35	DR.B.R AMBEDKAR'S THOUGHTS ON AGRICULTURAL REFORMS IN INDIA **Dr. Sreekantaiah, Dr. Kavitha G.N**	125-127
36	The Role of Folk Literature in Society **Dr. Vishnu J. Chavan**	128-129
37	Environmental Fortification for Sustainable Growth **Dr. Shailendra K. Bansode, Dr. Prakash N. Salve, Dr. Ganesh K. Chavhan**	130-132
38	Gender Equality as a Major Sustainable Development Goal **Miss S. B. Dongapure,**	133-135
39	Importance and Need of Information Technology in Education. **Mr. Pande Govind Kishanrao**	136-137
40	Role of Biodiversity in Sustainable Development. **Mr. S. N. Kamble., Dr. R. S. Dhanushwar**	138-139
41	Undoped zinc oxide thick films for gas sensing applications prepared by screen printing technique. **Mr.S.V.Maske, Dr.D.K.Kendre**	140-142
42	End Hunger - India: Contests To Meet The Goal **Pawde Shubhangi Subhashrao, Dr. Shirshi U.K**	143-146
43	Studies On Quality Of Higher Education In India **Ranjan B. Yedatkar**	147-149
44	Impact of Covid-19 on Social Accounting with respect to CSR activities in India **Shaikh Sabiha Khatoon Akhtar, Dr. Kadrekar Prakash**	150-152
45	Indian Ways of Interaction Causing Gender Inequality as Reflected in the Novels of Anita Desai and Geeta Hariharan **Dr. Umakant Maknikar**	153-157
46	Caste, Gender and Protest: a study of "The Grip of Change" **S. Babarao Lalaiah**	158-159
47	धानोरा या गावातील कुटूंब नियोजनाचा :- भोगौलिक अभ्यास **श्री.बिचकुंदे शशिकांत संग्राम**	160-165
48	शाश्वत विकास साध्यतेसाठी सामाजिक आरोग्य **डॉ.अनिता मधुसूदन शेळके**	166-168
49	आर्थिक विकास **प्रा. डॉ.एन.के. वाघमारे, गोंड रामराव संभाजी**	169-172
50	कणकवली तालुक्यातील भूमी उपयोजन व पीक प्रारूपाचा भौगोलिक अभ्यास (१९९१-२००१) **राहुल शांताराम पवार , डॉ. एन के वाघमारे**	173-177
51	बीड जिल्ह्यातील अनुसुचित जती व जमातींचे लोकसंख्या लिंगगुणोत्तर ***श्री संतोष सिताराम सोंडगे, प्रा. डॉ. एन. के. वाघमारे***	178-182
52	लातूर जिल्ह्यातील निरु जलसिंचन प्रकल्प प्रभाव क्षेत्रातील जलसिंचनाच्या तीव्रतेचा भौगोलिक अभ्यास **प्रा. डॉ. ए. ए. काळगापुरे**	183-186
53	सुभाषचंद्र बोस यांचा स्वातंत्र्य चळवळीतील प्रवास **प्रा. माणिकराव शामराव चव्हाण**	187-188
54	आद्य समाजसुधारक राजाराम मोहन रॉय **प्रा. माणिकराव शामराव चव्हाण**	189-191

'Journal of Research & Development' A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal, Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, 1June-2021, Volume-11, Issue-17
Sustainable Development Goals: Initiatives, Execution, & Challenges

K.G.D.L. College, Kundal, Tal. Palus, Dist. Sangli

सुभाषचंद्र बोस यांचा स्वातंत्र्य चळवळीतील प्रवास

प्रा. माणिकराव शामराव चव्हाण

सहाय्यक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, क्रांतिअग्रणी जी. डी. बापू लाड महाविद्यालय, कुंडल

कटक मधील नामवंत वकील जानकीनाथ बोस यांचे सूभाष हे आठवे पुत्र. आय.सी.एस.ची परीक्षा सर्व विद्यार्थ्यांमध्ये चवथ्या क्रमांकाने पास झाले. सर्व प्रकारचे सुखविलास, ऐश्वर्य, मान सन्मान देणाऱ्या त्या सर्वोच्च अधिकाराच्या नोकरीवर लाथ मारून सुभाषबाबू इंग्लंड हून भारतात परतले. १६ जुलै १९२१ या दिवशी सुभाषबाबू मुंबईला पोहचले यावेळी महात्मा गांधी मुंबई मध्ये होते. त्यामुळे सुभाषबाबूनी मुंबई मधेच गांधींजी ची भेट घेतली व नंतर कोलकत्ता येथे देशबंधू चित्तरंजन दास यांची हि भेट घेतली व आपल्या कामाची पुढील दिशा ठरवली.

१९३९ मध्ये कॉंग्रेस चे अधिवेशन त्रिपुरा येथे भरणार होते. गांधीजींनी अध्यक्ष पदासाठी कॉंग्रेस चा उमेदवार म्हणून पट्टाभी सीतारामय्या यांना उभे केले होते. आणि यावेळी विरोधक म्हणून दुसरे कोणी नसल्याने सुभाषबाबू स्वतः उभे राहिले आणि ह लढत गांधींजी विरुद्ध सुभाषबाबू अशीच झाली. यावेळी गांधींच्या पाठीमागे सर्व अनुयायी असून सुद्धा त्यांचे उमेदवार पट्टाभी सीतारामय्या पराभूत झाले. व सुभाषबाबू विजयी झाले. हा पराभव पट्टाभीचा नसून तो माझा आहे असे गांधींजीनी मानले व येथून पुढे स्वातंत्र्ययुद्धा संबंधी गांधींजीशी सुभाषबाबुंची मतभिन्नता वाढत गेली त्यानंतर सुभाषबाबूनी फॉरवर्ड ब्लॉक आघाडी स्थापन केली.

याच दरम्यान १९३९ च्या सप्टेंबर मध्ये इंग्लंड व जर्मनी या दोन देशात युद्ध सुरु झाले आणि यावेळी देशात स्वराज्य मिळविण्यासाठी इंग्रजांच्या शत्रूंचे सहकार्य आपणास मिळेल का यावर सुभाषबाबू विचार करू लागले. या कामासाठी ते देश सोडून जाण्याचा मार्ग ते शोधू लागले कारण ते युरोपात राहिले होते. त्या ठिकाणच्या परिस्थितीचा त्यांनी चांगला अभ्यास केला होता. क्रांतिकारक विचारांचा स्वातंत्र्य सेनानी म्हणून ब्रिटीश पोलिसांनी त्यांच्या घरावर पाळत ठेवलेली होती. तसे पहिले तर त्याच्या अगोदर सुभाषबाबूना वेगवेगळया कारणानी कमीतकमी दहा वेळा कारावास झाला होता. आता त्यांच्यावर पुन्हा खटला चालवायचा आणि त्यांना जन्मठेपेची शिक्षा द्यायची असा इंग्रजांचा बेत होता आणि जन्मठेपेने आपले आयुष्य पूर्ण वाया जाणार हे सुभाषबाबूना दिसत होते. म्हणून त्यांनी भारत देश सोडायचा निर्णय घेतला आणि त्यांनी अज्ञातवास स्वीकारला आपल्या घरीच राहून त्यांनी दाढी वाढवली, पुतण्याला सांगून पठाणाचा पोशाख मागवला व देश सोडून कसे जायचे याचा मार्ग निश्चित केला. १६ जानेवारी १९४१ रोजी मध्यरात्री आईचे दर्शन घेवून पठाणाच्या वेशात सुभाषबाबू घराबाहेर पडले. पुतण्या शिशिर गाडी चालवीत होता गाडी वराडीला पोचली तिथे अशोक्राथ याची भेट घेतली अनि पुढे रवाना झाले पूर्णता गुप्तता पाळण्यात आली त्यांनी आपले नाव महम्मद ठेवले होते दिल्ली मधील मोठे स्टेशन वगळून गेले इकडे घरी सुभाशबाबुनाबुंच्या खोलीतील जेवणाचे ताट तसेच राहिले होते मग सगळीकडे शोधाशोध सुरु झाली आणि दुसऱ्या दिवशी कोलकत्ता हिंदुस्तान मध्ये पहिल्या पानावर बातमी प्रसिद्ध झाली सुभाषबाबू यांचे काय झाले घरातून अनपेक्षित प्रयाण आणि सुभाषबाबू यांच्या जाण्याने संपूर्ण देशात थरार झाला. रवींद्रनाथ टागोर, आणि महात्मा गांधी यांच्या सारख्या मोठ्या व्यक्तींना चिंता लागून राहिली, तोपर्यंत एक विमा एजंट अशी ओळख सांगणारे सुभाषबाबू पेशावरला पोहचले. तिथून काबूलला जायचे होते त्यांनी भगतराम तळावर हा भारत नवजवान सभेचा कार्यकर्ता सुभाषबाबुना घेऊन पुढे निघाला सुभाष बाबुना पुश्तु भाषा येत नव्हती म्हणून त्यांनी मुक्याचे सोंग घेतले जे बोलायचे ते भगतरामणेच. सोबत अबदखानही होता ठिकठिकाणी ब्रिटीश छावण्या होत्या प्रत्येक ठिकाणी भगतराम आणि अबदखान उत्तरे द्यायचे. पूर्ण पुश्तु पोशाखातील सुभाषबाबू अगदी अस्सल पठाण दिसत होते आणि एक ठिकाण आले तिथे हिंदुस्थान ची सीमा संपली सुभाषबाबुनी त्याठिकाण ची माती कपाळाला लावली आणि पुढची वाट ते चालू लागले. कधी माल मोटारीतून तर कधी खेचरावरून तर कधी चालत असा खडतर प्रवास सुरु झाला असे करत करत ते अफगाणीस्तान ला पोहचले. एक टप्पा पूर्ण झला होता. संपूर्ण जगभर महायुद्धाचे वातावरण असल्याने सगळीकडे धोका दिसत होता म्हणून भगतराम ने रहमत खान हे नव धारण केले होते. तिथे सुभाषबाबु जर्मन वकालीत गेले हे सुभाषबाबु आहेत हे ऐकून जर्मन वकालीत आश्चर्य वाटले. पूर्वी सुभाषबाबु जर्मनीला गेले तेव्हा ते परराष्ट्रमंत्री यांना भेटले होते तो संदर्भ आला बर्लिन ला जायचे निश्चित झाले त्यांना तिकडे जायची व्यवस्था इटालियन वकालीतीकडून करणायत आली. यावेळी सुभाषबाबुनी नवीन नाव धारण केले. त्या नावाचे पारपत्र त्यांना देण्यात आले दोन दिवसाच्या प्रवासानंतर ते समरकंद ला पोहचले तिथुन मास्को, दोन दिवसांनी ते विमानाने बर्लिनला पोहचले. सुभाषबाबुनी त्याठिकाणी स्वतंत्र हिंदुस्थान केंद्र स्थापन केले. जर्मनीने दहा लाख मार्क्सचा धनादेश

K.G.D.L. College, Kundal, Tal. Palus, Dist. Sangli

आद्य समाजसुधारक राजाराम मोहन रॉय

प्रा. माणिकराव शामराव चव्हाण
सहाय्यक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, क्रांतिअग्रणी जी. डी. बापू लाड महाविदयालय, कुंडल

राजाराम मोहन रॉय यांना आधुनिक भारतीय विचारांचे जनक म्हणतात. ते अनेक बाबतीत सत्य आहे. देशातील सर्वांगीण लोक जागृतीसाठी त्यांनी एक नवा विचार व कार्य पद्धती समाजाला दिली. पाश्चिमात्य संस्कृती आणि भारतीय परंपरा यांचा मिलाप त्यांच्या विचारात आणि कार्य पद्धतीत पहावयास मिळतो. भारतात सामाजिक, धार्मिक, राजकीय अंगाची पुनर्रचना झाली पाहिजे आस त्यांनी नेहमी आग्रह धरला. बंगाल हे त्यांचे मूळ कार्यक्षेत्र पण नंतर संपूर्ण देशानेच त्यांचे पासून प्रेरणा घेतली. त्यांच्या नंतर देशात राजकीय व मवाळ आणि नेमस्त सुधारकांची एक प्रदीर्घ मालिकाच निर्माण झाली. नंतरच्या काळात भारतातील विचारवंताच्यावर राजाराम मोहन रॉय यांच्या विचारांची छाप पडल्याचे दिसते.

राजाराम मोहन रॉय यांचे अल्प परिचय

नवभारतातील पहिले महान सुधारक व ब्राह्मो समाजाचे संस्थापक राजाराम मोहन रॉय यांचा जन्म बंगालमधील राधानगर जिल्हा हुगळी या गावी एका कर्मठ ब्राह्मण कुटुंबामध्ये १७७२ मध्ये झाला. त्यांचे पणजोबा व आजोबा बंगालच्या नवाबाच्या दरबारात मोठ्या हुद्यावर होते. त्यामुळे नवाबाने त्यांना रॉय हा सन्मान दर्शक किताब दिला. ते रॉय हेच त्या घराण्याचे पुढे आडनाव झाले.

त्यांचे शिक्षण परंपरागत भारतीय पद्धतीनेच झाले परंतु त्यांनी बंगाली, फारशी, व संस्कृत या भाषांचे प्राथमिक शिक्षण घरीच घेतले व नंतर अरबी व फारशी भाषांचे उच्च शिक्षण त्यांनी पाटण्यास घेतले. पुढे बनारस ला जावून त्यांनी संस्कृत वेदपुराण याचा अभ्यास केला. तेव्हा जगात देव एकच असून निरनिराळे देव कल्पून वेगवेगळया मूर्तींची पूजा करणे हे केवळ अज्ञान आहे हि गोष्ट त्यांना कळून आली. हे घरातील लोकांना त्यांनी ज्यावेळी बोलून दाखवले त्यावेळी घरातील लोकांनी त्यांना घरातून बाहेर घालवले. त्यावेळी ते बौध्द धर्माचा अभ्यास करण्यासाठी तिबेट ला गेले, त्या निमित्ताने ते संपूर्ण भारतभर फिरले या प्रवासात त्यांना विविध अनुभव आले. इ.स. १८०५ मध्ये त्यांनी इस्ट इंडिया कंपनीत नोकरीस होते परंतु धार्मिक सुधारणाच्या कार्याने प्रेरित झालेल्या राजाराम मोहन रॉय यांचे नोकरीत मन रमले नाही. तेव्हा इ.स. १८१४ मध्ये त्यांनी नोकरी सोडली व ते कलकत्त्यास राहायला आले. व तेथे अनेक विद्वान मंडळीशी परिचय होवून ख्रिस्ती मिशन यांच्या धर्मविषयक कार्याने ते प्रभावित झाले. इ.स. १८१५ मध्ये राजाराम मोहन रॉय यांनी हिंदू धर्मात सुधारणा करण्यासाठी प्रयत्न सुरु केला. त्यासाठी त्यांनी प्रथम आत्मेय सभेची स्थापना केली. या सभेतूनच पुढे ब्राम्हो समाजाची स्थापना केली. आत्मीय सभेत माध्यम व कनिष्ठ वर्गाचे लोक होते. ब्राम्हो समाज एकच परमेश्वराची पूजा, बंधुभाव, आणि मानवता मानतो. सर्व धर्माबद्दल आदरभाव हे या धर्माचे वैशिष्ठ होय. रॉय यांनी मोठ्या जिद्दीने ब्राम्हो समाजाची शिकवण समाजापुढे मांडली. इ.स. १८१८ नंतर सतीच्या प्रथेविरुद्ध चळवळ सुरु केली या शिवाय पडदा पद्धत व विधवा पुनर्विवाह व स्त्रियांच्या महाविद्यालयीन शिक्षणाला त्यांनी प्रोत्साहन दिले.

धर्मविषयक विचार

राजाराम मोहन रॉय यांचे धर्म विषयक विचार अनेक धर्माच्या अभ्यासातून घडलेले होते. कुराणातील एकेश्वरवादाची संकल्पना त्यांना विशेष आवडे शिवाय आध्यामिक ते उपनिषदातील अदैत्ववादाकडे आकर्षित झालेले होते. तत्वज्ञानाच्या क्षेत्रात आणि तत्वमिमांसेच्या काळातील परंगतेचा अभाव यामुळे राजाराम मोहन रॉय अदैत्ववाद आणि एकेश्वरवाद यातील भेट सूक्ष्मपणे जणू शकले नाहीत.

ईश्वरविषयक संकल्पना -

ईश्वराचे स्वरूप स्पष्ट करणे हे कठीण काम आहे असे ते म्हणतात. ते मानवी आकलन शक्तीच्या पलीकडे आहे. ईश्वर हे एक चिरंतन अपराजित आणि अनाकलनीय असे अस्तित्व असून तेच संपूर्ण विश्वाचे निर्माण करते व रक्षणकर्ते आहेत. ईश्वराचे रूप अवर्णनीय आहे असे आम्ही म्हणतो तेव्हा त्याचे स्वरूप मानवी आकलनशक्तीत येत नाही. एवढाच याचा अर्थ जड अस्तीत्वात घडामोडीतून या अलौकिक शक्तीच्या अस्तित्वाची आम्हास सदैव प्रचीती येते. झाडांच्या पानासारखा क्षुल्लक वस्तूची रचना आणि त्याची वाढ या गोष्टी सुद्धा ईश्वराच्या अस्तित्वाची साक्ष देऊ शकतात. ईश्वर हा एकच आहे तो सर्वव्यापी असून विश्वाचे नियंत्रण करतो. हे विश्व जसे अफाट आहे आणि त्याच्या रचनेत जसे आरपार कौशल्य आहे त्याच प्रमाणे त्याच चैतन्य देणारा आत्मा हि अनंत आणि परिपूर्ण असला पाहिजे. राजाराम मोहन रॉय यांच्या ईश्वर विषयक या संकल्पनेत अदैत्ववाद आणि एकेश्वरवादाचा मिलाप स्पष्टपणे पहावयास मिळतो.

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

Peer Reviewed And Indexed Journal

ISSN 2349-638x

Impact Factor 7.149

Website :- www.aiirjournal.com

K.G.D.L. College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

Theme of Special Issue

Trends, Challenges and Issues in The Science, Social Science and Languages for Social Welfare

Chief Editor

Mr. Pramod P. Tandale

Guest Editor

Dr.D.G.Kanase

Principal,

Dr.Patangrao Kadam Mahavidyalaya , Sangali

Member Management Council, Shivaji University, Kolhapur

Executive Editor

Dr.N.V.Gaikwad

Head, Department of Geography,

Dr.Patangrao Kadam Mahavidyalaya , Sangali

Sr.No.	Name of the Aurhor	Title of Paper	Page No.
36.	Mrs. Surekha Amar Sangrulkar	Innovation In E- Banking Services In India- Use Of Various E-Modes	164
37.	Dr. Madhuri Chougule	Dr. B. R. Ambedkar's Vision On Gender Equality : Relevance In The Present Indian Society	167
38.	D. P. Patil	Application Of Sawi Transform In Bessel Functions	171
39.	Akshatha Paranjyothi Kumar	Health Issues Of Transgender- A Sociological Study	176
40.	Dr.Hameed Basha.B	Relook On Subaltern Studies And Decolonisation Historiograhy	179
41.	Ashok R.Herwade	Digital Marketing And Its Benefits	183
42.	Kishor N. Desai	Application Of Smart M-Libraries With Reference To Mobile Technology In Library After Covid-19	188
43.	Dr. Ajit Ashte	Social And Economic Development Of India	192
44.	Dr. Prakash Ratanlal Rodiya	Economic Growth Of India-Problems And Challenges	196
45.	Devendra Pareek	Presence Of Humidity In Atmosphere Of The Earth And Variation Of Secondary Gamma Radiation Flux At Udaipur, India	200
46.	Dr.S. Sridhar	Emerging Trends In Archeology: Special Refrence To Hero Stones	203
47.	Dr. Shankar Ambadas Gavali	Dr. B. R. Ambedkar's P.E.S. : An Epitome Of Social Transformation	208
48.	Prof. Sharmin Shaukat Ghare	A Study Of Impact Of Technology On Employment	212
49.	Gauri Shahane, Ashwini Khalkar And Prakash Kokate	Ecochemistry Of The Aquatic Snail Indoplanorbis Exustus Acting As Host For Trematode Parasites.	216
50.	Ms. Krishna Ashutoshbhai Vyas	An Analysis Of Financial Soundness Of Selected Printing And Publishing Companies In India – An Empirical Study"	222
51.	Anagh	Informal Workers: The Omitted Category In The Economy	226
52.	Mr. N. V. Gaikwad	The Study Of Correlation Between Sugarcane Landuse And Human Population In Solapur District	229

Application of Smart M-Libraries With Reference To Mobile Technology in Library after COVID-19

Kishor N. Desai
Affiliated to Shivaji University, Kolhapur.
Librarian, Krantiagrani G.D. Bapu Lad Mahavidyalaya, A/P-Kundal
,Tal-Palus, Dist-Sangli.Pin-416 309
Email-kishor.desai007@gmail.com,

K.G.D.L. College, Kund, Tal. Palus, Dist. S

Abstract:-

As increasing number of patrons have their own browser equipped mobile devices, such as PDA's and mobile phones, it is becoming necessary for the librarians to provide innovative library services of the new century, for their patrons to access on-the-go. The paper aims to present same of the M-Library services and approaches, in order to equip with an understanding of Mobile Digital Librarianship. Overall, the article gives an outlook for possible services in mobile revolution. Libraries have always set an example in experimenting with new technology developments, whether it is automation or adopting other information and communication technologies to improve their services.

Keywords: *- Library services, mobile devices, information services, instant messaging, SMS, alerts, e-learning, e-resources, Mobile OPAC, Virtual Reference Service. M-Library Services.*

Introduction:-

In this telecommunication environment, recent penetration of mobile revolution is remarkable. Information access is increasingly shifting away from the desktop into mobile environment. Lots and lots of people started accessing web content from handheld portable devices instead of using traditional laptop or desktop. This shift caused a new buzzword as 'M-Revolution'. Libraries started exploring mobile devices as way to connect with patrons. Creating library application ("app") or mobile website that allows patrons to access library hours, view their library account or even search databases is easier.

Advantages of Mobile Technology for Library User:-

- ✓ 24/7 access to information, E-Library, E-Books, and E-Journals.
- ✓ Access to information anywhere, no demographic boundary.
- ✓ Instant delivery of e-mail or SMS which facilitates virtual reference service.
- ✓ Relatively inexpensive opportunities, as the cost of mobile services are significantly less than PCs and laptops.
- ✓ Can store hundreds/thousands of E-books on Smartphone.
- ✓ Potentially a more rewarding learning experience.
- ✓ Improving levels of literacy, numeracy and participation in education amongst young adults.
- ✓ Using the communication feature of mobile phone as part of larger learning activity, e.g.: sending media or texts into central portfolio, or exporting audio/video/text files from a learning platform/Library website to your phone.

Challenges in Mobile Technology for Library Services:-

- ✓ Connectivity and battery life
- ✓ Screen size
- ✓ Bandwidth for nonstop/fast streaming
- ✓ Number of file/formats supported by specific device
- ✓ Content security or copyright issue from authoring group
- ✓ Multiple standards, multiple operating systems
- ✓ Limited memory
- ✓ Accessibility and cost barriers for end users: Digital divide.

Peer reviewed Journal Impact Factor: 7.265 ISSN-2230-9578

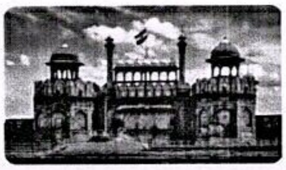

Journal of Research and Development

A Multidisciplinary International Level Referred Journal

April-2021 Volume-11 Issue-8

Recent Trends in Social Sciences

Chief Editor
Dr. R. V. Bhole
'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot No-23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.)

Guest Editor
Dr. R. B. Chougule
I/C Principal,
Kankavli College, Kankavli,
(Maharashtra)

Executive Editors
Dr. S. N. Patil
Dr. R. A. Mumbarkar
Mr. Y. V. Mahalinge

Co- Editors
Dr. S. D. Kadam
Lt. (Dr.) B. L. Rathod
Mr.T.N.Jaykar

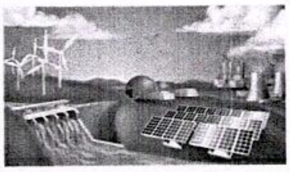

K.G.D.L. College, Kundal
Tal.Palus, Dist.Sangli

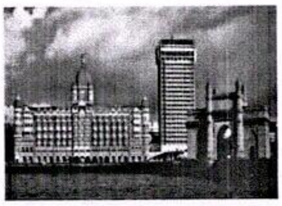

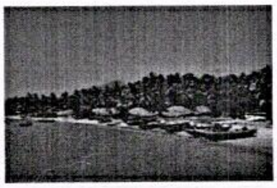

Address
'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot, No-23,
Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

CONTENTS

Sr. No.	Paper Title	Page No.
1.	Significance of ICT in Teacher Education **Dr. S. Tephillah Vasantham**	1-2
2	The Geographical Analysis of Rural Settlements Name Associated with Physical and Cultural factors in Daund Tahsil, Pune District.(M.S.) **Mr. Parkhe Sakharam Baban, Dr. Chimangunde Vishavraj S.**	3.-6
3	Global Climate Change and It's Social, Economic and Environmental Consequences **Sunil S. Gavit**	7-9
4	A Brief Study on Dalit Feminism in Baby Kamble's The Prison We Broke **Dr. Bharat Arvind Tupere**	10-11
5	Women Empowerment: An Essential Way to Achieve the Goal of Social Development **Mr. Sachin Kumar, Ms. Chetna Suri, Ms. Poonam Pandita**	12-14
6	Impact of COVID 19 On E Commerce in India **Dr. C. S. Kale**	15-18
7	Trends in Balance Sheet of Fish Processing Industry in Maharashtra **Dr. R. V. Thoke**	19-21
8	Rural Development through SGSY in Sindhudurg District **Prof. B. H. Chaugule**	22-23
9	An overview of Open Access e-Resources: An academic Perspective **Sanjay Deoram Mahajan, Sambaji Pundalik Vyalij**	24-26
10	Economics of Information **Dr. Santosh M. Motegaonkar, DR. Shivaji N. Thoke**	27-30
11	Problems of Tourism Development in Sindhudurg **Prof. Dr. Babasaheb Vithoba Mali**	31-34
12	Study of Changing Customer Behaviour in Palus Taluka **Dr. Pravinkumar Bharatkumar Lupane, Mr. Sunil Rajaram Jadhav**	35-38
13	Roles of Extension in Krishi Vigyan Kendra (KVK) **Dr. Rahul N. Surve**	39-41
14	Eradication of Female Foeticide and Infanticide Through Cradle Baby Scheme in Villupuram District **Dr.Hameed Basha.B, Ms. S. Subitha**	42-44
15	Biodiversiy in the Western Ghats of Karnataka **Dr. Prakash B. Holer**	45-48
16	Social Study of Baby Kambles 'Prison We Broke' **Dr.R.B.Chougule**	49-50
17	Information Revolution and Changing Character of International Relations **Dr. Badruddin**	51-53
18	Digital Marketing and User Satisfaction: A Research Framework **M.S.Tanawade, S.M.Mallade**	54-58
19	The Rise of Reformation towards Journals and Literature in Tamil Nadu **Dr. A. Rajaram**	59-61
20	Genesis of Female Education in India During Colonial Period **Dr. K. Govindaraj**	62-64
21	Effects of Ladder Training on Selected Motor Fitness Variables Among Water Polo Players **Dr. Pravin Lamkhade**	65-67
22	E-commerce in India: Challenges and Opportunities **Dr. Vilas B. Zodage**	68-71
23	Well-being and Inequality: A Study in Indian States during 2000-2010 **Dr. Debottam Chakraborty**	72-76
24	Force of Retrenchment on Staffs Morale in Private Arts and Science Colleges at Kanyakumari District **Dr.G.Rajesh Babu**	77-81
25	Natural Language Processing for Enhancing Education **Prof Yaseera Tausif Nevrekar, Prof Arun Shaikh**	82-85
26	Glorification of Women in Sangam Age: A Study Throgh Sangam Literature **Dr.S.Sridhar**	86-88
27	Event Management **Mr. S.C.Dudhal**	89-91
28	Employment Generation by Hotel Industry with Special Reference to Sindhudurg District **Sumedha Naik**	92-95
29	Guava Farming in Mouje Umalwad Village: A Microlevel Analysis **Anita Magadum, Ratan.V. Hajare**	96-98
30	Recent Trends of Rural Education in India **Dr. Anand A.1 Muley, Prof. Rupali Petkar**	99-101

K.G.D.L. College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

Study of Changing Customer Behaviour in Palus Taluka

Dr. Pravinkumar Bharatkumar Lupane1 & Mr. Sunil Rajaram Jadhav2
1Asst. Professor, Krantiagrani G. D. Bapu Lad Mahavidyalaya, Kundal
2.Asst. Professor, Krantiagrani G. D. Bapu Lad Mahavidyalaya, Kundal

Abstract

India is among one of the fastest growing economies with an impressive average growth of over 7.4% Gross Domestic Product (GDP) for the last five years. Over the next two decades, India is going to become fifth largest customer market from its present twelfth position and overtakes Germany to be behind the US, Japan, China and the UK. The noticeable structural shifts in consumption pattern, changing lifestyles, eating and food habits have also immensely contributed to the growth and development of Indian retailing. According to A T Kearney's Global Retail Development Index (GRDI) Report -2015, the Indian retailing is estimated at USD $ 410 billion in 2015, which grew from $ 120 billion in 2010. Customer is that basic foundation of every business. Customer behaviour refers to the act of individuals who are directly involved in obtaining and using goods and services. It also includes the decision-making process which leads to the act of purchase. The main purpose of the study is to find out the current performance of the Kirana shops in and around Plaus taluka of Sangli district (Maharashtra). An attempt is made to find out the impact of organized retailing such as local bazaars, supermarkets on unorganized retailers who deals with food and grocery and to what extend they provide customer satisfaction.

Key Words: *Rural, Retailing, Customer Behaviour, Kirana Shops, Bazaars*

Introduction:

The Indian economy has witnessed phenomenal growth during the last decade. The country posted positive growth even during the recent economic slowdown. India is among one of the fastest growing economies with an impressive average growth of over 7.4% Gross Domestic Product (GDP) for the last five years. The real Gross Domestic Product (GDP) stood at 6.9% in 2009- 2010. Over the next two decades, India is going to become fifth largest customer market from its present twelfth position and overtakes Germany to be behind the US, Japan, China and the UK. That real consumption would grow from current Rs 17 trillion to Rs 70 trillion by 2025. The noticeable structural shifts in consumption pattern, changing lifestyles, eating and food habits have also immensely contributed to the growth and development of Indian retailing. The fastest growing retail sector in Indian economy is expected to be dynamic and sales are expected to follow an upward trajectory with 8% constant value CAGR (Compound Average Growth Rate). According to A T Kearney's Global Retail Development Index (GRDI) Report -2015, the Indian retailing is estimated at USD $ 410 billion in 2015, which grew from $ 120 billion in 2010. It reveals that the growth in the retail sector has grown by around 4 times. Similarly the organized retail is estimated at USD 20 billion in 2015 which has grown about 35 times from USD 0.6 billion in 2010.Customer is that basic foundation of every business. What customer sees, thinks, prefers and buys is of great importance to marketers to fine tune their marketing offers and achieve high level of customer acceptance and satisfaction. Customer behaviour refers to the act of individuals who are directly involved in obtaining and using goods and services. It also includes the decision-making process which leads to the act of purchase. Customer behaviour is not only the study of what people consume but also 'where', 'how often' and 'under what conditions'. Customer behaviour has no history or body of research of its own.

Objectives:

1. To study the growth and development of Kirana Shops and Supermarkets in Palus taluka in Sangli district (Maharashtra).
2. To examine the effect visit, monthly income, purchase volume and various reasons affected on changing customer behaviour.

Research Methodology:

Researcher has taken 5 villages according to direction in the study area and 100 customers in those 5 villages randomly. 'Descriptive Research Method' has been used in the present study. Descriptive studies are designed to obtain pertinent and precise information concerning the current status of phenomena and whenever possible, to draw valid general conclusions from the facts discussed. The main purpose of the study is to find out the current performance of the Kirana shops in and around Palus taluka of Sangli district. An attempt is made to find out the impact of organized retailing such as local bazaars, supermarkets on unorganized retailers who deals with food and grocery and to what extend they provide customer satisfaction.

Table No. 1: Number of Kirana shop, Bazaars, Population and Samples selected

Village	Direction	No. of Kirana shops	No. of Bazaars	Population	No. of customers taken
Palus Taluka		**396**	**133**	**351,506**	**100**
Chinchani	East	28	04	8,383	17
Ankalkhop	South	34	05	10,477	22
Kundal	Central	25	03	11,328	24
Takari	West	29	07	13,581	28
Borgaon	North	12	07	4,088	09
Total		**128**	**26**	**47,857**	**100**

K.G.D.L. College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

Sr. No.	Auther Name	Title of Article	Download
15	Dr. Vikas B. Suryawanshi	Mass Spectral Fragmentation Patterns of (E)-2-(((4-((4-aminophenyl)sulfonyl)phenyl)mino)methyl)phenols.	(uploads/Articles/2021/05/5112_15.Dr. Vikas B. Suryawansh
16	Dr. Sunita Shankarrao Shinde & Mr. Dnyaneshwar Deeliprao Fajage	A Geogaraphical Anilasis on Covide 19 Pandimic in Maharashtra	(uploads/Articles/2021/05/5113_16.Dr. Sunita Shankarrao SI
17	S. L. Nalawade & A. M. Joshi	Linux: An Open Source Technology Tool	(uploads/Articles/2021/05/5114_17.S. L. Nalawade2.pdf)
18	Dr. Hari Krishna Shriwas	Applied Aspect of Fatal Signs in Complexion and Voice	(uploads/Articles/2021/05/5115_18.Dr. Hari Krishna Shriwas
19	Dr. Rajendra V. Deshmukh	Effect of Yogasan & Pranayam on Physiological Variables (Bmi, Whr Cardiovascular Endurance) on Teenage Boys Students	(uploads/Articles/2021/05/5116_19.Dr. Rajendra V. Deshmul
20	Dr. Hari Krishna Shriwas	Applied Aspect Of Trividha Roga Vishesha Vijnaniya Vimana Adhyaya : A Review	(uploads/Articles/2021/05/5117_20.Dr. Hari Krishna Shriwas
21	Dr. Kiran Kumar P.	Women Entrepreneurship In India: Issues, Challenges And Ways Forward	(uploads/Articles/2021/05/5118_21.Dr. Kiran Kumar P..pdf)
22	Vd. Vitthal Vasant Birajdar & Vd. Archana Kulkarni	Assessment of Age Factor in Patients of Ekakustha W.R.T Psoriasis Through Observational Study	(uploads/Articles/2021/05/5119_22.Vd. Vitthal Vasant Birajd
23	Dr. Hari Krishna Shriwas	Applied Aspect of Sadyomaraneeya Indriya Adhyaya	(uploads/Articles/2021/05/5120_23.Dr. Hari Krishna Shriwas
24	Sunil D. Kamble	Shakher Joshi Ke Kahaniyo me Chitrit Pahadi Ewa Gramin Samaj Jeevan me Aadhunik Bodh	(uploads/Articles/2021/05/5121_24.Sunil D.Kamble.pdf)
25	Dr.B.P.Singh & Sunil Kumar Shukla	Amarkantak Paryatan Sthal Ek Bhougolik Vishleshan	(uploads/Articles/2021/05/5122_25.Dr.B.P.Singh & Shukla.pc
26	Pankaj Yadav	Dr.Jaiprakash Kardam Ke Sahitya me Stri-Vimarsh	(uploads/Articles/2021/05/5123_26.Pankaj Yadav.pdf)
27	Dr.Balaji Bhure	Akal Mrutu Kahani Ke Bahane Bacho ka Asamaik Prodhatwa	(uploads/Articles/2021/05/5124_27.Dr.Balaji Bhure.pdf)
28	Anand Kumar Singh	Janjatiyome Shiksha Ki Pragati ka Vishleshanatmak Adhyan (Riwa Zile ke Vishash Sandarbha me)	(uploads/Articles/2021/05/5126_28.Anand Kumar Singh.pdf)
29	Dr. Vijaysingh Thakur	Stri Vimarsh - Vimarsh ki Nai Dharna	(uploads/Articles/2021/05/5127_29.Dr.V.C.Thakur.pdf)
30	Dr.S.P.Shukla & Nikita Jaiswal	Staniya Prashasan me Sushasan Ka Mulyakan (Suchana Ke Aadhikar Ke Sandarbh Me)	(uploads/Articles/2021/05/5128_30.Dr.S.P.Shukla & Jaiswal.
31	Anand kumar Singh	Janjatiyome Shiksha ke Prachar- Prasar me Shaskiya Yoajna Ka Mulyakan (Reva Zile ke Vishesh Sandarbh Me)	(uploads/Articles/2021/05/5129_31.Anand Kumar Singh.pdf)
32	Dr.Sahrath Bhise	Wanwa : Ek Bhougolik Abhas	(uploads/Articles/2021/05/5130_32.Dr.Dashrath Bhise.pdf)
33	Dr.Nitin Jadhav	Balak Va Mahilanche Manvi Hakka	(uploads/Articles/2021/05/5131_33.Dr.Nitin Jadhav.pdf)

K.G.D.L. College, Kundal Tal.Palus, Dist.Sangli

VOL- VIII ISSUE- IV APRIL 2021 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 7.149 ISSN 2349-638x

Linux: An Open Source Technology Tool

S. L. Nalawade1,
A. M. Joshi2
1 Assistant Professor, Department of Computer Science, K.G.D.B.L.M., Kundal, Maharashtra, India
2 Assistant Professor, Department of Computer Science, K.G.D.B.L.M., Kundal, Maharashtra, India

Abstract –

The dynamic and responsive nature of 'open source' software and the existence of freely available documentation and online communities offers an opportunity for educators, network administrators and software developers to participate in the development of resources appropriate to local needs while developing their own skills.

In this paper we study the history of open source, learning using open source technology and digitization education tools through various sectors like courseware, smart class, education portals and virtual university. In this paper we can discuss the impact of open source system tools through services and problems on learning management in education as well as Use of various open source management tools to create and manage learning content on the web. In this paper we also move towards student centered learning in creating blogs and other interactive web applications to enhance peer communication in and outside the classroom.

Educational institutions have rushed to put their academic resources and services online, bringing the global community onto a common platform and awakening the interest of investors. Despite continuing technical challenges, online education shows great promise. Open source software offers one approach to addressing the technical problems in providing optimal delivery of online learning.

Keywords- Open Source, Technology, Education, Digitization, Learning Management tools.

I. Introduction

Many features distinguish open source software from closed or proprietary software. The Open Source Initiative (OSI) has set a standard—the "open source definition"—by which software qualifies for an open source license.[1]

The software must meet the following criteria:

- Unrestricted distribution. Users can distribute or sell the software without paying royalties.
- Source code distribution. The source code of the entire open source product must be easily modifiable. In the absence of the source code, the product must cite a low- cost resource where users can obtain it.
- Modifications. The license allows modifications, and its terms remain unchanged for distribution of improved versions.
- Author's source code integrity. If the license allows patch file distribution along with the original source code, a user cannot modify the code and distribute it2 except by giving the new version a new name.
- No personal discrimination. No person or group shall be discriminated against during open source product distribution.
- No restriction on application. Open source software can be used in any field and for any purpose.
- License distribution. The privileges attached to the original program extend to all who receive the program, so recipients do not need to apply for a separate license.
- License must not be product-specific. The rights associated with a license extend to products extracted from larger software aggregate.
- No restriction on other software. No restrictions are allowed on distribution of

K.G.B.L. College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

Aayushi
International Interdisciplinary
Research Journal
(http://www.aiirjournal.com)

Impact Factor
7.149

[ISSN 2349-638X]
PEER REVIEW JOURNAL
(+91) 9922455749 | (+91) 8999250451

MENU

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

[ISSN 2349-638X]

VOLUME 8 | ISSUE 04 | APR | 2021

Sr. No.	Auther Name	Title of Article	Download
Index	Admin	Index File	(uploads/Articles/89_April 2021 Index with cover.pdf)
1	Dr. Sangita Mangesh Khadase	Role of Yogasanas and Pranayam on the Physiological Fitness of Senior Citizen during Covid -19 pandemic lockdown	(uploads/Articles/2021/04/5098_01.Dr. Sangita Mangesh Kha
2	Kaur Parneet	Social Features of Working Women of Fazilka District of Punjab: A Sociological Study	(uploads/Articles/2021/04/5099_02.Kaur Parneet.pdf)
3	Dr. Mangesh G. Mundhe & Dr.Dhate R.H. & Dr. Gunale Ravindra	Study Effect Of Chaturbij Churna In Sutika Awastha In First Week	(uploads/Articles/2021/04/5100_03.Dr. Mangesh G. Mundhe
4	Vda.Asmita S. Yesane	Use of Katu Taila in Paediatric Spleenic Disorders	(uploads/Articles/2021/04/5101_04.Vda.Asmita S. Yesane.pd
5	Vd.Neha Madhukar Pawar & Vd.Archana Kulkarni	Shatkriyakala	(uploads/Articles/2021/04/5102_05.Vd.Neha Madhukar Pawa
6	Anuradha D. Pawar	Analysis of Physicochemical Parameter, Heavy Metals and Micronutrients of Soil Sample of Kundal Village, Sangli District, Maharashtra	(uploads/Articles/2021/04/5103_06.Anuradha D. Pawar.pdf)
7	S. L. Nalawade & A. M. Joshi	A Literature Review: Data Mining Techniques, Applications & Issues	(uploads/Articles/2021/04/5104_07.S. L. Nalawade1,.pdf)
8	Dr. Manjula. G. K.	Women Entrepreneurs in Belgaum District	(uploads/Articles/2021/04/5105_08.Dr. Manjula. G. K..pdf)
9	Dr. K. H. Kulkarni	Effective Teaching Learning Outcomes Through The Teacher Education	(uploads/Articles/2021/04/5106_09.Kulkarni K.H..pdf)
10	Dr. N.S. Jadhav	Uses of ICT Tools in Assessment	(uploads/Articles/2021/04/5107_10.Dr. N.S. Jadhav sir.pdf)
11	Dr Archana Bobade	Major Themes in Alice Walker's The Color Purple	(uploads/Articles/2021/04/5108_11.Archana Bobade.pdf)
12	Dr. Umesh Vithalrao Kadu	Alienation, Globalisation Self Realisation & Hybridization In Kiran Desais	(uploads/Articles/2021/04/5109_12.Dr. Umesh Vithalrao Kad
13	Dr. Manjula. G. K.	Women Entrepreneur- In Indian Perspectives	(uploads/Articles/2021/04/5110_13.Dr. Manjula. G. K..pdf)
14	Shashanka Sekhar Roy	National Service Scheme (NSS): A Youth Development Programme in Higher Education	(uploads/Articles/2021/04/5111_14.Shashanka Sekhar Roy.p

K.D.L. College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

A Literature Review: Data Mining Techniques, Applications & Issues

S. L. Nalawade[1],
A. M. Joshi[2]
[1] Assistant Professor, Department of Computer Science, K.G.D.B.L.M., Kundal, Maharashtra, India
[2] Assistant Professor, Department of Computer Science, K.G.D.B.L.M., Kundal, Maharashtra, India

Abstract

Data mining is a process which finds useful patterns from large amount of data by turning collection of data into knowledge. The concept of data mining is center of attraction for the users because of many factors as high availability of data which needs to be converted from masses of data to useful information. Data mining as a tool was used to tackle the situation. Data mining is considered as stepping stone to procedure of knowledge discovery in databases; this is a procedure of extracting hidden information from enormous set of databases to excavate eloquent patterns and rules. This article provides an analysis of the available literature on data mining as well as some techniques, applications related to it have also been illustrated.

Keywords*: Data Mining, Data mining techniques, Knowledge discovery in database, Knowledge base, Clustering.*

1. Introduction

Data mining involves discovering novel, interesting, and potentially useful patterns from large data sets and applying algorithms to the extraction of hidden information. Many other terms are used for data mining, for example, knowledge discovery (mining) in databases (KDD), knowledge extraction, data/pattern analysis, data archeology, data dredging, and information harvesting [1]. The objective of any data mining process is to build an efficient predictive or descriptive model of a large amount of data that not only best fits or explains it, but is also able to generalize to new data [2]. Based on a broad view of data mining functionality, data mining is the process of discovering interesting knowledge from large amounts of data stored in either databases, data warehouses, or other information repositories.

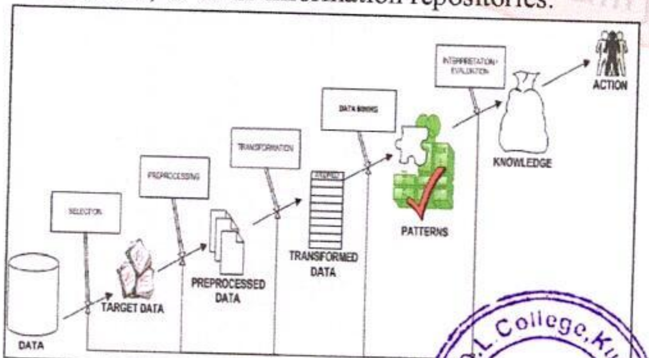

Figure 1. Knowledge Data Mining

K.D.L. College, Kundal
Tal.Palus, Dist.Sangli

The Knowledge Discovery in Databases process comprises of a few steps leading from raw data collections to some form of new knowledge. The iterative process consists of the following steps:

Data cleaning –In this step, the noise and inconsistent data is removed.

Data Integration – In this step, multiple data sources are combined.

Data Selection – In this step, data relevant to the analysis task are retrieved from the database.

Data Transformation – In this step, data is transformed or consolidated into forms appropriate for mining by performing summary or aggregation operations.

Data Mining – In this step, intelligent methods are applied in order to extract data patterns.

Pattern Evaluation – In this step, data patterns are evaluated.

Knowledge Presentation – In this step, knowledge is represented to the user. [3].

2. Review of Literature

Swati N & Dr. R.V. Kulkarni(2015)[13] This paper is used to check relationship between the number of blood donors of a particular age and blood group as well as blood group of donors and disease. The purpose of this work is to analyze a data to extract knowledge of blood donor's association to aid clinical decisions in blood bank center. This study utilized real world data collected from blood

Peer reviewed Journal Impact Factor: 7.265 ISSN-2230-9578

Journal of Research and Development

A Multidisciplinary International Level Referred Journal

April-2021 Volume-11 Issue-11

Recent Trends in Social Sciences

Chief Editor
Dr. R. V. Bhole
'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot No-23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.)

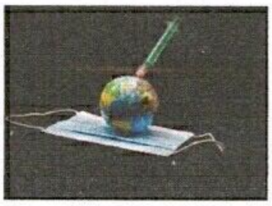

K.G.D.L. College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

Address
'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot, No-23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

CONTENTS

Sr. No.	Paper Title	Page No.
1	Study of Biodiversity of Phytoplankton and Zooplankton of A Fish Culture Pond and Wild Village Pond of Bhilawadi in Sangli District MS **Rakshanda. L. Shinde, Swpnali. B. Lad**	1-5
2	Physico-Chemical Characterization of Farmland Soil in Some Villages of Palus Taluka, Dist. Sangli (Maharashtra) **Dhanashri V. Bandgar, Urmila V. Bandgar**	6-7
3	Studies of Physicochemical Parameters to Assces the Water Quality of River Yerrala for Drinking Purposes in Palus and Khanapur Tehsil (Sangli Distra) **Kamble P. D, Lad S. B., Suryawanshi P.T.**	8-11
4	Physico-Chemical Analysis of Borewell Water Samples of Palus Taluka Dist-Sangli, MS, India **Urmila V.Bandgar, Dhanashri V. Bandgar**	12-14
5	Investigation of Antioxident Activity and Total Phenolic Content in Red Raspberry **Rakshanda. L. Shinde**	15-16
6	Impact of Saltwater Intrusion on the Agricultural Land of Coastal Tract: An Investigation Along Malvan Coast, Maharashtra **Nilesh.K. Susware, Jagdish B. Sapkale, Balu L.Rathod, Vinaya N. Susware**	17-20
7	The study of natural Symmetry of dihedral group (D_n) **Namrata. N.Patil, Rakshanda. L. Shinde**	21-28
8	Management and Performance of States in Sustainable Development Goals (SDG): An Analysis **Mr. Aditya Rajendra Ankush**	29-31
9	An Analysis of Data Visualization Methods and Techniques in MS Excel **Rituja Ravindra Vyapari**	32-35
10	Exploring Dalit Consciousness in Baby Kamble's The Prisons We Broke **Dr. Shivaji D. Sargar, Navale Dattatray Prabhakar**	36-37
11	History of Indian Cinema and Women's portrayal **Farheen Tai**	38-41
12	Challenges and Opportunities in the Sustainable Agriculture Development in India **Dr. Ashok Shamrao Patil**	42-45
13	Comparative Thermal Analysis Studies on Gel Grown Crystals of Li, Cu and Mixed Li-Cu tartrate **Dadaji V. Sonawane**	46-48
14	Recent Trends, Methods and Problems in Geographical Education **Dr. Jadhav Hanumant Lahu**	49-50
15	Education is the Key of Sustainable Development for Future **Mr. Suresh Ragho Pagar**	51-53
16	Service Industry - Opportunities Challenges and Recent Initiatives in India **Dr. G. M. Hugar**	54-56
17	"Jhansi Rani of Travancore": Assessing the Pioneering Contributions of Accamma Cherian to the Nationalist Movement in Travancore **Abhishek Abraham Mathews**	57-59
18	Ecommerce Testing **Mr. Dnyaneshwar Fairrao Pathrikar, Mr. Dattatraya Bhikaji Raymal, Mr Hushikesh Rajendra Lahane**	60-62
19	Technological Revolution: The Future of Agriculture **Mr. Shivaling B. Rajmane**	63-64
20	Economic Empowerment of Women in India **Mr. Manish Annasaheb Maske**	65-67
21	The Role Employee Participation in Human Resource Development **Prof. Deepali R. Chandramore**	68-70
22	Geographical Study of Tribal Main Workers in Nashik District, Maharashtra **Rajendra S. Pawar**	71-74
23	An Overview of Digital Revolution for Implementing the New Trends of Online Marketing **Dr. Arti C. Lokhande**	75-76
24	Over The Top (OTT) Platforms In India: Issues And Challenges - An Empirical Study **Sujith.T.S, Dr.M.Sumathy**	77-78
25	The Geographical Study of Rural Settlements Size in Daund Tahsil, Pune District(MS) **Mr. Parkhe Sakharam Baban, Dr. Chimangunde Vishavraj S**	79-82
26	Importance of E-Resources: Issues and Challenges ***Mrs. Rakte Jyoti Bhausaheb***	83-86
27	Importance Enterprise Resource Planning (ERP) in Business: A Study ***Gourab Das, Subrata Das***	87-90
28	Feature Based distance Measurement Approach for Detection, Verification and Authentication of Individual **Ghuge Vijaymala Tanaji**	91-95

K.G.D.L. College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

'Journal of Research & Development'
A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal,
Impact Factor 5.13, ISSN: 2230-9578, April-2021, Volume-11, Issue-11

Study of Biodiversity of Phytoplankton and Zooplankton of A Fish Culture Pond and Wild Village Pond of Bhilawadi in Sangli District MS

Rakshanda. L. Shinde[1] Swpnali. B. Lad[2]
[1,2]Krantiagrni G. D. Bapu Lad Mahavidhaylaya, Kundal.
Email id- Swapnali5lad@gmail.com

Abstract:

Study of biodiversity of phytoplankton and zooplankton of a fish culture pond and wild village pond of Bhilawadi in Sangli District Maharashtra form (January to April 2021).were total of three classes of phytoplankton and three classes of zooplanktons were recorded which contain 06 phytoplankton and 11 zooplankton species form both P1 and P2 .P1 richer in zooplankton and P2 was richer in phytoplankton .An inverse relationship was observed between Phytoplankton and zooplankton abundance.

Key words: *diversity, phytoplankton, zooplankton, fish culture pond and wild villagepond.*

Introduction: The plankton community is composed of phytoplankton (primary producers) and zooplankton (secondary producers). The phytoplankton presents biological wealth of the water body and form the base of food chain in ponds (Pokorny et al 2005). Zooplankton is a principal component of food for omnivorous fish that are usually farmed in extensive aquaculture (Brummett and Noble, 1995). Ekelemu (2010) emphasized on the fact that zooplankton is very important in the food web of open water eco system. Damle and Chari (2011) observed that lack of zooplankton caused poor survival of spawn in nursery ponds. The zooplankton is commonly divided to following groups Rotifers (Rotatoria), Cladocerans (Cladocera) and Copepods (Copepoda). Composition of zooplankton is in close relation to farmed fish and the presence of suitable zooplankton species is essential for successful farming (Kalous et al 2009). Abundance of planktons supported large population of fish species, Jhingran (1991) reported that organic manuring results higher zooplankton densities in the ponds. Hence, it can be concluded that zooplankton population improved with the application of the manure maintaining the water quality favourable for fish production. Poultry manures was found to release soluble salts continuously, resulting in high production of zooplankton (Gaur and Chari, 2007). Sasmal et al (2008) suggested that duck excreta was good source of nutrients, easily soluble in water and available for plankton production. In the present study provide information on study diversity of zooplankton and phytoplankton a fish culture pond and wild village pond of Bhilawadi in Sangli District Maharashtra.

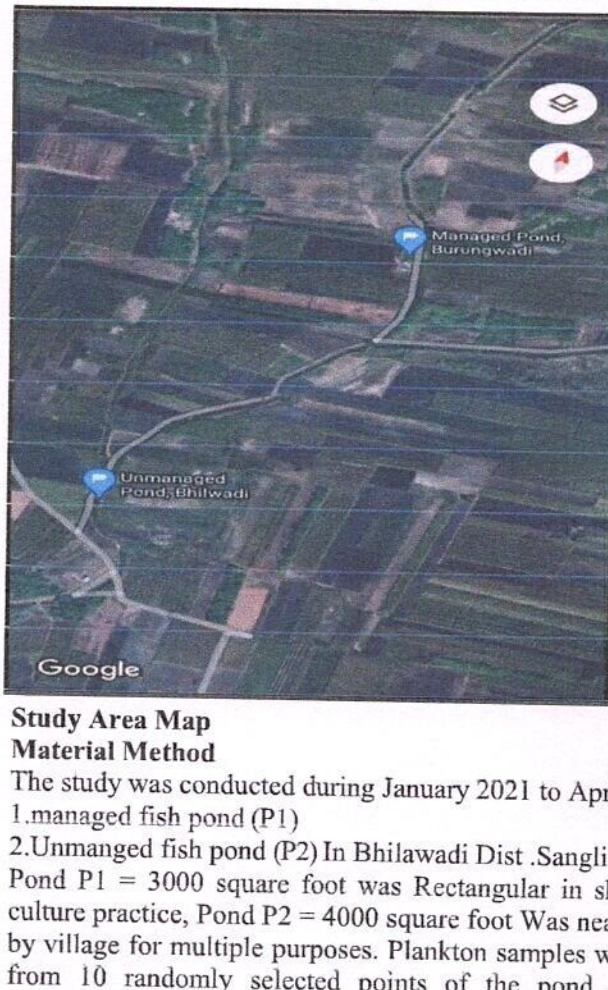

Study Area Map

Material Method

The study was conducted during January 2021 to April 2021 on two ponds.

1.managed fish pond (P1)

2.Unmanged fish pond (P2) In Bhilawadi Dist .Sangli .

Pond P1 = 3000 square foot was Rectangular in shape with an area was stocked with composite fish culture practice, Pond P2 = 4000 square foot Was near circular in outline with an area and was being used by village for multiple purposes. Plankton samples were collected once in every month between 8-10 cm. from 10 randomly selected points of the pond at depth of 20 cm. below the surface (Hossian et.al.,2007).Plankton samples for this study were collected with plankton net made of bolting silk cloth no.2S with mesh size 0.03 - 0.04 mm.(Apha 1995) phytoplankton samples were preserved in 0.3% lughole ,iodine .While ,zooplanktons samples were preserved in 4% buffered formalin solution and then transported to laboratory for planktons analysis (Lackey 1938)The identification of planktons species was done with aid of planktons identification key and monographs by Needhum (1962) Tonapic (1980) Battish (1992). And Bellinger (1992).

Result

Three Classes of phytoplankton ***(Diatoms ,Myxophyceae , Chlorophyceae)*** were recorded form P1 and

K.G.D.L. College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

Journal of Research & Development Vol. 11, Issue 7, April, 2021 (ISSN-2230-9578)
A Multidisciplinary International Level Referred Journal

Physico-Chemical Characterization of Farmland Soil in Some Villages of Palus Taluka, Dist. Sangli (Maharashtra)

Dhanashri V. Bandgar[1] Urmila V. Bandgar[2]
[1,2]Krantiagrani G.D.Bapu Lad Mahavidyalaya, Kundal
E-mail: dhanashribandgar02@gmail.com

Abstract

The Physico- chemical study of soil is based on various parameters like, pH, Electrical conductivity (EC), Total Organic Compound (OC), Nitrogen (N), Phosphorus (P_{2O5}) Potash (k_2O_5), calcium carbonate ($Caco_3$) Sodium (Na), Iron (Fe) lead us to the conclusion of the nutrients Maharashtra state. Result shows that all the six selected places sample of Palus taluka have medium or high minerals content. This information will help farmers to solve the problems related to soil nutrients amount of which fertilizers to be used to increases the yield of crop.

Keywords: *Chemical properties of soil, Physico-Chemical parameters*

Introduction-

Soil sample is vital components step for any soil analysis the soil test based nutrients management has emerged as a key issue in efforts to increases agriculture productivity. Soil is important to everyone either directly or indirectly. It is basic life support component of biosphere. The Physico-Chemical parameter study is important agricultural chemist for plants growth and soil management. Soil samples are collected from six villages of Palus taluka which are S_1- Bambavade, S_2- , Pundi, S_3- Dhayari, S_4- Palus, and S_5- Dudhandi. The Physico-Chemical properties such as moisture content, specific gravity, pH measurement and estimation of N, Ca, phosphorous, potassium of soil were well studied. The fertility of soil depends on the concentration of N, K, P, organic and inorganic materials and water. Nitrogen is the most critical element obtained by plant from the soil and is bottleneck in plant growth. About 80 per cent of the atmosphere is nitrogen gas. Nitrogen is required for plant growth. Phosphorous is a most important element present in every living cell it is important micronutrient essential for plant growth. Potassium plays important role in different physiological process of plants. Analysis of soil is carried out for the studies of various parameters like Organic Compound (OC) Nitrogen (N), Phosphorus (p_2o_5) and Potassium (k_2o). The pH conductivity and estimation of Ca,K of soil was studies. Present study is an attempt to find out the nutrients quantity in soil of Palus taluka. This information is useful to farmers to decide the amount of fertilizer to be used to soil to increase production and economic. The objective of this paper was to analyze in pH , OC, N, P, K state of soil of six village sample of Palus taluka of Maharashtra state.

Experimental:

The quality test survey of the soil was conducted in six villages from Palus taluka. A representative soil sample collected from six villages. Representative soil samples were collected following standard quadric procedure and taken in polythene bags. In laboratory these samples were analyzed for different chemical parameters following standard method AR grade reagent and double distilled water were used for soil analysis. Result compared with standard values to find out available Nitrogen, Phosphorus, Sodium, Potassium, pH and electrical Conductivity was measured to find low, medium or high nutrients content.

Physico-Chemical Analysis:

The physical and chemical soil quality parameters like pH, Electrical Conductivity, Organic Compound (OC), Nitrogen(N) organic carbon was determined by W and black method pH was measured using pH meter, EC was measured using a conductivity meter. Na and K was measured using flame photometer.

Result and Discussions:Physical chemical properties of soil samples were studied all the samples are black colour and have unpleasant smell.

Table: 1 Physico-chemical parameter of soil sample from villages of Palus

Sr.No	Sample No	Name of villages	pH	EC	OC	N	P	K	Ca
1	S1	Bambavade	8.30	0.120	0.39	200	55	376	6
2	S_2	Pundi	8.10	0.250	0.87	213	61	336	5.5
3	S_3	Dhayari	8.22	0.096	0.96	197	19	242	0.9
4	S_4	Palus	8.46	0.110	0.50	185	51	376	12.5
5	S_5	Ghogaon	8.90	0.130	0.98	174	62	242	8
6	S_6	Dudhandi	8.01	0.090	0.91	155	48	309	14.1

(Source: Field Samples)

K.G.D.L. College, Kundal, Tal. Palus, Dist. Sangli

Journal of Research & Development Vol. 11, Issue 7, April, 2021 (ISSN-2230-9578)
A Multidisciplinary International Level Referred Journal

Physico-Chemical Analysis of Borewell Water Samples of Palus Taluka Dist-Sangli, MS, India

***Urmila V.Bandgar*[1] *Dhanashri V. Bandgar*[2]**
[1,2]*Krantiagrani G.D.Bapu Lad Mahavidyalay, Kundal*
E-mail id - bandgarurmila77@gmail.com

Abstract-.

Groundwater is a natural resources of drinking water. The present study is focused on the determination of physico-chemical parameters. Such as pH, EC, TDS cation like Ca,Mg, Na. Anion like , Bicarbonate, Chloride and Sulphate of water samples from six Villages point of Palus taluka, Dist- sangli. Ground water is most necessary source of water. So, the present work deals with valuation of borewell water of different six places in palus taluka.

Keywords- *Borewell water, physico-chemical parameters.*

Introduction-

Water is one of the most valuable natural resources. Water is a natural chemical substance which consist of the elements hydrogen and oxygen in the ratio 2:1 chemical formula is H_{2O}. The quality of water depends on its physical, chemical and biological characteristics. Which determines its utitiy for different purposes? It is fundamentally important to all plants, animals and man. All over the word borewell water represents the largest source of fresh portable water. The humans can abstract borewell water through a borehole, which is distilled in to the aquifer for industrial, agricultural and domestic. However borewell water resources are commonly not secure to pollution, which may degrade their quality. Generally borewell water quality changes from place to place according to the nature of soil, rocks and surface through which it moves. The present study was analyzing some Physico-Chemical parameters such as pH, EC, TDS, Calcuium, Magnesium, Sodium, , Bicarbonate, Chloride and Sulphate ,etc. Were carried out.

Materials and Methods -

Collection of water samples-

A collection of borewell water sample from six villages of palus taluka, Dist- sangli (village like sample S1- Kundal, S2- Dudhandi, S3-palus, S4- Ghogaon, S5- Burli , S6- morale) Were collected using sterile plastic bottles. For each sample to study the variations in Physico-Chemical properties.

Analysis of water sample-

The water quality Physico-Chemical parameters were pH, EC, TDS, Calcium, Magnesium, Sodium carbonate, Bicarbonate, Choloride and Sulphate, etc.All the reagents used were of analytical grade and solution were made of distilled water. Parameters determind using standard analytical method. The instruments used were calibrated before we for observing reading .

Table - 1. Laboratatry analytical methods.

Sr.NO	Physico-Chemical parameters	Methods
1	pH	Potentiometry
2	Conductivity	Conductometry
3	Total Dissolved solution	TDS probe
4	Calcium	Argentometry(titration)
5	Magnesium	Argentometry(titration)
6	Chloride	Argentometry(titration)
7	Sulphate	Spectrophotometer

Table -2. Physico-Chemical parameters of six sampling site.

Sr.No.	*Sample no.*	*Name Of Villages*	*Prameters*								
			pH	*EC*	*TDS*	*Cation*			*Anioan*		
						Ca	Mg	Na	Bicarbonate	Chloride	Sulphate
1	S1	Kundal	7.52	200	100	4.0	1.6	0.44	0.1	0.4	1.94
2	S2	Dudhandi	7.35	1550	780	4.0	11.8	3.83	3.3	6	10.34
3	S3	Plaus	7.45	1220	618	4.0	9	2.70	3.3	4.8	7.36
4	S4	Ghogaon	7.75	1000	501	3.4	6.8	2.22	3.3	4	5.14
5	S5	Burli	7.65	1620	818	4.0	11.4	3.34	3.4	6.4	8.97
6	S6	Morale	8.50	1050	550	4.0	6.2	2.22	3.3	4	5.15

Result and discussion -

The collected water sample for selected area of palus taluka villages for the Physico-Chemical parameters are analysed namely pH, EC, TDS, Cation and Anions are present in table (2).

K.G.D.L. College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

'Journal of Research & Development'
A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal,
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, April-2021, Volume-11, Issue-11

Investigation of Antioxident Activity and Total Phenolic Content in Red Raspberry

Rakshanda L. Shinde
Krantiagrani G.D.Bapu Mahavidyalaya, Kundal.
Email id – rakshandashinde9960@gmail.com

Abstract:

Rubus idaeus L. belong to family Rosaceae commonly known as red raspberry. It is widely consumed and globally cultivated fruit crop next to the strawberries. It has gained the attention in horticulture at great commercial levels. Fruits of red raspberry are rich source of bioactive compounds viz. flavonoids, phenolic, antioxidants as well as nutritive compounds minerals and vitamins. The present investigation is done to evaluate total phenolic content and total antioxidant activity in fruits of red raspberry. The aqueous and ethanolic extracts are prepared which are subjected for estimation of different parameters. Total phenolic content in aqueous (6.8 equivalent to GAE g/100g) and ethanol (6.25 equivalent to GAE g/100g). While antioxidant activity in ethanol (21 equivalent to ascorbic acid g/100g) and aqueous (10 equivalent to ascorbic acid g/100g) is observed. Total phenolic content does not show any noticeable difference in both the samples. However, the plant sample prepared in ethanol shows more antioxidant activity than aqueous extracts.

Key words: *Rubus idaeus* L., phytochemical analysis, total phenolic content, total antioxidant activity.

Introduction:

Rubus idaeus L. (Red raspberry) is important fruit crop having antioxidant potential (and they are used in many commercial uses like herbal products, pharmaceutical companies. ***R. idaeus*** belongs to family Rosaceae. It is native to Europe and Northern Asia (The plant list) and commonly cultivated in other temperate regions including India (Flora Europea). ***R. ideaus*** is a cultivar obtained from hybrids between ***R. ideaus*** and ***R. strigosus*** (Huxley ed 1992). Fruit of Red raspberry are rich in phenolic compounds (Wang et al 1997) those compounds are used in many disease like diabetes, cancer, heart diseases (Pimpao et al. 2013).

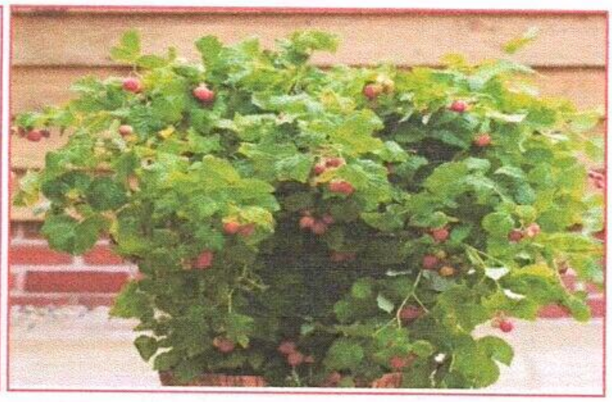

Materials and Methods:

A) ***Preparation of sample extract*:**

The **fruits** of **Red raspberry** were chopped into small pieces and then dried at 50 °C in the incubator. The dried fruits were ground into fine powder using a spice mill. Further, all the powdered samples were subjected to sequential extraction with absolute methanol followed by water. About 10 g of fruits powder was added in 50 ml of respective solvent and allowed for shaking (12 h, 100 rpm, 30 °C) on an orbital shaker incubator (Allied Scientific Products, India). All the extracts were then centrifuged at 5000 rpm for 15 min to remove debris. The supernatant was used for phytochemical analysis (TPC, TFC) and antioxidant (Phosphomolybdenum) activities.

B) Total phenolic content (TPC)

TPC of the extracts was determined by using Folin–Ciocalteu method (Singleton and Rossi, 1965). Accordingly, 200 µl of extract (mg ml−1) was added to 1 ml of Folin–Ciocalteu reagent and mixed thoroughly. After 5 min incubation, 0.8 ml of sodium carbonate (7.5% w/v) was added and allowed to stand for 60 min at room temperature. The absorbance was measured at 765 nm using UV–vis spectrophotometer (Jasco V-730, Japan). Tannic acid was used as a standard for plotting calibration curve (20–200 µg ml−1). TPC was expressed as mg tannic acid equivalent per gram (TAE g−1) of the extract.

C) Total flavonoid content (TFC)

TFC was estimated by aluminum chloride colorimetric method (Sakanaka et al., 2005). Plant extract 200 µl (mg ml−1) or catechin standard solution (50–250 µgml−1) was taken into test tube and volume was made

G.D.L. College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

The study of natural Symmetry of dihedral group (D_n)

Namrata. N.Patil[1], *Rakshanda. L. Shinde*[2]
[1,2]*krantiagrani G.D.Bapu Mahavidyalaya, Kundal.*

Abstract:

Dihedral group is the group of symmetries. Symmetry of mathematical concept that was derived from nature symmetry exit everywhere Look down at your body look at the buildings .Symmetry is variously defied as 'proportion'. 'Perfect or harmonious proportion'& A Structure that allow an object to be divided into parts of equal shape & size.

Key words: Symmetry , Dihedral group , Rotation , Reflection .

Introduction:

A dihedral group is the group of symmetries of a regular polygon which includes rotation and reflection .A regular polygaon with n sides has 2n different symmetries n rotational symmetries and n reflection symmetries usually we tak $n \geq 3$ here .The associated rotation and reflection make a dihedral groupD_n If n is odd each axis of symmetry connects the midpoint of one side to the opposite vertex .If n is even there are *n/2* axis of symmetry connecting the midpoints of opposite sides and *n/2* axis of symmetry connecting opposite vertices in either case there are n axes of symmetry and 2n elements in the symmetry and 2n elements in the symmetry group.We hav seen D_3, D_4,D_5, D_6 in nature system. Symmetry means one shapes becomes exactly like another when you move it in some way turn, piip or slide. It is also verify symmetry in nature y applying same mathematical concepts like dihedral group. Dihedral group is the special case of symmetry contains all the rotations and reflections of regular polygon.

Dihedral group (D_n)

$D_n = \{x , y | x^n=e, y^2= e, yxy = x^{-1}\}$

For rotational we use Θ,Θ gives rotational figures

$\Theta = 360^0 /n$

Construction of D_3 :

By 120^0 rotation either left or right we can find three position the net 120^0 fliping or reflecting the triangle through its side's midpoint and through it' vertices the dihedral group D_3 can be represented by the set $D_3 = \{ R_0 , R_{120} ,R_{240} ,F_A,F_B,F_C\}$.

$\Theta = 360^0 /3 =120^0$.

O (D_3) = 6 → **3reflection :(F_A,F_B,F_C)**; → **3rotations: (Ro,R_{120},R240)**

Rotational symmetry	Reflections symmetry

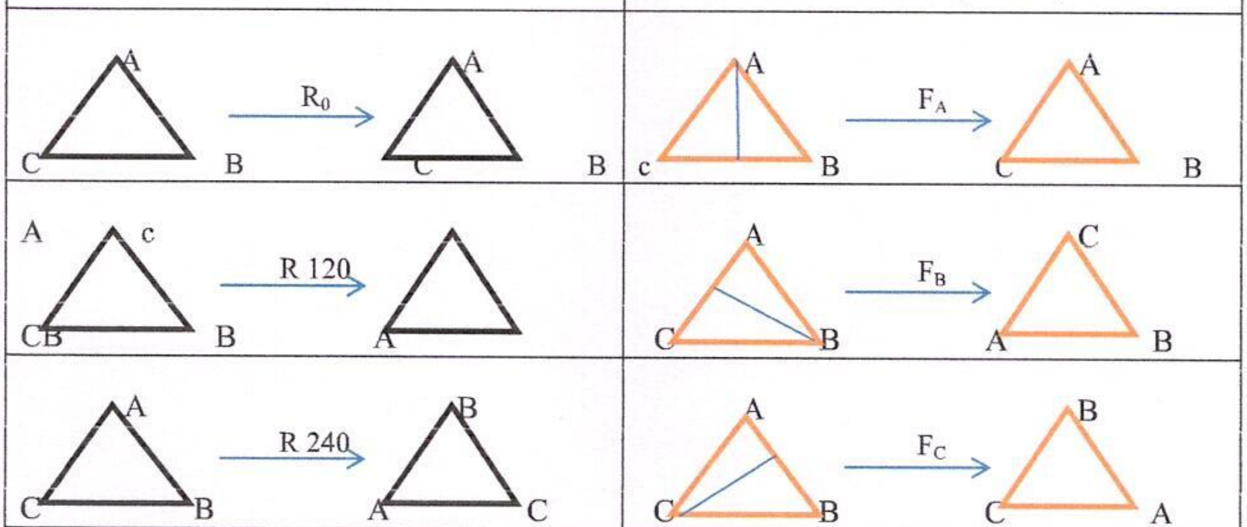

Cayley table for D_3 :

	R_0	R_{120}	R_{240}	F_A	F_B	F_C
R_0	R_0	R_{120}	R_{240}	F_A	F_B	F_C

K.G.D.L. College, Kundal, Tal.Palus, Dist. Sangli

Journal of Research & Development Vol. 11, Issue 7, April, 2021 (ISSN-2230-9578)
A Multidisciplinary International Level Referred Journal

Studies of Physicochemical Parameters to Assces the Water Quality of River Yerrala for Drinking Purposes in Palus and Khanapur Tehsil (Sangli Distra)

Kamble P. D[1]., Lad S. B.[2], Suryawanshi P.T[3].
[1,2,3]*Krantiagrani G.D. Bapu Lad Mahavidyalaya Kundal.*
Email: swapnali5lad@gmail.com

Abstract:
A systematic study has been carried out to access the water quality of river Yerala in Sangli district. 11 water samples from three sampling stations were collected and analyzed for physicochemical parameters (pH, EC, TDS, Calcium, Magnesium, Sodium, Potassium, Carbonate, Bicarbonate, Chloride, Sulphate. Comparatively study three village interpoint distance is 5 to 8 km. Comparatively maximum value in Andhali . It was observed that the water in Balwadi and Wazar better quality than the Andhali. Suitable suggestions were made to improve the water quality of Yerala River water.

Keywords- *Drinking water, Yerala River, Sangli District, physico-chemical parameter.*

Introduction

water is one of the most important of all natural resources known as earth it is important to all living organisms, human, health, food, production and economic development the safety of drinking water is important. for the safety of drinking water is affected by various contaminant which included chemical and microbiological such contaminants cause serious health problems.

Due to this contaminates quality of the drinking water become poor. sometimes such poor quality water causes many diseases in the humans so that quality of the water must be tested for both the chemical as well the water must be tested for both the chemical as well as for the maximum no of physical and chemical parameter were within the desirable limit as suggested by (WHO 1971) and BIS(1991)

The objective of the present is to provide information on the physicochemical characteristics of potable water in order to discuss its suitability for human consumption. physicochemical aspects of the water have been investigated to assess the quality of water .The

variations of the physicochemical properties of water samples directly influence the biotic communities and primary Productivity of the water bodies of different areas of sangli district of Maharashtra .

Material And Methods-

The water samples from three village Wazar, Balawadi and Andhali from Yerala river were collected in polythene bottles. The water sample were immediately brought into laboratory for the estimation of various physico-chemical parameter like Ph, EC, TDS, Calcium, Magnesium, Sodium, Potassium, Carbonate, Bicarbonate, Chloride, Sulphate. while other parameters like were estimated in the laboratory by using std methods is prescribed by (APHA 1998) & (trivenedy R.K.and Goel (1986).

Collection Site Map

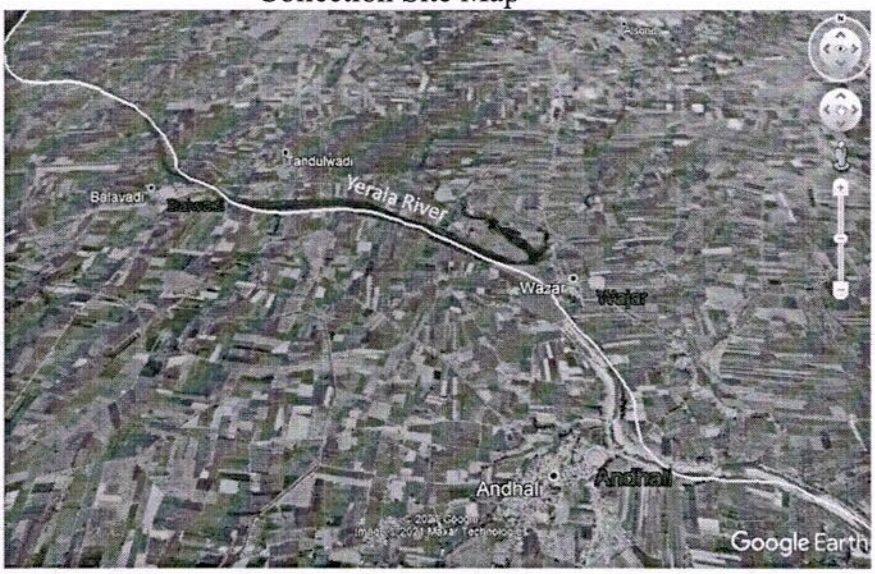

K.G.D.L. College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

Peer Reviewed And Indexed Journal

ISSN 2349-638x

Impact Factor 7.149

Website :- www.aiirjournal.com

Theme of Special Issue

Trends, Challenges and Issues in The Science, Social Science and Languages for Social Welfare

Chief Editor

Mr. Pramod P. Tandale

Guest Editor

Dr.D.G.Kanase

Principal,

Dr.Patangrao Kadam Mahavidyalaya , Sangali

Member Management Council, Shivaji University, Kolhapur

Executive Editor

Dr.N.V.Gaikwad

Head, Department of Geography,

Dr.Patangrao Kadam Mahavidyalaya , Sangali

K.G.D.L. College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

Sr.No.	Name of the Aurhor	Title of Paper	Page No.
86.	डॉ.गजानन बापुराव ठाकरे	छत्रपती शाहू महाराज - एक महान लोककल्याणकारी राजा	393
87.	प्रा. संदीप बबन घाडगे डॉ. संजय मोहन वाघ	कोरोना महामारी सारख्या राष्ट्रीय आपत्तीच्या काळात राजकीय एकात्मतेची गरज	399
88.	अभिजीत बाबासाहेब कदम	हवामान बदल आणि त्याचे भारतावरील परिणाम	405
89.	जनार्धन बाबुराव मस्के	संत तुकाराम महाराजांचे तत्कालीन कालखंडातील समाजव्यवस्थेवरील भाष्य	411
90.	प्रा.डॉ. प्रशांत रा. देशमुख	लॉकडॉऊनचे निर्बंध आणि शेतक-याच्या अडचणिचे विष्लेशनात्मक अध्ययन	417
91.	प्रा. डॉ. शिवाजी वाघमारे	लोककलांचे प्रादेशिक वर्गीकरण	422
92.	श्रीमती आर. व्ही. पाटील	आधुनिक शेतीत जैवतंत्रज्ञान : काळाची गरज	425
93.	प्रा. डॉ. झाकीरहुसेन हाकीम संदे	कोव्हीड १९ चे परिप्रेक्ष आणि भारतातील मानवाधिकारांची प्रस्तुतता	430
94.	प्रियंका जयराम पवार	महाराष्ट्रातील व्यापारी पिकांचे वैशिष्ट्य अभ्यासणे	434
95.	डॉ. दत्तात्रय सदाशिव अनारसे	कबीर दास की धार्मिक भूमिका	439
96.	संगिता गंगाराम उतेकर डॉ. सुधाकर भाऊराव टेलके	विपणन संकल्पना आणि विपणन व्यवस्थापन पद्धती	442
97.	डॉ. मनोज श्रीकृष्णराव पवार	कृषी क्षेत्रावर कोविड-19 लॉकडाऊनचा प्रभाव	448
98.	डॉ. किशोर नागनाथ जोगदंड	शेतकरी कामगार पक्षाचा प्रारंभीचा इतिहास विशेषतः सोलापूरच्या संदर्भात	455
99.	श्री.रोहित बापू उदगावे	सांगली : एक औद्योगिक क्रांतीचे केंद्र	460
100.	डॉ. प्रवीणकुमार न. चौगुले	भक्तिकालीन काव्य में लोकमंगल की भावना	463

K.G.D.L. College Kundal Tal.Palus, Dist.Sangli

कोव्हीड १९ चे परिप्रेक्ष आणि भारतातील मानवाधिकारांची प्रस्तुतता

प्रा. डॉ. झाकीरहुसेन हाकीम संदे,
M.A., B.Ed., M.Phil., Ph.D.
सहाय्यक प्राध्यापक,
राज्यशास्त्र विभाग,
क्रांतिअग्रणी जी. डी. बापू लाड महाविद्यालय,
कुंडल. ता. पलूस जि. सांगली.
Email: zakirhusensande@yahoo.com

प्रस्तावना :

मानवाधिकार संहितेची निर्मिती आणि अनुपालन हे आदर्श राज्यसत्तेचे उत्तम लक्षण असते. मानवाधिकारांची उदघोषणा आणि निर्मिती तसेच भरण-पोषण हेच समाज हा सभ्य, सुसंस्कृत आणि विचार-अभिव्यक्तीने संपन्न असल्याचा दाखला देते. इतिहासात १८ व्या शतकापासून जागतिक समुदायाला आपल्या अधिकारांची प्राकर्षाने जाणीव होऊ लागल्यानेच १७८९ ची फ्रेंच राज्यक्रांती, १९१७ ची रशियन राज्यक्रांती या घटना पराकोटीच्या मानवाधिकार हनन प्रश्नातून निर्माण झालेल्या परिस्थितीचा परिणाम होता. भारतीय परिस्थितीच्या बाबतीत सांगायचे तर, १८५७ चा उठाव आणि भारतीय स्वातंत्र्याची चळवळ सुद्धा मानवाधिकार नाकारणाऱ्यांच्या विरोधातील उत्स्फूर्त क्रिया-प्रतिक्रिया होती. जगभरात लोकशाही आणि समाजवादाच्या विचारांनी झपाटलेल्या तरूणांनी केलेल्या क्रांत्या या मूलतः राजकीय स्वातंत्र्याबरोबरच मानवाधिकारांच्या उत्कट आशावादाने झालेल्या होत्या. स्वराज्य, स्वातंत्र्य, जनतेचे सार्वभौमत्व, मूलभूत अधिकार, मानवाधिकार या प्रकारच्या आशा-आकांक्षा घेऊन हा उपेक्षित समाज बलाढ्य साम्राज्यावाद्यांसमोर उभा ठाकला.

मानवी हक्क किंबहुना मानवाधिकार ही संकल्पना आधुनिक युगात अधिक स्पष्टपणे आणि ताकतीने अस्तित्वात आलेली दिसत असली तरी तिचा उदभव आणि विकास मात्र प्राचीन काळापासून होत असलेला पहावयास मिळतो. त्या काळात या संकल्पनेला जरी "मानवाधिकार" असा प्रचलित असलेला शब्द अस्तित्वात नव्हता तरी पण लोककल्याणाच्या हेतूने जे कायदे, संहिता, नियमावली, संकेत बनवले गेले त्यात मानवाधिकाराला अपेक्षित असलेले सर्व अर्थ, अन्वयार्थ, जाणिवा, त्यामध्ये समाविष्ट होत्या. प्राचीन ग्रीक नगरराज्यांपासून नंतरच्या काळात जगभर झालेल्या राज्यक्रांत्या, संयुक्त राष्ट्रसंघाने मानवाधिकारां संबंधी घेतलेली भूमिका, भारतीय राज्यघटनेमध्ये समाविष्ठ केलेले मूलभूत अधिकार आणि स्वातंत्र्ये असा मानवाधिकारांचा प्रवास होताना दिसतो. 'मानवाच्या आंतरिक विकासासाठी आवश्यक असलेली बाह्य परिस्थिती म्हणजे हक्क होय.' अशी हक्कांची व्याख्या टी.एच. ग्रीन या तत्त्ववेत्त्यांने केलेली आहे. या व्याख्येवरून आपणास असे दिसून येते की मानवाचा खरा विकास हा आंतरिक विकास असतो आणि त्यासाठी बाहेरील परिस्थिती तेवढीच पूरक आणि पोषक हवी असते. अर्थातच ही बाह्य परिस्थिती व्यक्तीच्या आंतरिक विकासासाठी पूरक आणि अनुकूल करण्याची जबाबदारी राज्याची किंवा अधिसत्तेची असते. असे ग्रीन यांना म्हणायचे आहे. ग्रीन यांच्या वरील व्याख्येचा खोलात जाऊन परिसीमन केल्यास मानवाधिकारांची निर्मिती, भरण-पोषण, अनुपालन या सर्व जबाबदाऱ्या राज्याच्या म्हणजेच सरकारच्या असल्याचे दिसते.

भारतीय राज्य घटनेच्या तिसऱ्या भागात कलम नंबर १४ ते ३२ मध्ये दिलेले मूलभूत अधिकार हे देखील मानवाधिकारच होते. भारतीय राज्यघटनेने देखील नागरिकांचे मूलभूत हक्क प्रदान करण्यासाठी आणि त्यांचे रक्षण करण्याची जबाबदारी राजकीय व्यवस्थेकडेच दिलेली आहे व तशी तरतूद लिखित स्वरूपात केलेली आहे आणि अनवधानाने किंवा घटनेतील तरतुदींचा दुहेरी अर्थ काढून शासनाने सुद्धा नागरिकांच्या मूलभूत हक्कांच्या रक्षणापासून पळवाट काढू नये म्हणून राज्य, राज्याची व्याख्या व मूलभूत हक्कांच्या रक्षणाची जबाबदारी याविषयी स्पष्ट शब्दात लिहून ठेवले आहे. "१२ या भागात संदर्भानुसार अन्यथा आवश्क नसेल तर, "राज्य" या शब्दात भारताचे सरकार व संसद आणि राज्यांपैकी प्रत्येक राज्याचे शासन व विधानमंडळ आणि भारताच्या राज्य क्षेत्रातील अथवा भारत सरकारच्या नियंत्रणाखालील सर्व स्थानिक किंवा अन्य प्राधिकरणे यांचा समावेश आहे.

(२) राज्य, या भागाने प्रदान केलेले हक्क हिरावून घेणार नाही किंवा त्यांचा संकोच करणारा कोणताही कायदा करणार नाही आणि या खंडाचे उल्लंघन करून केलेला कोणताही कायदा त्या उल्लंघनाच्या व्याप्तीपुरता शून्यवत असेल."

G.D.L. College, Kundal, Tal.Palus Dist.Sangli

Peer reviewed Journal Impact Factor: 7.265 ISSN-2230-9578

Journal of Research and Development

A Multidisciplinary International Level Referred Journal

June-2021 Volume-11 Issue-21

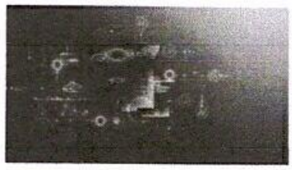

Changing Perspectives of Language, Literature, Science and Social Science

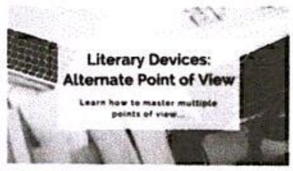

Chief Editor
Dr. R. V. Bhole
'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot No-23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.)

Dr. Mahadeo Walunj
Principal
College of Arts, Bhigwan, Indapur, Dist. Pune Maharashtra

Dr. Ranjan Kalita
Principal
Rangapara College, Amaribari, Rangapara, Assam

Executive Editors
Dr. Prashant Chavare, Rakesh Ch. Sarkar, Mr. Santosh P. Mane

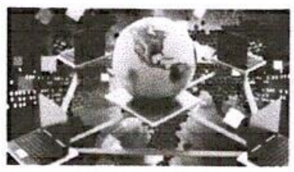

K.G.D.L. College, Kundal * Tal.Palus, Dist.Sangli *

Address
'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot, No-23,
Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

Journal of Research and Development

A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal

June-2021 Volume-11 Issue-21

On

Changing Perspectives of Language, Literature, Science and Social Science

Chief Editor

Dr. R. V. Bhole

'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot No-23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.)

Dr. Mahadeo Walunj
Principal
College of Arts, Bhigwan, Indapur, Dist. Pune Maharashtra

Dr. Ranjan Kalita
Principal
Rangapara College, Amaribari, Rangapara, Assam

Executive Editors

Dr. Prashant Chavare, Rakesh Ch. Sarkar, Mr. Santosh P. Mane

Editorial Board

Dr. Bhaskar Gatkul	Dr. Surendra Shirsat	Prof. Balasaheb Kharat
Prof. Sham Satarle	Mr. Atul Sarmah	Mr. Nupam kr Palit
Prof. Sandip Sathe	Dr. Pradnya Lamture	Dr. Rakesh Moulick

Published by- Principal, College of Arts, Bhigwan, Indapur, Dist. Pune Maharashtra & Principal, Rangapara College, Amaribari, Assam

The Editors shall not be responsible for originality and thought expressed in the papers. The author shall be solely held responsible for the originality and thoughts expressed in their papers.

© All rights reserved with the Editors

K.G.D.L. College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

CONTENTS

Sr. No.	Paper Title	Page No.
1	अध्ययन - अध्यापनातील स्थित्यंतरे (औपचारिक शिक्षणाकडून ऑनलाईन शिक्षणाकड.....) डॉ. महादेव पंढरीनाथ वाळुंज	1-3
2	COVID-19 – भारतीय अर्थव्यवस्थेवरील परिणाम प्रा. शाम सातर्ले	4-7
3	उजनी धरण : एक अभ्यास प्रा. भाऊसो नवनाथ सकुंडे	8-11
4	कोविड – १९ : खेळ, खेळाडूवरील परीणाम व उपाय योजना श्री. सुरेश मच्छिंद्र शिंदे	12-14
5	पुणे प्रशासकीय विभागातील प्रमुख धर्मनिहाय लोकसंख्येचा भौगोलिक विश्लेषणात्मक अभ्यास (2001 ते 2011) -रवींद्र हांडे	15-18
6	सागरशास्त्राचे जनक छत्रपती शिवाजी महाराज Dr.Madhukar Vithoba Jadhav	19-22
7	कोकणची लोककला : दशावतार Prof. Tendolkar Dipa Dattaram	23-25
8	कोरोनाचा मराठी भाषेवरील प्रभाव डॉ. सीमा नाईक - गोसावी	26-27
9	कोव्हिड १९ च्या परिप्रेक्षातील ई - गव्हर्नन्सची उपयुक्तता प्रा. डॉ. झाकीर हुसेन हाकीम संदे	28-30
10	असमीया खान-पान और इसका बदलता चलन बर्णा शर्मा	31-33
11	प्राथमिक शिक्षा पर कोविड –19 का प्रभाव सीमा यादव, डॉ.मृत्युन्जय मिश्रा	34-36
12	अधोबोधन संकल्पना आणि प्रतिमान *श्री. अंकुश रामचंद्र बनसोडे*	37-41
13	शाश्वत विकास आणि भारत प्रा. सौ. रुपाली गोवर्धन दिकोंडा	42-44
14	"कोरोणा 19 महामारीचे भारतातील सामाजिक परीणाम" बाळासाहेब भानुदास खरात	45-48
15	गोपाळ गणेश आगरकरांच्या सुधारणावादी लेखनाचा ऐतिहासिक अभ्यास श्री. सुरेश नामदेव दांडगे, डॉ. बब्रुवान केरबाजी मोरे	49-53
16	कोव्हीड काळामध्ये शैक्षणिक ग्रंथालयासमोरील आव्हाने डॉ.सौ.अपर्णा मकरंद कुलकर्णी	54-57
17	चिरकाल भूजल विकासात भूजल संचयन, पुनर्भरण आणि व्यवस्थापनाची भूमिका प्रा. डॉ. अनिल निवृत्ती शिंदे	58-61
18	वैद्यकिय व्यवसायातील अनैतिकता : एक विवेचन डॉ. अतुल म. महाजन	62-66
19	विशिष्ट कालखंडाचा अभ्यास : संज्ञा व १९८० नंतरचा कालखंड (ग्रामीण भाग) डॉ. प्रज्ञा नागेश लामतुरे	67-69
20	ठाणे पालघर जिल्ह्यातील आदिवासी लोसंख्येतील साक्षरतेचा भौगोलिक अभ्यास प्रा. मानकरे ज्ञानेश्वर रघुनाथ· डॉ.के.बी कणकुरे	70-79
21	जबाबदार पर्यटन: शाश्वत विकासासाठी सर्वोत्कृष्ट पद्धती प्रा. सुनील दशरथ साळवे, डॉ. सुहास आव्हाड	80-84

K.G.D.L. College, Kundal, Tal. Palus, Dist. Sangli

'Journal of Research & Development' A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal, Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, 25June-2021, Volume-11, Issue-21
Changing Perspectives of Language, Literature, Science and Social Science

कोव्हिड १९ च्या परिप्रेक्षातील ई - गव्हर्नन्सची उपयुक्तता

प्रा. डॉ. झाकीर हुसेन हाकीम संदे
सहाय्यक प्राध्यापक, राज्यशास्त्र विभाग, क्रांतिअग्रणी जी. डी. बापू लाड महाविद्यालय, कुंडल. ता. पलूस जि. सांगली.
Email: zakirhusensande@yahoo.com

प्रस्तावना :

सुशासन (Good Governance) आणि ई-प्रशासन (E-Governance) हे आजच्या युगातील सर्वांना परिचित होत असलेले आणि तेवढेच महत्त्वाचे शब्द बनले आहेत किंबहुना या शब्दरूपी संकल्पनेशिवाय आधुनिक युगात प्रगत आणि विकसित राष्ट्रे असो, विकसनशील राष्ट्रे असो वा तिसऱ्या जगातील मागास राष्ट्रे असोत, सर्वांनाच या संकल्पनेला सोडून विकासाची स्वप्ने पाहता येणार नाहीत. राष्ट्रातील अखिल मानव जातीच्या सर्वांगीण विकासाकरिता अर्थातच सु-शासन आणि सु-प्रशासन या संकल्पनांना पर्याय नसल्याचे दिसते. मानव जातीच्या विकास प्रक्रीयेमध्ये आजपर्यंत जेवढ्या उत्क्रांत्या झाल्या त्यातील सर्वोच्च आणि अद्ययावत सुधारणा या दोन नवीन संकल्पनाच्या रूपाने झालेल्या दिसतात. या दोन संकल्पनांना समांतर किंवा त्यापेक्षा श्रेष्ठ अशा कोणत्याही संकल्पना आज अखेर झालेल्या नाहीत. त्यामुळे या संकल्पनांच्या साहाय्याने जगाची आजची प्रगती संभवते. आजचा जो कालखंड आहे तो कोरोनासारख्या महामारीचा. या कालखंडाची सर्वात महत्वाची आणि उल्लेखनीय बाब म्हणजे हा रोग संसर्गजन्य असल्याने लोकांचा परस्पर सामाजिक संबंध तुटलेला आहे. लोकशाही व्यवस्था म्हणजे लोक आणि सरकार हे परस्परांच्या सहकार्याने, संपर्कानेच कार्यान्वित होणारी व्यवस्था आहे. नेमका हाच मुद्दा येथे कोरोना मुळे मुख्य पेचप्रसंग म्हणून उभा आहे. कोरोनाची साखळी तोडण्यासाठी घरात राहणे आणि मानवी संपर्क रोखणे हा त्यावरील आजचा जगविख्यात आणि जगमान्य उपाय आहे. त्यामुळे सरकार, प्रशासन आणि लोक यांचा संपर्क पूर्णपणे नाहीसा झाला ही एक मोठी चिंतेची बाब ठरली. पण मानवाने शोधून काढलेल्या ई-गव्हर्नन्स मुळे ही समस्या बऱ्यापैकी निकाली निघाली आणि माणसामाणसांमध्ये कोणताही सामाजिक संपर्क न साधता सरकार व प्रशासन लोकांपर्यंत पोहोचले आणि लोक, सरकार व प्रशासनापर्यंत पोहोचले. सरकार आणि नागरिक यांच्या दुहेरी दळणवळणाची प्रक्रिया ई-गव्हर्नन्समुळे यशस्वी झाली. ई-गव्हर्नन्स मुळे मोठ्या प्रमाणात या कसोटीच्या प्रसंगी मानवी समुदायाला खूप मोठी मदत झाली. माहिती आणि तंत्रज्ञान महत्त्वाचे साधन म्हणून ई–गव्हर्नन्सने महत्त्वाची भूमिका पार पाडली. याचाच अभ्यास या निबंधामध्ये करण्यात येणार आहे.

ई-गव्हर्नन्स संकल्पना :

आधुनिक युगातील मानवी समुदायाला विकासाच्या वाटेवर घेऊन जाणारी ही महत्त्वाची संकल्पना आहे. भारतासारख्या विकसनशील राष्ट्रांमध्ये सरकार आणि लोक यांच्यातील परस्पर संपर्क मोठ्या प्रमाणात वाढलेला आहे. लोकांच्या सरकारकडून अपेक्षा वाढल्या आहेत. लोकसंख्येचा झालेला प्रस्फोट आणि लोकांच्या वाढत्या अपेक्षा आणि त्यांना तोंड देता देता शासकीय यंत्रणेची पुरेवाट होताना आपण दररोज पाहतोयच. कोरोनाच्या काळात तर प्रत्येक माणसाच्या समस्या प्रत्यक्ष समोरासमोर संपर्कात येऊन सोडवणे प्रशासनास अशक्यप्राय झालेले आहे. नागरिकांना सरकारकडून मिळणारी माहिती, सेवा, सवलती, योजना, उपचार तात्काळ हवे असतात. कोरोनासारख्या रोगाची कुटुंबातील एखाद्या व्यक्तीला लागण झाली तर त्या कुटुंबात आणि परिसरात कशी तारांबळ उडते हे आपण 'याची देही याची डोळा' पाहतोयच. अशावेळी त्या कुटुंबाला कोणाचीही मदत आणि सहकार्य मिळण्याच्या अपेक्षा दूरावत जातात. या आणीबाणीच्या प्रसंगी जर कोणी कामी येत असेल, तर ती संकल्पना म्हणजे ई-गव्हर्नन्स होय. शासनसंस्थेच्या गुणात्मक, संख्यात्मक आणि मूल्यात्मक दर्जा वाढवणारी लोककल्याणाची आदर्श संहिता असे ई–गव्हर्नन्सच्या प्रक्रियेला म्हणता येईल. जागतिकीकरणाच्या प्रक्रियेला अधिक मजबुती देऊन सरकारच्या लोककल्याणाच्या हेतूला गतिमान करणारी ही संहिता. ई-गव्हर्नन्स ही व्यापक संकल्पना आहे. माहिती, विज्ञान आणि तंत्रज्ञान तसेच अत्याधुनिक विद्युत सूक्ष्म यंत्रांचा वापर करून शासन आणि नागरिक यांच्यातील आंतरक्रिया प्रस्थापित केली जाते. ई–गव्हर्नन्सचा अर्थ 'इलेक्ट्रॉनिक गव्हर्नन्स' होय. म्हणजे इलेक्ट्रॉनिक माध्यमांचा वापर करून राज्यकारभार चालवणे होय. राज्यप्रशासन चालवताना सरकारचे निर्णय, धोरणे आणि निर्णयांची काटेकोर आणि बिनचूक अंमलबजावणी करणे महत्त्वाचे असते. सरकार लोककल्याणाच्या दृष्टीने अनेक नवनवीन योजना प्रकल्प राबवित असते. तसेच नवनवीन व अद्ययावत कायदे करीत असते. या सर्व गोष्टींचा लाभ तळागाळातील शेवटच्या माणसापर्यंत पोहोचवीणे सरकारच्या दृष्टीने गरजेचे असते. त्याकरिता सरकारला विज्ञान, तंत्रज्ञान, सूक्ष्म विद्युत उपकरणे, सूक्ष्म दळणवळणाची साधने, विद्युत लहरी, इंटरनेट, नेटवर्क, मोबाईल, संगणक, प्रिंटर, ई-मेल, सॅटेलाईट, वेबसाईट, लिंक इ. संपर्क साधने वापरून नागरिक व शासन यांच्यात अंतरक्रिया घडवून कायद्याची व योजनांची अंमलबजावणी करण्यासाठी ई-गव्हर्नन्स ही संकल्पना खूपच उपयोगी ठरते. त्यालाच जोडून

K.G.D.L. College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

गडहिंग्लज

ISSN- 2349-638x

Impact Factor
7.149

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

Peer Reviewed and Indexed Journal

Special Issue

Sustainable Development in Science, Social Sciences and Languages

30th May 2021

Special Issue - 88

Chief Editor:
Mr. Pramod P. Tandale

Executive Editor
Dr. Mangalkumar R. Patil
Principal,
Dr. Ghali College, Gadhinglaj

Co-Editor
Mr. Ashvin G. Godghate
Dr. Dattatray N. Waghmare
Dr. Nilesh. K. Shelake

K.G.D.L. College, Kundal
Tal.Palus, Dist.Sangli

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

Peer Reviewed And Indexed Journal

ISSN 2349-638x

Impact Factor 7.149

Website :- www.aiirjournal.com

Theme of Special Issue

Sustainable Development in Science, Social Sciences and Languages

Chief Editor

Mr. Pramod P. Tandale

Executive Editor

Dr. Mangalkumar R. Patil

Principal,

Dr. Ghali College, Gadhinglaj

Co-Editor

Mr. Ashvin G. Godghate

Dr. Dattatray N. Waghmare

Dr. Nilesh. K. Shelake

K.G.D.L. College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

Sr.No.	Name of the Aurhor	Title of Paper	Page No.
134.	प्रा. डॉ. एम. आर. खोत	बालकामगार आणि कायदेशीर तरतुदी	610
135.	अभिजीत बाळासो गिरी डॉ. जाधव म.ल.	उच्चशिक्षण आणि संशोधनाकडे वाटचाल	616
136.	कैलास सत्यवान शेलार डॉ. आदिनाथ मोरे	शाश्वत आर्थिक विकास	620
137.	श्रीमती. आर. व्ही. पाटील	जागतिक तापमान वाढ - एक समस्या	626
138.	प्रा. डॉ. विशाल प्रकाश लिंगायत	मराठी साहित्य आणि पर्यावरण यांचा ऋणानुबंध	632
139.	डॉ. एच. एस. कुचेकर	महिला सक्षमीकरण : भारतीय राजकारणात महिलांचा सहभाग	636
140.	डॉ. सरिता बाबासाहेब बिडकर	'तीसरी ताली' में लैंगिक समानता के लिए किन्नरों का संघर्ष	642
141.	डॉ. धनश्री खटावकर प्रा. सी. जे. भारसकळे	इस्लामपूरमधील प्रवासी रिक्षा चालकांना उध्दभवणाऱ्या समस्या व त्यावरील उपाय	647
142.	प्रा.शेख आलम गफूर	भारतातील अंतर्गत श्रमिक स्थलांतर : धोरणे आणी उपाय	653
143.	डॉ.गजानन बापुराव ठाकरे	राजर्षी छत्रपती शाहू महाराजांचे शैक्षणिक क्षेत्रातील योगदान	659
144.	सचिन आर. दर्पे	सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील स्थलांतराच्या कारणांचा आणि परिणामांचा अभ्यास	665
145.	डॉ. मारुती अर्जुन केकाणे	कोवीड १९ मुळे डिजिटल मीडियाची उच्च शिक्षणातील भूमिका आणि उपयोग	669
146.	प्रा. मानकरे ज्ञानेश्वर रघुनाथ	ठाणे - पालघर जिल्ह्यातील लिंग गुणोत्तराचा भौगोलिक अभ्यास	674
147.	सीमा यादव डॉ.मृत्युन्जय मिश्रा	प्राथमिक शिक्षा मे मौलिक अधिकार के महत्व का अध्ययन	681
148.	श्री चंद्रहास लक्ष्मण हिप्परकर डॉ. विनय दत्तात्रय धोंडगे	शाश्वत विकासाची ध्येये	683
149.	डॉ.अर्चना काटकर-सोनवणे	भटक्या विमुक्तांचे आत्मकथन	689
150.	प्रा. डॉ. झाकीरहुसेन हाकीम संदे	मानवाधिकार संहिता आणि भारतीय संविधानातील मूलभूत अधिकार यांचा तौलनिक अभ्यास	694
151.	प्रा. प्रकाश जमदाडे	ब्रिटिश काळातील शैक्षणिक आयोग आणि स्त्री शिक्षण	699

K.G.D.L. College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

मानवाधिकार संहिता आणि भारतीय संविधानातील मूलभूत अधिकार यांचा तौलनिक अभ्यास

प्रा. डॉ. झाकीरहुसेन हाकीम संदे,
M.A., B.Ed., M.Phil., Ph.D.
सहाय्यक प्राध्यापक,
राज्यशास्त्र विभाग,
क्रांतिअग्रणी जी. डी. बापू लाड महाविद्यालय, कुंडल. ता.
पलूस जि. सांगली.

प्रस्तावना :

मानवाधिकार ही वैश्विक स्वरूपाची संकल्पना आहे. जगातील एकूण एक मानव ही त्याची व्याप्ती आहे आणि व्यक्तीने फक्त जन्म घेणे एवढीच पात्रता त्याकरिता आवश्यक आहे. तर भारतीय संविधानाने नागरिकांना दिलेले मुलभूत अधिकार हे भारतीय नागरिकां पुरतीच मर्यादित संहिता आहे. दोन्हीही संकल्पना मानवजातीचे समग्र कल्याण या उद्देशानेच जन्माला आलेल्या आहेत. या दोन्ही संकल्पनांचा निर्मितीचा कालखंड थोड्याफार फरकाने समकालीनच म्हणावा लागेल आणि त्यांची उद्दिष्टे देखील समांतर असल्याचे दिसते. मानव अधिकारांचे रक्षण, सन्मान व वृद्धी यासंबंधी संयुक्त राष्ट्रसंघातील आमसभा आणि आर्थिक व सामाजिक समितीने अनेक संस्था, संघटना स्थापन करून जगातील सर्व राष्ट्रांमध्ये मानव अधिकारांचे रक्षण करण्याचे ध्येय ठरवले आहे तर भारतातील मूलभूत अधिकारांचा उगम राज्यघटनेत होऊन त्यांचे रक्षण, सन्मान व प्रतिष्ठा राखण्याचे कार्य भारतातील संसद आणि न्यायिक यंत्रणेकडे सोपविले आहे दुसऱ्या महायुद्धानंतर २४ ऑक्टोबर १९४५ रोजी संयुक्त राष्ट्रसंघाची (United Nations) स्थापना झाली तर घटना परिषदेची पहिली बैठक ९ डिसेंबर १९४६ रोजी झाली. संयुक्त राष्ट्रसंघाच्या सनदेतील १११ कलमांपैकी कलम १,१३,५५,५६,६२,७३ आणि ७५ या कलमांचा अभ्यास केल्यास आणि भारतीय राज्यघटनेच्या तिसऱ्या विभागातील कलम नंबर १२ ते ३५ मधील मूलभूत अधिकारांची संहिता यांचा तौलनिक अभ्यास केल्यास, दोन्ही संकल्पनांमध्ये मानवी जीवन सुखी, समृद्ध, संपन्न व सन्माननीय बनविण्याच्या उद्देशाने केलेल्या कायदेशीर तरतुदींमध्ये बऱ्याच प्रमाणात साम्य आढळते. भारतीय राज्यघटनेत समाविष्ट केलेल्या मूलभूत अधिकारांच्या संहितेवर वैश्विक स्वरूपाच्या मानवाधिकार संकल्पनेचा अप्रत्यक्षपणे प्रभाव असल्याचे जाणवते. संयुक्त राष्ट्र संघाच्या आमसभेत ने १० डिसेंबर १९४८ रोजी मानवी हक्कांचा जाहीरनामा (Universal Declaration of Human Rights) मंजूर केला. यामध्ये सुद्धा सर्व मानवांना समान हक्क मिळणे आणि त्यांच्या प्रतिष्ठेचे रक्षण होणे हा जगातील न्याय, स्वातंत्र्य, शांतता प्रस्थापनेचा पाया आहे असे म्हटले आहे तर भारतीय संविधानातील मूलभूत अधिकारांची उद्दिष्टे देखील अशीच आहेत. धर्म, जात, वंश, भाषा, लिंग असा कोणताही भेदभाव न करता नागरिकांच्या सर्वांगीण विकासाकरिता कायद्यापुढे सर्व जण समान व कायद्याचे सर्वांना समान संरक्षण देतानाच न्याय, स्वातंत्र्य, समता व बंधुता प्रस्थापित करण्याचे उद्दिष्ट भारतीय राज्यघटनेचे आहे. या सर्व चर्चेवरून आपणास मानवाधिकार संहिता आणि भारतीय संविधानातील मूलभूत अधिकारांची सनद यातील साम्य आणि फरक लक्षात येण्यासारखा आहे तदनुषंगानेच या दोन्ही संहितेचा तौलनिक अभ्यास येथे करण्यात आलेला आहे.

मानवाधिकार संकल्पना विषद करताना तिचा ऐतिहासिक मागोवा घेणे क्रमप्राप्त ठरते. "मानवी हक्क या संकल्पनेचा सर्वप्रथम उल्लेख 'हेन्री डेव्हिड थारो' या विचारवंताने आपल्या 'डिसओबीडीयंस' या ग्रंथात केला आहे. तेंव्हापासून मानवी हक्क हा शब्द जागतिक पातळीवर प्रचलित झाला आहे, मानवी हक्काचा जनक म्हणून ग्रीक तत्ववेत्ता सेंट थॉमस ॲक्वायनस यांना संबोधले जाते. जॉन लॉक याने नैसर्गिक हक्कांची संकल्पना मांडली म्हणून

K.G.D.L. College Kundal, Tal. Palus, Dist. Sangli

Peer reviewed Journal   Impact Factor: 7.265   ISSN-2230-9578

Journal of Research and Development

A Multidisciplinary International Level Referred Journal

June 2021   Volume-11   Issue-16

Sustainable Development Goals: Initiatives, Execution and Challenges

Chief Editor
Dr. R. V. Bhole
'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot No-23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.)

Guest Editor
Dr. Prof. H. B. Rathod
Principal
Gramin (ACS) Mahavidyalaya, Vasantnagar (Kotgyal), Tal. Mukhed

Executive Editors
Dr. V. T. Naik
Mr. B. C. Rathod

Co- Editors
Dr. D. K. Kendre
Mr. S. A. Jewale
Dr. U. D. Padamwar

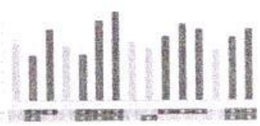

K.G.D.L. College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

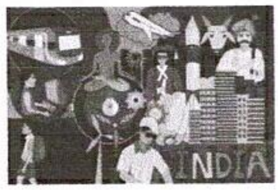

Address
'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot, No-23,
Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

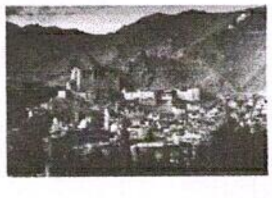

Journal of Research and Development

A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal

1 June-2021 Volume-11 Issue-16

On

Sustainable Development Goals: Initiatives, Execution and Challenges

Chief Editor

Dr. R. V. Bhole

'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot, No-23,
Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

Guest Editor

Dr. Prof. H. B. Rathod
Principal
Gramin (ACS) Mahavidyalaya, Vasantnagar (Kotgyal), Tal. Mukhed

Executive Editors

Dr. V. T. Naik **Mr. B. C. Rathod**

Co- Editors

Dr. D. K. Kendre
Mr. S. A. Jewale
Dr. U. D. Padamwar

Editorial Board

Mr. Thorve A. B.	Prof. Zamapalwad S. S.	Dr. Chavan V. P.	Dr. Gore S. Y.
Prof. Pawar S. K.	Mr. Pawar D. C.	Shri. Gokule R. G.	Shri. Kalimath S. K.
Prof. Shinde P. R.	Shri. Koturwar P. P.	Shri. Dethe S. K.	Sow. Itkapalle A. P.
Dr. Reddy S. M.	Prof. Kalyan G. S.	Mr. Kankute S R.	Dr. Awade N. H.
Prof. Shinde P. A.	Sow. Shendage S. N.	Shri. Patil S. S.	Shri. Pande G. K.
Dr. Pentewar M. S.	Dr. Giri M. A. Shri.	Naik N. U.	Shri. Mathpati G. H.
Prof. Badne R. D.	Shri. Babarao S.	Dr. Kshirsagar S. G.	Dr. Halmandge B. V.

Published by- Principal, Dr. Prof. H. B. Rathod, Gramin (ACS) Mahavidyalaya, Vasantnagar (Kotgyal), Tal. Mukhed

The Editors shall not be responsible for originality and thought expressed in the papers. The author shall be solely held responsible for the originality and thoughts expressed in their papers.

© All rights reserved with the Editors

K.G.D.L. College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

45	मोहोळ तालुका पर्जन्य विचलता- एक भौगोलिक अभ्यास श्री. हनुमंत शंकर हेळकर, प्रा. डॉ. डी. जी. शिंदे	177-180
46	भारत मे सतत विकास लक्ष्य-चुनोतीया एवं सम्भावनाये *प्रो.विकास वर्मा*	181-184
47	अहमदपुर तालुक्यातील पाझर तलाव जलसिंचन स्त्रोताचा भौगोलिक अभ्यास प्रा डॉ.राठोड बी.एस.	185-187
48	कंधार तालुक्यातील ग्रामीण वस्तीतील सेवा केंद्राचा चिकित्सक अभ्यास **केंद्रे गणपत गंगाधर, प्रा. डॉ. मानकरी एम. पी.**	188-191
49	भारतीय शेती व्यवसायात प्रधानमंत्री पिक विमा योजनेचे योगदान *प्रा.डॉ.एम.डी.कच्छवे*	192-195
50	जागतिक लोकशाही निर्देशांक आणि भारत *प्रा.डॉ.आंधळे बी.व्ही.*	196-199
51	सशस्त्र बलों में लैंगिक समानता : एक अध्ययन श्री. मंगेश भगवंतराव कुलकर्णी,प्रा. डॉ. सौ संपदा सुधाकरराव कुलकर्णी	200-202
52	शाश्वत विकासाची ध्येये: संकल्पना आणि स्वरूप *श्रद्धा मोहन पवार*	203-207
53	शाश्वत शेती संकल्पना: आव्हाने आणि संभावना प्रा. सुकुमार दत्ता पाटील प्रा. डॉ. एल. एच. पाटील	208-211
54`	लिंगभाव विरहित समाज रचना एक अभ्यास *पांचाळ नारायण हनमंतराव*	212-216
55	उस्मानाबाद जिल्ह्यातील उमरगा व तुळजापूर तालुक्यातील ग्रामीण वस्त्यांमधील अंतरण एक अभ्यास *प्रा. सतिश डी. गावित प्रा. डॉ. मदन व्ही. सूर्यवंशी*	217-219
56	कोरोना परिप्रेक्षात भारतीय समाज व अर्थव्यवस्थेवर झालेला परिणाम *प्रा. डॉ. झाकीरहुसेन हाकीम संदे*	220-223
57	भारतीय लोकसंख्या आणि शाश्वत विकास *प्रा. शत्रुघ्न नामदेव लोहकरे*	224-227
58	लातूर जिल्ह्यातील यात्रा केंद्राच्या अभिक्षेत्रीय वितरणावर परिणाम करणाऱ्या घटकांचा भौगोलिक अभ्यास डॉ. केरबा कांबळे	228-231

K.G.D.L. College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

'Journal of Research & Development' A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal, Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, 1June-2021, Volume-11, Issue-16, Sustainable Development Goals: Initiatives, Execution, & Challenges

कोरोना परिप्रेक्षात भारतीय समाज व अर्थव्यवस्थेवर झालेला परिणाम

प्रा. डॉ. झाकीरहुसेन हाकीम संदे

सहाय्यक प्राध्यापक, राज्यशास्त्र विभाग, क्रांतिअग्रणी जी. डी. बापू लाड महाविद्यालय, कुंडल. ता. पलूस जि. सांगली.

Email : zakirhusensande@yahoo.com

प्रस्तावना :

२०२० चे नवीन वर्ष उजाडता-उजाडता कोरोना ची बातमी प्रसारमाध्यमांमधून भारतीयांना हळूहळू समजली. नवीन वर्षात कोणकोणते नवीन उपक्रम राबवायचे आणि आपले जीवन अधिक सुंदर आणि सफल कसे करायचे याविषयी प्रत्येक भारतीय नवनवीन कल्पना करीत असतानाच, कोरोनाच्या बातमीने हा हादरा दिला आणि भारतीयांनी केलेल्या सुंदर आयुष्याच्या कल्पना हा स्वप्नविलासच ठरला. आणि बघता-बघता मार्च महिन्याच्या शेवटच्या आठवड्यापासून लॉकडाऊनला सुरुवात झाली आणि भारतीयांनी मनात उभे केलेले सर्व इमले पत्त्याच्या बंगल्याप्रमाणे जमीनदोस्त झाले. भारतासह संपूर्ण जग कोरोनानं आपल्या विळख्यात घेऊन मानवी जीवन आपल्या कराल दाढेत चावून चोथा केला. या भयंकर अशा कोरोना काळात भारतातील समाजव्यवस्था आणि आर्थव्यवस्था प्रचंड प्रभावीत झाली.

समाजव्यवस्थेवरील परिणाम :

कोरोनाची साथ जगात आलेली पहिलीच साथ नव्हे. जगाने यापेक्षा भयानक साथी पाहिल्या आहेत. प्लेग, कॉलरा, फ्ल्यू इंफ्लेन्जा, सार्स, स्वाईन फ्लू, बर्ड फ्लू, विषमज्वर, देवी, महारोग, गोवर, एड्स, आणि इबोला इ. साथी मानवी जीवन उध्वस्त करणाऱ्या ठरल्या. भारतीय समाज व्यवस्था ही मुळातच अजून सुद्धा शेती आणि बलुतेदारीसारखी जुनाट अर्थव्यवस्था आणि त्या अनुषंगाने येणारी जातिव्यवस्थेवर आधारलेली उपजीविकेची व्यवस्था असलेली अर्थव्यवस्था. परंतु कोरोनमुळे त्यातून निर्माण झालेली सामाजिक घट्ट विण सैल होऊन अस्ताव्यस्त विखुरली. जातीव्यवस्थेने दिलेले पारंपारिक रोजगार, रोजंदारीवर काम करणारे मजूर, शेतमजूर, छोटे व्यावसायिक, कलाकार, तमासगीर, करमणुकीवर आणि श्रद्धेवर उपजीविका चालविणारे बहुरूपी, कुडमुडे, वासुदेव, कडकलक्ष्मी यासारखे सामाजिक घटक कोरोना महामारीपेक्षा जगण्याच्या आणि अस्तित्वाच्या लढाईतच देशोधडीला लागले. सामाजिक सलोखा, सामाजिक बांधिलकी, बंधुभाव, समाजऋण हे शब्द हद्दपार झाले. शिकली-सवरलेली तरुण पुण्या-मुंबईसारख्या शहरांमध्ये आयटी आणि औद्योगिक क्षेत्रात गलेलठ्ठ पगारावर रुजू झाली होती पण कंपन्या बंद पडल्यामुळे त्यांना मूळगावी परत यावे लागले. पगारावर तारण घेतलेली कर्जे तुंबल्यामुळे ही तरुण पिढी हाताश झाली आणि निराशेच्या गर्तेत बुडाली. काहींनी भीतीपोटी मृत्यूला कवटाळले. अशी भारतीय समाजातील विविधतेत एकता निर्माण करणारी समाजव्यवस्था उध्वस्त झाली. कोरोना रोगाचे गांभीर्य, व्याप्ती आणि परिणाम याचा अंदाज न आल्याने किंबहुना म्हणावे तेवढ्या गांभीर्याने न घेतल्यामुळे आणि कोरोना आपले हात-पाय वेगाने पसरत असताना त्यावरील औषधोपचार, लसी, व या रोगाने ग्रस्त रुग्णांसाठी दवाखाने आणि इतर सामग्रीचा रुग्णांच्या प्रमाणात पुरेशी उपलब्धता झाली नाही व परिणामतः हजारो लोकांना आपले जीव गमवावे लागले. याच काळात अनेक घटना-घडामोडी झाल्या. लसींची अनुपलब्धता, तुटवडा, खाजगी दावाखान्यांनी आकारलेली अवाजवी बिले, रोगनिदान चाचण्यांचा अभाव, रोगाच्या बाबतीत फैलावलेल्या अफवा, गैरसमज व या रोगावर मात करण्यासाठी अनेकांनी केलेले प्रयोग यासर्व वातावरणात भारतीय माणूस संभ्रमावस्थेत गेला. अनेकांनी आपापल्या ज्ञानावर आधारित उपाय आणि औषधोपचार शोधण्याचा प्रयत्न केला. ऍलोपॅथी, आयुर्वेदिक, होमियोपॅथी, निसर्गोपचार, मानसशास्त्रीय आणि आध्यात्मिक उपाय, व्यायाम, योगविद्या, प्राणायाम, आहारशास्त्र या सर्वांचा प्रसारमाध्यम आणि समाजमाध्यमांमधून महापूर आला. कोरोनाकाळात भारतीयांवर झालेल्या सर्व दुष्परिणामांचे आपण सर्वजणच दुष्परिणामग्रस्त आहोतच. आपण सर्वांनी समोर दिसणाऱ्या सर्व गोष्टी प्रत्यक्ष डोळयांनी पाहिल्या, अनुभवल्या, भोगल्या. प्रचंड खस्ता खाल्ल्या आणि आपल्या घरातील कोलमडलेल्या अर्थव्यवस्थेवरून, संपूर्ण भारताच्या अर्थव्यवस्थेवर कोणते परिणाम झाले असतील याचा आपापल्या ज्ञान, अनुभवाच्या आधारे अंदाज बांधला. "सरकारी धोरणामुळे मुळातच बेरोजगारी वाढत होती. त्यात कोविड - १९ ने आणखी मोठी भर घातली. करोडो लोक बेरोजगार झाले आहेत. काम करू शकणाऱ्या प्रत्येक चारपैकी एक माणूस आज भारतात बेरोजगार आहे. ही बेरोजगारी अत्यंत छोट्या दुकानापासून मल्टिनॅशनल कंपनीपर्यंत सर्वत्र आहे. 'वर्क फ्रॉम होम' यापासून आता 'नो वर्क' इथपर्यंत पोहोचत आहोत अशी भीतिदायक परिस्थिती आहे. ९ जून १९२० रोजी सर्वोच्च न्यायालयाने केंद्र आणि राज्य सरकारांना एक आदेश दिला आहे. त्यात म्हटले आहे लॉकडाऊनमध्ये स्थलांतरित मजूर आपलं सर्वस्व हरवून गेले आहेत त्यांना त्यांच्या गावी रोजगार उपलब्ध करून देणे ही राज्य व केंद्र सरकारची जबाबदारी आहे.

K.G.D.L. College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

लीळाचरित्रातील समाजदर्शन

नवनाथ किसन गुंड
क्रांतिअग्रणी जी. डी. बापू लाड महाविद्यालय,
कुंडल.

चक्रधरांच्या काळात महाराष्ट्रात यादवांची राजवट होती. या काळातील समाजाचे यथार्थ चित्रण आले आहे. अन् म्हणूनच यादव काळातील महाराष्ट्राच्या समाजजीवनाच्या अभ्यासाचे एक साधन या दृष्टीने चरित्राचे महत्त्व अनन्यसाधारण आहे. त्या वेळचा समाज कसा होता? जाती व्यवस्था कशी होती? कोणते व्यवसाय केले जात होते? कोणत्या रूढी परंपरांचे पालन केले जात होते? स्त्रियांना कशा प्रकारची वागणूक दिली जात होती? धार्मिक आचरण कसे होते? आर्थिक परिस्थिती कशी होती? अशा अनेक प्रश्नांची उत्तरे लीळाचरित्र या ग्रंथातून शोधता येतात. त्याकाळच्या एकूण समाजजीवनाचा आढावा पुढील प्रमाणे घेता येईल.

सामाजिक जीवन:-

चक्रधरांच्या काळातील समाज अज्ञानी अन् अडाणी होता. शिक्षणाचा फारसा प्रसार नव्हता. ब्राम्हण वर्ग मात्र सुशिक्षित होता. वेद पुराणांचा अभ्यास त्यांनी केला होता. इतर समाज मात्र सर्वार्थाने मागासलेला होता. चातुर्वण्य पद्धती अस्तित्वात होती. समाजात ब्राहमणांना श्रेष्ठत्व होते. त्यांना दानधर्म करण्याची प्रथा होती.

ब्राम्हणांच्या आशीर्वादासाठी लोक नाना प्रकारची संपत्ती त्यांना दान देत असत. त्याकाळी अंधश्रद्धेचे प्रचंड प्राबल्य होते. भुताखेतांवर माणसांचा विश्वास होता. भूतबाधा झाल्याची अनेक उदाहरणे लीळाचरित्रात आहेत. क्षुद्र देव-देवतांचा सुळसुळाट झाला होता. देवांना प्रसन्न करण्यासाठी प्राण्यांचा बळी देण्याची प्रथा सर्रास होती. स्वप्न, शकुन, अपशकुन, दृष्ट लागणे, मंत्र-तंत्र, करणी, भानामती इत्यादी गोष्टींवर लोकांचा प्रचंड विश्वास होता. त्यावर उपाय करणारे मांत्रिकही त्याकाळी अस्तित्वात होते. अनेक प्रकारच्या रोगराईनी माणसे त्रस्त होती. औषधापेक्षा मंत्र-तंत्र, उतारा, अंगारा, उदी, भस्म यांचा वापर करून रोग बरा करण्याकडे लोकांचा कल होता. मुले होण्यासाठी देवाला नवस करण्याची प्रथा होती. मुले जगत नसल्यास, पुढे जन्मलेल्या मुलाचे नाव दगडू, धोंडू, गुंडू अशी नावे ठेवण्याची प्रथा होती. अशी नावे ठेवल्याने मुले जगतात अशी समजूत होती. चमत्कारावर लोकांचा विश्वास होता. परकाया प्रवेश याचाही लोक स्वीकार करीत असत. पुनर्जन्म ही कल्पना लोकांनी स्वीकारली होती. पुण्यवान स्वर्गात जातो तर पापी माणूस नरकात जातो ही बाब लोकांच्या मनात खूप खोलवर रुजली होती. आत्मज्ञानासाठी एखाद्या गुरुची गरज आहे लोकांनी जाणले होते. गुप्तधन, वशिकरण, सांकेतिक भाषा, जारण-मारण, लागीर या गोष्टीवर लोकांचा विश्वास होता. थोडक्यात, समाज हा श्रद्धा, अंधश्रद्धा, पाप-पुण्य, स्वर्ग- नरक, जादू-टोणा, भूत यावर विश्वास ठेवणारा होता. यासंदर्भात लीळाचरित्रात अनेक ठिकाणी स्पष्ट असे उल्लेख आले आहेत.

ISSN-2320-4494
RNI No.MAHAUL03008/13/2012-TC
Impact Factor : 2.7286

POWER OF KNOWLEDGE

An International Multilingual Quarterly Peer Review Refereed Research Journal

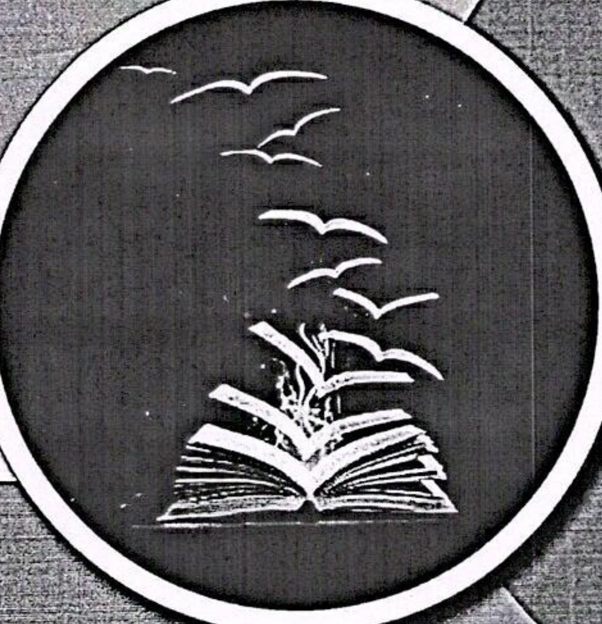

SPECIAL ISSUE : V
FEBRUARY - 2021

K.G.D.L. College, Kundal
Tal.Palus, Dist.Sangli

ARTS | COMMERCE
SCIENCE | AGRICULTURE
EDUCATION | MANAGEMENT
MEDICAL | ENGINEERING & IT | LAW
PHARMACY | PHYSICAL EDUCATION
SOCIAL SCIENCE | JOURNALISM
MUSIC | LIBRARY SCIENCE |

www.powerofknowledge.co.in
E-mail : powerofknowledge3@gmail.com

Editor
Professor Dr.Sadashiv H. Sarkate

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	प्रकरण	संशोधक	पृष्ठ क्रं.
1	Creation Of Khalsa : A True Illustration Of Guru Govind Singh's Progressive Spirit	Dr. Aneesa Iqbal Sabir	1-7
2	Role of NGOs in watershed development in Upper Man River Basin: A case study Of Man Deshi Foundation	Dr.Patil A.S. Shri.Bandgar G. D.	8-13
3	Women Self-Help-Group And Micro-Entrepreneurship	Asst. Prof. Dr. (Mrs.) Clementine Julius Rebello	14-18
4	Impacts Of Covid 19 On Various Sectors And Rebooting The Economy Post-Lockdown	Dr. R. S. Salunkhe	19-23
5	Literacy Region in Beed District of Maharashtra State	Dr. Jitendra V. Ghodake	24-27
6	Kamala Markandaya and Indian Diaspora	Dr. S. S.Sasane	28-31
[illegible]	An Analytical Study of Cropping pattern and Operational Land Holding in Marathwada Region of Maharashtra	Dr.Landge Balwant Bhimrao	32-36
8	Social Change And TheVoccumIn The Production Of Literature	Pawar Sharad Subhashrao Dr. Swapna C. Vyawahare	37-40
9	Covid-19 And Current Educational Scenario In India	Smt. Sradhanjali Swain	41-47
10	संत तुकारामांच्या अभंगातील समतेचा संदेश	प्रा.डॉ.बी.आर.दहिफळे	48-51
11	सुरेश शिंगटे यांच्या कादंब–तील कृषी जाणिवा	बनकर माणिक नामदेव	52-56
12	प्रभाकर पेंढारकर यांच्या 'रारंगढांग' या कादंबरीतील व्यक्तिचित्रण (भाग दोन)	डॉ.चंद्रकांत रुंद्राक्ष	57-62
13	मुक्ता साळवे यांच्या निबंधातील वाङ्मयीन विशेष	डॉ.सुशीलप्रकाश यादवराव चिमोरे	63-68
14	सुगावा मासिकाचेकार्य : एक अभ्यास	दीपक.हरिदास कांबळे	69-73
15	मुक्या जीवांची कैफियत म्हणजे वृषभसूक्त	प्रा.डॉ.गजानन जाधव	74-76
16	१९८० नंतरची आदिवासी कविता	प्रा. के. आर. आढाव	77-81
17	लीळाचरित्रातील व्यक्तिचित्रण	नवनाथ किसन गुंड	82-87
18	लोकसाहित्य परंपरा एक अभ्यास'	प्रा.डॉ.निवृत्ती विनायक मिसाळ	88-89
19	सामाजिक भाषाविज्ञान : संकल्पना व स्वरुप	डॉ.प्रतीक्षा गायकवाड	90-94
20	अशोक कोळी यांच्या कादंबरीतील बंडखोर पुरूषपात्र : इसादास	प्रा.डॉ.राजीव वैजनाथराव यशवंते	95-98
21	मध्ययुगीन मराठी साहित्याची विविध प्रसारमाध्यमे	प्रा. डॉ. राकेश दे. कभे	99-102
22	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरविषयक चरित्रात्मक कादंबऱ्यांचे स्वरूप	संजीव शिवाजी कांबळे	103-107
23	'आदिवासी वीरनायक तंट्या भिल्ल'	प्रा.डॉ. सुभाष निवृत्ती शेकडे	108-110
24	अण्णा भाऊ साठे यांची साहित्य व कलाविषयक भूमीका	प्रा. डॉ. सुनिल संभाजी साठे	111-114
25	१९७५ ते १९९० या कालखंडातील ग्रामीण कादंबरी	प्रा.डॉ.राजेंद्र वडमारे	115-121

K.G.D.L.College Kundal * Tal.Palus,Dist.Sangli *

Power of Knowledge Peer Review Journal, February Special Issue V 2021 ISSN 2320-4494 Impact factor 2.7286

लीळाचरित्रातील व्यक्तिचित्रण

नवनाथ किसन र

क्रांतिअग्रणी जी.डी.बापू लाड महाविद्यालय, कुंड

लीळाचरित्राचा कर्ता म्हाइंभट याचा हेतू चक्रधरस्वामींचे चरित्र लिहिण्याचा आहे त्यांच्या अनुयायांचे व्यक्तिचित्रण लिहिण्याचा नाही. तथापि चक्रधरस्वामींच्या भोवती गोळा झालेल्या त्यांच्या अनुयायांचे व्यक्तिचित्रण लिहिण्याचा नाही. तथा चक्रधरस्वामींच्या भोवती गोळा झालेल्या स्वामींच्या लीळा वर्णन करताना म्हाइंभट यांच्या हातून कळत न कळत चक्रधरस्वामींच्या बरोबर इतर त्यांचा शिष्यगण त्यामध्ये आलेला आहे. मुख्य चरित्र विषयाला पार्श्वभूमीप्रमाणे शोभून दिसणाऱ्या र महानुभाव पंथातील व्यक्ती विविधतेने नटलेल्या असून त्यांच्या द्वारे मनुष्यस्वभावाचे निरनिराळे नमुने म्हाइंभटाने लीळाचरित्र या ग्रंथातून साकार केले आहेत. लीळाचरित्र या ग्रंथातील व्यक्तिचित्रांचा थोडक्या आढावा घेण्याचा प्रयत्न या ठिकाणी केला आहे.

बाईसा :-

लीळाचरित्र या ग्रंथात प्रथम बाईसा हे व्यक्तिचित्र येते. चक्रधर स्वामींच्या पूर्वार्धापासून शेवटपर्यंत त्यांच्या सानिध्यात असणारी बाईसा स्वामींच्या जीवनाची एक साक्षीदार होती. बाईसा ही एक कडक व परखड स्वभावाची बुद्धिवान पण विरक्त जीवन जगणारी स्त्री होती. पैठण येथे व्रतस्थ जीवन जगताना चक्रधरांची आणि तिची पहिली भेट झाली. थोड्या ताठरपणानेच तिने त्यांचे स्वागत केले. त्यांना बसायला पायपुसने देते आणि जेवायला एका दुधीकरट्यात फक्त पाणीभात देते. अर्थात तेही ती स्वतः वाढत नाही, तर हासूबाई नावाच्या शिष्याला वाढायला लावते. अत्यंत अलिप्तपणे ती आपल्या गुंफेत वावरते. चक्रधराविषयी कसलेच औत्सुक्य तिला वाटत नाही. परंतु लवकरच, म्हणजे अवघ्या तिसऱ्या दिवशी, बाईसा आणि स्वामींची दृष्टा-दृष्ट होऊन ते तिला प्रेमादान करतात. तिचे त्रिदोष नाहीसे करून तिच्याठायी भक्तीप्रेमाचा संचार करतात. प्रसंगाने बाईसेची वृत्ती बदलते व स्वामींची एकनिष्ठ शिष्या बनते. याप्रसंगी ' स्वामी मी पापीन आहे, मी स्वतः उच्चासनावर बसून आपल्याला खाली बसविले!' या शब्दा तिने स्वामींची माफी मागितली आहे. पूर्वी ती वामदेवाची शिष्या होती पण चक्रधराच्या दर्शनाने ती अंतर्बाह्य बदलली.

बाईसाने चक्रधरांची जशी भक्ती केली तशीच भक्ती गोविंदप्रभूंचीही केली. रिधपूरच्या मुक्कामा चक्रधरांनी आपल्या गुरूची महती वर्णन करून सांगितली तेव्हा पासून गोविंदप्रभूचीही ती भक्त बनली.बाइसाची गुरुनिष्ठा कमालीची होती. अनेक लीळातून तिच्या या निष्ठेची वर्णने आली आहेत. एकदा चक्रधर औदास्य स्वीकारून भक्तजनांना सोडून एकाकी वृत्तीने बाहेर पडले. तेव्हा बाईसाही त्यांच्या पाठोपाठ निघाली. वेरुळच्या मुक्कामात एक रानडुक्कर स्वामींच्या दिशेने चालून आले तेव्हा त्यांच्याबरोबरचे सारे भक्तजन त्यांना सोडून भीतीने दूर पळून गेले. पुढे ही हकिगत ऐकून बाईसाने त्यांना बोल लावून 'पोरे हो : बाबाते कैसे सांडोनी गेलेति?' असे म्हणून त्यांना धारेवर धरले. ब्रह्मासानाने त्यांच्यावर जेव्हा विषप्रयोग केला होता तेव्हा बाईसा फार अस्वस्थ झाली होती. ते त्यातून बरे व्हावेत यासाठी प्रचंड धावाधाव करू लागली. त्यांच्या अंगातील ज्वर उतरेपर्यंत तिने तोंडात पाणीही घेतले नव्हते.

K.G.D.L. College, Kundal * Tal.Palus, Dist.Sangli *

ISSN 2277- 8063

Navjyot

नवज्योत

International Interdisciplinary Research Journal
(Humanities, Social Sciences, Languages, Commerce & Management)

K.G.D.L College, Kundal
Tal.Palus, Dist.Sangli

www.navjyot.net

E-mail : editornavjyot@gmail.com

CONTENT

Sr. No	Subject	Title	Author	P. No.
1	राज्यशास्त्र	मेळघाट विधानसभा मतदारसंघातील आदिवासी जमातीच्या उमेदवारांचे राजकीय सहभाग	प्रा. डॉ. रमेश एम. राठोड	1-2
2	English	Impact Of The Partition On Indian Women	Shubhangi Pralhad Kharat	3-6
3	हिंदी	महात्मा बसवेश्वर एव संत कबीर के क्रांतिकारी विचारो का तुलनात्मक अध्ययन	प्रा. डॉ विजय शिवराम पवार	7-9
4	Humanities	Communication between a man and a woman with reference to HenrikIbsen's play *A Doll'sHouse (1879)*	Dr. (Mrs.) Chandan Mishra	10-11
5	अर्थशास्त्र	तौक्ते चक्रीवादळाचा सिंधुदुर्ग जिल्ह्याच्या मच्छीमार व्यवसायावर झालेला परिणाम	श्री शरदकुमार उत्तम शेटे डॉ शिंदे जी एस	12-14
6	राज्यशास्त्र	कोरोना-19 चे असंघटित क्षेत्रातील घटकांवरील परिणाम व भारतीय राज्यघटनेची भूमिका	प्रा. पाटील प्रमोद जगन्नाथ	15-19
7	राज्यशास्त्र	भारताचे पूर्व आशियाई धोरण	प्रा. डॉ. रविंद्र भणगे	20-26
8	राज्यशास्त्र	भारतीय राज्यघटना व ५० टक्के आरक्षणाची मर्यादा	अरुण दामोदर नलवडे	27-28
9	Political Science	'Patwari Policing' in Uttarakhand : A Study of Continuity and Change	D. K. P. Chaudhary	29-36
10	Economics	The Recent Trend And Pattern Of Employment Generation In India	D.K. Pathrut	37-40
11	राज्यशास्त्र	डॉ.जनार्दन वाघमारे यांच्या राज्यसभेतील कार्याचे विश्लेषण	डॉ.बी .लक्षटे आर. सुमेद चापाजी गुंडेराव	41-44
12	English	Girish Karnad Imagines His Women Characters In "Wedding Album" In Contradictions.	Shalaka Vijay Kadam	45-47
13	समाजशास्त्र	'कुंभारांच अर्थकारण'	प्रा. संभाजी शंकर कांबळे	48-51
14	Physical Education	Sports and its influence on General Health: A review	Sangram Shivaji Todkar	52-54
15	हिन्दी	तुलसीदास के काव्य में समन्वयवादी दृष्टिकोण	डॉ अरुण.घोगरे	55-56
16	राज्यशास्त्र	राम मनोहर लोहिया यांचे समता विषयक विचार	डॉ. सुखदेव एस. उंदरे	57-58

K.G.D.L. College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

IMPACT OF THE PARTITION ON INDIAN WOMEN

Shubhangi Pralhad Kharat *Krantiagrani G.D.Bapu Lad Mahavidyalaya,Kundal.*
Tal-Palus,Dist-Sangli Maharashtra

ABSTRACT

The Indian Partition is only as an important and crucial moment in history. It is coupled with the birth of a nation and is also a permanent marker of 'self' and 'other' on a gigantic material and national scale. The Indian Partition has raised many issues and questions about citizenship, national identity and the making of national and sub national mentalities. This paper focuses on the impact of partition on Indian women such as violence against women during the communal riots that followed the Partition of India in 1947.

Keywords: Indian Partition, ethnic violence, violence against women,

The Partition has been the biggest blunder in the history of mankind. According to Altaf Hussein, "The Indian freedom struggle resulted in the creation of two new nations with the departure of the British in August 1947". In August 1947, the British left India, and the subcontinent was partitioned into two independent nations: Hindu-majority India and Muslim-majority Pakistan. As a result, a million people were left dead, at least seventy five thousand women were raped, mutilated and abandoned, about twelve million people were displaced and rendered homeless, countless homes, properties, families were devastated as new national borders were drawn, ruthlessly wiping away the old existing cultural , ethnic and geographical entities.

This research has attempted to study this and set it in the larger picture of the two disciplines –history and literature.

Novels on the partition try to depict the socio-cultural ethos of a community in detail within a historically specific temporal framework. It is then logical that the form of novel and short story, which is also narrative, be studied to make the juxtaposition and comparison more relevant and plausible. In the present study the partition of 1947 has been considered.

The main theme of this paper focus on violence against women during the partition of India was an extensive issue. It is estimated that during the partition between 75,000-and 100,000-women were kidnapped and raped. The rape of women by males during this period is well documented-with women also being complicit in this attack. In this issue systematic violence against women started in March 1947 in Rawalpindi district where Sikh women were targeted by Muslim mobs. Violence was also perpetrated on an organized basis, with Pathans taking Hindu and Sikh women from refugee trains while one observer witnessed armed Sikhs periodically dragging Muslim women.

So at that time of partition women were subjected to various kinds of violence by different agents during the partition. Thousands of women, estimates range from 25,000 to 29,000 were abducted, raped, forced into marriage, forced to convert and killed, on both sides of the border. Women were also mutilated, their breasts cut off, stripped naked and paraded down the streets and their bodies carved with religious symbols of the '*other* 'community. GD Khosla gave example of a young girl whose relations were made to stand in a circle and watch while she was raped by several men.

Many women inflicted on women by their own men in the form of suicides they were coerced into, or killed in the name of honour. There were also women who committed suicide of their own volition to keep their 'purity' and were later glorified as 'martyrs'. Through the interview of one of the three survivors (Basant Kaur) of the Thoa Khalsa incident, Urvashi Butalia deconstructs the conventional view of women being always perceived as victims in an ethnic conflict. She argues that while some women were forced and compelled to die, if the accounts of the survivors are to be believed, there

K.G.D.L. College, Kundal * Tal-Palus

ISSN 2277- 8063

Navjyot
नवज्योत

K.G.D.L. College, Kundal Tal.Palus, Dist.Sangli

International Interdisciplinary Research Journal
(Humanities, Social Sciences, Languages, Commerce & Management)

www.navjyot.net
E-mail : editornavjyot@gmail.com

18	इतिहास	भाई भगवानराव पाटील यांचे जीवन व कार्य	डॉ. विवेकानंद राजाराम माने	68-70
19	Physical Education & Sports	"Effect of Physical Fitness Activities on Physical and Mental Health"	Paras G.Yadav Dr. Sinku Kumar Singh	71-73
20	राज्यशास्त्र	भारत एकपक्षीय राजवटीच्या दिशेने	प्रा. डॉ. प्रदीप पंजाबराव दंदे	74-79
21	राज्यशास्त्र	जागतिकीकरणाच्या प्रक्रियेत महात्मा गांधींच्या ग्रामस्वराज्य संकल्पनेची प्रासंगिकता	डॉ अनुराधा कदम	80-83
22	Sociology	Women In Slum	Phalrani Shivramsing Rajput	84-86

K.C.D.L College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

भाई भगवानराव पाटील यांचे जीवन व कार्य

डॉ. विवेकानंद राजाराम माने, इतिहास विभागप्रमुख, क्रांतिअग्रणी जी.डी.बापू लाड महाविद्यालय, कुंडल जि. सांगली

प्रस्तावना:

भगवानराव पाटील यांनी देशाच्या स्वातंत्र्ययुध्दात बहुमोल कार्य केले. प्रतिसरकारमध्ये क्रांतिसिंह नाना पाटलांच्या समवेत इंग्रज सरकारविरूद्ध भगवानराव पाटील यांनी दंड थोपटले होते. भगवानराव पाटील यांचा जन्म दि. १० फेब्रुवारी, १९१८ रोजी त्यांच्या आजोळी नेवरी या गावी झाला. त्यांचे मोरे घराणे हे हणमंतवडिये या गावचे प्रतिष्ठित मराठा घराणे म्हणून ओळखले जाते. १९४० साली भगवानराव पाटील यांचा विवाह क्रांतिसिंह नाना पाटील यांची मुलगी हौसाबाई यांच्याशी सुधारक गांधीलग्न पध्दतीने, पण भागातील शेकडो लोकांच्या उपस्थितीत व स्वामी रामानंद भारती आदी नेत्यांच्या आशीर्वादाने संपन्न झाला.[१]

स्वातंत्र्यलढ्यातील कार्य :

भूमिगत चळवळीत भगवानराव पाटील यांनी अगदी सुरूवातीच्या काळापासून भाग घेतला. प्रारंभी चळवळीतील एक सामान्य कार्यकर्ता म्हणून त्यांनी काम केले. परंतु अल्पावधीतच त्यांनी आपल्या नेतृत्वाखाली काम करणारा स्वतःचा वेगळा गट तयार करण्यापर्यंत प्रगती केली.

क्रांतिसिंह नाना पाटीलांशी निर्माण झालेल्या नातेसंबंधामुळे भगवानराव पाटील यांना स्वातंत्र्य चळवळीत सहभागी होण्याच्या दृष्टीने अनुकूल पार्श्वभूमी तयार झाली. हे खरे असले तरी त्यांच्यावर राष्ट्रभक्तीचे व सार्वजनिक कार्याचे संस्कार बालपणापासून झाले होते. भगवानराव पाटील यांचे वडील नानासाहेब मोरे–पाटील हे प्रथमपासून कॉंग्रेसचे एक कार्यकर्ते होते. त्यांना सामाजिक कार्याची आवड होती. त्यांनी आपल्या काही साथीदारांच्या सहकार्याने १९३० च्या कायदेभंगाच्या चळवळीपासून हणमंतवडिये गावात कॉंग्रेसच्या कार्याला सुरूवात केली होती.

वडिलांनी केलेल्या संस्कारामुळे भगवानराव पाटील विद्यार्थीदशेपासूनच सार्वजनिक कार्यात रस घेऊ लागले होते. सविनय कायदेभंगाच्या चळवळीच्या काळात गावातून प्रभातफेऱ्या काढणे, तरूण वर्गात जागृती निर्माण करणे वगैरे कामात त्यांनी पुढाकार घेतला होता. पुढे क्रांतिसिंहाच्या सहवासात आल्यावर तर हे संस्कार अधिकच दृढ झाले. त्यामुळे 'चले जाव' चळवळीत भगवानराव पाटील यांनी क्रांतिसिंह नानांच्या पावलावर पाउल टाकून आपल्या कुवतीनुसार चळवळीची जबाबदारी उचलण्याची तयारी दाखविली.[२] आंदोलने सुरू होताच त्यांनी आपल्या पत्नीसह खानापूर तालुक्याची हद्द ओलांडली व कुंडल, दुधोंडी गाठले.

क्रांतिकार्यात सहभागी होण्यासाठी कुंडल, दुधोंडी भागांत गेलेल्या भगवानराव पाटील यांनी सुरूवातीचे थोडे दिवस चळवळीचे तत्वज्ञान, कार्यक्रम, कार्यपध्दती वगैरेचे बारकाईने निरीक्षण केले, राजकारणाचा अभ्यास केला. नंतर केवळ चळवळीतील आपल्या नातलगांच्या छायेतच वावरण्याऐवजी त्यानी स्वतंत्रपणे काही माणसे जमविली आणि प्रत्यक्ष कार्याला सुरूवात केली. तसेच बुर्ली, आमनापूर, पलूस, दुधोंडी वगैरे गावातील प्रमुख मंडळीशी संपर्क प्रस्थापित केला व त्यांच्याशी जिव्हाळ्याचे संबंध जोडले. त्यांच्या कार्यात ते सहभागी होऊ लागले. अशा प्रकारे या चळवळीत भगवानराव पाटील यांनी स्वतःचे असे स्थान व अस्तित्व निर्माण केले. त्यामुळे चळवळीतील प्रमुख नेत्यांमध्ये त्यांची गणना होऊ लागली.

राष्ट्रीय कामगार संघटनेचे कार्य :

भगवानराव पाटील, बाळकू अण्णा मोहिते व इतर कार्यकर्त्यांनी अहोरात्र मेहनत करून सातारा जिल्हा राष्ट्रीय संघाला एका प्रभावी व भक्कम संघटनेचे स्वरूप प्राप्त करून दिले. मुंबईतील सातारा, सांगली, कोल्हापूरकडील कामगारांवर, विशेषतः गिरणी कामगारांवर, त्या वेळी या संघटनेचा फार मोठा प्रभाव होता. भगवानराव पाटील व मोहिते अण्णा यांनी कल्याण, ठाणे, दादरपासून बोरी बंदरपर्यंत मराठी कामगारांच्या वस्तीमध्ये फिरून त्यांना या संघटनेत सामील करून घेतले होते. या कामगारांच्यात राष्ट्रीय वृत्ती निर्माण करण्यास आणि त्यांना राष्ट्रीय कार्याकडे वळविण्यास सातारा जिल्हा राष्ट्रीय संघाचा मोठाच हातभार लागला होता. भगवानराव पाटील भूमिगत कार्यकर्ते म्हणून वावरत असतानाही त्यांनी टोपण नावाने जाहीर सभातूनही भाषणे केली. खासगी बैठका घेऊन कामगारांमध्ये प्रबोधन करण्याचे कार्य तर नेहमीच चालू होते. काही प्रमुख भूमिगत नेत्यांच्या बैठका त्यांनी आयोजित केल्या होत्या.[३]

शेतकरी कामगार पक्षातील कार्य:

१९४९ च्या नोव्हेंबर महिन्यात भगवानराव पाटील यांनी कॉंग्रेस सोडून शेतकरी कामगार पक्षात प्रवेश केला. १९५७ च्या निवडणुकीत भगवानराव पाटील शेतकरी कामगार पक्षाच्या तिकिटावर संयुक्त महाराष्ट्र समितीचे उमेदवार म्हणून उभे राहिले. मराठी माणसावर झालेल्या अन्यायाची चीड व त्यातून झालेली जनजागृती वगैरेमुळे भगवानराव पाटील सहज विजय झाले.

आमदार असताना केलेले कार्य :

भगवानराव पाटील १९५७ ते १९६२ अशी पाच मुंबई राज्याच्या व महाराष्ट्राच्या विधानसभेचे सभासद होते. तथापि जनतेचे प्रतिनिधी या नात्याने आपणावर पडलेली जबाबदारी पार पाडण्यास आपण बांधील आहोत, अशी त्यांची धारणा होती. म्हणून संधी मिळेल तेव्हा सभागृहात वेगवेगळ्या प्रश्नांवर आपले विचार व्यक्त करण्याचे कर्तव्य त्यांनी बजावले होते. तसेच आपल्या मतदारसंघाच्या महत्वाच्या व जनतेच्या

Impact Factor 7.149

ISSN 2349-638x

Peer Reviewed And Indexed

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly e-Journal

VOL-VIII ISSUE-IV April 2021

Address
· Devgiri Nagar, Ambajogai Road, Latur.
· Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
· (+91) 9922455749, (+91) 8999250451

Email
· aiirjpramod@gmail.com
· aayushijournal@gmail.com

Website
· www.aiirjournal.com

K.G.D.L. College Kundal, Tal.Palus Dist.Sangli

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

Sr.No.	Author Name	Research Paper / Article Name	Page No.
1	Dr. Sangita Mangesh Khadase	Role of Yogasanas and Pranayam on the Physiological Fitness of Senior Citizen during Covid -19 pandemic lockdown	1 To 3
2	Kaur Parneet	Social Features of Working Women of Fazilka District of Punjab: A Sociological Study	4 To 11
3	Dr. Mangesh G. Mundhe & Dr.Dhate R.H. & Dr. Gunale Ravindra	Study Effect Of Chaturbij Churna In Sutika Awastha In First Week	12 To 16
4	Vda.Asmita S. Yesane	Use of Katu Taila in Paediatric Spleenic Disorders	17 To 20
5	Vd.Neha Madhukar Pawar & Vd.Archana Kulkarni	Shatkriyakala	21 To 25
6	Anuradha D. Pawar	Analysis of Physicochemical Parameter, Heavy Metals and Micronutrients of Soil Sample of Kundal Village, Sangli District, Maharashtra	26 To 30
7	S. L. Nalawade & A. M. Joshi	A Literature Review: Data Mining Techniques, Applications & Issues	31 To 35
8	Dr. Manjula. G. K.	Women Entrepreneurs in Belgaum District	36 To 37
9	Dr. K. H. Kulkarni	Effective Teaching Learning Outcomes Through The Teacher Education	38 To 39
10	Dr. N.S. Jadhav	Uses of ICT Tools in Assessment	40 To 43
11	Dr Archana Bobade	Major Themes in Alice Walker's The Color Purple	44 To 47
12	Dr. Umesh Vithalrao Kadu	Alienation, Globalisation Self Realisation & Hybridization In Kiran Desais	48 To 49
13	Dr. Manjula. G. K.	Women Entrepreneur- In Indian Perspectives	50 To 52
14	Shashanka Sekhar Roy	National Service Scheme (NSS): A Youth Development Programme in Higher Education	53 To 57
15	Dr. Vikas B. Suryawanshi	Mass Spectral Fragmentation Patterns of (E)-2-(((4-((4-minophenyl)sulfonyl)phenyl) mino)methyl)phenols.	58 To 59
16	Dr. Sunita Shankarrao Shinde & Mr. Dnyaneshwar Deeliprao Fajage	A Geogaraphical Anilasis on Covide 19 Pandimic in Maharashtra	60 To 63
17	S. L. Nalawade & A. M. Joshi	Linux: An Open Source Technology Tool	64 To 75

K.C.D.L. College, Kundal, Palus, Dist.Sangli

Analysis of Physicochemical Parameter, Heavy Metals and Micronutrients of Soil Sample of Kundal Village, Sangli District, Maharashtra

Anuradha D. Pawar
Assistant Professor, Department of Chemistry,
Krantiagrani G. D. Bapu Lad College, Kundal
Dist. Sangli .
E-mail:adpawar09@gmail.com

Abstract:

Analysis of physicochemical parameters, heavy metals and micronutrients in soil samples were collected from various farm land of Kundal area, Palus taluka Dist. Sangli, Maharashtra. Top soil samples (0-10cm) were taken from various farm lands. The soil analysis was carried out on various parameters like pH, EC, nitrogen, phosphorous, potassium and heavy metals like Cu, Fe, Mn, Zn, O.C. The result shows that on an average all the soil samples collected from various farmers of Kundal area are much varied in all parameters. This scientific information will be helpful to the farmers to solve the problems related to soil nutrients and to add optimum amount of fertilizers in soil for cultivation of highly economic crops.

Key words: *soil analysis, heavy metal, physicochemical parameters.*

Introduction

Soil is a vital component; medium of mineral and organic nutrients for the life of plants. Soil can develop by pedogenic processes from weathered rocks, volcanic ash deposits consisting of inorganic and organic constituents (Thakre, 2012). The chemical, physical, mineralogical and biological properties of soil having variability from depth to surface of the earth, thus forming life layer of plants. It is a natural body consisting of layers (soil horizons) of mineral constituents, which differ in their morphological, physical, chemical and biological properties from parent materials (Manimegai and Sukanya, 2014). Soil properties that are sensitive to changes can be used as indicators to improve soil quality. The testing of physical and chemical parameters of the soil is also important for the agricultural farmers in the development of specific fertilizers of land management in crop yield (Odoemelam and Ajunwa, 2008). The yield of crop depends on fertility and presence of micro-nutrients and physic-chemical constituents in the soil. These physicochemical constituents in soil influence the growth of plants (Samuel and Werner, 1975).

The fertility of the soil depends on the concentration of N, P, K, organic and inorganic materials and conductivity. The physicochemical properties such as moisture content, Nitrogen, phosphorus and organic matter required for the growth of plant (Kanimozhi and Panneerselvam, 2011). The physicochemical properties such as moisture content, specific gravity Nitrogen as a fertilizer required for the growth of plant. Potassium is used for flowering purpose, it is also required for building of protein, photosynthesis, fruit quality and reduction of diseases and phosphate is used for growth of roots in plants. Calcium is an essential part of plant cell wall, which provides normal transport and retention of other elements (Garba et al., 2013; Kordlaghari and Sisakht, 2013). Soil sampling is perhaps the most vital step for any soil analysis. Soil analysis is extremely important to get a truly representative of soil. Soil analysis test has emerged as a key issue to increase nutrient management in agricultural productivity and production since optimal use of nutrients, can improve crop productivity and minimize wastage of these nutrients, thus minimizing impact on optimal production (Dalwadi and Bhatt, 2008 and Borah and Bhuyan, 2009). The main aim of the present investigation is to analyze the physicochemical properties and heavy metals content of soil samples collected from the various localities of Kundal areas of Sangli district, Maharashtra.

Material And Methods:

The present study deals with the analysis of soil samples from sugarcane field which were collected

June-2021

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

K.G.D.L. College, Kundal ★ Tal.Palus, Dist.Sangli ★

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

13) मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में नारी विमर्श
ज्योति कुमारी, जिला: रांची, राज्य: झारखंड ||53

14) पुरूषसत्ताक व्यवस्था में अपनी भूमिका तलाशती स्त्री : "बिना किसी भूमिका के"
डॉं. भगवान रामकिशन कदम, जी. लातूर, महाराष्ट्र ||56

15) समकालीन कविता में प्रेम और स्त्री देह
डॉ. लोकेन्द्र कुमार, बाँसवाड़ा (राजस्थान) ||59

16) 'रात के संतरी' की कविता में स्त्री विमर्श
डॉ. मल्लिकार्जन.एन, उजिरे (दक्षिण कन्नड) कर्नाटक ||62

17) नारी के बदलते सामाजिक संदर्भों को आत्मसात करता : "अकेला पलाश"
प्रा. डॉ. शेख मुखत्यार शेख वहाब, जिला—औरंगाबाद (महाराष्ट्र) ||65

18) हिंदी स्त्री विर्मश
प्रा.डॉ. रेखा मुळे, जि. बीड ||69

19) मृदुला गर्ग के 'उसके हिस्से की धूप' उपन्यास में चित्रित नारी जीवन की त्रासदी
प्रा.डॉ. जगन्नाथ आबासो पाटील, जि. सांगली ||72

20) भूमंडलीकरण की आग से आम होती नारी : कविता के विशेष संदर्भ में
डॉ. पंढरीनाथ शिवदास पाटील, धुले, महाराष्ट्र ||74

21) हिन्दी प.साहित्य में स्त्री विमर्श
श्रीमती प्रेमलता पाटील, डोलरिया (मध्यप्रदेश) ||78

22) कमल कुमार की कहानियों में स्त्री—संघर्ष
पवार ज्ञानेश्वर राधाकिसन, औरंगाबाद ||83

23) हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श
डॉ॰ प्रीति भट्ट, नाथद्वारा (राज.) ||86

24) स्वअस्तित्व के लिए संघर्षरत आधुनिक नारी (मुझे चाँद चाहिए के संदर्भ में)
डा. रश्मि शर्मा, जिला गुरदासपुर(पंजाब) ||90

25) निर्मला चौहान के उपन्यासों में नारी चित्रण
डॉ. रिना रमेश सुरडकर & प्रा. डॉ. देशमुख दस्तगीर सरदारमिया, औरंगाबाद ||94

K.G.D.L. College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

19

मृदुला गर्ग के 'उसके हिस्से की धूप' उपन्यास में चित्रित नारी जीवन की त्रासदी

प्रा.डॉ. जगन्नाथ आबासो पाटील
क्रांतिअग्रणी जी. डी. बापू लाड महाविद्यालय
कुंडल, तहसिल– पलुस, जि. सांगली

****

मृदुला गर्ग के उसके हिस्से की धूप उपन्यास में स्त्री पात्र का मनोवैज्ञानिक स्वरुप जो हमारे सामने आता है, वह विशिष्ट आधुनिक नारी का है। विश्व में स्त्री का सामर्थ्य व्यापक रुप में है। उन सभी की अपनी –अपनी अलग सत्ता है। उनकी स्वतंत्रता भी है। परंतु हम देखते है कि, परंपरागत भारतीय समाज में स्त्री–पुरुष संबंधो के बीच मानवीय स्वतंत्रता खासकर स्त्री की स्वतंत्रता को हमेशा ही अनदेखा किया हुआ हमें समाज में दिखाई देता है।

मृदुला गर्ग का उसके हिस्से की धूप यह उपन्यास परंपरागत ही नहीं बल्कि आधुनिकता के धिसे –पीटे वैचारिक चौखट से बाहर निकलकर आधुनिक व्यवस्था पर अनेक सवाल उठता है। वह सवाल यह है कि, आधुनिक समाज व्यवस्था में स्त्री–पुरुष संबंधों का आधार क्या हैध्इस समय में नारी की प्रेम भावना क्या हैध्उसकी स्वतंत्रता क्या हैं स्त्री–पुरुष संबंधों का सत्य सिर्फ मनोगत है अथवा इसके समांतर कोई दैहिक सच्चाई भी हैं साधारणतः देखा जाए तो मृदुला गर्गजी का यह उपन्यास एक त्रिकोणी प्रेम कथा है। इसमें मनिषा, जतीन और मधुकर यह तीन प्रमुख पात्र है।

प्रस्तुत उपन्यास की नायिका मनिषा है। मनिषा और जतीन का विवाह होता है। मनिषा कॉलेज में प्राध्यापिका है। और जतीन फॅक्टरीमें मॅनेजर के पद पर काम करता है। दोनो भी अपनी जीवन शैली जी रहे है। दोनो भी अपने –अपने कामों में व्यस्त दिखाई देते है। जैसे लेखिका कहती है, 'यूँ तो दोनों का एक साथ घर से बाहर निकलना होता है।'[१] दोनों अपने कामों मे व्यस्त होने के कारण दोनों ही किसी के सुख दुख में हिस्सा नहीं ले पाते। उपन्यास की नायिका मनिषा आधुनिक काल की स्वतंत्र नारी के रुप में दिखाई देती है। वह स्वावलंबन से जीवनयापन करने का प्रयत्न करती है। परंतु उसका पति जतीन उसे ज्यादा अहमियत नहीं देता। सुबह –सुबह दोनों भी काम पर जाते है। परंतु जतीन को अपना काम मनिषा के काम से जादा महत्वपूर्ण लगता है। लेखिका कहती है, 'यूँ तो सुबह दोनों को एक साथ घर से बाहर निकलना होता है, पर लगता है, जैसे जितेन को ही जाना है। यह शायद इसलिए कि उसका जाना शौक है और जितेन का जाना जीवन आपुर्ति।'[२]

मनिषा स्वतंत्र विचारोंवाली नारी है। परंतु जतीन उसकी स्वतंत्रता और विकास में बाधा उत्पन्न करता हुआ दिखाई देता है। इसी कारण वह मधुकर नामक पुरुष पर आकर्षित होती हुई दिखाई देती है। शायद मनिषा को लगता है कि, मधुकर उसकी स्वतंत्रता में बाधा न डालेगा। उसके बाद मनिषा जतीन से तलाक लेकर प्रेमी मधुकर से शादी करती है। मधुकर शादी करते समय मनिषा ने जो सपने देखे थे। वह सपने खतम होते है। मधुकर शादी करने के कई दिनों बाद वही स्थिति आ जाती है। जो पहले जतीन के साथ रहने में थी। मधुकर भी अपनी पत्नी के साथ स्वतंत्रतापुर्ण व्यवहार नहीं करता मनिषा अपने जीवन का खालीपन सहन नही कर पाती उसी दौरान जतीन की मुलाकात मनिषा से होती हैं। और फिर मनिषा जतीन के प्रति आकर्षिक होती है। उपन्यास की नायिक मनिषा की मनोवैज्ञानिक अवस्था तथा उसकी घूटन इस उपन्यास का मूल विषय है। इस उपन्यास में मनिषा का एक ऐसा पात्र है जिसके ईर्द–गिर्द उपन्यास का सारा कथानक घुमता है। मृदुला गर्गजी ने इस घुटनग्रस्त नारी मनिषा की चारीत्रिक विशेषताओं का चित्रित करते हुए उसका मनोविश्लेषण किया है।

आधुनिक नारी:–

मृदुला गर्गजी के उपन्यास उसके हिस्से की

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता

April To June 2021
Issue 38, Vol-04

Date of Publication
01 May 2021

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

26) संत नरहरी सोनार आणि संत सेना न्हावी यांच्या अभंगातील भक्तियोग-तुलनात्मक अभ्यास
डॉ.वसंत रघुनाथ शेंडगे, जि.अहमदनगर ||113

27) कोविंड १९ दरम्यान नागरिकांनी आरोग्यवर्धकतेसाठी केलेल्या उपायांचा अभ्यास
किरण छगन वाळजे & डॉ. संजय चंद्रशेखर ||117

28) छत्रपती शिवरायांचे सोशल इंजिनिअरिंग
DR. Maya Wankhade, Dist. Amravati ||120

29) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर : संविधानाची सद्यस्थितीतील उपयुक्तता
प्रा. डॉ. महेश मोटे, जि. उस्मानाबाद ||124

30) डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर आणि भारतीय राज्यघटना:एक अभ्यास
प्रा.डॉ. श्यामसुंदर पंढरीनाथ वाघमारे, परभणी ||130

31) मुख्यमंत्री बालिका साइकिल योजनाः एक मूक सामाजिक क्रांति
अभिषेक आनन्द, कटिहार ||133

32) कथक नृत्य में ठुमरी प्रदर्शन
मंजरी बख्शी, खैरागढ़ (छ.ग.) ||137

33) ओस की बूँद : एक मुल्यांकन
प्राचार्य डॉ.विलास कांबळे, जि.लातूर ||140

34) म.प्र.के अध्ययन अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों के ...
हरिओम खटीक & डॉ.एन.के.नगाईच, ग्वालियर ||145

35) भोजपुरी लोकगीतों में परिवार
डॉ. राम पाण्डेय, महराजगंज ||148

36) मीडिया में अनुवाद की भूमिका
डॉ. ज़हीरूद्दिन रफियोद्दिन पठान, जि.नांदेड ||150

37) इक्कीसवी सदी के दलित साहित्य् में आक्रोश और विद्रोह
प्रा.डॉ. जगन्नाथ आबासो पाटील, जि. सांगली ||154

38) भारतीय अर्थव्यवस्था एवं रोजगार पर वैश्विक मंदी का प्रभाव — एक अध्ययन
डॉ. के.एल.टाण्डेकर & सुश्री प्रतिभा सिंह, जिला — राजनांदगांव (छ.ग.) ||157

http://www.printingarea.blogspot.com
www.vidyawarta.com/03

एकता को बढ़ावा देते हैं तथा लोगों को एक–दूसरे के करीब लाते हैं, वहाँ वे अनुवाद की अपार संभावनाओं के द्वार भी खोल देते हैं।

भाषा संप्रेषण का माध्यम होती है। लेकिन यदि भाषा पर प्रभुत्व हो तो करिअर बनाने की डगर बहुत आसान हो जाती है। जिन लोगों को दो या तीन भाषाओं की अच्छी जानकारी होती है, वे अनुवादक के रूप में अच्छा करिअर बना सकते हैं। अनुवाद का मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास में बहुत बड़ा योगदान है। अनुवाद दरअसल एक सेतु है, जो दो भाषाओं, दो संस्कृतियों, और दो सभ्यताओं को आपस में जोड़ता है।

संदर्भ ग्रंथ सूचि

१. डॉ. माधव सोनटक्के : हिंदी के प्रयोजनमूलक भाषा–रूप,

२. डॉ. अम्बादास देषमुख : प्रयोजनमूलक हिंदी : अधुनातन आयाम,

३. दंगल झाल्टे : प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत और व्यवहार,

४. डॉ. सुजाता वर्मा : पत्रकारिता : प्रशिक्षण एवं प्रेस विधि,

५. विनोद गोदरे : प्रयोजनमूलक हिंदी,

६. डॉ. आर. एम. जाधव : पत्रकारिता और जन संचार के माध्यम,

७. सं. गार्गेश, गोस्वामी : अनुवाद और भाषांतरण,

८. डॉ. सुधाकर गोकाकर : संचार माध्यमों में हिंदी,

९. प्रा. निशिकांत ठकार : अनुवाद की अवधारणा,

१०. डॉ. दामोदर खडसे : व्यावहारिक अनुवाद,

११. दैनिक भास्कर (हिंदी दैनिक समाचार पत्र),

१२. लोकसत्ता (मराठी दैनिक समाचार पत्र),

१३. टाईम्स ऑफ इंडिया (अंग्रेज़ी दैनिक समाचार पत्र)

१४. लोकमत समाचार (हिंदी दैनिक समाचार पत्र)

37

इक्कीसवी सदी के दलित साहित्य् में आक्रोश और विद्रोह

प्रा.डॉ. जगन्नाथ आबासो पाटील
क्रांतिअग्रणी जी. डी. बापू लाड महाविद्यालय
कुंडल, तहसिल – पलुस, जि. सांगली

G.D.L. College, Kundal, Tal. Palus, Dist. Sangli

****

इक्कीसवी सदी में भारतीय समाज की साहित्य के अन्य कृतियों की तुलना में दलित साहित्य की कृतियों के प्रति आम पाठकों तथा जिज्ञासु विद्वानों की अभिरुचि बढ गयी है। इसका मुख्य कारण दलित साहित्य का मुख्य केंद्र बिंदु आम आदमी, शोषित, पीडित, प्रवंचित दलित है। दलित साहित्य की उपयोगिता इसी में है कि वह व्यावहारिकता के असंगत प्रत्येक संदर्भ को झुठलाते हुए जीवन को कलात्मकता प्रदान करती है । कल्पना जगत को तिलांजली देकर यथार्थ को अभिव्यक्ति करने में जो जादुई करिश्मा है, वह अन्य किसी साहित्य में नहीं है । दलित साहित्य स्वातंत्र्योत्तर काल की देन है, दलित साहित्य एकमात्र ऐसा साहित्य है, जो मराठी साहित्य् से प्रभावित हिन्दी में विकसित हुआ है ।

२० वी शताब्दी के मध्य् से समाज में दलितों को जलाना, उनके घर, झोपडी, खेतखलिहान को लुटाना, दलित नारी पर बलात्कार करना, उसकी हत्या करना, उसे गाँव में नंगी घुमाना, अन्याय, अत्याचार, दुराचार, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, प्रांतिय भेद, हिंसा तथा निर्दयता, बेरोजगारी, जातिभेद आदि से भरा हुआ तनाव और संघर्षपूर्ण जीवन हम देख रहे हैं । फलस्वरूप मनुष्य के जीवन की मान्यताएँ ही बदलने लगी है । शाश्वत नीतिमुल्यों की अवहेलना होने लगी हैं । अपराधी दोषी लोगों को सचेत करने के लिए उनमें परिवर्तन, परिवर्धन सुधार के लिए दलित साहित्यकार उनकी पोल खोल देता हैं। तब से दलित साहित्य का

ISSN 2277- 8063

Navjyot

नवज्योत

International Interdisciplinary Research Journal
(Humanities, Social Sciences, Languages, Commerce & Management)

K.G.D.L. College, Kundal * Tal.Palus, Dist.Sangli *

www.navjyot.net

E-mail : editornavjyot@gmail.com

Scanned with CamScanner

CONTENT

Sr. No	Subject	Title	Author	P. No.
1	English	Theme of Scepticism, Deception and Suicide in the novel, 'The Lost Man' by Jane Harper: A Psychoanalytical Study	Ms Vandana Mishra	1-2
2	Political Science	Agricultural Policy After Pandit Jawaharlal Nehru	Mr. Shrikant Namdev Phakade	3-5
3	राज्यशास्त्र	भूदान चळवळ : स्वातंत्रोत्तर समाजक्रांतीकारक चळवळ	प्रा. प्रमोद जगन्नाथ पाटील	6-13
4	मराठी	दासबोधातील उत्तम लक्षण व वैचारिक निरूपणाचे आजच्या काळाच्या संदर्भातील महत्व	प्रा. डॉ. सजुय बाबुराव पाटील	14-16
5	राज्यशास्त्र	१९ व्या शतकातील महाराष्ट्रातील शेतीव्यवस्था	प्रा. अंगद नरसगोंडा पाटील	17-19
6	राज्यशास्त्र	भारताचे लुक ईस्ट धोरण	डॉ. संजय गोरे	20-23
7	Political Science	Challenges and Opportunities of pre& post COVID – 19 in India	Dr. Alpana Vaidya	24-26
8	Political Science	Women's Political participation in India	Dr.Vikas Babasaheb Chandajkar	27-29
9	राज्यशास्त्र	पंडित जवाहरलाल नेहरूंच्या पूर्व काळातील कृषी धोरण	सौ. उषादेवी अंकुश कांबळे	30-32
10	Economics	"Role Of The Swachh Bharat Mission (Gramin) Into The New Bharat"	Arun B. Chavhan	33-35
11	Law	Right To Equality And Daughter's Equal Right In Ancestral Property	Mrs.Chandani Vishwasrao Ghogare	36-40
12	अर्थशास्त्र	कृषी कायद्याचे वास्तव विश्लेषण	डॉ. मोहन सदामते	41-42
13	English	Transgender Identity and Equality : A path to development	Dr. Savita D. Thakare	43-45
14	Political Science	The contemporary utility of Agricultural Policy of Pandit Jawaharlal Nehru.	Vaibhav Nikam,	46-50
15	राज्यशास्त्र	मूलतत्ववाद : संकल्पना आणि वास्तव	डॉ. अनिल रा. कडू	51-53
16	राज्यशास्त्र	आधुनिक भारताच्या शेती उत्पादन वाढीत पंडीत जवाहरलाल नेहरू यांचे योगदान	संजय कुबल	54-55
17	अर्थशास्त्र	पंडित जवाहरलाल नेहरू काळातील कृषी धोरण	डॉ. ज्ञानराजा चिघळीकर	56-59
18	राज्यशास्त्र	पंडित जवाहरलाल नेहरूंच्या कृषी धोरणाचा अभ्यास	प्रा. बळवंतराव कुंडलिक जाधव	60-65
19	राज्यशास्त्र	भारतीय राष्ट्रवादाचे स्वरूप आणि विकास	डॉ. एस. पी. वेल्हाळ	66-72
20	Economics	Impact of the Corona Virus Pandemic COVID-19 on Indian Economy	Mr.Amar Raju Jadhav Mr.Dnyaneshwar Krishna Pathrut	73-79

K.G.D.L. College, Kundal * Tal.Palus, Dist.Sangli *

Scanned with CamScanner

(A High Impact Factor, Quarterly, Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal)
NAVJYOT / Vol. X / Issue – I
ISSN 2277-8063

कृषी कायद्याचे वास्तव विश्लेषण

डॉ. मोहन सदामते, सहयोगी प्राध्यापक, क्रांतीअग्रणी जी. डी. बापू लाड महाविद्यालय कुंडल ता. पलूस सांगली.

- **घोषवारा:**

केंद्र सरकारने २० सप्टेंबर २०२० रोजी कृषी क्षेत्राशी संबंधित तीन कायदे मंजूर केले आहेत ते कायदे असे कीशेतकरी उत्पादने ,२०२०कायदा (प्रोत्साहन व सुविधा) व्यापार व वाणिज्यशेतकरी सनकिंमत आश्वा (सशक्तीकरण आणि संरक्षण)आणि कृषी सेवा करार कायदा २०२० .सदर कायद्यांना शेतकऱ्यांचा विरोध आहे आणि त्यासाठीचं हे आंदोलने सुरू आहेत २०२०कायदा (दुरुस्ती) अत्यावश्यक वस्तू .तपंजाबमधील शेतकरी कायदे मंजूर झाल्याच्या दुसऱ्या दिवसापासूनच म्हणजे सप्टेंबरपासून ते आजतागायत आंदोलन करत आहेया तीन विधेयकाचे स्वरूप समजून घेणे व त्याच्या अंमलबजावणीतील अडचणी अभ्यासण्याचा प्रयत्न प्रस्तुत शोध निबंधात केला आहे .

- **प्रस्तावांना** कृषी क्षेत्राच्या उन्नतीसाठी आणि शेतकऱ्यांचे उत्पन्न वाढविण्याच्या उद्देशाने संसदेने आज दोन विधेयके मंजूर केली .उत कृषी◌पन्न व्यापार व वाणिज्य विधेयक (प्रोत्साहन व सहाय्य), २०२० आणि हमीभाव आणि कृषी सेवा विधेयक २०२० विषयी शेतकरी लोकसभेने मंजूर केला (२०२०सप्टेंबर १) करार (सबलीकरण आणि संरक्षण), तसेच राज्यसभेने हे विधेयक मंजूर केलेकेंद्रीय कृषि व शेतकरी .कासकल्याण व ग्रामवि मंत्री तथा पंचायती राजमंत्री श्री नरेंद्रसिंह तोमर यांनी १ सप्टेंबर २०२० रोजी लोकसभेत हे विधेयक जून, २०२० रोजी आलेल्या अध्यादेशास कायद्यामध्ये बदलण्यासाठी सादर केले.

या विधेयकासंदर्भात बोलताना श्री नरेंद्रसिंह तोमर म्हणाले होते की, पंतप्रधान श्रीद्रनरें . मोदी यांच्या नेतृत्वात सरकारने गेल्या सहा वर्षात शेतकर्यांना चांगला भाव मिळावा आणि त्यांचे जीवनमान उंचावण्यासाठी कित्येक पावले उचलली आहेतते पुढे म्हणाले की धान्य खरेदी .आह ला आश्वासन दिले :पंतप्रधानांनी या संदर्भात स्वत .किमान आधारभूत किंमतीवर सुरूच राहील◌- ते २०१४ .२०२० दरम्यान एमएसपीचे दर लक्षणीय वाढले आहेतचे केंद्रीय कृषिमंत्री म्हणाले की या बिलांमध्ये शेतकऱ्यां .येत्या आठवड्यात रब्बी हंगामातील एमएसपी जाहीर होईल .संपूर्ण संरक्षण सुनिश्चित करण्यात आले आहे

पंजाब आणि हरियाणातील शेतकरी केंद्र सरकारने आणलेल्या तीन नव्या कृषी कायद्यांविरोधात गेल्या ६५ हून अधिक दिवसांपासून दिल्लीच्या सीमेवर आंदोलन करत आहेत .

खरं तर पंजाबमधील शेतकरी कायदे मंजूर झाल्याच्या दुसऱ्या दिवसापासूनच म्हणजे सप्टेंबरपासून आंदोलन करत आहेत. मात्र ऑक्टोबर पासून शेतकरी या आंदोलनानं आक्रमक रूप घेतलं आणि आता हे आंदोलन देशाच्या राजधानीच्या सीमेवर पोहोचलं आहेत्यामुळे . . केंद्र सरकारने या आंदोलनाची गंभीर दखल घेत चर्चेच्या फेऱ्या सुरू केल्या आणि त्याला फारसे यश आलेले नाही

या कृषी सुधारणा विधेयकातून शेतकऱ्यांचे हित जपले जाईल का ? या विधेयकांना देशातील काही राज्यातून विरोध का होत आहे ? त्या पाठीमागची कारणे व अडचणी काय आहेत ? हे प्रस्तुत शोध निबंधातून अभ्यासण्याचा प्रयत्न केला आहे .

❖ कृषी कायदयाचे वास्तव विश्लेषण

केंद्र सरकारने २० सप्टेंबर २०२० रोजी कृषी क्षेत्राशी संबंधित तीन कायदे मंजूर केले .त्या कायद्यांना शेतकऱ्यांचा का विरोध आहे हे अभ्यासणेसाठी कृषी कायदयाचे वास्तव विश्लेषण थोडक्यात पुढीलप्रमाणे केले आहे .

तीन नवे कृषी कायदे

- शेतकरी उत्पादने व्यापार व वाणिज्य २०२०कायदा (प्रोत्साहन व सुविधा)
- शेतकरी किंमत आश्वासन आणि (सशक्तीकरण आणि संरक्षण)कृषी सेवा करार कायदा २०२०
- अत्यावश्यक वस्तू २०२०कायदा (दुरुस्ती)

केंद्र सरकारने शेती क्षेत्राशी संबंधित तीन अध्यादेश आणले होते ज्यांचं रुपांतर आता कायद्यात करण्यात आलं आहेया कायद्यामधील . काय तरतुदी आहेत आणि त्यावर काय आक्षेप घेतले जातात, हे अभ्यासणे गरजेचे आहे .

❖ पहिला कायदा- शेतकरी उत्पादने व्यापार व वाणिज्य (प्रोत्साहन व सुविधा) कायदा २०२०

हा कायदा कृषीमालाच्या विक्रीसंबंधी तरतुदी करतो. यातल्या प्रमुख तरतुदी काय आहेत -

- कृषी उत्पन्न बाजार समितीने मान्यता दिलेल्या बाजारांबाहेरही मालाची खरेदीविक्री-
- कृषीमालाच्या राज्यांतर्गत आणि आंतरराज्य हालचालीतील अडथळे दूर करणे.
- मार्केटिंग आणि वाहतूक खर्च कमी करून शेतकऱ्यांना अधिक चांगली किंमत मिळवून देणे.
- ट्रेडिंगसाठी व्यवस्था उपलब्ध करून देणे-

शेतकऱ्यांना चांगली किंमत मिळावी आणि त्यांच्या मालाला लवकरात लवकर गिऱ्हाईक मिळावं यासाठी या सुविधा केल्या जात असल्याचं सरकारचं म्हणणं आहे. पण याबद्दल काही आक्षेपही आहेत.

अडचणी

- APMC बाहेर विक्री झाल्यास 'बाजार शुल्क' न मिळाल्याने राज्यांचं नुकसान होईल.
- बाजार समित्या हद्दपार झाल्यास मध्यस्थ, आडते यांचं काय होणार?
- किमान आधारभूत किंमतीची यंत्रणा यामुळे मोडकळीस येईल
- e-NAM सारख्या ईबाजारच नामशेष झाले तर त्या कशा चालतील .ट्रेडिंग यंत्रणा बाजारांवर अवलंबून असतात-?

K.G.D.L. College, Kundal, Tal. Palus, Dist. Sangli

Scanned with CamScanner

Peer reviewed Journal Impact Factor: 7.265 ISSN-2230-9578

Journal of Research and Development

A Multidisciplinary International Level Referred Journal

May-2021 Volume-11 Issue-13

Chief Editor
Dr. R. V. Bhole
'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot No-23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.)

K.G.D.L. College, Kundal
Tal.Palus, Dist.Sangli

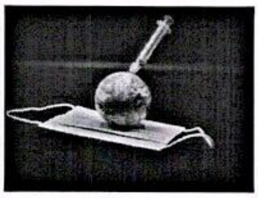

Address
'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot, No-23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

CONTENTS

Sr. No.	Paper Title	Page No.
1	A Study on Banking Innovation in Digitalization **V. M. Tharaka Rani, Dr. P. Armugaswamy**	1-3
2	Manju Kapur's 'Difficult Daughters': Quest for Self Identity **Dr. Prashant Tanaji Chavare**	4-6
3	Land use and Land cover Mapping of Yerala river Basin Using Geospatial Technologies **Subhash Chavare, Dr. B. S. Jadhav**	7-8
4	Effects of the Internet on College Girls: A Study **Dr.Rajesh Pawde**	9-10
5	A Study on Job Attrition Among Employees In BPO Sector **Dr. J. Christopher, Santhi Krishna.V**	11-14
6	Felicitous Difference Labeling Graph **Dr. A. Punitha Tharani, E.S.R. Francis Vijaya Rani**	15-17
7	Human Rights of Women -International Perspectives **Dr. Mahesh L. Dharmapurikar**	18-21
8	Representation of Animal Diversity in Jibanananda Das's Rupasi Bangla **Durbadal Datta, Dr. Shankar Nath Sen**	22-26
9	Geographical Review of Migration in Aurangabad District **Dr. D. S. Itle**	27-30
10	Differently-abled from an Islamic Point of View: An Evaluation **Amathunoora T**	31-36
11	Bridging Cultures: Reviving the Past, Embracing the Present **Mrudula Muraleedharan**	37-38
12	Intercellular Distribution Of Sub Lethal Effects Lead And Zinc In Coleps **T.T. Shaikh**	39-41
13	Ecocriticism: An Attempt to Sustain Earth and Life Through Literature **Dr. Poonam Rani Gupta**	42-46
14	Awareness of E-Teaching Among Secondary School Teachers Of Dindigul District In The Current Scenario **P. Mohanram, Dr. C. Manoharan**	47-50
15	Factors influencing on online shopping of rural youth in India-A study of Karnataka State **Ms. Nagashree V Jaddipal, Dr. Sumitra V Annigeri**	51-53
16	A Comparative Study of Liquidity Variables of Selected Cement Companies in India **Parashuram Mohansing Devi**	54-58
17	L.A. Cafe to Fritters: Julie's Journey for Identity **Mrs. Menon Sunitha Ramesh**	59-60
18	Professional Ethics in Librarianship **Mr. Rajendra S. Lawande**	61-62
19	Spatio-Temporal Pattern of Rural Crude Density of Population in Kolhapur District **Dr. Navnath K. Bansode**	63-66
20	Economic Impact and Challenges in Education and Banking Sectors During Covid-19 in India **Priyadarshini R, Nirmala M**	67-69
21	Changes in Land Use Pattern of Man Tehsil: Maharashtra **Barakade A.J., Soban S. R.**	70-72
22	A Geographical Analysis of Potentiality of Water in Solapur District **Dr. Nayab Z.A.**	73-77
23	Constraints in Achieving Agricultural Sustainability in Siddharthnagar District, Uttar Pradesh **Rajesh Kumar Abhay, Shweta Rani and Vijay Kumar**	78-86
24	Quality of life of Senior Citizens in Mumbra-Kausa Thane-Maharashtra **Kaneeze Ibrahim K.A.R.Sayed**	87-91
25	Mumbai in Films and Media **Farheen Tai**	92-94
26	Blockchain – Awareness among small scale entrepreneurs in India **Mohammed Nabeel K, Dr. M. Sumathy**	95-98
27	Eimeria: Mortal Enemy of Domestic Fowl **T. T. Shaikh**	99-102
28	Doping Impacts on Sports **Dr. Ravindra Uddhavrao Machale**	103-106
29	Views of Different Religions on Transgender and Their Marital Status **Akshatha Paranjyothi Kumar**	107-112
30	Agricultural Land Use Capability of Salinity Region in Purna Watershed **Dr. Yeshpal P Gudadhe, Dr. Shivanand S Kumar**	113-116
31	New Education Policy: A Multidimensional Impact of Globalization on Higher Education in India **Dr. Rahul N. Surve**	117-120

'Journal of Research & Development'
A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal,
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, May-2021, Volume-11, Issue-13

Land use and Land cover Mapping of Yerala river Basin Using Geospatial Technologies

Subhash Chavare[1] Dr. B. S. Jadhav[2]

[1]Assistant Professor of Geography, Krantiagrani G.D.Bapu Lad Mahavidyalaya, Kundal, Maharashtra, India, (Affiliated to Shivaji University, Kolhapur)
Email- **subhash.mtech44@gmail.com**

[2]Associate Professor and Head, Dept. of Geography, Shri. Vijaysinha Yadav College Peth Vadgaon, Maharashtra (Affiliated to Shivaji University, Kolhapur)

Abstract:

Land use and land cover mapping is important aspect of the planning and management of natural and man-made resource in the region. In the present study the land use and land cover mapping done for the Yerala river basin using geospatial technology. The Landsat 8 satellite image is used to analyze the area under different land use and land cover classes. Remote sensing data with good spatial resolution is very useful and accurate, and reliable for the analysis. In the Yerala river basin the agricultural land, forest, water bodies, barren and fallow and classes are found.

Keywords: *Land Use and land cover, Yerla River, Geospatial Technologies*

Introduction

Land use and land cover is key parameter in the planning process. Remote sensing data is providing temporal database for analysis and planning. Irrigation planning, site selection of the surface rainwater harvesting, agricultural planning and management, soil erosion analysis, forest mapping, change detection analysis is done through analysis and future development process applied on the basis of landuse and land cover mapping database. Landsat 8 satellite data and geospatial technology is used to prepare the land use and land cover of the Yerala river basin. The river basin is good hydrological unit the study of land and water resources.

Objective

The main objective of the present analysis is mapping of land use and land cover for the planning and management of natural resources.

Study Area

The study area is west part of Maharashtra state bounded by Latitude 16^0 55' to 17^0 28' N and Longitude 74^0 20' to 74^0 40' E and covered by survey of India toposheets no 47 K – 5, 6, 7, 8, 10, 11, 12, 47 L - 9 on the scale 1:50,000 it covers total geographical area of 3029 sq.km and includes two districts (Satara and Sangli) in Maharashtra. The Yerala River is tributary of the Krishana River (Fig.1).

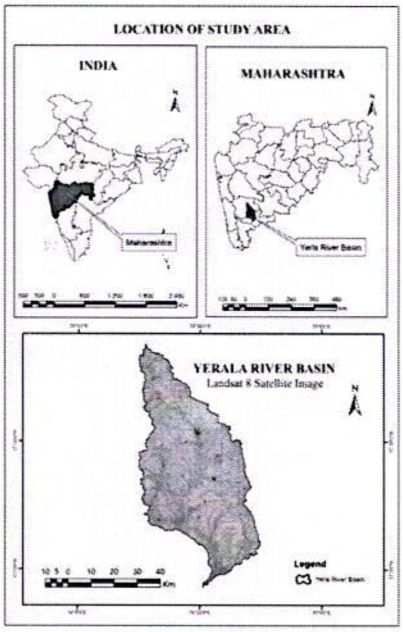

Materials and Methods

The secondary data is collected from following sources, Landsat Satellite images, Earth Explorer (http://earthexplorer.usgs.gov). The satellite image is important source of database for mapping of land use and land cover.

Table .1 Details of Satellite Data

Satellite	Sensor	Path	Row	Year
Landsat 8	OLI and TIRS	146 & 147	48	2017

The land use /land cover map created using supervised classification method in ERDAS Imagine software and field check done for the proper land use and land cover mapping.

Result and Discussion

The land use and land cover includes anthropogenic and natural features on the earth's surface. The land cover with agriculture and vegetation affects on the surface runoff and results into high rate of infiltration, where as the built-up area and hard rock terrain are having less infiltration rate. Land use and land cover plays an important role in groundwater resource development, because it controls different hydrological process which affects the groundwater potential. The land use and land cover for the present study was derived from the Landsat ETM satellite image which was downloaded from the USGS earth explorer website. The map was prepared using ERDAS Imagine software and using supervised classification method. The Yerala river basin covered by different classes such as forest, barren land, built-

K.G.D.L. College, Kundal, Tal. Palus, Dist. Sangli

K.G.D.L. College, Kundal * Tal.Palus, Dist.Sangli *

INTERDISCIPLINARY NATIONAL WEBINAR ON EMPLOYMENT, ENTREPRENEURSHIP AND EXTENSION

August 28th 2021

WEBINAR PROCEEDINGS

(ISBN : 978-81-951460-6-2)

Editors
Dr. Naushad M. Mujawar
Dr. Sunita H. Ambawade

Jointly organized by
INTERNAL QUALITY ASSURANCE CELL, SHRI VENKATESH MAHAVIDYALAYA, ICHALKARANJI
&
DEPARTMENT OF LIFELONG LEARNING AND EXTENSION, SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR
&
CENTRE FOR SKILL AND ENTREPRENEURSHIP DEVELOPMENT, SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR
e-mail:mshrivenkatesh@yahoo.com,
Website: www.venkateshcollege.com

RUBY BOOK PUBLICATIONS

K.G.D.L. College, Kundal * Tal.Palus, Dist.Sangli *

VOLUME-II, ISSUE-V ISBN: 978-81-951460-6-2

A STUDY OF AWARENESS ABOUT GOVERNMENT SCHEMES REGARDING ECONOMIC EMPOWERMENT OF WOMEN IN KUNDAL VILLAGE

Dr. Pravinkumar Bharatkumar Lupane
Asst. Professor,
Krantiagrani G. D. Bapu Lad College, Kundal

Mr. Sunil Rajaram Jadhav
Asst. Professor,
Krantiagrani G. D. Bapu Lad College, Kundal

Mr. Ganesh Nandkumar Kharage
Asst. Professor,
Krantiagrani G. D. Bapu Lad College, Kundal

ABSTRACT: Women are an integral part of every economy. All round improvement and amicable development of a country would be conceivable just when women are considered as equivalent accomplices in progress with men. Approaches on Women's strengthening exist at the public, state and nearby levels in numerous areas, including wellbeing, instruction, financial freedoms, and sex based savagery and political cooperation. Women strengthening empower independence and command over their lives. This examination paper endeavors to investigate the need of Women Empowerment and features the strategies and plans of Women Empowerment. Strengthening is the principle cycle of social advancement which can empower women to partake, in the financial, political and social practical improvement of the rustic networks. Analyst saw that in our everyday life how women become exploited by different social wrongs. Women Empowerment is the fundamental instrument to grow women' capacity to have assets and to settle on essential life decisions. This review depends on essential sources. Analyst has gathered the connected data in very much organized survey. This poll must be filled by the ones who are run Self Help Group in Kundal town. The specialist has chosen every one of the 78 Self Help Groups in Kundal Villages and has taken the meeting and filled survey from 50 women in Kundal town. Analyst uncovers that women even in the current age are experiencing numerous handicaps and segregations and no place do women appreciate equivalent status with men.

Key Words: Women, Empowerment, SHG, Govt. Schemes, Status

K.G.D.L. College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

ISBN : 978-81-9[illegible]19-7-4

शिवाजी विद्यापीठ कोल्हापूर संलग्नित
जयवंत प्रतिष्ठान हुमगांव संचलित,

आमदार शशिकांत शिंदे महाविद्यालय, मेढा

शिवाजी युनिव्हर्सिटी इकॉनॉमिक्स असोसिएशन कोल्हापूर (सुवेक)

३१ वे व ३२ वे संयुक्त अधिवेशन

शनिवार दि. १८ डिसेंबर व रविवार दि. १९ डिसेंबर, २०२१

विषय : भारतातील सध्याचे आर्थिक संकट
पर्यटनाचे अर्थशास्त्र

शिवार्थ

स्मरणिका २०२१

अंक २० वा

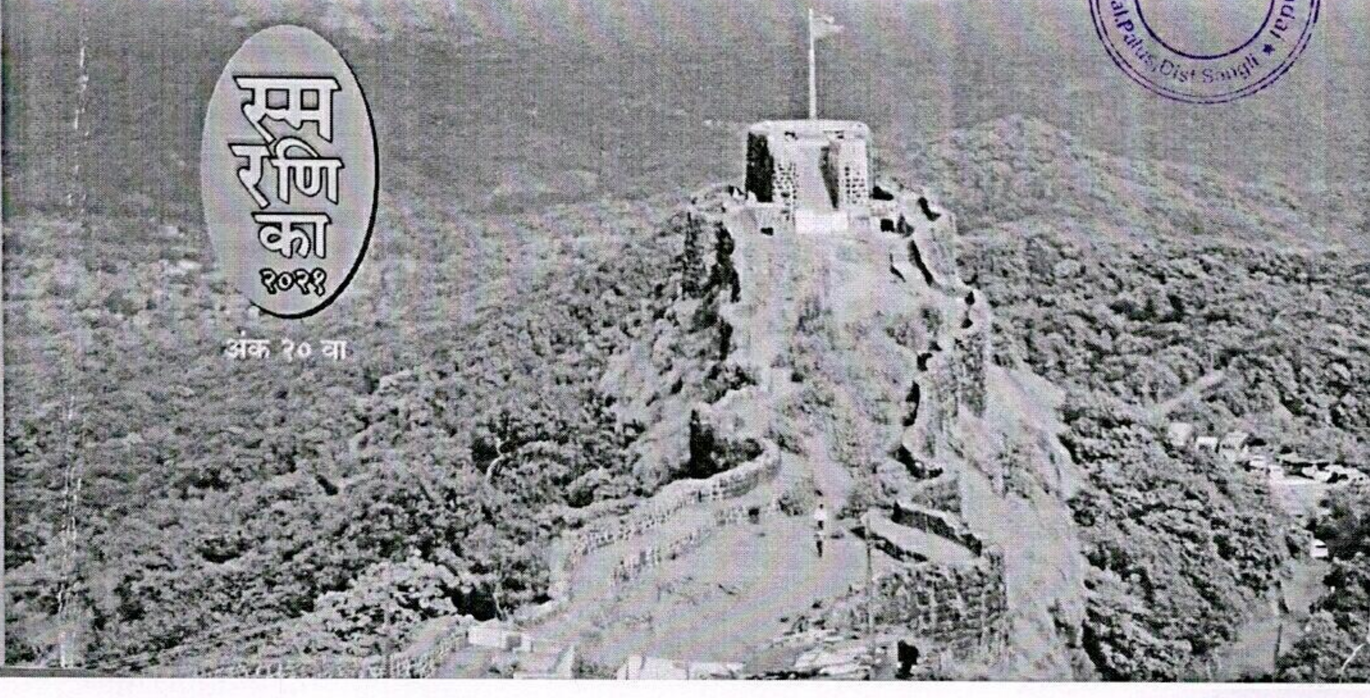

K.G.D.L.College, Kundal Tal.Palus, Dist.Sangli

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

अ. क्र.	संशोधन पेपर		संशोधक	पान. क्र.
	स्वागताध्यक्ष मनोगत	:	प्र. प्राचार्य,डॉ. प्रमोद घाटगे	
	संपादकीय	:	प्रा. संजय ठिगळे	
	स्थानिक संपादक मनोगत	:	डॉ. संजय धोंडे	
	स्थानिक कार्यवाह मनोगत	:	डॉ. सुजित कसबे	
	सुयेक वार्षिक अहवाल	:	डॉ. एम. जी. पाटील	
	परिचय: अध्यक्ष, सुयेक ३१ वे वार्षिक अधिवेशन	:		
	अध्यक्षीय भाषण	:	डॉ. अनिलकुमार वावरे	
	विषय:भारतातील सध्याचे आर्थिक संकट			
१	कोरोना विषाणूचा प्रादुर्भाव आणि भारतीय कापड उद्योग		*प्रा. डॉ. पी. एस. कांबळे ** डॉ. काशिनाथ तनंगे	१-८
२	भारत आणि सन १९९१ नंतरच्या आंतरराष्ट्रीय व्यापार तुटीची समस्या		*डॉ. सी. आर. जाधव ** डॉ. राहुल शं. म्होपरे	९-१:
३	कोविड १९- चा भारताच्या शेती व औद्योगिक क्षेत्रावरील परिणाम : एक दृष्टीक्षेप		*डॉ. एम.एस. सुर्यवंशी	१:-१६
४	भारतीय अर्थव्यवस्थेवरील संकट: कोरोना		*डॉ. धेडे डी. आर.	१६-२१
५	कोरोना काळातील मानवी संसाधनाची दुरावस्था : अन्वयार्थ		*प्रा. गजानन खामकर ** प्रा. किशोर सुतार	२:-२८
६	कोविड-१९ काळातील भारतातील बेरोजगारी: एक गंभीर समस्या		*डॉ. सोमनाथ काळे, **डॉ.कैलास पाटील	२९-३१
७	कोरोनाचे भारतातील कामगारवर्गावरील संकट		*डॉ. दत्तात्रय शेडगे	३:-३९
८	कृषी विधेयक २०२० स्वरूप आणि अडचणी		*डॉ. मोहन सदामते	४८-४:
९	जयसिंगपूर शहरातील मोबाईल विक्रीवरील कोविड-१९ चा परिणाम		*डॉ. व्ही . बी . देवकर	४२-४९
१०	कोव्हिड-19-आणि शिक्षणाची सद्य:स्थिती			
११	कोरोना काळातील शेती: आव्हाने व संधी		*प्रा. डॉ. जयश्री चव्हाण	४६-४८
१२	भारतील कापड उद्योग स्थिती, करणे व परिणाम		*डॉ. अजित सूर्यवंशी	४९-५:
१३	कोविड-१९ उगम, प्रसार आणि आरोग्य व्यवस्था		*डॉ. लक्ष्मण करपे	५२-५६
१४	कोरोनाचा उगम, प्रसार आणि बदलेते जागतिक संबंध		*श्री. रामचंद्र कवितके	५८-६१
१५	कोरोना काळातील RBI चे मौद्रिक धोरण		*कु. पूजा शिर्के	६:-६८
१६	कोरोना काळातील महाराष्ट्रातील शेतकऱ्यांची स्थिती		*डॉ. प्रमोद घाटगे	६६-६९
१७	The Impact of Covid- 19 on Indian Meat Market		*श्री. पुष्पेंद्र बिचकर	७८-७:
१८	Feasibility of Protocols for Restaurants during COVID-19 Pandemic		*Prof. Sachin Nikam *Mr. Ashish Bhasme **Dr. Rajendra Jeur	७:-७६ ७८-८८

K.D.L. College, Kundal * Tal.Palus, Dist.Sangli

Scanned with CamScanner

 ISBN: 978-81-931719-7-3

K.G.D.L. College, Tal.Palus, Dist.Sangli

कृषी विधेयक २०२० स्वरूप आणि अडचणी

डॉ. मोहन सदामते
सहयोगी प्राध्यापक, क्रांतिअग्रणी जी.डी बापू लाड महाविद्यालय कुंडल

घोषवारा:-केंद्र सरकारने 20 सप्टेंबर 2020 रोजी कृषी क्षेत्राशी संबंधित तीन कायदे मंजूर केले आहेत ते कायदे असे की, शेतकरी उत्पादने व्यापार व वाणिज्य (प्रोत्साहन व सुविधा) कायदा 2020, शेतकरी (सशक्तीकरण आणि संरक्षण) किंमत आश्वासन आणि कृषी सेवा करार कायदा 2020, अत्यावश्यक वस्तू (दुरुस्ती) कायदा 2020 सदर कायद्यांना शेतकऱ्यांचा विरोध आहे आणि त्यासाठीचं हे आंदोलने सुरू आहेत. पंजाबमधील शेतकरी कायदे मंजूर झाल्याच्या दुसऱ्या दिवसापासूनच म्हणजे सप्टेंबरपासून ते आजतागायत आंदोलन करत आहेत. या तीन विधेयकाचे स्वरूप समजून घेणे व त्याच्या अंमलबजावणीतील अडचणी अभ्यासण्याचा प्रयत्न प्रस्तुत शोध निबंधात केला आहे .

प्रस्तावांना

कृषी क्षेत्राच्या उन्नतीसाठी आणि शेतकऱ्यांचे उत्पन्न वाढविण्याच्या उद्देशाने संसदेने आज दोन विधेयके मंजूर केली. कृषी उत्पन्न व्यापार व वाणिज्य (प्रोत्साहन व सहाय्य) विधेयक, २०२० आणि हमीभाव आणि कृषी सेवा विधेयक २०२० विषयी शेतकरी (सबलीकरण आणि संरक्षण) करार (१ सप्टेंबर २०२०) लोकसभेने मंजूर केला, तसेच राज्यसभेने हे विधेयक मंजूर केले. केंद्रीय कृषि व शेतकरी कल्याण व ग्रामविकास मंत्री तथा पंचायती राजमंत्री श्री नरेंद्रसिंह तोमर यांनी १ सप्टेंबर २०२० रोजी लोकसभेत हे विधेयक June जून, २०२० रोजी आलेल्या अध्यादेशास कायद्यामध्ये बदलण्यासाठी सादर केले.

या विधेयकासंदर्भात बोलताना श्री नरेंद्रसिंह तोमर म्हणाले की, पंतप्रधान श्री. नरेंद्र मोदी यांच्या नेतृत्वात सरकारने गेल्या सहा वर्षात शेतकर्यांना चांगला भाव मिळावा आणि त्यांचे जीवनमान उंचावण्यासाठी कित्येक पावले उचलली आहेत. ते पुढे म्हणाले की धान्य खरेदी किमान आधारभूत किंमतीवर सुरूच राहील. पंतप्रधानांनी या संदर्भात स्वत: ला आश्वासन दिले आहे. २०१४ ते -२०२० दरम्यान एमएसपीचे दर लक्षणीय वाढले आहेत. येत्या आठवड्यात रब्बी हंगामातील एमएसपी जाहीर होईल. केंद्रीय कृषिमंत्री म्हणाले की या बिलांमध्ये शेतकऱ्यांचे संपूर्ण संरक्षण सुनिश्चित करण्यात आले आहे.

पंजाब आणि हरियाणातील शेतकरी केंद्र सरकारने आणलेल्या तीन नव्या कृषीकायद्यांविरोधात गेल्या 65 हून अधिक दिवसांपासून दिल्लीच्या सीमेवर आंदोलन करत आहेत.केंद्र सरकारने 20 सप्टेंबर 2020 रोजी कृषी क्षेत्राशी संबंधित तीन कायदे मंजूर केले. त्या कायद्यांना शेतकऱ्यांचा विरोध आहे आणि त्यासाठीचं हे आंदोलन सुरू आहे.

खरं तर पंजाबमधील शेतकरी कायदे मंजूर झाल्याच्या दुसऱ्या दिवसापासूनच म्हणजे सप्टेंबरपासून आंदोलन करत आहेत.मात्र ऑक्टोबरपासून शेतकरी या आंदोलनानं आक्रमक रूप घेतलं आणि आता हे आंदोलन देशाच्या राजधानीच्या सीमेवर पोहोचलं आहे. त्यामुळे केंद्र सरकारने या आंदोलनाची गंभीर दखल घेत चर्चेच्या फेऱ्या सुरू केल्या आणि त्याला फारसे यश आलेले नाही . संसदेत तीन कृषी सुधारणा विधेयके पारित होताच देशातील कृषी क्षेत्रासाठी एक नवीन सुरवात झाली. ही तिन्ही विधेयके केंद्रीय कृषी मंत्रालया अंतर्गत येत असली तरी वेगवेगळी आहेत. एक विधेयक हे कृषी उत्पादन व्यापार आणि वाणिज्य (प्रोत्साहन व सहाय्य) विधेयक आहे, हे कृषी उत्पन्न बाजार समिती (एपीएमसी)ला पर्यायी व्यवस्था देणाऱ्या कायद्याचे आहे. दुसरे विधेयक हे शेतकरी (सबलीकरण व संरक्षण) हमीभाव करार व कृषी सेवा विधेयक (करार शेती) संदर्भातले आहे. तर तिसरे विधेयक हे अत्यावश्यक वस्तू (सुधारणा) विधेयक हे कृषीमाल साठवण मर्यादा संदर्भातले आहे. या तिन्ही विधेयकांची वेगवेगळी विशेषता व वेगवेगळ्या तरतुदी आहेत. मात्र या सुधारणा विधेयकातून शेतकऱ्यांचे हित जपले जाईल का ? या विधेयकांना देशातील काही राज्यातून विरोध का होत आहे ? त्या पाठीमागची कारणे व अडचणी काय आहेत ? हे प्रस्तुत शोध निबंधातून अभ्यासणार आहोत.

तीन नवे कृषी कायदे

- शेतकरी उत्पादने व्यापार व वाणिज्य (प्रोत्साहन व सुविधा) कायदा 2020

K.G.D.L. College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

Scanned with CamScanner

K.G.D.L. College, Kundal ★ Tal Palus, Dist. Sangli ★

ISBN 978-81-9[illegible]6685-9-6

Agriculture and Rural Development: Spatial Issues, Challenges and Approaches

Editor
Dr. D. S. Gaikwad

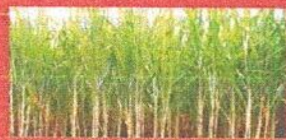

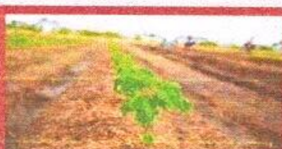

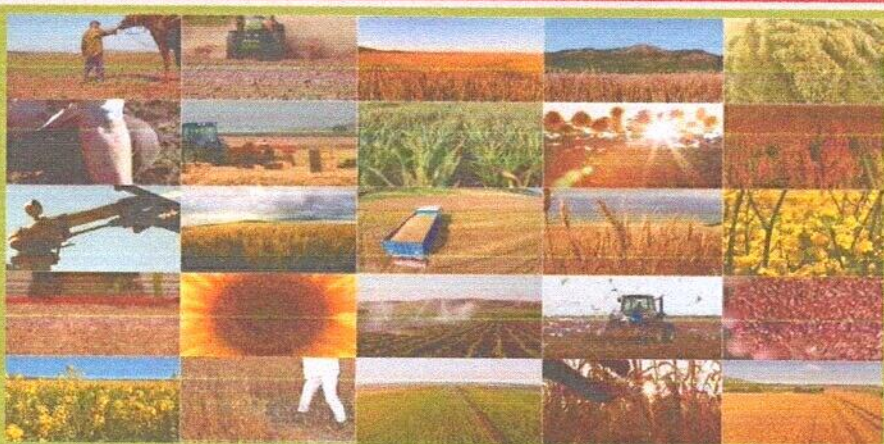

Jyotikiran Publication, Pune

CONTENTS

Sr. No.	Chapter	Page No.
1	Groundwater Level Analysis of Sangola Tahsil using GIS **Dr.S.M Mulani, Vijaykumar Gorakhnath Ghadage & Subhash Chavare**	1-6
2	Biological Agents For Nematode Fungal Disease Complex Management In Guava **Dr. T. Senthilkumar**	7-10
3	Agricultural Technology and Rural Development **Dattatray Sampat Devkar**	11-15
4	The Study of Relationship between Irrigation Facilities and Agricultural Production in Solapur District **Dr. D. S. Harwalkar**	16-22
5	Extent of use of Modern Media Among women, District Raebareli (U.P.) **Dr. Beena Singh & Nipun Kumar Pandey**	23-30
6	Role of Women in RuralDevelopment **Pritha Biswas**	31-37
7	Analysis of Physicochemical Parameters of Soil Samples in Arsikere Taluk of Hassan District, Karnataka **Thimmegowda, A. H. & Rashmi. S.**	38-43
8	Isolation and Biomass production Local strains Of BGA for Agriculture Development **Sagar Mahadev Patil**	44-48
9	A Geo-Environment Study of Municipal Solid Waste Material (SWM): A Case Study of Akkalkot Town **Dr. Konade B.N.**	49-53
10	Siderophore Assisted Phytoremediation for Heavy Metal Stress Reduction **Rohini Patil & Rupali Kasare**	54-65
11	Retail Marketing in India **Mr. Abhijeet Kamble**	66-70
12	Role of Dairy Enterprise in Economic Growth of Rural Women **Ani Bajpai, AradhanaKushwaha & Dr. NeelmaKunwar**	71-73
13	Input Constraints of Rice Cultivation in Kolhapur District of Maharashtra **Mr. D. A. Sardesai & Dr. R.V. Hajare**	74-79
14	Enhanced Utilization of Crop Wild Relatives in Crop Improvement Through Technological Interventions **Supriya B. Aglawe, Mamta Singh & Ruchi Bansal**	80-97
15	Agritourism: A conceptual Analysis in the Indian Context **Dr. Sajoy P. B.**	98-104

JK Publication

K.G.D.L. College, Kundal * Tal. Palus, Dist. Sangli *

Publication Date 10 August 2020, ISBN 978-81-946685-9-6
Agriculture and Rural Development: Spatial Issues, Challenges and Approaches

Groundwater Level Analysis of Sangola Tahsil using GIS

Dr.S.M Mulani[1] Vijaykumar Gorakhnath Ghadage[2] Subhash Chavare[3]
[1]*Professor and Head, Dept of Geography D.S Garad College, Mohol Tal-Mohol Dist Solapur*
[2]*Research Student, School of Earth Science, Punyashlok Ahilyadevi Holkar Solapur University, Solapur*
[3]*Assistant Professor of Geography, Krantiagrani G.D.Bapu Lad Mahavidyalaya, Kundal*

K.B.P. College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

Abstract

In the present work groundwater level changes analyzed for the Sangola tahsil for the year 1990 and 2006. Spatial and temporal changes in the groundwater level is mapped and analyzed to study the changes in level. Due to increasing demands and requirement of water, extraction of groundwater is increased and it leads to depletion of groundwater. Change in groundwater level mapping is very efficient and accurate for the planning and management of groundwater resource.

Keywords: Groundwater, GIS

Introduction

Ground water is present beneath the Earth surface, which quantity is depends upon rainfall, soil porosity and fractures of rock formation. Here aquifer is very important for availability water quantity. Water is very important for any living things as well as non-living things for supporting to keep continuous of whole cyclic process of nature. Groundwater availability is supporting by surface soil types, surface and underground rock with fractures as well as weathered rock (surface) etc. Groundwater is stored under earth's surface and moves slowly through geological formation of different soil, sand and rocks called aquifer.

Now a day's groundwater source is very important, because our study region falls under rain shadow zone thus receives scanty rainfall. Sangola tahsil is covered by basaltic rock formation, which is known part of Deccan plateau.

Due to rainfall scarcity, for the conservation of rain water the surface rainwater harvesting and groundwater recharge structures constructed in Sangola tahsil such as form ponds, percolation tank, cement nala bunds, CCT and Kolhapur type weir, which are very effective for increasing groundwater level and water conservation(Chavare,2013). Surface and groundwater mostly is extracted by pumping for agriculture and other requirements for human being. So presently highest water and river sand use is very important; it's for only human being, which is decreases groundwater level (Chavare, 2015). The over utilization and excessive pumping of water from shallow aquifer reduce the resource of groundwater and leads to lowering the level of groundwater in the Sangola tahsil. Thus, in this analysis groundwater level of 1990 and 2006 shows fluctuation in pre-monsoon and post-monsoon period.

Objective

The main objective of the present study is to analyze the changes in groundwater level in Sangola tahsil using GIS techniques.

Study Region

This region is part of Deccan Trap, so created by many volcanic activities. Thus Basaltic rock type and broad geological thickness is available here. Maharashtra state is part

K.G.D.L. College, Kundal
Tal. Palus, Dist. Sangli

ISBN 978-81-946685-8-9

Agriculture and Rural Development: Spatial Issues, Challenges and Approaches

Editor
Dr. N. B. Pawar

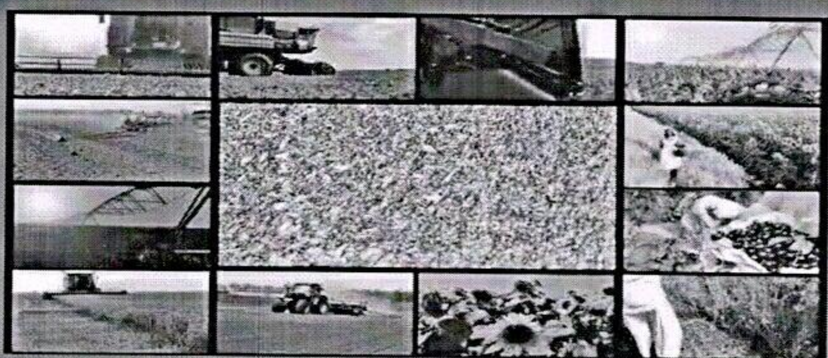

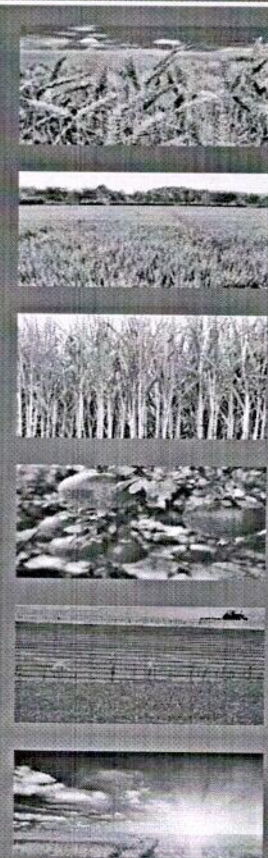

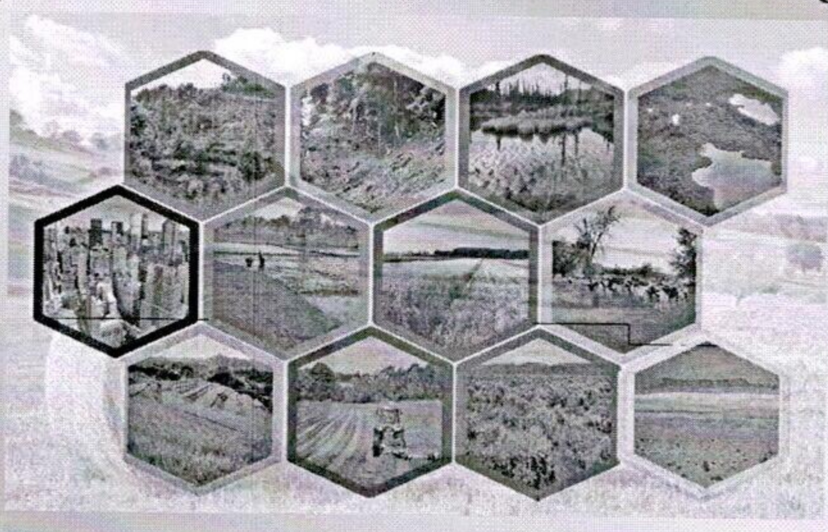

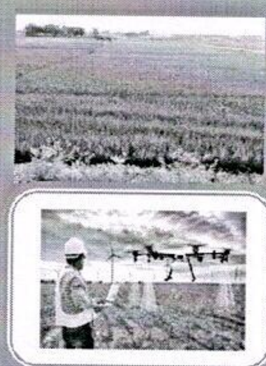

Jyotikiran Publication, Pune

Publication Date10 August 2020, ISBN 978-81-946685-8-9
Agriculture and Rural Development: Spatial Issues, Challenges and Approaches

K.G.D.L. College, Kundal, Tal. Palus, Dist. Sangli

CONTENTS

Sr. No.	Chapter	Page No.
1.	Reading and Language Comprehension **Dr. N. B. Pawar**	1-4
2	Analysis of Area Specific Nature-Human Relationship in Jalna District **Dr. Sunil Naybrao Bawne**	5-10
3	Studies on Agro-Economy of the Society in Warana River Basin in Kolhapur District With Special Reference to Flood **Khot S. S. & Buchade J. Y.**	11-16
4	Morphometric Characteristics Analysis of Bend Nala using GIS and Spatial Data **Subhash Chavare, Sambhaji Shinde & Santosh P Mane**	17-23
5	An Analysis of the Dam Height and its impact on water storage capacity: Vidharbh Region- Maharashtra **Dr. Jayendra C. Wasnik**	24-28
6	Employability and Career Readiness Through Curriculum and Skills Perception of Management Students **Dr. Rajinder Kaur Bhogal & Dr. Gurusharan Kaur**	29-37
7	Role of Applied Agriculture in Farm and Farmers Development in Context of India **Dr. Bari Bhuvanesh Harishchandra**	38-42
8	Yoga for the World **Yogeshwar Sahu & Radheshwari Deshmukh**	43-46
9	Optimization of mRNA In situ Hybridization Protocol Using DIG-labeled Probe for Detection of Transcription Factor Gene expression in Sorghum **Supriya B. Aglawe, B. Fakrudin and Mamta Singh**	47-55
10	A Study of Problems and Challenges Related to Agriculture of the Maharashtra State **Dr. Jaideep Ramkrishna Solunke**	56-62
11	General Land Use Pattern in Beed District: A Geographical Approach **Dr. S.B. Ashture**	63-68
12	Agro-Climatic Classifications of Maharashtra **Dr. Gaikwad D.S.**	69-74
13	Agriculture and Rural Development for Sustainability **Gyanaranjan Sahoo, Afaq Majid Wani, Bineeta Satpathy & Sandeep Rout**	75-82
14	Biofortification of Vegetable Crops - A New Tool to Alleviate Micronutrient Malnutrition **Barsha Tripathy, Pradyumna Tripathy, Priyanka Sahu, Sandeep Rout & M. Sai Sindhu**	83-97
15	Significance of Anti-Nutritional Compounds in Vegetables **Priyanka Sahu, Barsha Tripathy, & Sandeep Rout**	98-109

JK Publication

Morphometric Characteristics Analysis of Bend Nala using GIS and Spatial Data

Subhash Chavare[1] Sambhaji Shinde[2] Santosh P Mane[3]
[1]Assistant Professor of Geography, Krantiagrani G .D. Bapu Lad Mahavidyalaya, Kundal (Affiliated to Shivaji University, Kolhapur)
[2]Professor, Department of Geography, Shivaji University, Kolhapur
[3]Assistant Professor of Geography, Samir Gandhi Kala Mahavidyalaya, Malshiras (Affiliated to Punyashlok Ahilyadevi Holkar Solapur University)

Abstract

Morphometric analysis carried out to study the various morphometric characteristics of stream network of Bend nala watershed. The channel morphometry is having influence on the soil erosion, flood, surface runoff and drainage pattern' of the watershed. The present work is done to analyze the different parameters of channel and characteristics of the drainage. The bend nana is small tributary of Seena River. The GIS software and spatial data such as SoI toposheet and SRTM data used to analysis and it is efficient to analyze the morphometric characteristics of the drainage. The Linear, areal and relief aspect were analyzed of the Bend watershed

Keywords: Morphometric Analysis, GIS, Spatial Data

Introduction

Water is important natural resource for the animal and plant on the earth surface. Rainfall is prime source of water on the earth and due to climate change it is decreasing day by day. The people are depends on the rainfall and groundwater for agriculture and other purpose. From the analysis of morphometric parameters planning of water harvesting can be done. The morphometric characteristics are important aspect to study the drainage pattern, drainage network, drainage intensity in the basin. The drainage density shows the condition of flood and soil erosion. The highest numbers of 1st order stream are resulting into flood condition. The morphometric analysis is an important aspect to analyze flood condition and soil erosion (Chavare and Potdar, 2014, Chavare, 2011, Chavare and Shinde, 2013, Chavare, 2020). The most important applications of the quantitative morphometric analysis include flood hazard evaluation (Pattom, 1988; Seta, Monte, & Pascoli, 2005). The aerial, relief and aspect were analyzed for the Bend watershed. The Bend river watershed covers an area of 307 Km^2 and total length of basin is 32.94 Kms, highest elevation is 580 m above sea level and perimeter is 91Kms.

Objective

The main objective of the present study is analyzing the morphometric characteristics of Bend Nala watershed using GIS techniques and spatial data.

Study Area

The bend river is tributary of the Seena River in Solapur district. The area of the watershed is 307 Km^2 and extended between 17^0 58' to 18^0 9' North Latitude and 75^0 16' to 75^0 34'East Longitude. Bend river originate in Karmala tahsil and flows eastward direction and confluence in Sultanpur to Seena River (Fig.1). The bend river is having up to 5th order stream network.

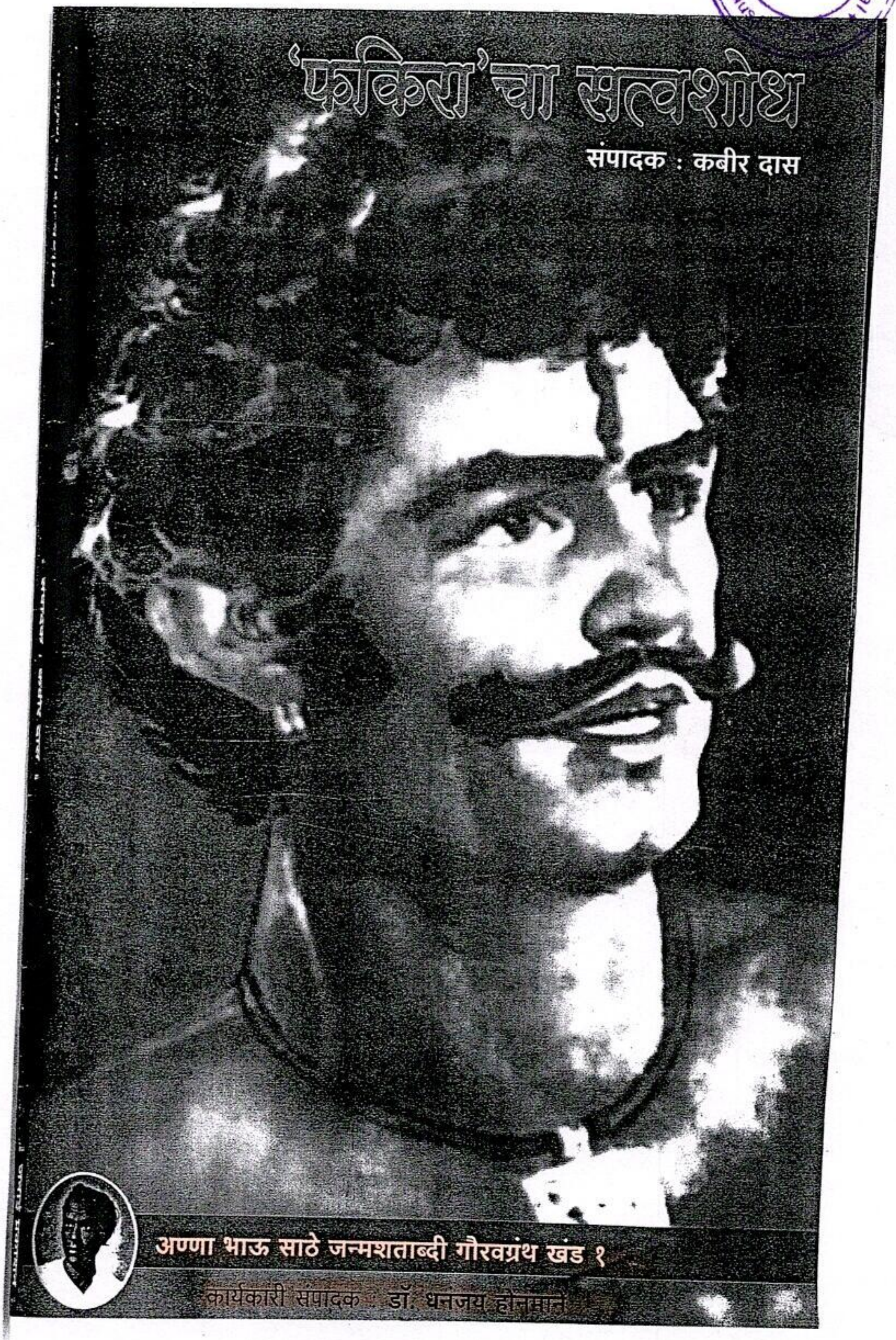
'फकिरा'चा सत्वशोध
संपादक : कबीर दास
अण्णा भाऊ साठे जन्मशताब्दी गौरवग्रंथ खंड १
कार्यकारी संपादक : डॉ. धनंजय होनमाने

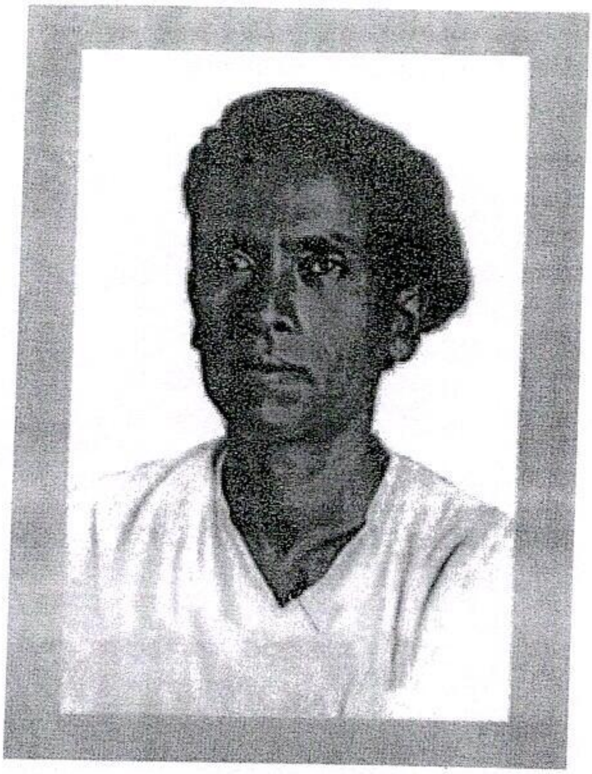

'फकिरा'चा सत्वशोध

संपादक : कबीर दास

अणणा भाऊ साठे जन्मशताब्दी गौरवग्रंथ खंड १

कार्यकारी संपादक : डॉ. धनंजय होनमाने

वाङ्‌मय तज्ज्ञ : डॉ. प्रकाश दुकळे

जनाई प्रकाशन

K.B.P.L. College, Dist. Sangli

'फकिरा' क्रांतिकारी वेदनेचा हुंकार

– डॉ. धनंजय होनमाने

प्रस्तावना :

'क्रांतिकारक तत्वज्ञान म्हणजे सांप्रदायिक सिध्दांत नव्हे, खऱ्याखुऱ्या बहुजन समाजाच्या चळवळीशी व खऱ्याखुऱ्या क्रांतिकारक चळवळीशी त्याचा निकटचा संबंध जोडण्यात येतो. तसेच त्याला निश्चित स्वरूप प्राप्त होते'– लेनिन, वैश्विक पातळीवर ज्यांनी तत्वज्ञानाच्या प्रातांत वैशिष्टयपूर्ण स्थान अधोरेखित केले. त्या लेनिनच्या तत्वविचाराला अनुसरुन एक क्रांतीचं रणशिंग मराठी साहित्य विश्वात अंत:प्रेरणेने फुंकणारे अण्णा भाऊ साठे एक क्रांतिदर्शी विचारांचे एक साहित्यिक म्हणून सर्वपरिचित आहेत. कोणताही लेखक शेवटी विशिष्ट समाजव्यवस्थेचे अपत्य असते. त्या व्यवस्थेच्या भौतिक घटकांमुळे त्याची जाणीव प्रभावीत झालेली असते. आणि विशिष्ट तत्वज्ञानाच्या संस्कारामुळे प्रभावित झालेली प्रतिभा ही जीवनाच्या संदर्भातच विचार करीत असते. माणसाचा शोध घेण्यासाठी माणसाच्या दु:खाचा ठाव घेत तो दु:खमुक्त कसा होईल व त्याला माणूस म्हणून कसे जगता येईल. याच मानवतावादी परिप्रेक्षातून अण्णा भाऊंच्या 'फकिरा'तील क्रांतिकारी वेदनेचा हुंकार शब्दबध्द करण्याचा प्रयत्न प्रस्तुत शोधनिबंधात केला आहे.

'फकिरा'तील वेदनेचे स्वरूप :

अण्णा भाऊ साठे हे लोकशाहीर म्हणून सर्वपरिचित आहेत. लोकशाहीर हा जीवनातील सर्व प्रकारच्या चैतन्याचा गायक असतो. 'शूर मर्दाचा पोवाडा शूर मर्दाने गावा' अशा शब्दात शाहीर पोवाडयाच्या नायकाबरोबरच आपणही स्वत: शूर–वीर असल्याचा दावा करतो. जीवनातल्या भव्यदिव्य गोष्टींकडे आकर्षित होणे हा शाहिराचा मनोधर्म असतो. या मनोधर्माला अनुलक्षूनच अण्णा भाऊ 'फकिरा' या मांग जातीच्या एका लढवय्या नायकाच्या शौर्याचा, त्याच्या पराक्रमाचा, त्याच्या समाजशील वृत्तीचा पोवाडा गातात. 'फकिरा' कादंबरीतील नायक 'फकिरा' हाच आहे. फकिरा ज्या मांग जातीत जन्माला आला, त्याच जातीत अण्णा भाऊही जन्माला आले आहेत. त्यामुळे कादंबरीतील नायकाचे व्यक्तिचित्रण रेखाटत असताना आपोआपच 'मांग' जातीचे वास्तवजीवन प्रस्तुत कादंबरीत लेखकाने समर्थपणे उभे केले आहे. कादंबरीच्या सुरूवातीलाच कादंबरी नायक, लेखक व मातंग समाज यांच्या वेदनेचा हुंकार 'कैफियत' या मनोगतात प्रकटला आहे. मराठी साहित्यात असंख्य लेखकांनी कादंबरी हा वाङ्मयप्रकार विकसित केला. पण कोणत्याच लेखकाने कादंबरीची कैफियत मांडली नाही. 'कैफियत' या शब्दातच दु:ख, दैन्य, दारिद्र्य आणि वेदना सामावलेली आहे. त्यामुळेच 'कैफियत'मधूनच अण्णा भाऊंच्या व एकूण मातंग समाजाच्या पर्यायाने 'फकिरा' च्या वेदनेचा हुंकार प्रकटला आहे.

2019-20

Local History and Cultural Identity in India

भारतातील स्थानिक इतिहास आणि सांस्कृतिक ओळख

Editor
Dr. Haji Nadaf

ISBN- 978-81-939729-9-1

Local History and Cultural Identity in India
भारतातील स्थानिक इतिहास आणि सांस्कृतिक ओळख

Sponsored: **Indian Council of Social Science Research (ICSSR), New Delhi**

Editor: **Dr. Haji Nadaf**
Frist Edition: **May, 2020**
Cover Design: **Ms. Kirti Kolap**
Publication: **Dnyanjyot Publication, Kolhapur**
Printed by: **Shrikant Printers, Daulat Nagar, Kolhapur**

Publishers:

Dnyanjyot
Publication

© Principal, Padmabhushan Dr. Vasantraodada Patil Mahavidyalaya, Tasgaon, 416312

Rs: 350/-

All rights reserved. This Book or any part there of ay not be reproduce in any form without the written permission of the publisher.

Disclaimer: *The Views expressed by the authors in their articles, reviews etc. insight issue are their own. Editor and publisher are not responsible for them. All disputes concerning the book shall in the court at Tasgaon, Maharashtra.*

21.	खिद्रापूर एक ऐतिहासिक पर्यटन क्षेत्र: विशेष संदर्भ स्थानिक इतिहास	सुनील गावित	१३९-१४२
22.	वाळवा तालुक्यातील ऊस तोडणी मजूर स्त्रीचे जीवन: एक समकालीन परिप्रेक्ष	मनिषा पाटील	१४३-१४७
23.	करवीर संस्थानातील १८५० नंतरचे बदलते स्थानिक व्यापारी स्वरूप	बाळासाहेब कोटलगी	१४८-१५४
24.	होलार समाजाचा अनुसूचित जातीच्या कायद्यात्मक नोंदणी प्रक्रियेचा इतिहास: एक चिकित्सा	उमाकांत हत्तीकट	१५५-१६६
25.	जव्हार संस्थानातील ढोर कोळी आदिवासी जमातीचा अभ्यास	डॉ. चंद्रकांत गिरी	१६७-१६९
26.	कराडच्या विकासातील पी.डी. पाटील यांची भूमिका	डॉ. उर्मिला क्षीरसागर	१७०-१७१
27.	मुंबई कर्नाटकातील अस्पृश्यता निवारण चळवळीतील देवराय इंगळे यांचे योगदान	डॉ. रणजीत माने	१७२-१७५
28.	स्वातंत्र्यसैनिक लक्ष्मण बाबाजी भिंगारदेवे यांचे कार्य व कर्तृत्व	डॉ. नितीन रणदिवे	१७६-१८०
29.	आर.आर. पाटील यांचे राजकीय क्षेत्रातील नेतृत्व: स्थानिक ते प्रादेशिक	नितीन खांडेकर	१८१-१८४
30.	कुंडल येथील स्वातंत्र्यसैनिक कॅप्टन आकाराम पवार यांचे जीवन व कार्य	डॉ. विवेकानंद माने	१८५-१८८
31.	अकलूजच्या जडणघडणीत कर्मवीर मारुतराव (बाबासाहेब) आनंदराव माने पाटील यांचे योगदान	डॉ. दत्तात्रय मगर	१८९-१९२
32.	दक्षिण महाराष्ट्रातील स्वातंत्र्य चळवळ व क्रांतिसिंह नाना पाटील	डॉ. लक्ष्मी भोसले	१९३-१९६
33.	शेतकऱ्यांच्या उन्नतीसाठी श्रीमंत मुधोजी महाराज यांनी केलेले कार्य	डॉ. संतोष कदम	१९७-२०२
34.	Cultural Integration of Early Medieval Indian History in the Solapur Region	Dr. Prabhakar Kolekar	२०३-२०७
35.	Globalization and its Impact on Indian Culture	Dr. Gautam Dhale	२०८-२१६
36.	कोल्हापूरच्या पर्यटन विकासात हस्तकला व खाद्यसंस्कृतीचे महत्व	डॉ. शिवाजी जाधव	२१७-२२०
37.	मंगळवेढे स्थानिक ओळख: भूमी संताची	डॉ. संजय नवले	२२१-२२७

कुंडल येथील स्वातंत्र्यसैनिक कॅप्टन आकाराम पवार यांचे जीवन व कार्य

डॉ. विवेकानंद माने

प्रस्तावना: महात्मा गांधी यांनी ८ ऑगस्ट १९४२ रोजी मुंबईच्या गवालिया टँक मैदानावर भरविलेल्या काँग्रेस अधिवेशनात सर्वंकश प्रदीर्घ भाषण केले. सर्व राष्ट्राला उद्देशून 'करेंगे या मरेंगे' असा निकराचा क्रांतिकारी संदेश दिला. सर्व राष्ट्रीय पुढाऱ्यांची ९ऑगस्ट १९४२ रोजी पहाटे सरकारने विद्युतवेगाने धरपकड केली व त्यांना गजाआड केले. संपूर्ण देशभरात प्रथम श्रेणीचे पुढारी तुरुंगात डांबले गेले. त्यामुळे एक प्रकारे निर्णायकी अवस्था निर्माण झाली. या परिस्थितीत जयप्रकाश नारायण, अच्युतराव पटवर्धन, क्रांतिसिंह नाना पाटील व इतर थोर नेते भूमिगत झाले. त्यांनी चळवळीची सूत्रे आपल्या हाती घेतली. जनता यामध्ये सहभागी झाली. येथून पुढे जनतेने उत्स्फूर्तपणे चळवळी व आंदोलने केली.

सातारा जिल्ह्यात क्रांतिसिंह नाना पाटील व त्यांचे निवडक सहकारी ताबडतोब भूमिगत झाले व पुढील अडीच ते तीन वर्षे भूमिगत क्रांतिकारकांची चळवळ देशभर गाजली. कुंडल हे औंध संस्थानच्या खात्यातील एक छोटेसे गाव होते. भगवानराव पंतप्रतिनिधी व त्यांचे कर्तबगार राजपुत्र युवराज बॅ. आप्पासो पंत यांनी १९४२ पूर्वी कितीतरी दिवस आपल्या संस्थानात प्रतिनिधी लोकशाहीचा महान प्रयोग सुरू केला होता. त्यामुळे क्रांतिसिंहांनी कुंडल हेच आपल्या चळवळीचे केंद्र बनवले. तेथूनच ते व त्यांचे सर्व थोर स्वातंत्र्यवीर १९४६ मध्ये लोकांवरील वॉरंट रद्द होईपर्यंत भूमिगत राहून चळवळ करत राहिले. या क्रांतिकारकांचे वेळोवेळी गटही तयार झाले. क्रांतिसिंह नाना पाटील यांच्या मार्गदर्शनाखाली कुंडल गट, वसंतराव दादांचा सांगली गट, नागनाथ अण्णा नायकवडी यांचा वाळवा गट, बर्डे मास्तरांचा वाटेगाव गट, किसन वीर व पांडू मास्तरांचा उत्तर सातारा गट व याशिवाय इतर छोटे मोठे गट कार्यरत राहिले. काय वाटेल ते करून ब्रिटिश राज्ययंत्रणा खिळखिळी करण्यासाठी या क्रांतिकारकांनी सर्व प्रकारे वेगवेगळे उपक्रम हाती घेतले. कुंडलमधील अनेक स्वातंत्र्यसैनिकांनी या कार्यामध्ये महत्वपूर्ण योगदान दिले आहे. त्यामध्ये कॅप्टन आकाराम पवार यांचे कार्य उल्लेखनीय आहे.

जन्म व शिक्षण:

कुंडल मधील सामान्य शेतकरी घराण्यात आकाराम ज्ञानदेव पवार यांचा जन्म ३ एप्रिल १९२३ रोजी झाला. त्यांचे प्राथमिक शिक्षण ६ वी पर्यंत गावातच झाले. गरीबीमुळे त्यांनी सोळाव्या वर्षीच शाळा सोडून किर्लोस्कर कारखान्यात टर्नर म्हणून नोकरी पत्करली.[१] किर्लोस्कर कारखान्यात त्यांच्या चांगुलपणामुळे त्यांच्या मित्रांचे सर्कल मोठे होते. ते कामगारात नावारूपाला आले. कामगारांच्या लढ्यात अग्रभागी राहू लागले. या कामगारांनी त्यांना दादा अशी उपाधी दिली. दुसरे महायुद्ध सुरू झाले त्याचबरोबर कंपनीच्या साहित्यनिर्मितीचे कामही वाढले. महागाई वाढल्यामुळे कामगार पगारवाढीची मागणी करत होते. मालक व कामगार संघर्ष सुरू झाला. कामगारांनी एक महिना अखंड संप केला. आकाराम या संपात अग्रभागी राहिले.

सहा. प्राध्यापक, इतिहास विभाग, क्रांतिअग्रणी जी. डी. बापू लाड महाविद्यालय, कुंडल

शिवाजी विद्यापीठ,

कोल्हापूर, महाराष्ट्र

दूरशिक्षण केंद्र

बी. ए. भाग-२ : इतिहास

भारताचा इतिहास (ऐच्छिक पेपर पेपर ४ सत्र ३)

स्वातंत्र्य लढ्याचा इतिहास (ऐच्छिक पेपर पेपर ६ सत्र ४)

(शैक्षणिक वर्ष २०१९-२० पासून)

© कुलसचिव, शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर (महाराष्ट्र)
प्रथमावृत्ती : २०२०
बी. ए. (भारताचा इतिहास / स्वातंत्र्य लढ्याचा इतिहास) भाग-२ इतिहास पेपर ४ व ६ करिता
सर्व हक्क स्वाधीन. शिवाजी विद्यापीठाच्या परवानगीशिवाय कोणत्याही प्रकाराने नक्कल करता येणार नाही.

प्रती : १,०००

■

प्रकाशक :
डॉ. व्ही. डी. नांदवडेकर
कुलसचिव,
शिवाजी विद्यापीठ,
कोल्हापूर - ४१६ ००४.

■

मुद्रक :
श्री. बी. पी. पाटील
अधीक्षक,
शिवाजी विद्यापीठ मुद्रणालय,
कोल्हापूर-४१६ ००४.

■

ISBN- 978-93-89327-76-2

★ दूरशिक्षण केंद्र आणि शिवाजी विद्यापीठ याबद्दलची माहिती पुढील पत्त्यावर मिळू शकेल.
शिवाजी विद्यापीठ, विद्यानगर, कोल्हापूर-४१६ ००४ (भारत)

अभ्यास घटकांचे लेखक

लेखन सहभाग	सत्र–३ घटक क्रमांक	सत्र–४ घटक क्रमांक
डॉ. व्ही. आर. माने क्रांतिअग्रणी जी. डी. बापू लाड महाविद्यालय, कुंडल	१	–
डॉ. संदिप महाजन एस. जी. एम. कॉलेज, कराड	२	–
डॉ. सुरेश वसंत शिखरे श्री शहाजी छत्रपती महाविद्यालय, दसरा चौक, कोल्हापूर	३	–
डॉ. अजितकुमार दादासो जाधव आर्टस अ‍ॅण्ड कॉमर्स कॉलेज, नागठाणे, जि. सातारा	४	–
श्री. संदिप बी. जाधव विठ्ठलराव पाटील महाविद्यालय, कळे	–	१
डॉ. विकास सुदाम येलमार छत्रपती शिवाजी कॉलेज, सातारा	–	२
डॉ. संतोष जेठीथोर डी. आर. माने महाविद्यालय, कागल	–	३
श्री. मुफीद मुजावर दूरशिक्षण केंद्र, शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर	–	४

■ संपादक ■

डॉ. सुरेश वसंत शिखरे
श्री शहाजी छत्रपती महाविद्यालय,
दसरा चौक, कोल्हापूर

डॉ. अभय पाटील
सद्गुरू गाडगे महाराज कॉलेज,
कराड, जि. सातारा

Innovative Library Services in ICT Era

(Edited book)

Editors –

Dr. Sandeep Bhavsar
Librarian,
Prin. L. N. Welingkar Institute of Management
Development & Research (AUTONOMOUS),
L Napoo Road Matunga (CR)
Mumbai- 400 019.

Dr. Sambhaji Patil
Librarian,
MET's Institute of Engineering,
Bhujbal Knowledge City,
Adgaon, Nashik (MS), Pin 422003.

SHROFF PUBLISHERS & DISTRIBUTORS PVT. LTD.
Mumbai Bangalore Kolkata New Delhi

 ISBN: 978-93-5213-844-9

Index

Sr. No.	Titles		Page No.
01	Advertising and Promotion of Library Services	*Dr. V. Senthur Velmurugan*	1
02	An Application of ICT in Different Activities Libraries: An Overview	*Dr. K. Murugan, Mr. Mukund Kolwadkar*	7
03	Current Awareness Services	*Mrs. Vaishali .B. Kanekar, Dr. Hitendra Patil*	12
04	LIS Education in India: Present Scenario	*Mr. Darade Dattatrya Bandu*	20
05	Blended Learning for New Generation Learners: Analyzing its Aids in Teaching Learning of LIS Education	*Dr. Deepshikha Sen, Dr. Mukut Sarmah*	25
06	E- Learning & Information Literacy	*Prof. Avhad P. E., Dr. Kirit H. Shukla*	35
07	ICT in Libraries: Another Measurement in Librarianship	*Dr. V. Senthur Velmurugan, Dr. G. Amudha*	41
08	Information Communication Technology in Libraries: An Overview	*Mr. Kishor Ramdas Mali, Mr. Hitesh Gopal Brijwasi*	57
09	Institutional Repository: A new Dimension of Digital Library	*Mrs. Yamini P. Galapure*	65
10	Internet of Things (IoT): Step Towards Smart Libraries	*Mrs. Swati Manohar Nawale*	71
11	Managing Libraries and Information Centre's in the Digital World	*Kishor N. Desai*	75
12	Open Science and Open Data - A New Dimensions in openness for Academic Libraries	*Dr. Sangita Purohit*	81
13	Web Based Library and Information Services	*S.N. Hirekhan*	93

"Innovative Library Services in ICT Era", (Edited book) ISBN: 978-93-5213-844-9

Managing Libraries and Information Centre's in the Digital World

Kishor N. Desai, *Librarian, Krantiagrani G.D. Bapu Lad Mahavidyalaya, A/P-Kundal, Tal-Palus, Dist-Sangli.Pin-416 309, Affiliated to Shivaji University, Kolhapur., Email-kishor.desai007@gmail.com, Cell- 9730820255*

ABSTRACT

We are in knowledge society, knowledge is an intellectual capital when people out of creation, add value in information. Libraries-treasures of knowledge-like all other organisations have been greatly impaired by the unprecedented growth of knowledge and information. The developments in information, communication and technology (ICT), information storage media, computers, communication and networking have brought in great changes in libraries.

KEYWORDS

Digital, ICT, library, IPR,

CHANGES IN LIBRARY AND INFORMATION ENVIRONMENT

1. **Shift from Quantity to Quality-**

   Till the 1970'slibrarians believed "the bigger the better." The larger the library collection, it was said to be a good library. During the 1960's this axiom of quantity was replaced by quality. Librarians began to realize that the better the quality of the library collection, the higher is the users' satisfaction. In other words, the library collection should be based on users' needs and it should be up-to-date. Old, unusable and obsolete materials should be weeded out and thus the library caters to the needs of right users it also minimizes wastage, saves spaces, furniture and manpower.

2. **To Own Vs Access-**

   The belief that the possession of quality collection satisfies the users more is considered insufficient to meet the users' needs fully. Users' needs are growing in multi-direction owing to technological advances, information explosion and global changes. The proliferation of literature resulting in information explosion has made it impossible for any library to

शिविम संशोधन पत्रिका

मध्ययुगीन मराठी वाङ्मयातील विविध संप्रदाय

दिनांक १ व २ फेब्रुवारी, २०२०

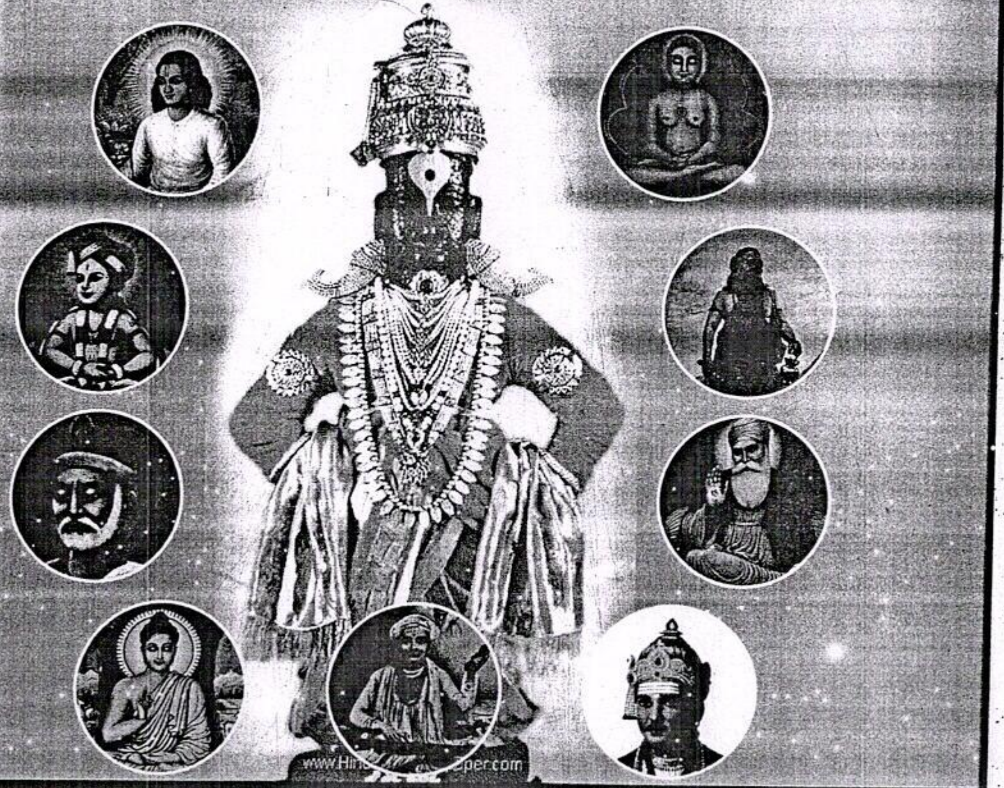

सद्गुरु गाडगे महाराज कॉलेज, कराड

(स्वायत्त महाविद्यालय)

ता. कराड जि. सातारा

राष्ट्रीय उच्चस्तर शिक्षा अभियान (रुसा)

शिवाजी विद्यापीठ मराठी शिक्षक संघाबरोबर विविध महाविद्यालयांचे सामंजस्य करार (MOU)

व्ही. के. चव्हाण-पाटील महाविद्यालय, पाटणे-फाटा ता. चंदगड

आक्काताई रामगोंडा पाटील कन्या महाविद्यालय, इचलकरंजी

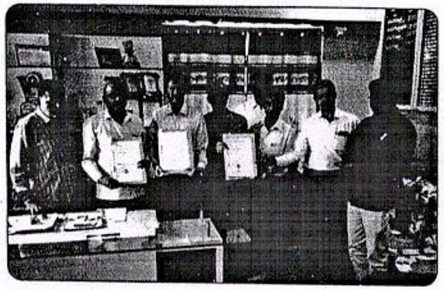

र. भा. माडखोलकर महाविद्यालय, चंदगड

आर्ट्स ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, नागठाणे, जि. सातारा

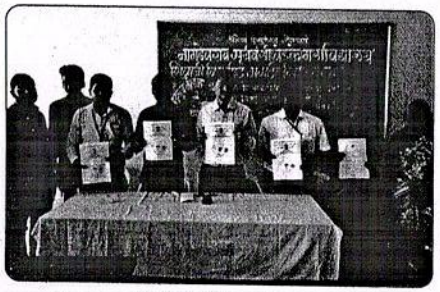

नामदेवराव सूर्यवंशी (बेडके) महाविद्यालय, फलटण

दत्ताजीराव कदम आर्ट्स, सायन्स ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, इचलकरंजी

शिवाजी विद्यापीठ मराठी शिक्षक संघाचे विद्वत्प्रमाणित त्रैमासिक

शिविम संशोधन पत्रिका

(Peer Reviewed Referred Research Journal)
ISSN No. 2319-6025
(विद्यापीठ अनुदान आयोग नवी दिल्ली, मान्यता अ. क्र. ६४१७५)
वर्ष-आठवे : अंक विसावा
ऑक्टोबर-नोव्हेंबर-डिसेंबर २०१९

जन्मस्मृती विशेषांक

संपादक
डॉ. शिवकुमार सोनाळकर

कार्यकारी संपादक
डॉ. नीला जोशी

संपादक मंडळ
डॉ. नंदकुमार मोरे, डॉ. गोमटेश्वर पाटील, डॉ. तातोबा बदामे, डॉ. दिनेश वाघुंबरे

सल्लागार समिती
डॉ. राजन गवस, डॉ. प्रकाश कुंभार, डॉ. डी. ए. देसाई, डॉ. अनिल गवळी

प्रकाशक
अध्यक्ष, शिवाजी विद्यापीठ मराठी शिक्षक संघ, कोल्हापूर
अनुराज, ७/ब, सूर्यवंशी कॉलनी, सानेगुरुजी वसाहत, कोल्हापूर ४१६ ०११

मुद्रक
भारती मुद्रणालय
८३२ ई वॉर्ड, शाहूपुरी ४ थी गल्ली, कोल्हापूर. फोन : (०२३१) २६५४३२९

मूल्य : रु. १००/-

* वीरशैव संप्रदाय आणि श्रीबसवेश्वरांचे कार्य
  डॉ.सुभाष जाधव ४०७
* लिंगायत धर्माचे तत्त्वज्ञान
  डॉ. मांतेश हिरेमठ ४११
* युगप्रवर्तक महात्मा बसवेश्वरांचे प्रेरणादायी वचन साहित्य
  संगीता आरळी ४१६
* महात्मा बसवेश्वरांच्या बसववचनातील स्त्रीविषयक जाणिवा
  प्राचार्य डॉ.शिवलिंग मेनकुदळे ४२०
* शिवशरणी अक्कमहादेवी यांच्या वचनसाहित्यातील विचारतत्त्वे
  डॉ. दत्ता पाटील ४२३
* मध्ययुगीन मराठी वाङ्मयातील समर्थ संप्रदायाचे अवलोकन
  डॉ. शिवाजी पाटील ४२७
* समर्थ संप्रदाय
  डॉ. शर्मिला घाटगे ४३०
* समर्थ संप्रदाय
  प्रा.महेश कुलकर्णी ४३४
* रामदासांचा समर्थ संप्रदाय
  डॉ. वैशाली औताडे ४३७
* समर्थ संप्रदाय: तत्त्वज्ञान आणि वाङ्मय
  प्रा.अंकुश घुले ४४०
* मनाच्या आरोग्यासाठी मनाचे श्लोक
  डॉ.संग्राम थोरात ४४४
* रामदासांची लोकशिक्षकाची भूमिका
  डॉ. सविता माळी ४४७
* वेणाबाई ते वेणास्वामी
  डॉ. रेश्मा दिवेकर ४५२
* गुरू नानकदेवजींचा पुरोगामी दृष्टीकोन
  डॉ.सुभाष वाघमारे ४५६
* मुस्लिम आणि ख्रिस्ती संतांचे योगदान
  डॉ. बाळासाहेब चव्हाण ४६१
* 'मुडलगी संप्रदायातील मराठी संत कवयित्री- राधाबाई'
  डॉ. धनंजय होनमाने ४६६
* चिमड संप्रदायाच्या प्रचार व प्रसारासाठी साहित्यसंपदेचे योगदान
  नारायण आपटे, ४६९
* नागेश संप्रदाय आणि अज्ञानसिद्धांच्या साहित्यातील समाज-संस्कृती दर्शन
  डॉ. देवीदास गायकवाड ४७२
* आनंदसंप्रदाय आणि त्यांचे वाङ्मय
  डॉ. बाळकृष्ण शिंदे ४७६

'मुडलगी संप्रदायातील मराठी संत कवयित्री- राधाबा

डॉ. धनंजय हो

मुडलगी संप्रदाय आणि स्त्री स्वातंत्र्य :

कर्नाटक प्रांतात हा संप्रदाय उदयास आला. विवेकसिंधुकार मुकुंदराज या संप्रदाया एक थोर मराठी कवी. ११ व्या शतकात मुकुंदराजांनी मराठी भाषेत पहिला ग्रंथ लिहि आणि मराठी भाषेला ग्रंथाचे दालन खुले केले. संस्कृत भाषेचे प्राबल्य झुगारणारा अ आपल्या स्वभाषेत काव्य लिहिणारा पहिला बंडखोर कवी म्हणजेच मुकुंदराज होय. त्यांच्यान काही मोजके मराठी कवी होऊन गेले, पण मराठी वाङ्मयाचा इतिहास लिहिणाऱ्या लेखकां मुकुंदराजांच्या परंपरेतील मराठी कवींना उपेक्षितच ठेवले. मुडलगी संप्रदायात कोनेरी बोध रंगबोध, अद्वयबोध असे महत्त्वाचे मराठी कवी दुर्लक्षितच आहेत. या सर्व कवींनी जस संस्कृत भाषेचा पाश तोडून मराठीत काव्य रचना केली तसाच एक सामाजिक विद्रोह केला तो म्हणजे स्त्रियांना मुक्त स्वातंत्र्य बहाल केले. 'स्वामी' नावाने प्रसिद्ध असणाऱ्या या घराण्यात काही स्त्रियांनी मराठी भाषेत काव्यलेखन केले आहे. या संदर्भात वसंत जोशी व द. दि. पुंडे म्हणतात, 'स्वामी घराण्यातील स्त्रिया आपापल्या पतींच्या आध्यात्मिक थोरवीला शोभणाऱ्या होत्या. याची साक्ष या घराण्यातील दोन स्त्रियांची जी अत्यल्प काव्यरचना हाती आली, तिच्यावरून पटण्यासारखी आहे. त्यांनी आपापल्या पतींच्या लौकिक, आध्यात्मिक संसाराबरोबरच वाङ्मय संसारालाही आपापल्या परीने हातभार लावला. त्या काळातील स्त्रियांच्या साक्षरतेचे प्रमाण ध्यानात घेता ही गोष्ट काहींशी नवलाईचीच वाटते.'[१]

आपला पती ज्या कार्यात मग्न आहे त्याच कार्याचा स्त्रियांनीही तेवढ्याच आत्मीयतेने स्वीकार केलेला दिसून येतो. डॉ. वसंत जोशी म्हणतात, 'मुडलगी परंपरेतील काही थोर स्वामींच्या पत्नींनी अल्प का होईना पण काव्यरचना केलेली आहे. संत मुक्ताबाई, जनाबाई, बहिणाबाई यांच्या इतकी प्रदीर्घ रचना त्यांची नसली, कान्होपात्रेसारखी काव्यात्म पातळीवर जाणारी भावनात्मकता त्यांच्या कवितेत नसली तरी प्रतिनिष्ठेतून निर्माण झालेली संप्रदायनिष्ठा आणि उत्कटभक्ती हे गुण त्यांच्या कवितेत दिसून येतात.'[२] हे उद्‌गार डॉ. जोशी यांचे वस्तुस्थितीदर्शकच आहेत याचा प्रत्यय येतो.

राधाबाई

१६ व्या शतकाच्या उत्तरार्धातील रंगबोध यांचा शिष्य अद्वयबोध यांची पत्नी म्हणजे राधाबाई होय. रंगबोध हा मुकुंदराज परंपरेतला असून डॉ. आवळीकरांनी मुडलगी येथील बोध परंपरेवर प्रकाश टाकून मुकुंदराज, नृसिंह भारती, जगन्नाथ, सहजबोध, रंगबोध, अद्वयबोध अशी परंपरा निर्देशीत केली आहे. त्यातील अद्वयबोध यांची पत्नी म्हणजे राधाबाई होय. राधाबाई कवयित्री होती. तिनेही काव्यरचना केलेली आहे. हिचे एक पद 'महाराष्ट्र सारस्वतात' उल्लेखले असल्याचे 'मराठी वाङ्मयकोश' कार सांगतात. तसेच दुसरे 'प्राचीन गीत मंजुषा' या ग्रंथात आढळते. 'प्रतिष्ठान' ऑगस्ट १९५८ च्या अंकात डॉ. पंडित

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

Krantiagrani Dr.G.D.Bapu Lad Mahavidyalaya, Kundal.
Tal.Palus Dist.Sangli

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - IX, Issue - I,
January - March - 2020
Marathi Part - II / Hindi

Impact Factor / Indexing
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

VOLUME - IX, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF HINDI

अ.क्र.	शोधालेख एवं शोधकर्ता	पृष्ठ क्र.
१	डॉ. उषा यादव के कहानीयों में पारिवारिक समस्याएँ **प्रा. दत्तात्रय महादेव साळवे**	१-४
२	२१ वीं सदी की हिंदी कविता में प्रतिबिंबित मानवी मूल्य **डॉ. अशोक मरळे**	५-९
३	मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासो में चित्रित घटते हुएं मानवीय मूल्यों का चित्रण **प्रा. जे. ए. पाटील**	१०-१२
४	२१ वीं सदी में मानवी जीवन मूल्यों में आए बदलाव (टूटने के बाद, मुन्नी मोबाइल, खानाबदोश ख्वाहिशें उपन्यासों के परिप्रेक्ष्य में) **प्रा. सारिका राजाराम कांबळे**	१३-१७
५	ममता कालिया के ''कितने प्रश्न करूँ'' खंडकाव्य में जीवन मूल्य **प्रा. डॉ. सौ. वाघ शकुंतला प्रताप**	१८-२१
६	हिंदी उपन्यासों में चित्रित मानवीय मूल्य **डॉ. संदीप पांडुरंग शिंदे**	२२-२७
७	इस्लाम की आर्थिक व्यवस्था के नैतिक मूल्य **डॉ. शाहीन एजाज जमादार**	२८-३१
८	'खामोशी की गूँज' उपन्यास में अन्तर्राष्ट्रीय विस्थापन : एक अनुशीलन **प्रा. रमेश आण्णाप्पा आंदोजी**	३२-३६
९	हिंदी फिल्मी गीतों में नैतिक मूल्य **डॉ. रमेशकुमार गवळी**	३७-४२
१०	मानवीय मूल्यों पर भूमंडलीकरण का प्रभाव (परिवार के संदर्भ में......) **डॉ. सौ. आनंदी सचिन शिंदे**	४३-४८
११	सूर्यबाला के साहित्य में चित्रित मानवीय मूल्य : दीक्षांत के विशेष संदर्भ में **डॉ. सिद्धेश्वर वि. गायकवाड**	४९-५२
१२	जीवन मूल्य और दृश्य मीडिया **डॉ. कविता अजीतसिंह सुल्ह्यान**	५३-५६
१३	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में मानव मूल्य **प्रा. डॉ. वर्षा गायकवाड**	५७-५९

VOLUME - IX, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

३. मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासो में चित्रित घटते हुएं मानवीय मूल्यों का चित्रण

प्रा. जे. ए. पाटील
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, क्रांतिअग्रणी जी. डी. बापू लाड महाविद्यालय, कुंडल, जि. सांगली. (महाराष्ट्र).

पृष्ठभूमि

भारतीय संस्कृति में मूल्यों का विशिष्ट स्थान होने के बावजूद नारी जीवन का रूख क्या है? इक्कीसवीं शती में नारी का स्थान, उसका वजूद, उसके जीवन के विविध आयाम महत्त्वपूर्ण है। नारी त्रासदी, उसकी पीडा,संघर्ष,असहायता,प्रतिष्ठा आदि को, वैचारीक धरातल पर देखा जाए तो बदलते मानवीय मूल्यों में नारी समाज की विवेचना का पुनर्मुल्याकंन कर के नयी दिशा तलाशना आवश्यक है। पुरूष और स्त्री संवैधानिक दृष्टि से बराबर के हकदार होते हुए भी सामाजिक धरातल पर सभी अधिकार पुरूषों को प्राप्त है।

समाज में शिक्षा ,व्यवसाय, लोकसेवा ,धार्मिक संस्थानों में विशेष कर नारी अपनी योग्यता एवम् विद्वत्ता के आधार पर बराबरी हक रखती है। नयी शती की नारी अपने हक के लिए संघर्षशील है। स्त्री विमर्ष स्त्रियों के अस्तित्व सम्पन्न होने की प्रकिया है,जिसके माध्यम से स्त्री जीवन के विविध पहलुओं को उजागर किया जाता है। तस्लीमा नसरीन के अनुसार 'महिलाओं के सामाजिक जीवन के प्रत्येक जागरण और क्रिया कलापों की सहायता करनी चाहिए ताकि वे अपने कूपमंडुक आत्मकेंदित घरेलू और पारिवारिक मानसिकता से बाहर आ सके।[1] बाहरी जगत में अपना अस्तित्व बनाती आज की नारी अपने स्व के सामर्थ्य को पहचान रही है। शिक्षा के प्रति जागरूकता के कारण ही वह अपनी घरेलू मानसिकता से बाहर आ कर दायरा स्थापित कर रही है।

आज के समाज में ऐसी मानसिकता है कि पुरुष चाहता है,पत्नी नौकरी करनेवाली हो और वह घर परिवार की देखभाल करे,बच्चो की पढाई देखे, खाना बनाए,मेहमानों की आवभगत करे,पूजा अर्चा करे,त्योहार आदि की जिम्मेदारी वह खूबी से निभाए। पर कोई उसकी समस्या को समझना नही चाहता। समाज की मानसिकता नारी को आत्मनिर्भर तो बनाती है,पर उसे पारिवारिक,सामाजिक कटघरे में खडा रखकर।

उपन्यासों में चित्रित घटते मानवीय मूल्य

एक रचनाकार के रूप में मैत्रियी पुष्पा सजग और सर्वाधिक चर्चित लेखिका है। उम्र के उत्तरार्ध्द में उन्होने लिखना आरम्भ किया,इसलिए कहा जाता है,लिखने की कोई उम्र नही होती। मैत्रेयी जी का साहित्य गॉव की भुमि से लेकर घर ऑगन तथा विविध परिवेश को दर्शाता है।मैत्रेयी पुष्पा ने बेतवा बहती रही,इदन्नमम,चाक,झूला नट,अल्मा कबूतरी,विजन,अगनपाखी, कही ईसुरी फाग आदि उपन्यासों के माध्यम से सशक्त लेखन का परिचय दिया है।

पुष्पाजी के कथा–साहित्य में नारी की मानसिकता को सुक्ष्मता से प्रस्तुत किया गया है। उपन्यासों की नायिका संघर्षशील नारी की अभिव्यक्ति करती है। अपने वजूद,अस्तित्व,अस्मिता के लिए वह संघर्षशील होकर वह समाज,परम्पराओं रूढिओं और पुरुष के अहं का विरोध करती है। लेंखिका ने उपन्यासों के समस्त चरित्र को अपने

VIDYAWARTA®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Special Issue
January 2020

Rayat Shikshan Sanstha's

ARTS, SCIENCE AND COMMERCE COLLEGE,

RAMANANDNAGAR (BURLI)

Tal.Palus, Dist.Sangli

NAAC Reaccreditation : 'A' Grade with CGPA 3.02
Internal Quality Assurance Cell (IQAC),

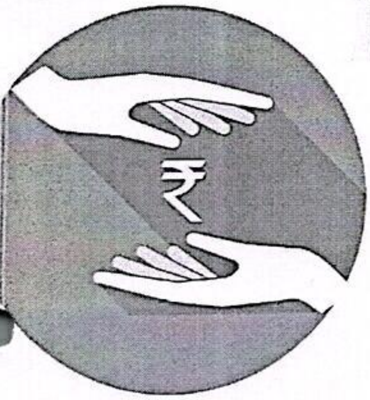

Department of Economics And Department of Commerce

Jointly Organized

One Day National Seminar

On

DYNAMICS OF INDIAN ECONOMY

24th January, 2020.

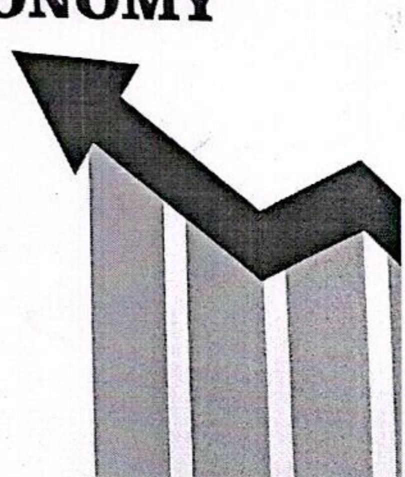

K.G.D.L. College, Kundal
Tal.Palus, Dist.Sangli

Scanned with CamScanner

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

Vidyawarta® Peer-Reviewed International Journal

January 2020 Special Issue

Index

01) Opportunities and Challenges of E-Banking in India
Dr. Kalhapure B. B., Satara ||22

02) Sustainable Agriculture Development in India
Dr. M. G. Sadamate, Kundal ||26

03) Changing Scenario of Retailing in India
Dr. Pravinkumar Lupane, Miss. Moshina Mulani, Kolhapur ||30

04) Financial Inclusion: An Analysis Of Initiatives Of Rbi
Dr.(Mrs.) Rashmi A. Godhi, Kolhapur ||35

05) Sustainable Agriculture and Food security
Miss. Nilakhe Amruta Shital, Kolhapur ||38

06) A Study of E- COMMERCE
Prof. B. A. Tarhal, Hupari ||43

07) Affiliate Marketing: Changing Ways of Marketing
Mr. B. D. Patil, Mr. Sandip Patil, Sangli ||47

08) Impact of NPA on the Performance of Union Bank of India: An Empirical Study
Mr. Pranav Mangesh Tendolkar, Nanded ||51

09) Role and impact of modern technology in Sustainable agricultural
Mr. S. A. Bhandare, Ramanandnagar(Burli) ||54

10) Customer Relationship Managmnet (Crm) In Indian Banking
Assist.Prof.Vinod Hanumant Awaghade, Hupari ||56

11) Economic Impact Of Gst On Consumers
Prof. Dr. P. S. Kamble, Mr. Vishal MadhukarKurane, Kolhapur ||59

12) Performance Of Pradhan Mantri Fasal Bima Yojana For Rural Development In India
Dr. Sarika Vishwas More, Hupari ||68

13) Climate change effect on area under crop, production and Productivity ...
Dr. Shesabhare S. Y., SANGLI ||73

K.G.D.A. College, Kundal, Tal. Palus, Dist. Sangli

www.vidyawarta.com/03 — http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with CamScanner

4. International Journal of Engineering and Management Studies. Vol.2, No. I, pp.47-53.

5. Pooja Malhothra, Bawinder Singh. (2009). "The Impact of Internet Bank performance and risk: the Indian Experience", Eurasian Journal of Business and Economics 2009, 2 (4). 43-63

6. Reserve Bank of India (November, 2013), ATMs and Plastic money report.

7. Ann ual reports of Reserve Bank of India,www.rbi.org.in 8.www.propertyobserver.com.au/financing/25583-august-22-mobile-bankingshirley-lui.html

9. http://www.moneymatters360.com/index.php/pros-and-cons-of-mobilebanking-1507/

10. http://www.cgap.org/topics/agent-networks

11. WWW.rbi.org.in

□□□

K.G.D.L. College, Kundal ★ Tal.Palus, Dist.Sangli ★

02

Sustainable Agriculture Development in India

Dr. M. G. Sadamate
Krantiagrani G. D. Bapu Lad Mahavidhyalaya, Kundal

****

Abstract- The objective of this research is to study the Sustainable Agriculture Development in India. The role of agricultural sector in Indian economy can be seen through its contribution to Gross Domestic Product and employment. This sector also contributes significantly to sustainable economic development of the country. The sustainable agriculture development of any country depends upon the judicious mix of their available natural resources. In spite of fast growth in various sectors, agriculture remains the backbone of the Indian economy. This paper attempts issue of sustainable development in agriculture in India. Further, it aims to compare the sustainable agriculture system with the traditional system and the current system in practice, across the dimensions of ecological, economic, and social sustainability. The findings of the study reveal the innovative strategies & achieving the growth.

Keyword: Sustainable growth, Resources, Development, economy

1. INTRODUCTION

Sustainable agriculture development integrates three main goals, Environmental, health, economic prosperity and livelihood sustainability. In other words, sustainability rests on the principle that we must meet the needs of the present without compromising the ability of future generations to meet their own needs. Therefore, ownership of both natural and human

Scanned with CamScanner

Impact Factor 6.293

ISSN 2349-638x

Peer Reviewed And Indexed

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly e-Journal

VOL-VII | ISSUE-I | Jan. | 2020

Address
- Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
- Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
- (+91) 9922455749, (+91) 8999250451

Email
- aiirjpramod@gmail.com
- aayushijournal@gmail.com

Website
- www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

Sr.No.	Author Name	Research Paper / Article Name	Page No.
33	Dr. Balkrishna Dada Waghmare	A Subaltern Study Of Ngugi's Petals Of Blood	110 To 112
34	U.M.Gharge	Corporate Social Responsibility : Current Issue	113 To 116
35	Dr. F. N. Mahajan	Globalisation and the Free market Economic Unification related to Foreign Capital	117 To 119
36	Jai Bhagwan Singh	Role Of Physical Education And Sports For Women Empowerment	120 To 121
37	Prof. Sunil V. Narnaware	Use Of Whatsapp As Information Desimination Tool In The Rural Colleges Of Nagpur District: A Study	122 To 124
38	Vd. Riyazuddin Siddiqui	Sandhankalpana- An Ayurvedic Overview	125 To 128
39	Vd. Riyazuddin Siddiqui	Pharmaceutical Study Of Rasamanikya By Different Methods	129 To 133
40	Miss. Shreya Anant Mandrupkar & Mr. Sushil Bhimrao Bansode	Analytical Study Of Uniform Civil Code	134 To 136
41	Dr.Uday Chavan	Benefits Of Sports Tourism In Current Scenario	137 To 139
42	Dr. Yashvant Patil	Important Skills In Basketball And Different Methods	140 To 142
43	Dr.Prajakta Suryabhan Gore & Dr. B.R. Kurkute	Anti-Microbial Activity of Talakeshwara Ras	143 To 145
44	Vd. Ashwini R. Metangale	A Comparative Study Of Palashadi Kalka Dharan With Arkadi Varti In The Management Of Kaphaj Yonivyapad	146 To 151
45	Aditya Pratap Rajput & Rohit Gadkari	A Review Of Basic Concept Of Legal Aspects In Medical Practice In Pediatrics	152 To 154
46	Dr.S.B. Ashture	Morphology And Functional Zones of Osmanabad Town : A Geographical Study	155 To 158
47	Dr. Snehal Ram Rathod	Perspective Study Of Gynaecological Lifestyle Related Disorders	159 To 162
48	Dr.Virendra R. Talreja	Effect Of Endurance Training On Cardio-Respiratory Fitness Of Football Players	163 To 165

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
VOL- VII ISSUE- I JANUARY 2020 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 6.293 ISSN 2349-638x

A Subaltern Study Of Ngugi's Petals Of Blood

Dr. Balkrishna Dada Waghmare
Krantiagrani G. D. Bapu Lad Mahavidyalaya, Kundal.
Tal. Palus, Dist- Sangli. MS. (INDIA)
(Affiliated to Shivaji University Kolhapur)

Abstract:

Subaltern Studies rejected Indian history as it was written so faras it had focused exclusively on the point of view of the elite groups within Indian society.According to Gayatri Spivak, the subaltern cannot speak because (s)he is not heardso, she expects that it is the task of the postcolonial intellectuals to speak for subaltern groups.Ngugi waThiong'o is a Kenyan novelist. He is considered as a major voice speaking on the behalf of the African people.Ngugi, Petals of Blood(1977) offers a scathing critique of capitalism and accuses wealthy landowners and bureaucrats who exploit the poor and working classes.The real heroes like Abdulla are forgotten and are reduced to marginal state in post-colonial Kenya.Ngugi's women characters like Wanja and Karega's mother also show the social as well as capitalistic aspects. They are mere a commodity or a thing of sexual satisfaction.

Key Words: Subalterns, marginalization, exploitation, capitalism, post-colonialism

Subaltern Studies started out with the ground-breaking work of Ranajit Guha at the end of the 1970s. Guha, together with a group of young Indian historians based in Britain,published a series of essays that rejected Indian history as it was written so far. According to them it had focused exclusively on the point of view of the elite groups within Indian society. The project reflected on the role of the peasant, or "subaltern," in Indian history. It urged for a rewriting of Indian history in which the subaltern could come to its own.

Gayatri Spivak is another representative of postcolonial critics. She is known for her deconstructive method and Althusserian Marxism. She has never particularly subscribed herself to the Subaltern Studies group but her work continuously interacted with this project that she has encouraged and criticized. Spivak's association with Subaltern Studies is evident in her essay, *Can the Subaltern Speak?*(1988). It focuses on the position of the subaltern woman through a discussion of the practice of widow sacrifice (Sati) in India. She argued that the subaltern (woman) does not have the possibility to represent herself; as a result, she cannot speak. This argumentation was received and interpreted in various ways.

Some critics accuse Spivak of not recognizing the voice of the subaltern. However, this accusation is unjust. Spivak only claimed that the subaltern cannot speak because (s)he is not heard. So, she expects that it is the task of the postcolonial intellectuals to speak for subaltern groups. In 1988, she published *In Other Worlds*, a powerful book on cultural theory. It investigates the relationship between language, woman and culture in both Western and non-Western contexts. Her use of the post-structuralist approach to analyse representations is perhaps best illustrated in the concept of "strategic essentialism". It is a critique of essentialism. It is a way of deploying essentialist terms in an interrogating way for the purpose of dismantling the structures of suffering that these terms create. She has used the deconstructionist approach in her more recent work, *A Critique of Postcolonial Reason* (1999), as a means to expose the tendency of institutional and cultural discourses to exclude and marginalize the subaltern, especially subaltern women.

Ngugi waThiong'o is a Kenyan novelist. He is considered as a major voice speaking on the behalf of the African people. His work basically deals with what colonialism has done to African soul and body. He has tried to portray the impact colonialism in his novels. Hisfourth novel and the last novel written under his Christian name James Ngugi, *Petals of Blood(1977)* deals with the investigation of the murder of three representatives of the new society, who have profited from neo-colonialism. The noveloffers a scathing critique of capitalism and

CLRI **Contemporary Literary Review India**
Brings articulate writings for articulate readers.

Print ISSN 2250-3366 | Online ISSN 2394-6075 | Vol 7, No 1: CLRI
February 2020 | p. 52-59

Returning to Roots in Andrea Levy's "Back to My Own Country"

Dr Balkrishna Dada Waghmare

Teaches at Krantiagrani G. D. Bapu Lad Mahavidyalaya Kundal, (Shivaji University Kolhapur), Sangli, Maharashtra, India.

Abstract

Colonialism is the relationship of domination of indigenous by foreign invaders where the latter rule in pursuit of their interests. *Decolonization, on the other hand, is a* Process by which colonies become independent of the colonizing country. The decolonisation of the colonized can be in various forms. It may be returning to one's own religion, language, identity, culture or so on. African writers as a part of decolonization or returning to their roots started writing in indigenous languages and returned to their oral tradition. They also denounced Christianity. Andrea levy in her essay "Back to My Own Country" gives account of symbolic her journey to her own country i.e. self-discovery and place of blacks in British history. This new knowledge enables her to claim her

IMPACT FACTOR SJIF 2019-6.380 ISSN 2319-4766

SRJIS

GLOBALIZATION & ITS IMPACT ON INDIAN ECONOMY (GIIE 2020)

Special Issue of
An International, Peer Reviewed & Referred

SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

JAN-MAR,2020,V-8/44

Editor-In-Chief
Prin. Dr. G. N. Shinde

Editor
Dr. P. R. Muthe

Co-Editors
Dr. D. D. Bhosale
Dr. D. A. Pupalwad

K.G.D.L. College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

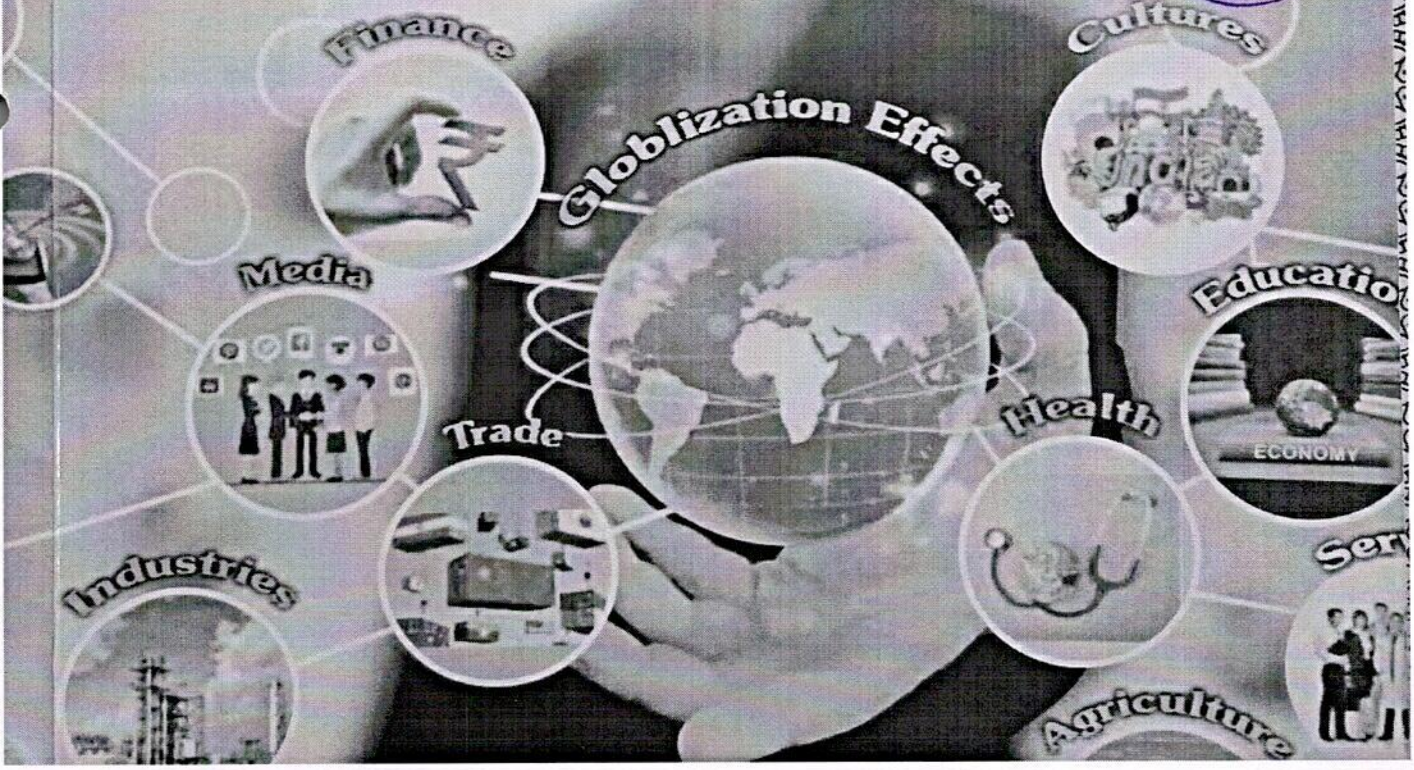

Scanned with CamScanner

56	**REGIONAL DIRECTION OF INDIA'S EXPORT DURING GLOBALIZATION ERA: AN ANALYTICAL NOTE** *Dr. Muthe P. R.*	269-275
57	**THE BENEFITS AND CHALLENGES OF E- COMMERCE AFTER GLOBALIZATION** *Mapari Subhash Kishanrao*	276-279
58	**CHANGING BANKING TRENDS AFTER GLOBALIZATION** *Dr. H. W. Kulkarni & Kendra Kalpana Kashinath*	280-283
59	**ECONOMIC REFORMS AND E-BANKING IN RURAL AREA (KINWAT TALUKA)** *Dr. Shubhangee L.Diwe*	284-288
60	**IMPACT OF POWER SECTOR ON INDUSTRIAL DEVELOPMENT DURING ECONOMIC REFORMS** *Vinayak Govind Pawar*	289-293
61	**GLOBAL ECONOMIC CRISIS AND SECTORAL IMBALANCE OF INDIAN ECONOMY: AN ANALYSIS** *Dr. Prasanna. T & Smt. Chandrakala K.S*	294-305
62	**INDIAN ECONOMYAS AN EMERGING ECONOMY** *Dr. B. M. Munde*	306-308
63	**IMPACT OF GLOBALIZATION ON UNEMPLOYMENT IN INDIA** *Dr. Vikas V. Sukale*	309-312
64	**IMPACT OF GLOBALIZATION ON FARMER SUICIDES IN VIDARBHA REGIONS OF MAHARASHTRA STATE** *Yedatkar RB, Niras VV & Sonwane RS*	313-319
65	**A STUDY OF GLOBALIZATION & ITS IMPACT ON FOREIGN TRADE** *Prof. Dr. S.J. Jadhav & Mr. Shyamsingh V. Raghuwanshi*	320-323
66	**'SUSTAINABLE AGRICULTURE DEVELOPMENT AFTER ECONOMIC REFORMS IN INDIA'** *Dr. Mohan . G. Sadamate*	324-327
67	**GLOBALIZATION & ITS IMPACT ON REFORMING GOVERNANCE FOR SUSTAINABLE DEVELOPMENT – A STUDY** *Dr. Shivaji Haribhau Chavan*	328-334
68	**REFORMS IN BANKING AND FINANCIAL MANAGEMENT-CHALLENGES AND OPPORTUNITIESIN THE ERA OF GLOBALIZATION** *Mrs. Neha N. salagare*	335-341
69	**GLOBALIZATION IN INDIAN ECONOMY** *Dr. Rajesh G. Umbarkar & K. J. Kamble*	342-346

K.G.D.L. College, Kundal * Tal.Palus Dist.Sangli *

Scanned with CamScanner

'SUSTAINABLE AGRICULTURE DEVELOPMENT AFTER ECONOMIC REFORMS IN INDIA'

Dr. Mohan . G. Sadamate
Krantiagrani G. D. Bapu Lad Mahavidhyalaya Kundal. Dist. Sangli,

Abstract- *The objective of this research is to study the Sustainable Agriculture Development in India. The role of agricultural sector in Indian economy can be seen through its contribution to Gross Domestic Product and employment. This sector also contributes significantly to sustainable economic development of the country. The sustainable agriculture development of any country depends upon the judicious mix of their available natural resources. In spite of fast growth in various sectors, agriculture remains the backbone of the Indian economy. This paper attempts issue of sustainable development in agriculture in India. Further, it aims to compare the sustainable agriculture system with the traditional system and the current system in practice, across the dimensions of ecological, economic, and social sustainability. The findings of the study reveal the innovative strategies & achieving the growth. After globalization era issue of sustainable development come in to across. particularly globalization our export and import in agricultural commodities affected hugely.*

Keyword: *Sustainable growth, Resources, Development, economy*

1. INTRODUCTION

Sustainable agriculture development integrates three main goals, Environmental, health, economic prosperity and livelihood sustainability. In other words, sustainability rests on the principle that we must meet the needs of the present without compromising the ability of future generations to meet their own needs. Therefore, ownership of both natural and human resources is of prime importance. Ownership of human resources includes consideration of social responsibilities such as working and living conditions of farm families, the needs of rural communities, and consumer health and safety both in the present and the future. Ownership of land and natural resources involves maintaining and enhancing this vital resource base for the long term.

The sustainable agriculture development of any country depends upon the judicious mix of their available natural resources. In the year 2011 India has 68.86% lives in rural areas where agriculture as its livelihood. Since many decades increasing urbanization, industrialization and limited size of land etc major problem face to agriculture in the country. The larger objective for the improvement of agriculture sector can be realized through rapid growth of agriculture, which depends upon increasing the area of cultivation, cropping intensity, and productivity. The productivity can be increased by two ways. First method is increasing output by efficient utilization of available resources. Second method is increasing output by variation of input. The first method is better with respect to productivity and

K.C. College, Kundal, Tal.Palus, Dist.Sangli

Scanned with CamScanner

ISSN : 2393-8900

Historicity

International Research Journal

Volume - 7 | Issue - 2 | Oct - 2020
Impact Factor : 2.782 (UIF)

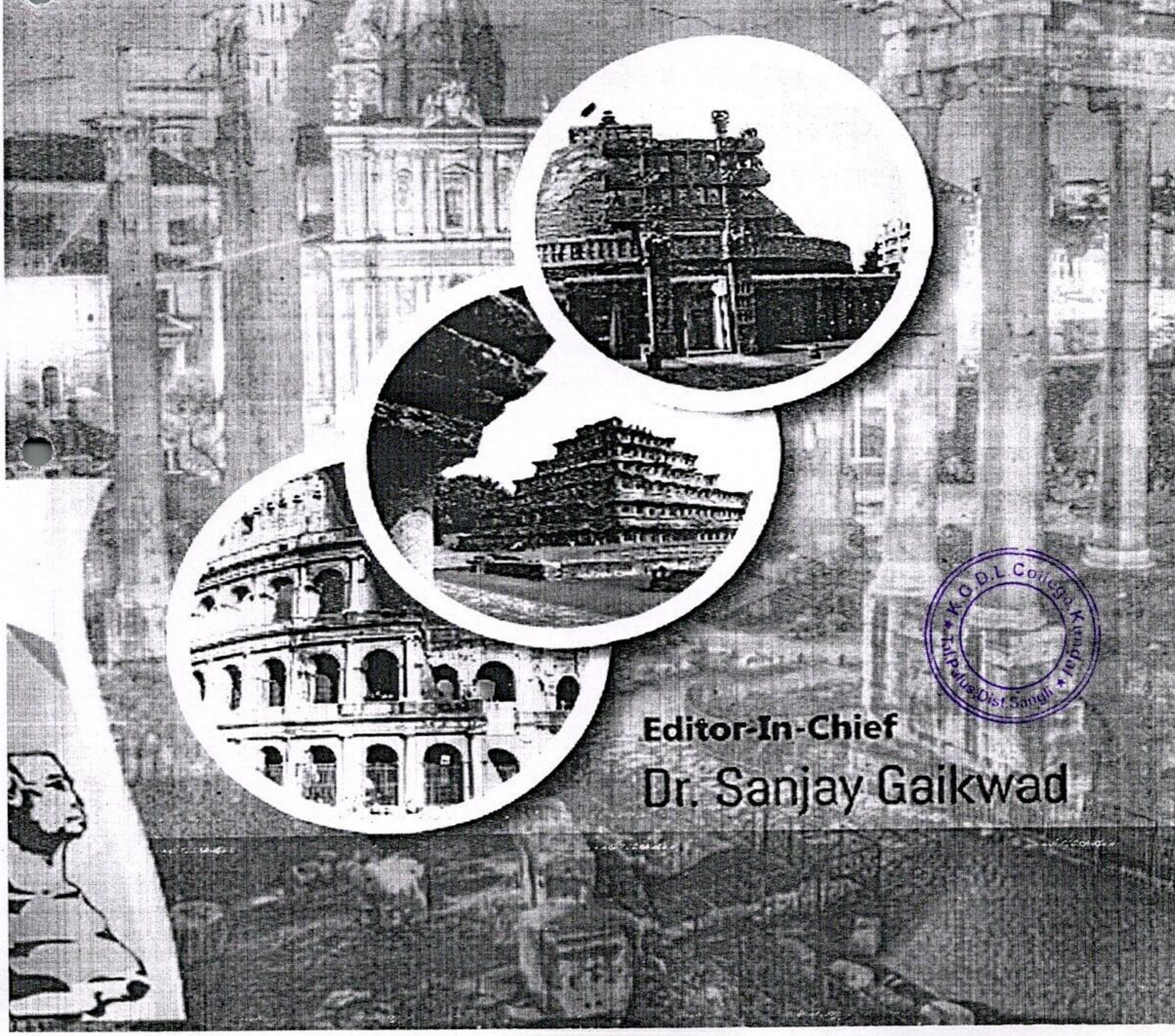

Editor-In-Chief
Dr. Sanjay Gaikwad

K.C.D.L College, Kundal, Tal. Palus, Dist. Sangli

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

ISSN NO:- 2393-8900
Vol- 7| Issue 2 | Oct-2020

Contents

यशवंत चंद्रोजी उर्फ वाय. सी. पाटील यांचेडाव्या चळवळीतील कार्य

1
चांदवडचा किल्ला
डॉ गुंजन ललेश गरुड

6
EVOLUTION OF MODERN JUDICIAL SYSTEM AND JUDICIAL MANAGEMENT IN TRAVANCORE KINGDOM
Dr. S. Pushpalatha and Mrs. B.Amutha

14
प्रसार माध्यमाचा इतिहास एक अभ्यास
??सदाफ शफ़ी खजामैनोद्दीन .

19
''समाज में मीडिया की भूमिका''
डॉ गफार सिकंदर मोमीन

22
यशवंत चंद्रोजी उर्फ वाय. सी. पाटील यांचेडाव्या चळवळीतील कार्य
डॉ. विवेकानंद राजाराम माने

26
महाभारत के वनपर्व में भौतिक दुख स्वरूप निरूपण:
देव प्रकाश गुजेला

ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 2.7825(UIF) VOLUME - 7 | ISSUE - 2 | OCT - 2020

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

यशवंत चंद्रोजी उर्फ वाय. सी. पाटील यांचेडाव्या चळवळीतील कार्य

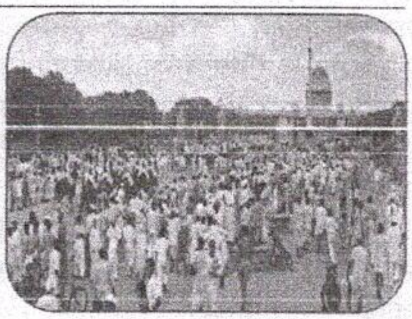

डॉ. विवेकानंद राजाराम माने
इतिहास विभागप्रमुख,
क्रांतिअग्रणी जी.डी.बापू लाड महाविद्यालय, कुंडल जि. सांगली.

प्रस्तावना:

श्री. यशवंत चंद्रोजी उर्फ वाय. सी. पाटील यांनी सांगली जिल्ह्याच्या विकासात डाव्या विचारसरणीला अनुसरून महत्वपूर्ण भूमिका बजावलेली आहे. स्वातंत्र्यपूर्व व स्वातंत्र्योत्तर काळात त्यांनी शेतकरी, कामगार, धरणग्रस्त, महिला इ. सर्वसामान्य वर्गांच्या विकासासाठी मोठे कार्य केले आहे. १९४२ च्या स्वातंत्र्य लढ्यात क्रांतिकारकांसाठी लागणारा पैसा उभारण्यासाठी विविध योजना आखण्यात त्यांचा सहभाग होता. त्याचा राजकीय क्षेत्राकडे ओढा व समाजसेवेचे बिजारोपण हे १९३७ सालापासूनच झाले. शे.का.पक्षाच्या स्थापनेत त्यांचा सहभाग होता व या पक्षाच्या वतीनेच १९५७ साली मुंबई विधानसभेवर त्यांची निवड झाली.

१. विद्यार्थी जीवनातील वाय. सी. पाटील यांचे कार्य :

वाय. सी. पाटील हे शिराळा तालुक्यातील चळवळीत अग्रभागी राहणारे नेतृत्व होते. भारत छोडो आंदोलनाच्या वेळी ते बी. ए. च्या पहिल्या वर्गात शिकत होते. चले जाव चळवळ सुरू होताच त्यांनी या चळवळीत स्वत:ला झोकून दिले. या काळात त्यांनी सातारा जिल्हा विद्यार्थी संघटना स्थापन करून विद्यार्थ्यांना स्वातंत्र्य लढ्यात भाग घेण्यास प्रवृत्त केले. स्वातंत्र्य चळवळीचा सेवादल व विविध शिबिरातून प्रचार केला. शिक्षण चालू असतानाच त्यांनी सरकारने फी वाढविल्याबद्दल विद्यार्थ्यांना संघटीत करून जिल्हाधिकारी कचेरीवर मोर्चा काढला व त्या मोर्चाचे नेतृत्व त्यांनी स्वत: केले.[१] इंग्रज सरकार कशा प्रकारे आपल्यावर अन्याय करून आपले शोषण करत आहे हे त्यांनी विद्यार्थ्यांना पटवून दिले आणि विद्यार्थ्यांमध्ये इंग्रजांविरूध्द उठाव करण्यासाठी प्रेरणा निर्माण केली.

इ.स. १९४० मध्ये शिराळा—वाळवा तालुक्याची विद्यार्थी कॉंग्रेसची संघटना वाय. सी. पाटील व नागनाथ अण्णा यांनी मिळून स्थापन केली. इ.स. १९४० मध्ये या संघटनेमार्फत विद्यार्थ्यांचे अधिवेशन कामेरी या गावी कोल्हापूर येथील राजाराम कॉलेजचे प्राचार्य बाळासाहेब खर्डेकर यांच्या अध्यक्षतेखाली घेतले. या अधिवेशनामध्ये इस्लामपूर येथे मोफत बोर्डिंग चालविण्याचे व राष्ट्रीय हायस्कूल काढण्याचे ठरविण्यात आले. तसेच वाय. सी. पाटील व त्यांच्या सहकाऱ्यांनी कॉलेजचे शिक्षण पूर्ण झाल्यानंतर राष्ट्रीय हायस्कूल सुरू करण्याचा ठराव केला. याच वर्षी उरण येथे बोर्डिंग सुरू करण्यात आले. वाय. सी. पाटील यांनी ब्रिटीशांच्या विरूध्द कोल्हापूर प्रजा परिषदेमार्फत काढली जाणारी पत्रके कोल्हापूरातील वेगवेगळ्या बोर्डींगमधील विद्यार्थ्यांना तसेच हायस्कूल व कॉलेजमधील विद्यार्थ्यांना वाटण्याचे काम केले. ब्रिटिशांच्या विरूध्द सशस्त्र उठाव करण्यासाठी सुभाषबाबू प्रयत्न करीत असताना सरकारने त्यांना पकडून कैदेत ठेवले. त्याच्या निषेधार्थ सर्व देशभरातील विद्यार्थ्यांनी व तरूणांनी हरताळ व निदर्शने केली. यावेळी

K.G.D.L. College Kundal * Tal.Palus, Dist.Sangli *

2018-19

Impact Factor 5.707

ISSN 2349-638x

Peer Reviewed And Indexed

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly e-Journal

VOL-VI | ISSUE-I | Jan. | 2019

Address
- Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
- Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
- (+91) 9922455749, (+91) 8999250451

Email
- aiirjpramod@gmail.com
- aayushijournal@gmail.com

Website
- www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

Sr.No.	Author Name	Research Paper / Article Name	Page No.
1	Dr. Krishna kumar, Dr. Abhijit Patil & Dr. Sariput Bhosikar	Role Of Dincharya & Yoga In Prevention Of Non-Communicable Disease	1 To 4
2	Dr. Dasharath R. Albal & Mr.M.B.Chobari	Higher Education In India With Reference To Post Graduates	5 To 9
3	Hanamantha F. Goti & Dr. Ravi S. Dalawai	A Study on Attitude of Slum Children Towards Education	10 To 14
4	Dr.Ravindra B Ghaywate	Review of Virechan Karma And It's Mode of Action	15 To 17
5	Seema G. Jagatap & Dr. S. D. Sindkhedkar	Novelists involved in the Jewish American Literature	18 To 21
6	Dr. Ravi S. Dalawai & Rudrappa Y.Goudar	Higher Education In India: Issues And Challenges	22 To 25
7	Dr. Balkrishna Dada Waghmare	Rewriting of Nalayani Myth in Meena Kandaswamy's Poem "Six Hours of Chastity"	26 To 27
8	Manish Surendrarao Gomase	Scrutinizing The Role And Challenges To The Folk Theatre In Maharashtra	28 To 31
9	Mr. Shivaji P. Kamble	Application Of Smartphones For Strengthening Library Services By The Lis Professionals	32 To 40
10	Dr. Sinku Kumar Singh	Examining The Static Balance Of Male And Female Student Athletes	41 To 43
11	Dr. Anil Chokhoba Patil	Abdominal Strength of Collegiate Wrestling And Judo Players	44 To 46
12	Dr. Anil Chokhoba Patil	Comparison of Grip Strength Between Wrestling And Judo Players	47 To 49
13	Dr. Surendra Chandrakant Herkal	Development of Continuous Comprehensive Evaluation (CCE) Program and Studying its Effectiveness	50 To 58
14	Dr.Sangita Arvindrao Deshmukh	Relationship between Selected Motor Fitness Components and Playing Ability of College Men Kho Kho Players	59 To 60

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
Vol - VI Issue - I JANUARY 2019 Peer Review e-Journal Impact Factor 5.707 ISSN 2349-638x

Rewriting of Nalayani Myth in Meena Kandaswamy's Poem "Six Hours of Chastity"

Dr. Balkrishna Dada Waghmare
Head, Department of English
Krantiagrani G. D. Bapu Lad Mahavidyalaya, Kundal
(Affiliated to Shivaji University Kolhapur)

Abstract:

Most of Meena Kandaswamy's works are centered on feminism and the anti-caste Caste Annihilation movement. Her poems deal with feminine sensibilities that defy male hegemony seen in the Indian society. Her poem, "Six Hours of Chastity" deals with the six hours in the life of Nalayani, the wife of a sage, Maudgalya. Kandaswamy has defied the male hegemony in this poem. Traditional concept is that women are the silent sufferer or sexually meek or submissive. In this poem, Nalaynai haves sex with six different men, while her husband enjoys the company a prostitute. Meena Kandaswany gives her equal status. She isn't submissive like the character in the myth of Nalayani. She makes her rebel or Ms. Militancy by having sex six different men during her waiting for her husband outside the house of a prostitute. She even laughs at the idea chastity of Draupadi and eventually saves Nalayani from being Draupadi by having sex with six men.

Key Words:
Nalayni, myth, Indian woman, feminism

Indian woman has been given a high status of a goddess in Indian mythologies. There are goddesses in who represent power, intelligence, purity, and so on. Examples of Kali, Durga and Saraswati can be given in this context. But at the same time social restrictions are imposed on her. She is confined within the four walls by man-made world. There are so many restrictions on her in the name of religion, traditions and customs. The infamous book Manusmriti asserts that "as a girl, she should obey and seek protection of her father, as a young woman her husband, and as a widow her son" (Olivelle 98).

Meena Kandaswamy is an Indian poet, fiction writer, translator and activist. Most of her works deal with feminism and the anti-caste Caste Annihilation movement. Her poems explore feminine sensibilities that defy male hegemony seen Indian society. Ms. Militancy is the collection of her poems that deals with her radical feminism. Her poem, "Six Hours of Chastity" deals with the six hours in the life of Nalayani, the wife of sage, Maudgalya.

The myth of Nalayani or the story of a wife's chastity and uncompromising loyalty to her husband Rishi Maudgalya is well documented in the Mahabharatha. As per this myth, there was a sage, Maudgalya. He was a person of extreme short temper but well versed in all the four Vedas. Nalayani was married with him. Maudgala decided to test her chastity and devotion. He brought on himself the deadly disease leprosy by his magical power. Nalayani served him with devotion. She attended to each and every small demand that would keep him happy but he was never satisfied with her services and found fault with her. One day, Maudgalya wanted to enjoy the company of another woman, i.e. a prostitute who would sell her favours only for gold. He commanded his wife to carry him in a basket on her head to the house of the prostitute. Nalayini with great care put him in a big basket and carried him on her head to the house of the prostitute. It also invites the laughter and criticism of the on lookers who witness this thing. After putting him on the bed of the prostitute, she waited outside of the house till the evening. She waited for order of her husband to take him back to their home. Meena Kandaswamy's this poem picks this thread. Here after, her deconstruction or rewritig of the Nalayani myth starts. She writes the happenings during the six hours of her waiting outside of the house of the prostitute. The visitors to the brothels mistake Nalayani, "the devout wife, to be a mistress of guilt, a woman of the night" (Kandaswamy 49). They think she is a prostitute like others in the brothel. On the other hand, Nalayani takes this opportunity to her favour. She also "plays along, pretends to the visiting stranger" (49). She, as a prostitute, accepts the strangers. She spends six hours with six different men. The first one has come there for salvation. To the second person, she acts as a whore. The third visitor is a spice-vendor. Fourth

VISHWABHARATI
RESEARCH CENTRE
RESEARCH | PUBLICATION

ISSN 0975-8313

THEMATICS

A PEER- REVIEWED INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF ENGLISH STUDIES

Vol 10. Issue 2. Feb. 2019 - ISSN 0975-8313

A Special Issue of National Conference on Language, Literature and Culture

Organized by
Department of English
Karmaveer Bhaurao Patil College, Urun- Islampur

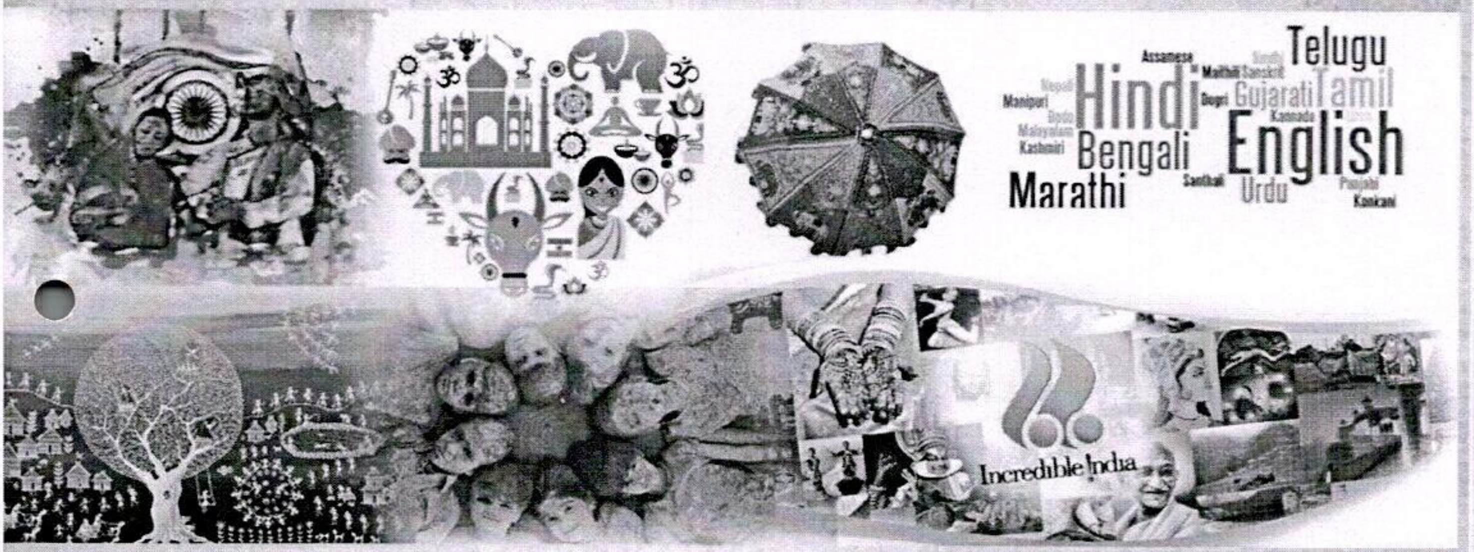

Editor-in-Chief S. S. Kanade
I/C Principal Dr. H. T. Dinde
Vice-Principal Dr. Nitin Shinde
Editor Pramod Ganganmale
Associate Editor Baliram A. Sawant

THE PORTRAYAL OF LOWER CLASS WORLD IN GRAHAM SWIFT'S LAST ORDERS
Mr. S. M. Chavan
107-110

NATIVISM IN PORTRAYAL OF MARRIED LIFE IN THE NOVEL "EK CHADAR MAILI SI": A STUDY IN CULTURAL PSYCHOLOGY
Shailaja P. Yadav-Patil
111-115

AN ANALYSIS OF MARGINALIZED STATUS IN MAHATMA JYOTIRAV PHULE'S CULTIVATOR'S WHIPCORD
Nivrutti M. Shinde
117-118

REFORMATION OF WOMEN THROUGH EDUCATION IN RAMA MEHTA'S *INSIDE THE HAVELI*
Dr. Sukhdeo R. Bhosale
119-122

IMPACT OF CULTURAL HYBRIDIZATION ON SOCIETY
Dr. Trupti Shivajirao Thorat
123-126

A STUDY OF ANDREA LEVY'S SHORT STORY "LOOSE CHANGE" AS A PIECE OF MIGRANT LITERATURE
Dr. Balkrushna Dada Waghmare
127-130

DALIT STUDIES
Dr. Z. Z. Khan
131-133

FASHIONABLE CLOTHING AS A SIGN OF VICTIMIZATION OF WOMEN IN VICTORIAN ERA"
MADHURI S. PATIL
135-137

VISHWABHARATI RESEARCH CENTRE

THEMATICS

ISSN-0975-8313

VOL 10. ISSUE 2. FEB. 2019 PP 126-130

Http/ / www.vishwabharati.in

©VISHWABHARATI Research Centre

A STUDY OF ANDREA LEVY'S SHORT STORY "LOOSE CHANGE" AS A PIECE OF MIGRANT LITERATURE

BALKRISHNA DADA WAGHMARE

Abstract:

Present research paper deals with issue of migration, migrant pitiable condition, their acceptance of by the host. Narrator who is a descendant of a migrant behaves like a native Londoner with girl from Uzbekistan. She feels sympathy for the girl and her brother. She even thinks of giving a room in her house. At end of the story, when the girl needs her help, she leaves her. Here a typical approach of the Londoners has been presented. Those who were migrants in the past forget their past and treat the new immigrants like hosts. Narrator's grandma was a migrant but she also criticized migrants after settling in London. Narrator continues her legacy. She also leaves Laylor, an migrant girl in the hour of the need. Andrea Levy here exposes the hypocrisy of the London settled migrants.

Key words: Migration, refugee, Caribbean, Uzbekistan, hypocrisy.

Migration is not the recent phenomenon in human history. Man is a traveler. He has travelled from Africa to the rest of the world and settled in various parts of the world. When the nation and their boundaries are formed, this travel in search of survival termed as immigration. According to Oxford dictionary "Immigration is the international movement of people into a destination country of which they are not natives or where they do not possess citizenship in order to settle or reside there, especially as permanent residents or naturalized citizens, or to take up employment as a migrant worker or temporarily as a foreign worker." The political unrest or warlike situation is the major cause of migration in recent cases. According to Sten P. Moslund, "It seems that we are witnessing a massive international and transnational defeat of gravity, an immense uprooting of origin and belonging, an immense displacement of borders, with all the clashes, meetings, [...]

Dr. B. D. Waghmare, Head, Deptt. of English, K. G. D. B. Lad Mahavidyalaya, Kundal.

ONE DAY MULTIDISCIPLINARY INTERNATIONAL SEMINAR ON

PLIGHT OF INDIAN FARMERS : ISSUES AND CHALLENGES

भारतीय शेतकऱ्यांच्या व्यथा वेदना, दशा : समस्या व आव्हाने

Saturday, 16th February, 2019

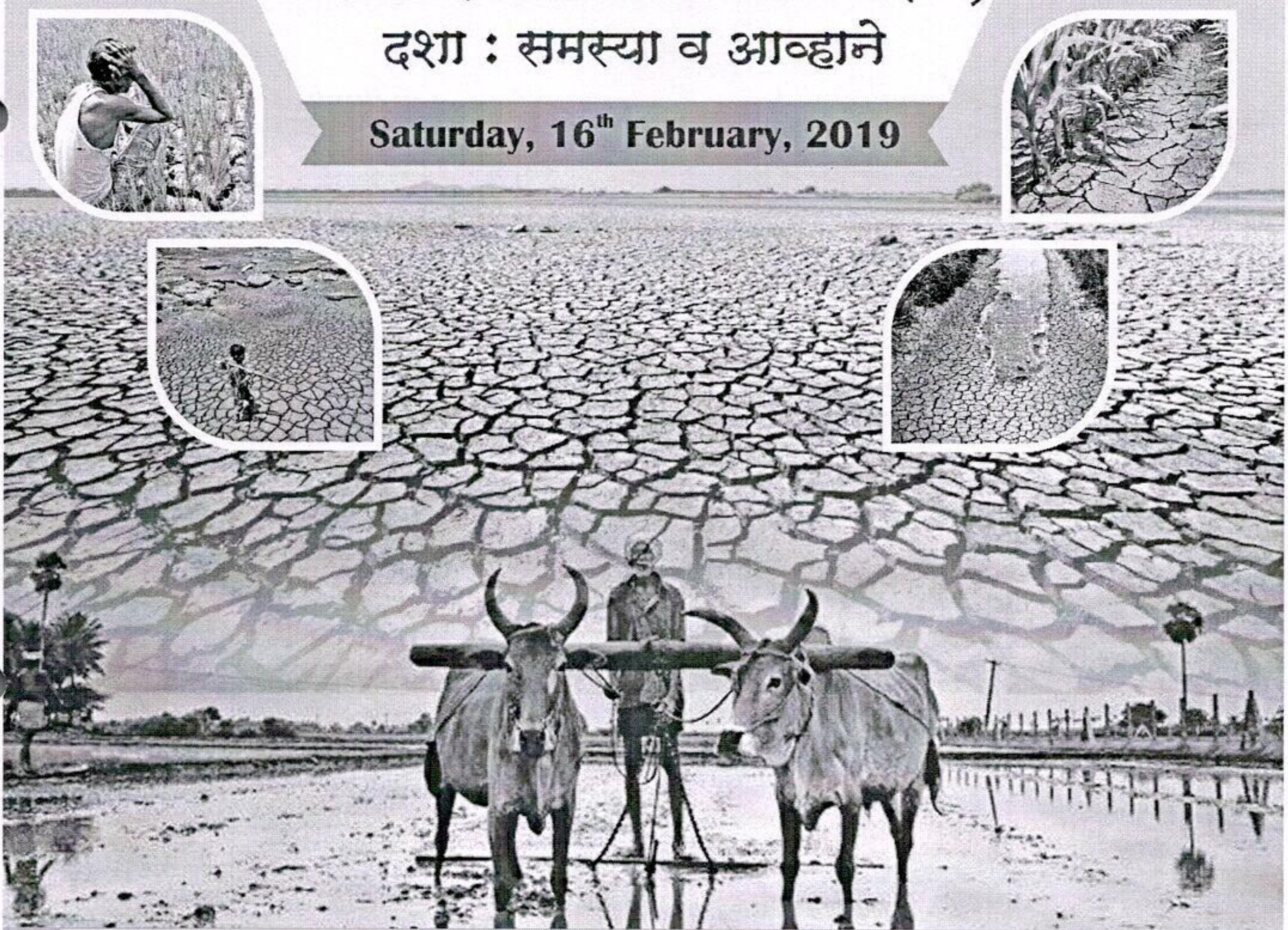

Organized by

Tararani Vidyapeeth's

KAMALA COLLEGE, KOLHAPUR

NAAC Reaccredited 'A' grade (3.12 CGPA)
College with Potential for Excellence
www.kamalacollegekop.edu.in

Sr. No.	Title	Author	Page No.
23.	Biggest Problems Faced By Farmers In India	Prof. Dr. Hashim Walandkar	92-94
24.	The Reflection Of Farmer's Plights In Indian Literature: A Comparative Study	Dr. Kalindi Kailas Shinde	95-97
25.	Agriculture : Challenge And Opportunity	Dr. Samadhan K. Patil	98-101
	Pearl Buck's The Good Earth: A Portrait Of Universal Farmer	Dr. Advait. D. Joshi Dr. Manisha. M. Mujumdar	102-105
26.	Agroecology The Scientific Paradigm For Sustainable Agriculture.	D.S. Patil	106-109
27.	Reflection Of Agonies Of Farmers In Literature With Special Reference To V. V. Hadap's Marathi Novel, 'Mother India, Awake' (Bharatmata Uth)	Mrs. Shobha Bajirao Patil	110-113
28.	Reflection Of Farmers Agonies In Marathi, Hindi And English Literature	Mr.Waghadare D.S. Prof .Dr.B.P. Naik	114-118
29.	'Disappearing Farmers': Portrayal Of Farmers In Mainstream Hindi Cinema	Dr. Gagare Ajit Shankarrao	119-123
30.	Organised Agro-Food Retailing In India	Mrs.Pranita A.Jadhav	124-127
31.	Study Of New Trends In Indian Agriculture Sectors	Dr. Ashwini Vatharkar	128-132
32	A Study Of Agriculture Sector In Indian Economy	Prof. Supriya Alhat	133-142
33	Review On Effect Of Electromagnetic Radiation (EMR) From Cell Phone Towers And Wireless Devices On Honey Bees	Golvankar .G. M. Gholape S. M.	143-149
34	Sustainable Agriculture In Relationship To Climate Change	S.C. Phuge S. M. Gholape	150-156
35	Trend And Inequality Analysis Of Operational Land Holding In India (1990-91 To 2015-16)	Dr. Santosh Barale	157-160
36	Agricultural Problems In India	Shriram Abhishek D.	161-164
37	Role Of Women In Organic Farming And Rural Development	Prof. Shobhatai S. Patil Dr. Raj P. Chavan	165-169
38	Land Alienation And Marginalization In Ngugi's Petals Of Blood	Dr. Balkrishna Dada Waghmare	170-172
39	Impact Of Climate Change On Rice Production In Kolhapur District, Maharashtra: A Geographical Anylisis	Prof. D. A. Sardesai	173-175
40	Opportunities And Problems In Agro Tourism Industry For Farmers In Maharashtra	Dr. Kishor Lipare Prof. Jagadale D.M.	176-179
41	Plight Of Mandeshi Farmers: A Bitter Social Reality.	Dr. Jayant Anant Kulkarni.	180-183
42	A Study Of Problems Of Agricultural Labourers In India	Mr. Siddhanath M. Gade Miss. Mayakumari M. Purohit Mr. Salman A. Kaktikar	184-186

LAND ALIENATION AND MARGINALIZATION IN NGUGI'S *PETALS OF BLOOD*

Dr. Balkrishna Dada Waghmare
Head, Department of English
Krantiagrani G. D. Bapu Lad Mahavidyalaya, Kundal
(Affiliated to Shivaji University Kolhapur)

Abstract:

Land alienation was an unjust practice by colonial government. The colonial government allotted the fertile lands to European settlers and later to Asian settlers. It alienated the legal owners from their motherland. Ngugi's novel *Petals of Blood* offers a scathing critique of capitalism and accuses wealthy landowners and bureaucrats who exploit the poor and working classes. Ngugi records impact of Trans-Africa Highway on locals and also land alienation for the construction of such government projects. He has also discussed the role of natives in the robbing of the land of their own countrymen. Ngugi discusses the impact of land alienation through the character like Abdulla, Karega's mother Miriamu etc. Through this novel, he gives the message that the system of capitalism and capitalistic democracy needed moral purity if it was going to survive.

Key words:
Land alienation, marginalization, capitalism, exploitation

Land alienation was an unjust practice by colonial government. It alienated the legal owners from their motherland. This process of dispossession was a prime feature of the French, British, and Portuguese occupation, which began since 15th century. During colonial period the process of land alienation also took place in Kenya. The colonial government allotted the fertile land to European settlers and later Asian settlers. The Indians, for their work on the Kenya-Uganda Railway in the late 19th century and the early 20th century, were rewarded with land. They established sugarcane plantations and set up factories like Miwani Sugar Company. These companies alienated land from Africans and made them landless. These companies created many economic opportunities for the local people, but at the same time, their policies were based on the exploitation of the local people's main resource - land.

Ngugi wa Thiong'o is a major voice from Africa speaking for peasant's and workers' class. His fourth novel and the last novel written under his Christian name James Ngugi *Petals of Blood (1977)* deals with exploitation and corruption in post-independent Kenya. It offers a scathing critique of capitalism and accuses wealthy landowners and bureaucrats who exploit the poor and working classes. The novel is concerned with four principal characters Karega, a teacher and labour organizer; Munira, headmaster of a public school in the town of Ilmorog; Abdulla, a half-Indian shopkeeper; and Wanja, a barmaid and former prostitute. The novel shows that after decades of colonial rule, many of the poorer segments of Kenyan society have been alienated from their ancestral lands. During colonial period, Kenyans fought with British for their ancestral lands. But in post-independence phase, they lose their land by the system which is developed by new exploiters. Miriamu, Karega's mother, is forced to work as a laborer on Munira's father's land.

During colonial period land and cattle were considered as a wealth. These were 'things of blood' (Ngugi 18) to Kenyan people. But "foreigner from Europe was cunning: he took their land, their sweat and their wealth and told them that the coins he had brought, which could not be eaten, were true wealth!"(18). Ezekiel Waweru, father of Munira represents the land acquisition by black person from his fellowmen. He is portrayed as a loyal collaborator to colonial masters.

18-19

ONE DAY MULTIDISCIPLINARY INTERNATIONAL SEMINAR ON

PLIGHT OF INDIAN FARMERS : ISSUES AND CHALLENGES

भारतीय शेतकऱ्यांच्या व्यथा वेदना, दशा : समस्या व आव्हाने

Saturday, 16th February, 2019

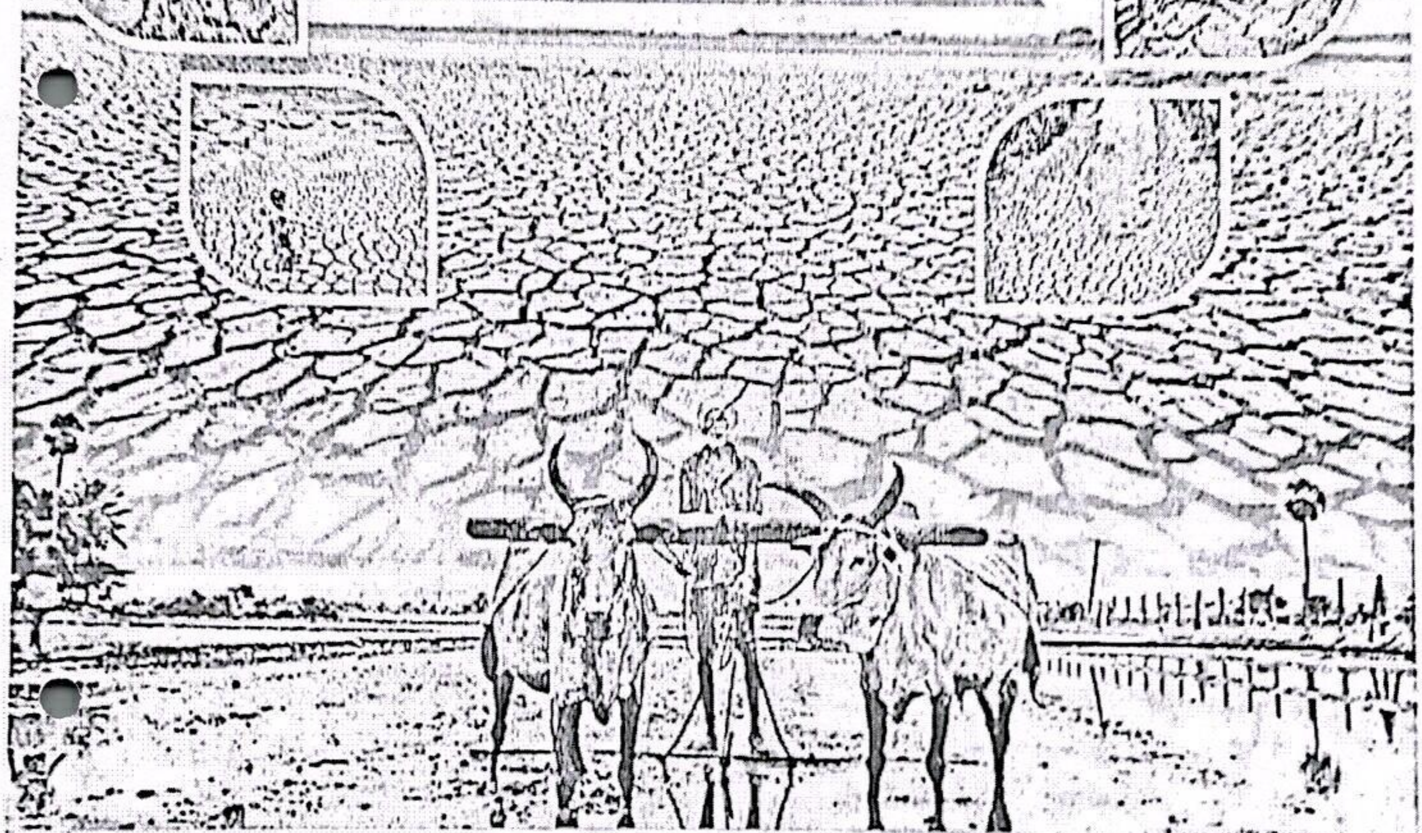

Organized by
Tararani Vidyapeeth's

KAMALA COLLEGE, KOLHAPUR

NAAC Reaccredited 'A' grade (3.12 CGPA)
College with Potential for Excellence
www.kamalacollegekop.edu.in

Scanned with CamScanner

AMIERJ ISSN–2278-5655 Volume–VIII, Special Issue–X February 2019

Sr. No.	Title	Author	Page No.
195	भारतातील कृषीमूल्य एक अभ्यास	प्रा. सौ. कल्पना सं. गुंजवटे	817-819
196	शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या : कारणे व उपाय	नंदा नामदेव गोळे	820-822
197	'मराठी कादंबरीतील शेतक–यांचे चित्रण'	प्रा.डॉ.शिवाजी महादेव होडगे	823-826
198	भारतीय शेतकऱ्यांच्या कर्जबाजारीपणाची सामाजिक बाजू	प्राचार्य डॉ. प्रकाश पाटील	827-829
199	शेतकरी संघटनेची आंदोलने	श्री. अविनाश ब. अवघट	830-834
200	भारतातील शेतमजुरांच्या समस्या: एक दृष्टीक्षेप	सवाईशिकरे भुजंग	835-840
201	सांगली जिल्हयातील शेतमजूरांची सद्यस्थिती : एक अभ्यास	प्रा. जालींदर आनंदराव यादव	841-846
202	प्रगतीशील महिला शेतकऱ्यांचे महिला सबलीकरणातील योगदान एक अभ्यास	प्रा. तृप्ती शिवाजीराव थोरात	847-850
203	'आसूड' मधून व्यक्त झालेले शेतकरी, कष्टकऱ्यांचे दर्शन	श्री नवनाथ किसन गुंड	851-853
204	अन्न सुरक्षा आणि सार्वजनिक वितरण व्यवस्था	प्रा.आर.एस.माने	854-857
205	शेतकऱ्याची आत्महत्या एक सामाजिक समस्या	कु. पवळ रंजना भिमराव	858-861
206	शेतकरी आत्महत्या: कारणे व उपाय	सविता सुकूमार खोत	862-866
207	भारतातील शेती तंत्रज्ञानातील प्रगती आणि शेतकरी	सौ. कल्पना सुनिल गुरव	867-868
208	शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या : कारणे व उपाय	वर्षा यजरजे	869-871
209	भारतीय शेती आणि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे जलधोरण	डॉ.संजय सागर सपकाळ	872-876
210	सेंद्रीय शेती आणि महिला शक्ती	डॉ. मनिषा विनायक शिरोडकर	877-880
211	सेंद्रीय शेती चिरंतन विकासाचे एक माध्यम	डॉ. विजय ज. माने	881-884
212	प्रधानमंत्री पीक विमा योजना आणि सांगली जिल्हा	प्रा. हणमंत भाहाजी सावंत	885-889
213	भारतातील शेतकरी चळवळी व आंदोलने	प्रा.दत्तात्रय कुंडलिक पाटील	890-894
214	भारतातील कृषि–भूसाधन संपत्तीचा अभ्यास	डॉ. बी. पी. पाटील	895-899
215	भारतातील पिक रचनेतील बदल एक अभ्यास	प्रा. डॉ. डी. ए. चौगले	900-904
216	शेतकऱ्यांची आत्महत्या : कारणे व उपाययोजना	जाधव आर्या वसंत	905-909
217	कृषी क्षेत्रातील महिलांचे योगदान; एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	रीना रामचंद्र कांबळे	910-913
218	सत्यशोधक 'दीनमित्र' कार मुकुंदराव पाटील यांचे शेतीविषयक विचार व कार्य	डॉ. सुरवसे एन.पी	914-917
219	भारतीय शेतमजूराच्या समस्या,कारणे व उपाययोजना	प्रा. सुदाम विष्णूचक्रधारी	918-920
220	शेतकरी संघटना: चळवळी व आंदोलने	सुचित्रा जयवंत यादव	921-926
221	हवामानातील बदल आणि भारतीय शेती	प्रा. सुलक्षणा हरी कोळी	927-930
222	गगनबावडा तालुक्यातील ग्रामीण पर्यटन: संधी व आव्हाने	प्रा. आदिनाथ कांबळे	931-938

'आसूड' मधून व्यक्त झालेले शेतकरी, कष्टकऱ्यांचे दर्शन

श्री नवनाथ किसन गुंड
सहा. प्राध्यापक
मराठी विभाग
क्रांतिअग्रणी जी.डी. बापू लाड विद्यालय, कुंडल
E-mail ID – navnathkgund@gmail.com
Mob -९४२३५८७३५९

प्रास्ताविक :

साठोत्तरी मराठी साहित्यामुळे ग्रामीण परिसरातील, खेड्यापाड्यातील अनेक साहित्यिकांना आपल्या लेखनातून आविष्कृत होण्याची जणू काही शक्तीच प्राप्त झाली आहे. ग्रामीण जीवनातील नानाविध प्रश्न विशेषतः उगवत्या शतकातील अनेक प्रश्नांना स्पर्श करण्याचा , त्या प्रश्नांची उत्तरे शोधण्याचा प्रयत्न या नवसाहित्यिकांनी केलेला दिसतो. ग्रामीण साहित्यातील कथा हा वाङमयप्रकार खूप समृद्ध होऊन आता नव्या शतकात आपलं स्वतंत्र स्थान निर्माण करीत आहे. त्यातच नव्या पिढीतील अनेक कथाकार, लेखक मराठी साहित्याच्या क्षेत्रात सर्वच प्रादेशिक जाणिवांना, बोलींना आणि जीवनचिंतनाला खऱ्याखुऱ्या अभिव्यक्तीचं रूप देत आहेत.यादृष्टीने खानदेशातील नव्या पिढीचे कथाकार म्हणून कूड या कथा संग्रहातून आपलं स्वतंत्र स्थान निर्माण करणारे अशोक कौतिक कोळी साऱ्या महाराष्ट्राला परिचित झाले आहेत. नोव्हेंबर २००८ मध्ये त्यांचा 'आसूड' हा दुसरा कथासंग्रह प्रसिद्ध झाला आहे. या कथासंग्रहातून चित्रित झालेल्या शेतकऱ्यांच्या जीवनातील प्रश्नांचा वेध घेण्याचा मी प्रयत्न केला आहे.

महात्मा ज्योतिराव फुले यांनी 'शेतकऱ्यांचा आसूड' मध्ये शेतकरी , कष्टकऱ्यांचे जे जीवन चित्रित केले आहे. त्यापेक्षा आजचे सामाजिक वास्तव काहीही वेगळे नाही. असेच मी म्हणेन. ज्ञान, बुद्धी, नीती, प्रगती आणि आर्थिक स्थितीगती यावावतचं ज्योतिराव फुले यांच चिंतन मागील शतकानं नेमकेपणानं केलं नाही. किंबहुना या चिंतनाचा वास्तवमार्ग अवलंबला नाही. यामुळेच दिवसेंदिवस शेतकरी आणि शेती यांचं कंबरड मोडत आहे. ग्रामीण अर्थव्यवस्था कोलमडून पडत आहे. याच पार्श्वभूमीवर खानदेशातील शेती प्रश्नांकडे पाहण्याची दृष्टी लाभलेल्या कथाकाराने 'केळी आणि कापूस' पिकवणारा खानदेश अशा या रखरखीत वास्तवात कोणती दुःख , व्यथा, वेदना सहन करतो. याची फारसी कुणालाच जाण नसल्याची खंत व्यक्त करून खानदेशातील कष्टकरी जीवनाचा अचूक वेध घेण्याचा प्रयत्न केला आहे. तोही जहाल व खडतर वास्तवाला कवेत घेऊनच.

कथांची विभागणी

'आसूड' मध्ये एकूण बारा कथा असून त्यापैकी आठ कथा 'कापूस' प्रश्नांची , तीन कथा 'केळी' प्रश्नांची मांडणी करतात. तर शेवटची कथा लेखकाच्या आत्मनिवेदनाने साकारली आहे. मात्र हे आत्मनिवेदनही शेतीशीच निगडित आहे.

आशयः

'कापूस' या कथेचा नायक तिरमक आणि नायिका सिंधू असून दत्तू हा मुलगा आणि एक मुलगी असा आटोपशीर परिवार आहे. कापूस पेरला की रोख उत्पन्न मिळते. दिवाळीला आनंदाचा क्षण साजरा करता येतो. मुलाबाळांची हौसमौज पुरविता येते अशी 'लक्ष्मी' आईच्या संदर्भातील कृषिसंस्कृतीची लोकधारणा आहे. त्याच परंपरेतील तिरमक-सिंधू कापूस वेचून घरात आणून ठेवतात. परंतु भाव मात्र योग्य मिळत नाही. फेडरेशन, कापूस एकाधिकार , आमदार, पोलिस, दलाल, व्यापारी, बाजार समिती, ग्रेडर अशा दुष्टचक्रात कापसाची विक्री अडकून पडते. जागतिकीकरणाचा प्रभाव, बाजारभावातील फरक या प्रक्रियेत 'बळी' पडणारा कापूस उत्पादक शेतकरी, त्याची झालेली कोंडी या कथेतून व्यक्त होते.

'दरसाल' ही कथा अशाच प्रकारे कापूस प्रश्नांची वेगळी मांडणी करताना दिसते. कापसाचा प्रश्न हा 'दरसाल' न सुटणारा प्रश्न आहे. युगानुयुगे शेतकऱ्यांच्या आयुष्यातलं हे दुःख या कथेतून व्यक्त झालं आहे.

'बोकड' या कथेतून शेतकऱ्याचा मुलगा ग्रेडर अधिकारी झाल्यावर शेतकऱ्यांचं कसं शोषण करतो हे बघायला मिळते. संपत कृषी पदवीधर झाल्याने गावाची आशा फुलते. आता आपल्याला न्याय मिळेल असे शेतकऱ्यांना वाटते. संपत प्रथम लाच घेण्यास घाबरतो. परंतु प्रशासकाचा धाक आणि व्यवस्थेत व्यवस्थेशी जुळवून घेण्याची वृत्ती यामुळे संपत बदलतो. मी आता शेतकरी नाही ग्रेडर - अधिकारी आहे अशी त्याची भावना बदलते. शेतकऱ्याचा मुलगा हाच त्याचा शत्रू व्हावा हा केवढा आघात आहे हे अस्सल समाजवास्तव या कथेतून मांडलं आहे.

स्थापना : दि. ५ मे २००८
नो.क्र.महा./२४९२९/को./११/०७/०८

शिवाजी विद्यापीठ मराठी शिक्षक संघ, कोल्हापूर
विद्वत्प्रमाणित, यु.जी.सी. मान्यताप्राप्त त्रैमासिक
(Peer Reviewed Referred Research Journal)
ISSN No. 2319-6025

18-17

शिविम संशोधन पत्रिका

वर्ष–आठवे : अंक सतरा–अठरा । जानेवारी ते जून २०१९

श्रमसंस्कृती आणि साहित्य

दिनांक ९ आणि १० फेब्रुवारी, २०१९

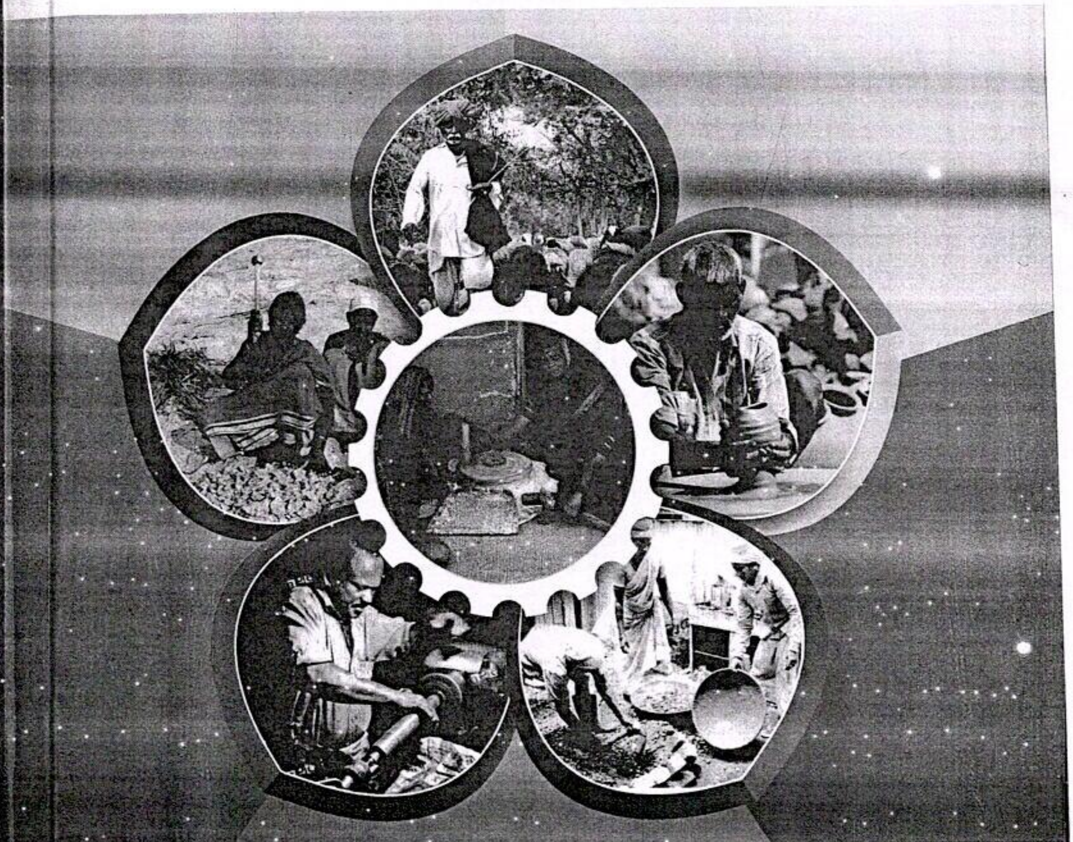

कुणी न राहो दुर्बल अज्ञ । म्हणुनी हा शिक्षण यज्ञ ।।
माजी आमदार श्री. बाबासाहेब पाटील सरुडकर शिक्षण संस्थेचे

श्री शिव-शाहू महाविद्यालय, सरूड

ता. शाहूवाडी, जि. कोल्हापूर
नॅक तृतीय मूल्यांकन : B ग्रेड (CGPA- 2.41)

श्रमसंस्कृती आणि ग्रामीण कविता — डॉ.अशोक सदाशिव तवर १५३
शेतकऱ्यांचे लढे आणि ग्रामीण कादंबरी — प्रा. डॉ. सौ. कांचन नलावडे १६०
अनिल अवचट यांच्या साहित्यातील श्रमजीवन — डॉ. सुरेश बाळकृष्ण शिंदे............. १६६
धनगर समाजातील श्रमसंस्कृती — डॉ. तानाजी ज्ञानदेव पाटील १७०
'आम्ही काबाडाचे धनी'तील कष्टकरी — प्रा. सुभाष वाघमारे.................. १७३
श्रमसंस्कृती आणि बहिणाईंची गाणी — डॉ. सुवर्णा नामदेव पाटील............ १७७
कामगार रंगभूमीवरील श्रमिक — डॉ. आनंद शामराव बल्लाळ........... १८१
तथागत बुद्ध आणि श्रमसंस्कृती — डॉ. प्रशांत बाबासो गायकवाड........ १८५
सुर्वेंची कविता : श्रमिक जीवनाचा दस्तऐवज — डॉ. अशोक शेलार १९०
दलितांच्या श्रमाचे चित्रण — प्रा. डॉ. नितीश पांडुरंग सावंत........ १९३
ग्रामसंस्कृती आणि श्रमसंस्कृती : सहसंबंध — प्रा. डी. जे. दमामे १९६
जनाबाईंचे अभंग आणि श्रमसंस्कृती — डॉ. धनंजय होनमाने.................. १९९
मराठी कवितेतील शेतकरी व शेतमजुरांची श्रमसंस्कृती — डॉ. भरत जाधव...................... २०२
श्रमिक साहित्य आणि साम्यवाद — डॉ. हणमंत रामचंद्र पोळ २०५
अवैदिकांची श्रमसंस्कृती आणि श्रमप्रतिष्ठा — डॉ. महेश गायकवाड २०८
अण्णा भाऊ साठे यांच्या कादंबरीतील श्रमसंस्कृती — डॉ. सविता अशोक व्हटकर २११
आदिवासी कादंबरीतील भिल्ल जमातीचे श्रमचित्रण — प्रा. विनायक राऊत २१४
इंद्रजित भालेरावांच्या कवितेतील शेतकरी, शेतमजूर — प्रा.डॉ. सुजय बाबूराव पाटील २१७
भास्कर चंदनशिव यांच्या साहित्यातील श्रमसंस्कृती — प्रा. राजश्री बिसुरे..................... २२०
महादेव मोरे यांच्या कादंबरीतील श्रमिकांचे चित्रण — डॉ.विनोद राठोड २२३
नारायण सुर्वे : कामगार साहित्याची 'सनद' — सौ. शीतल सचिन गोर्डे-पाटील २२६
नारायण सुर्वेंच्या कवितेतील श्रमिकांचा जीवनसंघर्ष — डॉ. अशोक नामदेव शिंदे............. २२९
धम्मपाल रत्नाकरांच्या साहित्यातील हॉटेल कामगारांचे चित्रण — डॉ. सर्जेराव पद्माकर................. २३२
मराठी कथेतील ग्रामीण, कष्टकरी स्त्रीचे चित्रण — प्रा. संतोषकुमार डफळापूरकर......... २३५
'कविता श्रमाची' मधील श्रमजीवी — प्रा. विठ्ठल नामदेव रोटे २३८
तू वेडा कुंभार आणि बलुतेदारांची श्रमसंस्कृती — डॉ. सुभाष गणपती जाधव २४१
आदिवासी साहित्यातील श्रमचित्रण — प्रा. सुलोचना रमेश दंतराव २४४
१९८० नंतरच्या कादंबरीतील श्रमिकांचे चित्रण — डॉ. माधव मारुती भोसले............. २४७
आदिवासींच्या कादंबरीतील श्रमिक — प्रा. भीमराव खंडू वानोळे २५०
'राघववेळ' व 'अघोरी' कादंबरीतील श्रमसंस्कृती — प्रा. डॉ. आर. डी. कांबळे २५३

 ISSN No. 2319-6025

ांस्कृतिक डाव विशिष्ट वर्गाचा आहे. ब्रदलून चंगळवादास चालना दिल्यामुळे पर्यावरणाची हानी इत्यादी गंभीर समस्या होण्याची भीती निर्माण झाली आहे. र्माण करण्याची मूल्ये आहेत. त्यामुळे

वंढळ समजली जाते, यामुळे भाषेची र्थ्य आणि विकास रोखला जातो. असा ला समजून घेतले पाहिजे. खऱ्या अर्थाने, करणारी ही भाषा आहे. हेही आधुनिक ातील 'बी' आणि 'लय' या शब्दाचा ॉ. आ. ह. साळुंखे यांनी वारंवार धरला ल, असा विचार त्यांनी मांडला आहे.

डॉ. साळुंखे यांनी सुचविलेला विचार प्रतिष्ठा प्राप्त होईल, असा मूलगामी हा

काळापासून सांस्कृतिक वारसा दिलेला मूल्ये ावलेली आहेत. या मूल्यांच्या ो. यामुळे समाज एकोपा आणि मानवी कोपा आणि मानवी अस्तित्व राखण्यास ाजेचे आहे.

बई, १९५९
संमेलनातील भाषण : २०१५
ोश,
रक व आधुनिक, श्री मंगेश प्रकाशन,

जनाबाईंचे अभंग आणि श्रमसंस्कृती

डॉ. धनंजय होनमाने
जी. डी. लाड महाविद्यालय, कुंडल, जि. सांगली

प्रस्तावना

१३ व्या शतकात महाराष्ट्रात वारकरी संप्रदायाचे पुनरुज्जीवन झाले. अठरापगड जाती-धर्मातील स्त्री-शुद्रांना सामावून घेणारा आणि सर्वांना भक्तीचे द्वार मुक्तपणे उघडं ठेवणारा संप्रदाय म्हणून आज तो मान्यताप्राप्त झालेला आहे. आध्यात्मिक लोकशाही स्थापन करणाराच हा संप्रदाय असल्यामुळे तळागाळातील आबालवृद्ध, स्त्री-पुरुष या भक्तिसंप्रदायात सहभागी झाला. सर्वसामान्यांचा सहभाग अधिक असल्यामुळे त्यांच्या सुख-दुःखांना, त्यांच्या श्रमसंस्कृतीला अधिक महत्त्व प्राप्त झाले. संप्रदायातील बहुतांश संतांनी आपल्या श्रमातच श्रीविठ्ठलाला डोळे भरून पाहिले. आपल्या नित्याच्या कामातच त्याचे रूप पाहिले. त्यातच त्यांना श्रीविठ्ठल दर्शन देत आला. त्याच एकूण वस्तुस्थितीचे वर्णन संत सावता माळी, संत नरहरी सोनार, संत नामदेव, संत चोखामेळा आदी सर्वच संतांना आपल्या श्रमसंस्कृतीचे वर्णन अभंगातून/काव्यातून केलेले आपणास दिसते. त्यामध्ये संत जनाबाईंनी त्यांच्या वाट्याला आलेल्या दासीपणाचे व दासीच्या एकूण श्रमाचे वस्तुस्थितीदर्शक वर्णन अभंगातून अभिव्यक्त केले आहे. त्याच श्रमसंस्कृतीचा परामर्श प्रस्तुत शोधनिबंधात घेण्यात आलेला आहे.

श्रमसंस्कृतीचे चित्रण

१३ व्या शतकात महाराष्ट्रात पुनरुज्जीवित झालेल्या वारकरी संप्रदायाचा प्रसार अन् प्रचार मुख्यत्वे संत नामदेवांनी केला. भक्तिचे द्वार खुलं करून सर्वसामान्यांना ज्ञानी करण्यासाठी कीर्तनसंस्था स्थापन केली. म्हणूनच संत नामदेवांचा उल्लेख 'महाराष्ट्र नाद'१ असा केला जातो. थोडक्यात, १३ व्या शतकात महाराष्ट्रामध्ये सामाजिक, सांस्कृतिक आणि धार्मिक क्षेत्रात परिवर्तन करणारा एक समाजोद्धारक म्हणूनच संत नामदेवांकडे पाहावे लागते. त्या नामदेवांच्या घरी दासी म्हणून जीवन जगणाऱ्या संत जनाबाईंनी संत पदापर्यंत घेऊन जाणाऱ्या संत नामदेवांचे कर्तृत्व उल्लेखनीयच आहे.

संत जनाबाई या संत नामदेवांच्या घरी दासी म्हणून जीवन जगत होत्या. १३ व्या शतकात एका शूद्र स्त्रीने उच्चकुलीन नाही पण स्वतः शालीन म्हणून समजल्या जाणाऱ्या शिंपी समाजाच्या घरात दासी म्हणून जीवन जगत असणाऱ्या, दासीच्या वाट्याला आलेले आणि दासीने करावयाच्या श्रमाचे चित्रण आपल्या आत्मकथनात्मक अभंगातून चित्रीत केलेले आपणास दिसते. संत जनाबाईंच्या एकूण अभंगापैकी २४ अभंगांमध्ये श्रमसंस्कृतीचे चित्रण आलेले आहे. त्या अभंगांमध्ये स्वतः विठ्ठल की तो देव आहे, सर्वजण त्याची भक्ती करतात. त्याची पूजाअर्चा करतात, नामस्मरण करतात. तो विठ्ठल देव मात्र जनाबाईसोबत काम करण्यासाठी तिच्याकडे येतो. सर्वप्रकारची कामे करतो, अशा स्वरूपाचे चित्रण करणारे काही अभंग आपणास पाहता येतील. प्रत्यक्ष पांडुरंग परमात्मा दासी म्हणून जीवन जगणाऱ्या आपल्या प्रिय भक्तासाठी म्हणजेच जनाबाईसाठी विटेवरून खाली उतरतो, कामात

18--19

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 5.7631(UIF)

Volume - 8 | Issue - 6 | March - 2019

REVIEW OF RESEARCH

UGC APPROVED

International Online Multidisciplinary Journal

Journal No.: 48514

AGRARIAN DISTRESS PROBLEMS AND SOLUTION

Dr. Mohan G. Sadamate

Dr. Mohan G. Sadamate

Krantiagrani G. D. Bapu Lad Mahavidhyalaya Kundal.
Dist. Sangli, Maharashtra.

ABSTRACT:Indian agriculture has made commendable progress after the green and white revolutions. The underlying reasons for agrarian distress in India are unviable agriculture, climate ...

Editor - In - Chief - Ashok Yakkaldevi

International Online Multidisciplinary Journal

Review of Research

Save Tree. Save Paper. Save World

ISSN NO:- 2249-894X Impact Factor : 5.7631(UIF) Vol.- 8, Issue -6, March -2019

Content

Sr. No.	Title and Name of The Author (S)	Page No.
1	मूल्यपरक शिक्षा में शिक्षक की भूमिका Bhundiya Dipti Narendrabhai	1
2	Experimental Learning: Art Integrated Learning In Chemistry Prashant Thote and Gowri S .	9
3	Role Of Agriculture In Indian Economy, And Contemporary Problems Of Farmers In India, An Overview Sitaram Uttamrao Anpat	12
4	Agrarian Distress Problems And Solution Dr. Mohan G. Sadamate	18
5	The Responsibility Of Media In Changing The Society Saibanna Eranna Guduba and Dr. D.B Patil	22
6	Validation Of E-Learning Package & Construction And Validation Of Achievement Test Dr. P. Ponraj and Dr. T. Manickavasagan	28
7	Environmental Attutude Of B.Ed. and D.Ed. Teacher Trainees Dr. Pakala Naga Suresh Kumar and Dr. T. Swaruapa Rani	33
8	Regional, National And International Trends In Teacher Training Programme Dr. S. L. Suresh	38
9	A Study On Teacher Effectiveness Of The Teacher Educators Dr. T. M. Gnanasoundari	44
10	Identifying The Relationship Between B.Ed. Students' Awareness On Their Survival Skills And Their Achievement In The Course Paper K. Anand and Dr. K. Chellamani	46
11	Attitude Towards Using New Technology In Teaching And Technophobia Of B.Ed. Trainees K. Manikandan and Dr. A. Magalingam	50

REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

AGRARIAN DISTRESS PROBLEMS AND SOLUTION

Dr. Mohan G. Sadamate
Krantiagrani G. D. Bapu Lad Mahavidhyalaya Kundal.
Dist. Sangli, Maharashtra.

ABSTRACT :

Indian agriculture has made commendable progress after the green and white revolutions. The underlying reasons for agrarian distress in India are unviable agriculture, climate risks, and indebtedness. Low productivity, drought, Collapsing farm prices, Lack of food processing clusters and inefficient value chain in agriculture etc. Distress among farmers has been mounting in the recent past. The suggestions we have made, such as limited procurement, measures to improve low productivity, and consolidation of land holdings to gain the benefits of size, Agricultural markets reforms can help in reducing agrarian distress problems.

KEYWORDS : *Indian agriculture , agriculture, climate risks, and indebtedness.*

INTRODUCTION

Agrarian distress in India, built-up over time, has further negatively recent. At the height of the farm output, Indian farmers are a disappointed lot. Despite spectacular rise in agricultural production, they continue to languish in poverty. The absences of an effective price support policy, farmers are faced with a loss in income, depending on how much the price decline. The 'farm distress' in recent years has been partly on account of this situation, as the loss of income is beyond the ability, particularly of small farmers, to absorb. According to a Niti Aayog, on average, farmers do not realise remunerative prices due to limited reach of the minimum support prices agricultural marketing system that delivers only a small fraction of the final price to the actual farmer.

This article discussion divided in two parts, first part to understanding the reasons of agrarian distress and second given the solutions of agrarian distress problems in India.

A. Reasons of Agrarian distress Problems

1. Two years of drought: Two successive years of drought (2014, 2015) have taken a toll on the farm sector. The government has allocated significant funds for the sector but slow implementation of projects has not eased the pain. Droughts in Maharashtra, Gujarat and Karnataka have also added to farmers' woes.

2. Collapsing Agricultural Commodities prices: The agrarian distress, which has been a legacy problem, has further worsened in the recent past. Typically, at a very low rate of inflation, certain sectors of the economy suffer from deflationary pressures. In fact, food and beverage inflation, which was decelerating since 2016, has turned negative during May-July 2017, led by pulses and vegetables before turning positive thereafter. The phase of demonetization-related decline in food prices, mostly perishables, is over. In 2016-17, arrival of

18-19

Special Issue- March 2019

ISSN No. 2319 - 5908

An International Multidisciplinary Refereed Research Quarterly Journal

शोध संदर्श

शोध संदर्श

SHODH SANDARSH

शिक्षा, साहित्य, इतिहास, कला, संस्कृति, विज्ञान, वाणिज्य आदि

Chief Editor :

Dr. V.K. Pandey

Editor :

Dr. V.K. Mishra
Dr. V.P. Tiwari

UGC Approved Journal UGC No. 41329

SCIENTIFIC JOURNAL IMPACT FACTOR SJIF No. 4713

GENERAL IMPACT FACTOR GIF No. 14293

विशेषांक

विविध ज्ञान - विज्ञान - विषय का मन्थन एवं विमर्श ।
नव - उन्मेषी दशा - दिशा से भरा 'शोध - सन्दर्श' ।।

अनुक्रमणिका

Sr. No	Name of Research Scholar	Title of Paper	Page no.
27	प्रा.डॉ. संतोष तुकाराम कदम	'अरुणा असफअली यांचे भारतीय स्वातंत्र्य लढयातील योगदान'	98
28	प्रा. डॉ. झाकीरहुसेन हाकीम संदे	भारतीय स्वातंत्र्य लढयातील मुस्लीम स्त्री : कुलसुमबेन सयानी	101
29	डॉ. राज पी. चव्हाण प्रा. शोभाताई एस. पाटील	राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजींचे भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीतील योगदान	103
30	डॉ. ज्योती ज. व्हटकर	1942 चा स्वातंत्र्य लढा व यशवंतराव चव्हाण	108
31	कु. प्रियांका भिमराव पोवार	भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीतील स्त्री-स्वातंत्र्यसैनिकांचे योगदान	110
32	डॉ. मधुकर खंडू पवार	वैयक्तिक सत्याग्रह १९४० चा लढयातील स्त्रीयांचे योगदान	113
33	प्राचार्य, डॉ. घोलप सर्जेराव देवाप्पा	ज्ञानसुर्य शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे यांचे शिक्षण क्षेत्रातील मौलीक कार्य	115
34	दुरगुडे एस. पी.	महात्मा गांधीचे तत्वज्ञान आणि स्वतंत्र्यासाठी संघर्ष असहकार चळवळ	117
35	डॉ. शारदा गोविंदराव वडे	भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीमध्ये महाराष्ट्रातील क्रांतीकारक	119
36	डॉ. वरेकर निवासराव अधिकराव	1942 ची चलेजाव क्रांती आणि सातारा	122
37	डॉ. दत्तात्रय पांडुरंग खराडे	भारतीय स्वातंत्र्य लढ्यात मुस्लिम महिलांचे योगदान	126
38	Dr. Khot Madhuri Rajaram Dr. Kavita Gagrani	वारणा विभागाचे भारतीय स्वातंत्र्य लढयातील योगदान	130
39	प्रा. एस. वाय. पाटील	भारतीय स्वातंत्र्याच्या लढ्यातील शेतकरी चळवळीचे योगदान	132
40	प्रा. डी. ए. पवार	भारतीय स्वातंत्र्यलढा व कामगार चळवळ	135
41	डॉ.डी.व्ही.सुर्यवंशी प्रा.सौ.शुभांगी सुखदेव माने–पाटील	महाराष्ट्रातील कामगार चळवळ नारायण मेघाजी लोखंडे यांचे कामगार चळवळीमधील योगदान	138
42	प्रा .डॉ . सपकाळ रामेश्वर विक्रम	'सुभाषचंद्र बोस यांचे भारतीय स्वातंत्र्यलढयातील योगदान'	141
43	प्रा. भागवत वसंत बजरंग	स्वातंत्र्यसंग्रामाच्या संघर्षातील अग्रदूतः क्रांतिवीर रंगरावदादा विठ्ठलराव पाटील	144
44	प्रा. अमृता आनंदराव दिंडे	'स्वातंत्र्यसेनानी दुर्गाबाई देशमुख यांच्या कार्याचा चिकित्सक आढावा'	147
45	डॉ . मधुकर विठोबा जाधव	भारताच्या स्वातंत्र्यलढयातील स्वातंत्र्यवीरांगना वीणा दास	151
46	डॉ.तानाजी रामचंद्र हवलदार	चंपारण्य सत्याग्रह	154
47	प्रा. बाबली गंगाराम गावडे	गांधीयुगातील निर्णायक लढे : एक अभ्यास	156
48	Dr. Girish P. Vaghela	भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम और गुजरात के बुनियादी कार्यकर : पडकार एवं व्यूहरचना	159
49	डॉ. सुप्रिया चंद्रशेखर खोले.	मणिपूरची क्रांतीकारक राणी गैडीनलू	163
50	प्रा.गीतांजली श. साळुंखे	डॉ.बापूजी साळुंखे यांचे भारतीय स्वातंत्र्य संग्रामातील योगदान	165
51	प्रा. वाय. ए. आवळे	स्वातंत्र्यपूर्व संस्थानकालीन मल्लविद्या व इतर खेळांचा विकास	167
52	Rinkal J. Vaghela	आज के सन्दर्भ में गांधीजी के विचारों की प्रस्तुतता	170
53	प्रा. डॉ. धीरज सुरेश शिंदे	काकासाहेब चव्हाण यांचे कार्य व शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी साळुंखे	172
54	सौ. रश्मी शिवाजी आडेकर	उपेक्षित पण निष्काम कर्मयोगी : महर्षी विठ्ठल रामजी शिंदे	175
55	Dr. KOLASEKAR MANOHAR	'1857 च्या उठावाचा रेल्वेवर झालेला परिणाम'	177
56	डॉ. शर्मिला अशोक साबळे	महात्मा गांधीचे अहिंसावादी तत्त्वज्ञान व असहकार चळवळ	179
57	श्रीमती सरकाळे तेजश्री तानाजी	1935 चा भारत सरकारचा कायदा –एक ऐतिहासिक आढावा	181
58	श्री महेशकुमार पांडुरंग सोनावणे	स्वातंत्र्यसेनानी शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी साळुंखे	184
59	विवेकानंद माने.	क्रांतिविरांगणा विजयाताई लाड –प्रतिसरकारातील एक जिव्हार महिला	186
60	प्रा. चामे एच. व्हि.	भारतीय समाजसुधारणा व संविधान निर्मितीत डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे योगदान	188

भारतीय स्वातंत्र्य लढयातील मुस्लीम स्त्री : कुलसुमबेन सयानी

प्रा. डॉ. झाकीरहुसेन हाकीम संदे
M.A., B.Ed., M.Phil., Ph.D.
क्रांतिअग्रणी जी.डी. बापू लाड महाविद्यालय,
कुंडल ता. पलूस, जि. सांगली.

प्रस्तावना –

भारतीय स्वातंत्र्य लढा हा भारताच्याच नव्हे तर जगाच्या इतिहासातील उल्लेखनिय घटना आहे. स्वातंत्र्य मिळवण्यासाठी भारतीयांनी इंग्रजांच्या विरोधात दिलेला एवढा दिर्घ आणि व्यापक लढा हे या लढयाचे वैशिष्ठय ठरते. दिर्घकाल चाललेल्या या लढयामध्ये अनेक मार्ग अवलंबले गेले. वेगवेगळया माध्यमातून म्हणजे संघर्ष , हिंसा, समाजप्रबोधन इ. मार्गाचा वापर झाला परंतू या लढयाला निर्णायक चेहरा प्राप्त झाला तो म्हणजे अहिंसा आणि सत्याग्रहाच्या माध्यमातून म. गांधीनी देशभर आणि देशाबाहेर उभारलेल्या लढयामुळे म. गांधीच्या या सत्य, अहिंसा, सत्याग्रहाच्या शिकवणूकीमुळे देशातील गरीब, श्रीमंत, तरूण, महिला असे सर्वजण या लढयात सहभागी झाले. मं गांधीचा लढा हा फक्त स्वातंत्र्य प्राप्तीचाच नव्हता तर त्याचबरोबर समाज प्रबोधन, समाज परिवर्तन आणि उत्तम नागरिक घडवण्याचा देखिल होता. त्याकरिता पायाभुत क्षेत्रापासुन उच्चशिक्षणापर्यंत नवीन शिक्षण प्रणालींचा वापर केला गेला. म. गांधीच्या या समाजपरिवर्तनाच्या लढाईत अनेक ज्ञात– अज्ञात पुरूष महिलांनी आपले आयुष्य झोकून दिले. त्यातील एक महिला म्हणजे कुलसुम बेन सयानी होय.

कुलसुमबेन सयानी यांचा परिचय –

कुलसुमबेन पटेल यांचा जन्म 20 व्या शतकाच्या उंबरठयावर म्हणजेच सन 21 ऑक्टोंबर 1900 साली मुंबईतील एका उच्चभ्रु, उच्च विद्याविभूषित कुटुंबात झाला कुलसुमबेन यांचे वडिल रजबअली पटेल हे मुंबईतील नामांकित डॉक्टर होते. स्वातंत्र्य लढयातील एक महत्वपुर्ण योध्दे, मौलाना अबुलकलाम आझाद यांचे ते वैद्यकिय सल्लागार आणि डॉक्टर होते. त्यांनी महात्मा गांधीवर देखील अनेकवेळा उपचार केले होते. त्यामुळेच त्यांचा आणि म. गांधीचा जवळचा संबंध आला. आपली कन्या कुलसुमबेन हिला त्यांनी म. गांधीबरोबर राष्ट्रीय कार्यात सहभागी केले. कुलसुमबेन यांना दोन मुले होती. रेडिओवर अनेक वर्षे गाजलेली बिनाका गितमाला सादर करणारे श्री.अमीन सयानी हे कुलसुमबेन यांचे धाकटे चिरंजीव शैक्षणिक क्षेत्रात विशेषतः प्रौढ साक्षरतेच्या क्षेत्रात कुलसुमबेन यांनी केलेले कार्य अतुलनिय होते.

कुलसुमबेन सयानी यांचे जीवनकार्य –

भारतीय स्वातंत्र्य लढयात अनेक मुस्लीम स्त्रीयांनी प्रत्यक्ष अप्रत्यक्षपणे भाग घेतला. त्यापैकी , 1857 च्या समरांत सहभागी झालेल्या हजरत महल, अजिजान, असगरी बेगम, हबीबा इ. आहेत तर खिलाफत चळवळीमधील बी. अम्मा, बेगम हसरत मोहानी, सहादत बरो, सुगराखातून अशी अनेक नावे घेता येतील तसेच कॉग्रेसच्या लढयामध्ये बीबी अमतुस्सलाम, आमना कुरेशी, रेहाना तैयजबी, उमिदा तैयबजी, फातिमा तैयबजी, बेगम डॉ. मुहम्मद आलम अशा अनेक मुस्लीम महिलांनी देशाच्या स्वातंत्र्याच्या लढयात सहभाग घेतला. त्यापैकीच एक महिला कुलसुमबेन सयानी होत 1917 मध्ये म्हणजे वयाच्या 17 व्या वर्षीय त्यांना देशसेवेचे बाळकडु मिळाले. 1917 साली दक्षिण आफ्रिकेमधील लढा यशस्वीपणे संपवून म.गांधी भारतात परतले. त्यावेळी कुलसुमबेन सयानी यांचे वडिल रजबअली पटेल त्यांना घेवुन म. गांधीकडे गेले. आणि देशकार्यासाठी आपल्या मुलीला म. गांधीकडे सोपविले म. गांधीनी त्यांचे मनःपुर्वक स्वागत करून त्यांना जानकीदेवी बजाज यांचेबरोबर राहण्यास सांगितले.

तो काळ स्त्रियांच्या आणि विशेषतः मुस्लीम स्त्रियांच्या बाबतीत अतिशय प्रतिकुल काळ होता. स्त्रियांना कसलेही अधिकार स्वातंत्र्ये नव्हती. मुस्लीम महिला परदानशीन म्हणजे बुरखा वापरत होत्या. "प्रस्थापित सामाजिक, सांस्कृतिक आणि धार्मिक क्षेत्रामध्ये स्त्रीचे स्थान पुरूषापेक्षा कमी लेखण्यात आले. तिला जो अवकाश दिला गेला त्यात एकंदरीत तिच्या ठायी असणा–या कोणत्याही उपजत कौशल्य क्षमतांचा विकास अथवा त्याची आदरार्थी स्विकृती नव्हती. तिच्यावर परंपरानी वर्चस्वी भूमिकांचा अंकुश ठेवला. तिचे अस्तित्व केवळ शरीर पातळीशी निगडीत करून, तेही पुरुषाच्या अपत्याला जन्म देणे इतकेच त्याचे इप्सित राखले पुरुषाच्या जगातील पुरुषासाठी अस्तित्वात असलेली एक वस्तु इतपत तिला स्थान दिले"[1] अशी महिलांची अवस्था असताना जानकी देवी बजाज मुस्लीम पर्दानशीन स्त्रियांना एकत्र करुन प्रौढ साक्षरतेसाठी प्रयत्नशील होत्या परंतु मुस्लीम स्त्रियांकडून मिळणारा प्रतिसाद अत्यल्प होता. ही गोष्ट हुशार कुलसुमबेन यांच्या लक्षात आली. आणि त्यांनी म. गांधीच्या मार्गदर्शनाखाली अशा पर्दानशीन महिलांच्या शिक्षणासाठी प्रयत्न चालू केले.

कुलसुमबेन यांनी या स्त्रियांच्या निरक्षरतेची कारणे शोधुन काढली. गरिबी, अजारपण, अवहेलना यामुळे या स्त्रीया मागास राहिलेल्या होत्या. अशा स्त्रीयांच्या शैक्षणिक विकासाकरिता आयुष्य खर्च करण्याचा त्यांनी निर्धार केला. त्या 1939 पासून ' बॉम्बे सिटी सोशल एज्युकेशन कमीटी' या समाजसेवी संस्थेशी जोडल्या गेल्या. स्वतःच्या 100 रु च्या गुंतवणूक आणि दोन सहकारी शिक्षकांच्या मदतीने त्यांनी या प्रौढ साक्षरतेच्या कामात स्वतःला झोकुन दिले. या कामात त्यांना अनंत अडचणी येत परंतु त्यावर मात करीत आत्मविश्वासाच्या बळावर त्यांनी शहरातील घरोघरी जाऊन आहोरात्र कष्ट केले. महिलांना शिक्षित होणे किती गरजेचे आहे हे त्यांनी पटवून दिले. त्याचा परिणाम म्हणून जवळपास 400 स्त्रीयांनी पुढाकार घेवुन प्रौढ साक्षरतेसाठी तयार झाल्या हा कुलसुमबेन यांच्या परिश्रमाचा विजय होता. त्यामुळे त्यांचा उत्साह वाढला.

18.19

IFSIJ IMPACT FACTOR: 5.355 ISSN : 2455-1511

SANSKRUTI

International Multidisciplinary Research Journal

PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

Special Issue : 001 January -2019

Anekant Education Society's

Jaysingpur College, Jaysingpur

Reaccredited with 'A' grade by NAAC
Dist. Kolhapur, Pin-416101, Maharashtra

One Day National Conference on Modern Trends in Physical Education and Sports

Special Issue Editor : Prin. Dr. R.R Kumbhar
Convener : Mr. Mahadeo Suryawanshi
Guest Editor : Dr. M. A. KadamPatil
Editor-in-chief : Prof. Santosh Bongale

Sanskruti Multidisciplinary Research And Development Training Institute (SMRDTI)
© All rights reserved with the authors.
Published by –© Mr. Santosh Bongale, President, Sanskruti Multidisciplinary Research And Development Training Institute (SMRDTI) At-Post: Pimpalkhunte Tal: Madha Dist: Solapur. Maharashtra Mobile : 9923900840 Email id: editorsimrj@gmail.com www.simrj.org.in
Disclaimer: The views expressed herein are those of the authors. The editors, publishers do not guarantee the correctness of facts, and do not accept any liability with respect to the matter published in the Special Issue. However editors and publishers can be informed about any error or omission for the sake of improvement. All rights reserved.

17	Positive And Negative Effect Of Caffeine On Athletic Performance Mujaffar Dastagir Lagiwale, N. D. Bansode	89-92
18	Glory by Indian Women's in 18th Asian Games Dr. Suhas Nivrutti Bhairat	93-97
19	आरोग्यदायी जीवनासाठी उपयुक्त जीवनशैली प्रशांत बिभिषण पाटील	98-100
20	योग- गरज व महत्व प्रा.संजय रामचंद्र पाटील	101-104
21	योगाचे जीवनातील महत्व डॉ. शिवाजी बापू पोवार	105-109
22	Core Muscle Strengthning Effect On Dynamic And Static Balance In Badminton Players Ajay Mahadev Marathe	110-116
23	Rules and Regulations for Badminton: A Review Rajendra S. Raykar, Dr. Ganesh Solunke	117-121
24	The Effects Of The Plyometric Sport Training Model On The Development Of The Vertical Jump Of Volleyball Players Dr.Swapnil D. Patil	122-128
25	Comparison Of Selected Physiological Parameters Of Soccer Handball And Basketball Players Of Davi Ahilya Vishwavidyalaya University Indore Firdous Ahmad Bhat	129-133
26	Women In Sport Participation Challenges and Issues Vishwas. D. Sawant.	134-136
27	Sports Economics Smt. Leena Bhimarao Patil	137-140
28	Effect of College Student Participation in Physical Education and Conditioning Programmes on Flexibility Prof. Vikrant vasntrao Supugade, Dr.Vikas Anandrao Jadhav	141-143
29	Relevance of Yoga in 21st Century Nilesh N. Patil	144-147
30	Effect of Socio Economic Status on Mental Health Mr. Naik Jaysing Dr. Bhaskar D. Salvi	148-154
31	Teacher Related Issues in Implementation of Quality Physical Education Program in India Majagaonkar Savita R., Khade Vaishali S.	155-161
32	Importance Of Physical Fitness For Teenage Athletes Miss. Smita Bhalchandra Jagtap	162-

Sanskruti International Multidisciplinary Research Journal
IMPACT FACTOR - (IFSIJ) – 5.355, (I2OR)–1.235 (2017)
Special Issue 001- Indian Agriculture : Problems and Prospectus
ISSN: 2455-1511
January- 2019

Women In Sport Participation Challenges and Issues

Vishwas. D. Sawant.
K. G. D. Bapu Lad College, Kundal, Tal Palus, Dist- Sangli, (MH)
E-mail:- sawantvishwas10@gmail.com Cell No :- 09975739484

ABSTRACT:

In olden times physical education and sports included as discipline curriculum. Physically fit person looks better, feels better, thinks better and so lives better.

Fitness is capacity of person to work efficiency. Physical fitness of men and women have ability to carry tasks. Physical Fitness includes physical strength agility, capability. In India women rarely found in sports main reason is Gender inequality. These differences arise from distinctions in Biology, Psychology and cultural norms. But now a day they have started entering this field before a few decades.

Women has been as important as man in the history of human women constitute almost 50% of world's population but India has shown disproportionate sex ratio. Women's population comparatively lower than males. They are treated as equal to men. Gender disabilities and discrimination's are found in India. Indian women players are talented and hard worker Indian women players are a very courageous. Today we see competition everywhere. Each one has to score good marks or first rank. The parents are not letting girls to play. Hence women participation in sports become a big issue and they have to face many challenges.

Key words :- Physical fitness, Gender equality, courageous.

"It is impossible to think about the welfare of the world unless the condition of women is improved. It is impossible for a bird to fly on only one wing." —

Swami Vivekanand.

INTRODUCTION :

In traditional Indian society woman was worshipped as the symbol of strength wealth and knowledge in the form of deities .However women's status remained subordinate up to beginning of the 20th century and their world remained confide to the domestic responsibilities.

18-19

ISSN : 2393-8900

Historicity

International Research Journal

Volume - 5 | Issue - 6 | Feb - 2019
Impact Factor : 2.7825 (UIF)

Editor-In-Chief
Dr. Sanjay Gaikwad

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

ISSN NO:- 2393-8900
Vol- 5| Issue 6 | Feb -2019

Contents

नाथाजी लाड यांचे स्वातंत्र्य चळवळीतील कार्यः एक दृष्टिक्षेप

IN THIS ISSUE

1 पेशवेकालीन अस्पृश्य वतनदार (बलुतेदार)
प्राचार्य डॉ. सोपान जावळे

5 भारतीय चित्रपटसृष्टीतील आघाडीच्या पार्श्वगायिका : शमशाद बेगम.
प्रा. हमीद उमरअली काझी

11 DEBATE ON 18TH CENTURY
Prof. Pantulwar Ramappa Gangadharappa

15 नाथाजी लाड यांचे स्वातंत्र्य चळवळीतील कार्यः एक दृष्टिक्षेप
विवेकानंद राजाराम माने

18 आधुनिक भारत में शैक्षिक अवसरों की समानता और सामाजिक न्याय की भूमिका
डॉ. रेनू चौहान

22 होळकरांची टपाल व्यवस्था महेश्वर ते पुणे टपाल व्यवस्थेच्या विशेष संदर्भात
प्रा.डॉ.शिवाजी वाघमोडे

27 ऐतिहासिक पर्यटन : विशेष संदर्भ गडहिंग्लज तालुका
डॉ.सुरेश मारूती चव्हाण

ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 1.9152(UIF) VOLUME - 5 | ISSUE - 6 | FEBRUARY - 2019

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

नाथाजी लाड यांचे स्वातंत्र्य चळवळीतील कार्य: एक दृष्टिक्षेप

विवेकानंद राजाराम माने
इतिहास विभागप्रमुख,
क्रांतिअग्रणी जी.डी.बापू लाड महाविद्यालय, कुंडल जि. सांगली.

प्रस्तावना :

भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीला दैदिप्यमान इतिहास आहे. भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीच्या लढ्यात १९४२ चे 'चलेजाव आंदोलन' स्वातंत्र्य चळवळीतील महत्त्वाचे पर्व आहे. क्रिप्स योजना फेटाळली गेल्यानंतर वर्धा येथे काँग्रेस वर्किंग कमिटीची बैठक झाली आणि ७ व ८ ऑगस्ट १९४२ रोजी गवालिया टँकवर काँग्रेस अधिवेशन भरले. या अधिवेशनात छोडो भारतचा ठराव जवाहरलाल नेहरुंनी मांडला. त्यावेळी म. गांधींनी केलेल्या भाषणात 'करेंगे या मरेंगे' चा नारा दिला. लोकांच्यात जागृती निर्माण झाली, परंतु दुसऱ्याच दिवशी राष्ट्रीय काँग्रेसच्या महत्त्वाच्या सर्व पुढाऱ्यांना अटक झाली. त्याची प्रतिक्रिया संपूर्ण भारतभर उमटली.

सातारा जिल्ह्यातील नाना पाटलांच्या नेतृत्वाखाली काँग्रेसच्या पुढाऱ्यांनी भूमिगत होवून कार्य करण्याचे ठरविले. क्रांतिसिंहांच्या नेतृत्वाखाली प्रतिसरकार चळवळीचे कार्य ब्रिटनच्या पार्लमेंटने नोंद घ्यावी इतके महत्त्वपूर्ण ठरले होते. क्रांतिसिंह नाना पाटील हे १९४२ च्या क्रांतिलढ्यातील झुंजार सेनानी म्हणून ओळखले जातात. क्रांतिसिंहांचे एकूण जीवन आणि कार्य विचारात घेतल्यास ब्रिटिश आमदनीत सातारा प्रतिसरकारचे संस्थापक म्हणून त्यांच्या कार्याचे महत्त्व जितके आहे, तितकेच त्यांच्या अगोदरच्या आणि नंतरच्या कार्याचेही आहे. त्यांचे नेतृत्व हे बहुजनांचे तसेच समाजसुधारणेच्या चळवळीतून उभे राहीले होते. स्वातंत्र्य संग्रामातील संयुक्त सातारा जिल्ह्याने प्रतिसरकार स्थापन करताना हुतात्म्यांनी, क्रांतिसिंहांनी, क्रांतिवीरांनी, स्वातंत्र्यसेनानी, स्वातंत्र्य सैनिकांनी जिवावर उदार होऊन केलेल्या विविध प्रसंगांचा प्रेरणादायी इतिहास आहे. यामध्ये क्रांतिसिंह नाना पाटील, क्रांतिवीर नागनाथ अण्णा नायकवडी, क्रांतिअग्रणी जी. डी. (बापू) लाड, रामचंद्र श्रीपती लाड, बर्डे मास्तर, यशवंतराव चव्हाण, वसंतदादा पाटील, नाथाजी लाड, धोंडीराम माळी, लीलावती पाटील, हौसाताई पाटील, इंदूताई पाटणकर, राजुताई बिरनाळे इत्यादी देशभक्त आहेत. त्यातील एक नाथाजी बाबूराव लाड त्यांच्या स्वातंत्र्याच्या योगदानावर प्रकाश टाकण्याचा प्रयत्न प्रस्तुत शोधनिबंधामध्ये संशोधकाने केलेला आहे.

सांगली जिल्ह्यातील पलूस तालुक्यातील (पूर्वीचा तासगाव) कुंडल या गावात एका शेतकरी कुटूंबात २ ऑगस्ट १९२२ रोजी नाथाजी बाबुराव लाड यांचा जन्म झाला. घरची परिस्थिती गरीबीची होती. त्यांचे प्राथमिक व सातवी पर्यंतचे इंग्रजी शिक्षण कुंडल येथेच झाले.[१] परंतु गरीबीमुळे नाथाजी लाड यांना पुढील शिक्षण पूर्ण करता आले नाही. ते १९३३ मध्ये किर्लोस्कर मासिकाच्या छापखान्यात नोकरीस लागले. किर्लोस्करवाडीतील किर्लोस्कर मासिकाच्या कार्यालयात कामगार म्हणून काम करतानाच त्यांनी कामगार मंडळ स्थापन केले होते. त्यांचे नेतृत्व गुण तिथे दिसू लागले होते. सुप्रसिध्द कवी ग. दि. माडगुळकर हे त्यांचे वर्गमित्र होते.[२] कुंडल येथे ते रात्रशाळा चालवत. क्रांतिसिंह नाना पाटील यांच्या

ISSN : 2393-8900

Historicity

International Research Journal

Volume - 5 | Issue - 7 | March -2019
Impact Factor :2.7825 (UIF)

Editor-In-Chief

Dr. Sanjay Gaikwad

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

ISSN NO:- 2393-8900
Vol- 5| Issue 7 | March -2019

Contents

सातारा जिल्ह्यातील छोडो भारतचा कांतिलढा

1 सातारा जिल्ह्यातील छोडो भारतचा कांतिलढा
विवेकानंद राजाराम माने

5 **THE BEGINNING OF 'PEOPLES WAR' IN INDIA**
Dr. Kautik N. Dandge

9 **LITERARY DEVELOPMENTS OF GUPTA EMPIRE**
Dr. Rohini Sangappa Dalavay

12 **मध्ययुगीन काळातील स्त्रियांचे धार्मिक जीवन**
प्रा. डॉ. जगदिश दयासागर हेंडवे

16 **ETHNOGRAPHIC STUDY OF RAMTEK POTTERS**
Kanchana B. Bhaisare

25 **भारत में साइबर अपराधों का समाजशास्त्रीय अध्ययन**
डॉ. रेनू चौहान

31 **"मराठी साहित्याचा स्वातंर्त्य चळवळीशी असलेला ऋणानुबंध"**
प्रा. सोनवले आर. आर.

ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR :2.7825(UIF) VOLUME - 5 | ISSUE - 7 | MARCH - 2019

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

सातारा जिल्ह्यातील छोडो भारतचा क्रांतिलढा

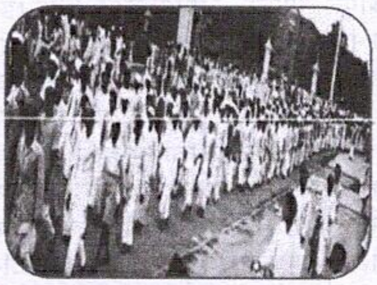

विवेकानंद राजाराम माने
इतिहास विभागप्रमुख,
क्रांतिअग्रणी जी.डी.बापू लाड महाविद्यालय, कुंडल जि. सांगली.

प्रस्तावना:

क्रीप्स मिशनची फलनिष्पत्ती भयानक निराशाजनक असल्याचे म. गांधींनी जाहीर करताच सातारा जिल्ह्यातील राजकीय वातावरण बदलू लागले. जनआंदोलन करावे लागेल असे संकेत मिळू लागले. महायुद्ध चालू असताना साम्राज्यशाहीचे सरकार जनआंदोलन चिरडून टाकणारच असा युक्तिवाद मांडण्यात आला. त्यामुळे भूमिगत आंदोलनाची संघटना उभारणे हा पर्याय सातारकरांनी पसंत केला. भूमिगत संघटनेचा पुरस्कार करणारे व जनआंदोलनासाठी प्रथम पासूनच जहाल भूमिका घेतलेले कॉंग्रेस समाजवादी पुढारी अच्युतराव पटवर्धन व शिरूभाऊ लिमये हे नाना पाटील आणि त्यांच्या सहकाऱ्यांना मार्गदर्शन करीत होते. कॉंग्रेस समितीने 'छोडो भारत' चा ठराव मंजूर केला त्याच दिवशी मुंबईत सातारकरांच्या भूमिगत कारवायांचा प्रारंभ झाला. तथापि बहुसंख्य सातारा कार्यकर्ते मुंबई शहरातच भूमिगत राहिले. मुंबईतच भूमिगत झाल्याने साताऱ्यामधील बहुसंख्य आंदोलक अटक टाळू शकले. त्यांनी काही काळासाठी तरी पोलिसांवर डावपेचात्मक विजय प्राप्त केला.

सातारा जिल्ह्यातील छोडो भारतचा क्रांतिलढा गांधीवादी आकृतिबंधानुसार नव्हता. लढ्याला हिंसक व दहशतवादी स्वरूप आले. गनिमी काव्याच्या युद्धतंत्राचा येथे उपयोग करण्यात आला. नाना रामचंद्र पाटील, गोविंदराव देशपांडे, आचार्य शं. द. जावडेकर, स्वामी रामानंद भारती, एस. आर. कुलकर्णी, बुवा गोसावी, सोमण, कानडे यांच्यासारखे काही नेते व कार्यकर्ते मुंबईला न जाता संघटना बांधणीसाठी जिल्ह्यातच राहिले.[1] छोडो भारत ठराव संमत होताच ८ ऑगस्टच्या रात्री मुंबईतील बद्रिकाश्रमात साताऱ्याच्या कॉंग्रेस व कॉंग्रेस समाजवादी कार्यकर्त्यांची गुप्त बैठक भरली. त्यात निर्णय घेण्यात आला की, इंग्रज नोकरशाही धरपकड करण्याचे सत्र आमलात आणण्याची शक्यता असल्याने प्रमुख व्यक्तींनी भूमिगत राहून सूत्रसंचालन करावे आणि पुढील कार्यक्रमाबाबत वेळोवेळी दिल्या जाणाऱ्या मार्गदर्शनानुसार लढा चालवावा.

सरकारी दडपशाहीच्या अंमलाने व पोलिसांच्या हिंसाचाराने प्रक्षुब्ध झालेल्या जनतेने जिल्ह्यातील सर्व शहरांमध्ये व शेकडों गावांमध्ये स्वयंस्फुर्त हरताळ पाळला. सरकारी कारवाईच्या विरोधात निषेधपर सभा झाल्या. घोषणा, मिरवणुका, प्रचारसभा व निषेधाच्या सभा यामुळे वातावरण तापले. उत्स्फूर्त हरताळ, निरोधने (पिकेटींग) व शाळांवरील बहिष्काराने आंदोलनाचा प्रारंभ झाला. मात्र हा उत्साह व समर्पणाची भावना टिकवून ठेवण्याची गरज असल्याने जनतेची विखुरलेली शक्ती संघटित करण्याचे काम नाना पाटील व इतर पुढाऱ्यांनी हाती घेतले. बाबुराव गोखले कराडच्या टिळक हायस्कुलच्या मुलांना संघटित करू लागले. श. द. जावडेकरांच्या अटकेच्या निषेधार्थ इस्लामपूरला हरताळ पाळण्यात आला. तथापि सरकारी दडपशाही वाढतच राहिली. प्रखर राष्ट्रवादाने ज्यांना प्रेरित केले होते अशी माणसे नाना पाटील, किसन वीर यांच्या मार्गदर्शनानुसार एकत्र आली व आपणच स्वतःचे मार्गदर्शक आहोत अशा भावनेने चळवळीत

Special Issue- March 2019 ISSN No. 2319 - 5908
An International Multidisciplinary Refereed Research Quarterly Journal

शोध संदर्श

शोध संदर्श

SHODH SANDARSH

शिक्षा, साहित्य, इतिहास, कला, संस्कृति, विज्ञान, वाणिज्य आदि

Chief Editor :
Dr. V.K. Pandey

Editor :
Dr. V.K. Mishra
Dr. V.P. Tiwari

UGC Approved Journal UGC No.-41329

SJIF 1.8279

GENERAL IMPACT FACTOR No. 1.4293

विशेषांक

विविध ज्ञान - विज्ञान - विषय का मन्थन एवं विमर्श ।
नव - उन्मेषी दशा - दिशा से भरा 'शोध - सन्दर्श' ।।

अनुक्रमणिका

Sr. No	Name of Research Scholar	Title of Paper	Page no.
27	प्रा.डॉ. संतोष तुकाराम कदम	'अरुणा असफअली यांचे भारतीय स्वातंत्र्य लढयातील योगदान'	98
28	प्रा. डॉ. झाकीरहुसेन हाकीम संदे	भारतीय स्वातंत्र्य लढयातील मुस्लीम स्त्री : कुलसुमबेन सयानी	101
29	डॉ. राज पी. चव्हाण प्रा. शोभाताई एस्. पाटील	राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजींचे भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीतील योगदान	103
30	डॉ. ज्योती ज. व्हटकर	1942 चा स्वातंत्र्य लढा व यशवंतराव चव्हाण	108
31	कु. प्रियांका भिमराव पोवार	भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीतील स्त्री-स्वातंत्र्यसैनिकांचे योगदान	110
32	डॉ. मधुकर खंडू पवार	वैयक्तिक सत्याग्रह १९४० चा लढयातील स्त्रीयांचे योगदान	113
33	प्राचार्य, डॉ. घोलप सर्जेराव देवाप्पा	ज्ञानसुर्य शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे यांचे शिक्षण क्षेत्रातील मौलीक कार्य	115
34	दुरगुडे एस. पी.	महात्मा गांधीचे तत्वज्ञान आणि स्वतंत्र्यासाठी संघर्ष असहकार चळवळ	117
35	डॉ. शारदा गोविंदराव बंडे	भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीमध्ये महाराष्ट्रातील क्रांतीकारक	119
36	डॉ. वरेकर निवासराव अधिकराव	1942 ची चलेजाव क्रांती आणि सातारा	122
37	डॉ. दत्तात्रय पांडुरंग खराडे	भारतीय स्वातंत्र्य लढ्यात मुस्लिम महिलांचे योगदान	126
38	Dr. Khot Madhuri Rajaram Dr. Kavita Gagrani	वारणा विभागाचे भारतीय स्वातंत्र्य लढयातील योगदान	130
39	प्रा. एस. वाय. पाटील	भारतीय स्वातंत्र्याच्या लढ्यातील शेतकरी चळवळीचे योगदान	132
40	प्रा. डी. ए. पवार	भारतीय स्वातंत्र्यलढा व कामगार चळवळ	135
41	डॉ.डी.व्ही.सुर्यवंशी प्रा.सौ.शुभांगी सुखदेव माने–पाटील	महाराष्ट्रातील कामगार चळवळ नारायण मेघाजी लोखंडे यांचे कामगार चळवळीमधील योगदान	138
42	प्रा.डॉ. सपकाळ रामेश्वर विक्रम	'सुभाषचंद्र बोस यांचे भारतीय स्वातंत्र्यलढयातील योगदान'	141
43	प्रा. भागवत वसंत बजरंग	स्वातंत्र्यसंग्रामाच्या संघर्षातील अग्रदूतः क्रांतिवीर रंगरावदादा विठ्ठलराव पाटील	144
44	प्रा. अमृता आनंदराव दिंडे	'स्वातंत्र्यसेनानी दुर्गाबाई देशमुख यांच्या कार्याचा चिकित्सक आढावा'	147
45	डॉ. मधुकर विठोबा जाधव	भारताच्या स्वातंत्र्यलढयातील स्वातंत्र्यवीरांगना वीणा दास	151
46	डॉ.तानाजी रामचंद्र हवलदार	चंपारण्य सत्याग्रह	154
47	प्रा. बाबली गंगाराम गावडे	गांधीयुगातील निर्णायक लढे : एक अभ्यास	156
48	Dr. Girish P. Vaghela	भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम और गुजरात के बुनियादी कार्यकर : पडकार एवं व्यूहरचना	159
49	डॉ. सुप्रिया चंद्रशेखर खोले.	मणिपूरची क्रांतीकारक राणी गैडीनलू	163
50	प्रा.गीतांजली श. साळुंखे	डॉ.बापूजी साळुंखे यांचे भारतीय स्वातंत्र्य संग्रामातील योगदान	165
51	प्रा. वाय. ए. आवळे	स्वातंत्र्यपूर्व संस्थानकालीन मल्लविद्या व इतर खेळांचा विकास	167
52	Rinkal J. Vaghela	आज के सन्दर्भ में गांधीजी के विचारों की प्रस्तुतता	170
53	प्रा. डॉ. धीरज सुरेश शिंदे	काकासाहेब चव्हाण यांचे कार्य व शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी साळुंखे	172
54	सौ. रश्मी शिवाजी आडेकर	उपेक्षित पण निष्काम कर्मयोगी : महर्षी विठ्ठल रामजी शिंदे	175
55	Dr. KOLASEKAR MANOHAR	'1857 च्या उठावाचा रेल्वेवर झालेला परिणाम'	177
56	डॉ. शर्मिला अशोक साबळे	महात्मा गांधीचे अहिंसावादी तत्त्वज्ञान व असहकार चळवळ	179
57	श्रीमती सरकाळे तेजश्री तानाजी	1935 चा भारत सरकारचा कायदा –एक ऐतिहासिक आढावा	181
58	श्री महेशकुमार पांडुरंग सोनावणे	स्वातंत्र्यसेनानी शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी साळुंखे	184
59	विवेकानंद माने.	क्रांतिविरांगणा विजयाताई लाड –प्रतिसरकारातील एक जिव्हार महिला	186
60	प्रा. चामे एच. व्हि.	भारतीय समाजसुधारणा व संविधान निर्मितीत डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे योगदान	188

क्रांतिविरांगणा विजयाताई लाड — प्रतिसरकारातील एक जिव्हार महिला

विवेकानंद माने.
सहा. प्राध्यापक,
क्रांतिअग्रणी जी. डी. बापू. लाड महाविदयालय, कुंडल,
ता. पलूस, जि. सांगली.

प्रस्तावना भारतीय स्वातंत्र्यलढ्यात स्वातंत्र्याग्रही, क्रांतिकारक व झुंजार म्हणून ज्या स्त्रियांनी योगदान दिले त्यात सातारा जिल्ह्यातील प्रतिकार चळवळीतील क्रांतिविरांगणा विजयाताई यांचे स्थान व कार्य वैशिष्ट्यपूर्ण आहे. सांगली जिल्हा हा क्रांतिकारकांचा जिल्हा म्हणून ओळखला जातो. क्रांतिसिह नाना पाटील, यशवंतराव चव्हाण, वसंतदादा पाटील, आप्पाजी लाड, क्रांतिवीर नागनाथ अण्णा नायकवडी, क्रांतिअग्रणी जी.डी.बापू लाड, हुतात्मा अण्णासाहेब पत्रावळे, बाबूराव चरणकर, वि.स.पागे, क्रांतिवीर बापूजी पाटणकर, नाथाजी लाड, धोंडीराम बापू माळी, गणपतराव कोळी, रावसाहेब कळके, भगवान भोरे व इतर अनेक स्वातंत्र्यसेनांनीनी ब्रिटिशांच्या जुलमी राजवटीला जोरदार टक्कर दिली. सांगली जिल्ह्याचे वैशिष्ट्य असे की या स्वातंत्र्यसेनानींच्या घरातील स्त्रियांनीही स्वातंत्र्यपूर्व व स्वातंत्र्योत्तर कालखंडामध्ये महत्त्वाची भूमिका बजावली आहे. यामध्ये क्रांतिवीरांगणा विजयाताई लाड, क्रांतिवीरांगणा हौसाताई पाटील, स्वातंत्र्य सेनानी राजमती बिरनाळे, स्त्री मुक्ती चळवळीच्या नेत्या इंदुताई पाटणकर यांचा प्रामुख्याने समावेश आहे.

क्रांतिविरांगणा विजयाताई लाड यांचे माहेर वाळवे तालुक्यातील येलूर असून तेथील बोगर घराण्यातील एका सामान्य शेतकरी कुटुंबात त्यांचा जन्म १९२९ मध्ये झाला. बालपणीच वडिलांचे निधन झाल्यामुळे त्या त्यांचे मामा बोरगावचे क्रांतिवीर नामदेव बापू पाटील यांचेकडे राहील्या. लहानपणीचे त्यांचे नाव नवसाताई हे होते. लहानपणीच त्यांना आजोळच्या कुटुंबातून क्रांतिकारक व सत्यशोधक विचारांचे बाळकडू मिळाले होते. त्यामुळे देशासाठी व समाजासाठी आपणास काहीतरी करण्याची संधी मिळावी ही त्यांच्या मनात उर्मी निर्माण झाली.[१]

क्रांतिकारक विवाह सोहळा— त्या काळात लग्नासाठी वर शोधत असताना कुळीढाळी बरोबरच नवऱ्या मुलाचे कुटुंब, बडा जमीनदार आहे का? राहायला वाडा आहे का? यासारख्या निकषाला प्राधान्य दिले जात होते. अशा काळात स्वत:च्या विवाहासंबधी त्यांनी घेतलेला निर्णय आश्चर्यकारक होता. क्रांतिवीर नामदेव बापू व क्रांतिवीर आप्पासाहेब गुरूजी यांच्यात जी. डी.बापू लाड व नवसाताई यांच्या विवाहासंबंधी चर्चा झाली.[२] क्रांतिवीर आप्पासाहेब गुरूजींनी नवसाताईना प्रश्न विचारला,"ज्याला गावात घर नाही, रानात शीव नाही, ज्याच्या कपाळी संसार नाही किंवा ज्याच्या जीवनात जगण्या—मरण्याची तमा नाही. असा स्वातंत्र्यासाठी प्राणाची बाजी लावायला निघलेला तरूण तुला आवडेल का? मानवेल का? त्याच्या सोबत पडतील ते कष्ट उपसण्याची तुझी तयारी आहे का?" खरे तर अशा प्रश्नांनी एखादी सामान्य मुलगी भांबावून गेली असती. परंतु नवसाताई बोलल्या "मी माझा विचार पहिल्या दृष्टीक्षेपात केला आहे. स्वातंत्र्यासाठी प्राणाची बाजी लावणाऱ्या नरवीर पुरुषाशीच मला संसार करावयाचा आहे. त्यासाठी वाटेल ते कष्ट सोसण्याची माझी तयारी आहे."[३] २५ मे १९४५ लग्नाचा दिवस निश्चित झाला.[४] क्रांतिवीर जी.डी. लाडांना पकडण्यासाठी ब्रिटीश सरकारने बक्षिस जाहीर केले होते. तरीही त्यांना चोरून लग्न करणे मान्य नव्हते. आपले लग्न आपल्या सवंगड्यांच्या साथीने झाले पाहिजे असा त्यांचा विचार होता. कुंडलमधील सूर्योपासना मंदिरात रात्री ८.०० च्या सुमारास गांधी पध्दतीने विवाह समारंभ उरकून घेण्याचा निरोप क्रांतिकारकांना पोहोचला.[५] प्रतिसरकारच्या राज्यातील ४५० गावातून हजारो क्रांतिकारक कुंडल येथे उपस्थित झाले. ब्रिटीश सरकारने क्रांतिकारकांना पकडण्याची व्युहरचना केली होती. परंतु त्यावर मात करून रात्री १०.०० वाजता बंदुकांच्या धडाड—धुम आवाजात जी.डी.बापू यांना नवसाताईंनी आपल्या अंगठा कापून रक्ताचा टिळा लावला. जी.डी.बापूंनीही आपला अंगठा कापून नवासाताईंना रक्ताचा टिळा लावला. या प्रसंगी नवसाताईंचे नाव बदलून विजया असे ठेवण्यात आले.[६] या क्रांतिकारक सोहळ्याचे क्रांतिवीर उत्तमराव पाटील यांनी पौराहित्य केले. क्रांतिवीर आप्पासाहेब लाड, वामनराव घोरपडे, प्रसिध्द कवी ग. दि. माडगूळकर हे या विवाहाला उपस्थित होते.[७]

विवाहानंतरचे खडतर जीवन — विवाह होतात फिल्डमार्शल जोडीदार जी. डी. लाड विजयाताईंना घेऊन फरार झाले. तीन महिने फरारी अवस्थेत एकमेकांच्या सोबतीने हे नवपरिणीत जोडपे अज्ञात ठिकाणावर भिरभिरत राहिले. त्यानंतर सांगलीत जैन महिलाश्रमात विजयाताई विद्यार्थिनी म्हणून राहिल्या. पण फरारी भूमिगतांच्या जीवनसाथीला अस्थिरतेचा शाप असतो. थोड्याच कालावधीत विजयाताईना आपली विद्यार्थीदशा आटपावी लागली. त्यानंतर त्या एक वर्ष कोल्हापुरात खोली भाड्याने घेऊन रहात होत्या, त्यांचा हा काळ अज्ञातवासाचा होता. पुढे पुण्यातही त्यांनी असेच सहा महिने काढले. भूमिगत क्रांतिकाराची पत्नी म्हणून पोलिस सतत मागावर असत. परंतु विजयाताई धीट धाडसी आणि चतुर व बंडखोर होत्या. भूमिगताच्या अंगी अत्यंत आवश्यक असणारी अभिनयाची समयसूचकता त्यांच्याकडे होती. लढ्यातील अनेक धाडसी व थरारक प्रसंगातून त्या अंगच्या चातुर्याने निसटल्या. भूमिगतांचे सहकार्य त्यांना मिळत होते तसेच त्या भूमिगतांना व त्यांच्या कुटुंबियांना सहकार्य देत होत्या.[८] मनोधैर्य देत होत्या. स्वत:ला खंबीर करून इतरांना सावरण्याच्या या काळात विजया ताईचे आत्मबळ अतुलनीय असे होते.

सांगलवाडीतील तुफान सेनेच्या शिबीराला मदत— सांगलवाडी हे वसंतदादा पाटील यांचे कार्यक्षेत्र होते. परंतु तेथील काही कार्यकर्ते प्रतिसरकारच्या चळवळीकडे आकर्षित होवून जी.डी.बापूंकडे आले. सांगलवाडी येथे तुफान सेनेचे शिबीर घेण्याचे निश्चित झाले. पण पैशाचा प्रश्न निर्माण झाला. यावेळी विजयाताईंनी क्षणाचाही विचार न करता आपल्या ४ तोळे सोन्याच्या बांगड्या देवू केल्या. शिबिर घेण्यातील आर्थिक अडचण दूर केली.[९]

क्रांतिविरांगणा लिलाताई पाटील यांच्या सुटकेत सहभाग— खानदेशचे क्रांतिवीर डॉ. उत्तमराव पाटील यांच्या पत्नी सौ. लिलाताई पाटील या येरवड्याच्या तुरूंगात होत्या. त्यांना सोडवून आणण्याची योजना क्रांतिवीरांनी आखली. विजयाताई, जी.डी.बापू लाड यांच्याबरोबर या मोहीमेत सामील झाल्या. पूर्वनियोजनाप्रमाणे लिलाताई आजारी पडल्या. त्यांना ससून हॉस्पीटल येथे आणण्यात आले. तेथून त्यांना पसार करण्याचा बेत केला होता.सायंकाळी ६ वाजता लिलाताई हॉस्पीटल परिसरात फिरावयास बाहेर पडल्या. दोन पोलीस सोबत होते. जी.डी.बापू व महादेव मिरगे यांनी त्या पोलिसांवर झडप घालून त्यांना खाली पाडले. क्रांतिवीर कळके यांनी लिलाताईंना सायकलवर डबलसीट घेतले. सायकल संगम पुलाजवळ आली. तेथे विजयाताई टॅक्सी घेवून हजर होत्या. त्यांना घेवून त्या रास्ता पेठेतील जी. एस. पाटील यांच्या घरी गेल्या. पोलिसांना चुकवून जी.डी.बापू व मिरगे हेही तेथे आले. क्रांतिकारकांचे सहकारी गोविंदराव मिरगे यांची पत्नी शालुकाकी या नुकत्याच बाळंत झाल्या होत्या. त्यांचे १५

18-19

AARHAT MULTIDISCIPLINARY INTERNATIONAL EDUCATION RESEARCH JOURNAL (AMIERJ)

SJIF Impact Factor 6.236

Peer Reviewed Journal

ISSN 2278-5655,

Volume–VIII, Special Issue–XIII

INDEX

Sr. No	Title Name	Name of the Perticipiate	Page No.
1	स्वातंत्र्यपूर्व सुधारणावादी वृत्तपत्रांच्या संपादकांचे योगदान	प्रा. डॉ. धीरज सुरेश शिंदे	1
2	ग्रामीण विकासात शेतीचे योगदान	प्रा. डॉ. भोसले शिवाजी मुरलीधर	6
3	ग्रामिण विकासात विकास सहकारी संस्थांची भुमिका	प्रा. डॉ. सचिन रमेश तोरडमल	11
4	ग्रामविकास' एक काळाची गरज	डॉ. चांगदेव अरविंद बंडगर प्रा. प्रविण बाजीराव साळुंके	14
5	सातारा आणि लातूर जिल्ह्यातील भूजल पातळीचा तौलनिक अभ्यास	प्रा.एस.एच .गर्जे	18
6	राधानगरी तालुक्यातील जलसिंचनामुळे ओलिताखालील क्षेत्रात वाढ	प्रा. डॉ. विजय विष्णू पाडळकर	21
7	दूध सहकारी संस्था आणि ग्रमीण विकास	प्रा. महेंद्र बापू जाधव	26
8	खंडकरी शेतकरी चळवळीत कॉम्रेड पी. बी. कडू पाटील यांचे योगदान	प्रा. विधाटे गणेश शंकर	32
9	ग्रामीण विकासामध्ये कृषि विज्ञान केंद्राची भूमिका	दगडू तुकाराम भागडे	38
10	स्वातंत्र्योत्तर भारतातील ग्रामीण भागाचा विकास आणि पंचायत राजव्यवस्था	प्रा. ओंकार नरेंद्र केने	43
11	ग्रामीण विकासातील भूदान चळवळीचे योगदान	विवेकानंद माने	47
12	साहित्यिक प्रल्हाद धामणकर जीवन व कार्य	प्रा. सुनिल दिनकर पवार	51
13	बदलता ग्रामिण भारत	वासनीकर श्यामराव लक्ष्मण	55
14	महाराष्ट्र राज्यातील प्रशासनावर माहिती – तंत्रज्ञानाचा पडलेला प्रभाव	प्रा. डॉ. व्ही. बी. शिंदे	58
15	शिक्षणतज्ज्ञ ताराबाई मोडक आणि बालशिक्षणाचे ग्रामिणीकरण	प्रा. डॉ. सौ. स्वाती रा. सरोदे	63
16	बचत गटाच्या माध्यमातुन ग्रामीण स्त्रियांचा विकास	प्रा. श्रीमती शिंदे सुरेखा सतीश	67
17	ग्रामीण विकासामध्ये स्थानिक स्वशासनाचे महत्वाचे व अडचणी	प्रा.डॉ. भिमाशंकर मधुसूदन डहाळके	76
18	ग्रामीण विकासातील जिल्हा परीषदेची भूमिका– एक अभ्यास	भालचंद्र नागनाथ बिचितकर	79
19	भारतातील औद्योगिक क्षेत्रामध्ये झालेल्या थेट परकीय गुंतवणूकीचा विशेष अभ्यास	प्रा. सुतार अनिल उत्तम	82
20	बीस बरस उपन्यास में चित्रित ग्राम जीवन	प्रा. शौकत आतार	88
21	रामदरश मिश्र के कथा साहित्य में ग्राम समस्याओं का चित्रण	गणेश दुंदा गभाले	90

ग्रामीण विकासातील भूदान चळवळीचे योगदान

विवेकानंद माने.
सहा. प्राध्यापक, क्रांतिअग्रणी जी. डी. बापू. लाड महाविद्यालय, कुंडल, ता. पलूस, जि. सांगली.

भूदान चळवळीचा जन्म झाल्यापासून साठहून अधिक वर्षे झाली आहेत. आजच्या आव्हानांना तोंड देण्यासाठी आपण या चळवळीतून काही धडे काढू शकतो का? जरी हे आंदोलन लोकांमध्ये, विशेषत: ग्रामीण भागातील लोकांमध्ये नवीन चेतना आणण्याचा प्रयत्न करीत होते. या चळवळीने ग्रामीण भागातील जमीनविषयक एक जटिल आणि भयानक समस्येचा एक नवा आणि अभूतपूर्व उपाय सादर केला आणि त्यातून वैयक्तिक आणि सामाजिक जीवनात बदल घडवून आणण्याचा मार्ग दर्शविला. आजही भूदान चळवळीला जन्म देणारी जमीन समस्या बदललेल्या स्वरुपात अस्तित्वात आहे. शेतकऱ्यांना त्यांची जमीन वाचवण्यासाठी सर्वत्र लढे द्यावे लागत आहेत. भूदान किंवा ग्रामदान चळवळीने गावातील तोडणीच्या प्रक्रियेविरुद्ध लढा दिला, जो वसाहत काळातील देशात सुरू झाला होता. ती प्रक्रिया अद्याप चालू आहे.

जेव्हा देश स्वतंत्र झाला तेव्हा जमिनीची समस्या ही अत्यंत गंभीर आणि जटिल समस्यांपैकी एक होती. मध्ययुगात राज्याच्या वाढत्या मागणीमुळे जमिनीचा महसूल वाढू लागला. ब्रिटिश साम्राज्यवाद काळात तो अविश्वसनीय पातळीवर पोहोचला. परिणामी, शेतकरी कर्जाच्या सापळ्यात आला. जमीन एक विक्रीयोग्य वस्तू बनली म्हणून, शेतकरी त्यांची जमीन ताब्यात घेण्यास प्रारंभ करू लागले आणि त्यांनी अनुपस्थित जमीनधारकांच्या हाती लक्ष केंद्रीत केले. शेतकरी मजूर बनले. त्यांचे शोषण चालू झाले. जमिनीची प्रजनन क्षमता आणि शेती उत्पादनांच्या कमी किंमतीमुळे ही समस्या वाढली. संपूर्ण शेती आणि जमीनव्यवस्थेचा नाश झाला.[१]

१५ ऑगस्ट १९४७ रोजी देश स्वतंत्र झाला. पण हे केवळ केंद्रात राजकीय शक्तीचे हस्तांतरण होते. देशाच्या सात लाख गावांच्या दृष्टीकोनातून गांधीजींनी आपल्या शेवटच्या करारामध्ये लिहिले होते, देशाचे सामाजिक, नैतिक आणि आर्थिक स्वातंत्र्य अद्याप प्राप्त झाले नाही. जमिनीच्या समस्येचा कायमस्वरूपी उपाय शोधणे, शेतकऱ्याला मदत करणे गरजेचे नव्हते तर खऱ्या आणि पूर्ण स्वातंत्र्यासाठी पाऊल उचलणे देखील आवश्यक होते. स्वातंत्र्य चळवळी, शेतकऱ्यांच्या चळवळीला गांधीजींनी नेहमीच प्रयत्न केले होते. अगदी स्वातंत्र्यापूर्वीच जमीन सुधारणे, जमिनदारी व्यवस्थेचे उच्चाटन, भाडेकरुंचे संरक्षण, सहकारी शेती या विषयावर चर्चा करण्यात आली होती.[२] म्हणूनच, स्वातंत्र्यानंतर शेतकऱ्याच्या हिताची काही पावले उचलणे स्वाभाविक होते. पण लोकशाही संरचना आणि प्रक्रियाला काही मर्यादा होत्या. देश अन्नधान्याच्या आयातीवर अवलंबून होता, म्हणून उत्पादन वाढणे आवश्यक होते. अर्थशास्त्रज्ञांचा असा विश्वास होता की जमिनीचे पुनर्वितरण केल्यामुळे अन्न उत्पादनावर प्रतिकूल परिणाम होईल.[३] पण देशातील जमीन मालकीच्या प्रचंड असमानतेवर उत्तर शोधणे आवश्यक होते. केवळ आर्थिक आणि सामाजिक न्यायच नव्हे तर उत्पादकता वाढवणे आवश्यक होते. शेतमजूर जमिनीवर मजूर करीत होते, पण तो मालक नव्हता. त्याला जमिनीची मोठी भूक होती. जर जमीन मिळाली तर त्याला रोजगाराचा कायमचा स्त्रोत मिळेल. गरिबी आणि शोषण कमी केल्याने शेती उत्पादनात वाढ होऊन शेवटचा मनुष्य स्वातंत्र्याचा अनुभव घेऊ शकतो. जमिनीचे पुनर्वितरण करण्याची गरज ही स्पष्ट होती परंतु सरकारच्या विविध योजनांमध्ये भूमिहीनांसाठी काहीच नव्हते. जमिनीच्या समस्येचा कायमस्वरूपी उपाययोजना करण्यासाठी भूदान चळवळ सुरु झाली.

ISSN 2277-8063

December 2019

Vol. VIII / Issue - IV / 2019

Navjyot नवज्योत

International Interdisciplinary ResearchJournal
[Humanities, Social Sciences,Languages,
Commerce &Management]

Chief Editor
Prof. Dr. Ravindra P. Bhanage
Dept. of Political Science,
Shivaji University,
Kolhapur.

Editor
Dr. Pyarelal Suryawanshi
Prof. Rajabhau Deshmukh
Mahavidyala,Nandgaon,(kh)
Dist.-Amravati.

- Published by-
HOUSA Publication, Kolhapur.

K.Dr.G.D. ... Mahavidyalaya KUNDAL Tal.Palus, Dist.Sangli

CONTENTS

S.N.	Subject	Title	Author	P.No.
1	राज्यशास्त्र	विधानसभा निवडणूक आणि विदर्भ	प्रा. डॉ. रविंद्र भणगे	1-6
2	राज्यशास्त्र	विधानसभा निवडणूक आणि पक्षीय संदर्भ	प्रिया पोवार	6-9
3	राज्यशास्त्र	विधानसभा निवडणूक आणि राष्ट्रीय संदर्भ	प्रा. कांबिरे रोहिणी भाऊसाहेब	10-12
4	राज्यशास्त्र	महाराष्ट्र विधानसभा निवडणूक आणि पक्षीय संदर्भ	प्रा. मुल्ला शाहीद मुस्ताक	13-17
5	राज्यशास्त्र	२०१९ च्या महाराष्ट्र विधानसभा निवडणुकीचा आढावा	प्रा. मनोज श्रीकृष्ण मगर	18-20
6	राज्यशास्त्र	विधानसभा निवडणूक २०१९ व पक्षीय संदर्भ	श्री. केतन दत्तू लाटे	21-22
7	राज्यशास्त्र	महाराष्ट्राचे राजकारण आणि बदलते राजकीयसत्ता समीकरण : पश्चिम महाराष्ट्राचे विशेष संदर्भ	डॉ. संगमेश्वर निला	23-34
8	राज्यशास्त्र	विधानसभा निवडणूक आणि नेतृत्व स्पर्धा	अनिल विठ्ठल हंकारे	35-40
9	राज्यशास्त्र	१७ वी लोकसभा निवडणूक २०१९	डॉ. आण्णासाहेब हारदारे	41-43
10	हिंदी	रांगेय राघव की कहानियों में चित्रित सामाजिक यथार्थ	प्रा. जे. ए. पाटील	44-46
11	हिंदी	भारतीय किसानो की व्यथा व स्थिती का चित्रण	प्रा. संपतराव सदाशिव जाधव	47-50
12	राज्यशास्त्र	महाराष्ट्र विधानसभा निवडणुका २०१९ : सोलापूर जिल्ह्याचा स्थानिक संदर्भ	प्रा. डॉ. मोहन चौगुले	51-61
13	Economics	TRENDS AND PATTERNS OF EMPLOYMENT IN INDIA	Dr. T. K. Udgirkar D. K. Pathrut	62-64
14	Sociology	DR. B.R.AMBEDKAR'S THOUGHTS ON CASTE SYSTEM IN INDIA.	DR. M. G. Dhuture	65-69

 ISSN 2277-8063

रांगेय राघव की कहानियों में चित्रित सामाजिक यथार्थ

प्रा. जे. ए. पाटील, क्रांती अग्रणी जी. डी. बापू लाड़ महाविद्यालय, कुंडल.

भूमिका –

रांगेय राघव के सामाजिक विचार मनुष्य के सामाजिक जीवन में उसके भौतिक परिवेश और परिस्थितियों के प्रति प्रतिक्रिया के व्दंद को संकेतित करते है। उनकी कहानियाँ सामाजिक और राजनीतिक जीवन के व्यापक तथा यथार्थ बोध से सीधा साक्षात्कार कराती है और जीवन के अनुभूत यथार्थ को सामने लाती है जिसमें से जीवन की गहराई जानने का प्रयास किया जा सकता है। रांगेय राघव अपनी कहानियों में ग्रामीण और शहरी निम्न वर्ग, मध्यवर्ग के सुख दुख के साथ उच्चवर्ग के शोषण तथा अत्याचारों को भी चित्रित करते है। उन्होंने अपनी कहानियों में उपेक्षित वर्ग को वाणी देने का सफल प्रयास किया है।

1. उपेक्षितो के प्रति सहानुभूति –

रांगेय राघव ने अपने उपन्यासों की भाँति अपनी कहानियों में भी एक ओर गरीब मनुष्य के शोषित जीवन और दूसरी ओर उपेक्षित तथा शोषितों के सामाजिक पक्ष को अभिव्यक्ति दी है। 'अंगारे न बुझे', 'नरक' जैसी कहानियाँ लोहपीटों, बंजारों और कंजरों के उपेक्षित, दीनहीन जीवन को दिखाती हैं, तो 'मरघट का देवता'और 'मुर्दे'जैसी कहानियाँ स्मशानवासियों के उपेक्षित अभिशप्त जीवन को उभारती है। उसमें इस सत्य को उभारा है कि लाशों से सदा संबंध रहने से जीवन का रंग –रुप, आशा – खुशी इनके लिए केवल एक झोल है। जीवन और मृत्यु की सीमा पर रहनेवाले इन मानव जीवन की भावनाएँ कुछ उछलती हुई तत्काल ही दबकर लाशों की भाँति चेतनाहीन हो जाती है। फिर भी प्रतिदिन मृत्यु के दर्शन होने पर भी जिंदगी से इनका मोह नहीं छूटता। इसलिए लाशों के लिए दी जानेवाली लकडी मैहंगी दामों में बेचने का मोह उनमें सदैव रहता है।

'अंगारे न बुझे' और 'नरक' कहानियों में चित्रित उपेक्षितों से लगता है – कि "आज तक इनकी ओर समाज का ध्यान नहीं गया। इन तक सूर्य की किरन अर्थात सभ्यता की रोशनी तक नहीं पहुँची। तभी तो वे चलते – चलते जीवन बिता देते है। उन्हें एक जगह टिक कर जीना नहीं आता । वे सूर्य के डूबने से सूर्य के उगने तक एक स्थान पर रहते है। फिर जैसे भूमि व्यर्थ हो जाती है वे आगे बढ जाते है"1 उपेक्षितों के प्रति सहानुभूति उपरी कथन से दिखाई देती है।

2. गरिबों की भयावह जिंदगी का यथार्थ चित्रण –

रांगेय राघव ने अपनी कहानियों व्दारा समस्त सामाजिक जीवन को उसके यथार्थ रुपमें चित्रित करने का प्रयास किया है। इसलिए समाज के बंजारे, लोहपीटे जैसे उपेक्षित वर्ग को वाणी देने का प्रयास किया है। उसके साथ – ही – साथ समाज के निम्नवर्ग के गरीब अर्थहीन जिंदगी को भी उन्होंने चित्रित किया है। गरीब भले ग्रामीण हो या शहरी उनकी स्थिति में कोई अंतर नहीं है। इस सत्य का नग्न रुप उनकी 'तिरिया', 'भय', 'गदल', 'गँज', 'आवारा', 'अच्छाबुरा', 'अभिमान', 'फूल का जीवन', 'नरक', 'इंसान' आदि कई कहानियों में दिखाई देता है।

ग्रामों में जीवन आज भी संस्कारों से जकडा हुआ है। ये संस्कार भोली – भाली जनता पर प्रेत बन चिपके हुएं है। इनके प्रभाव से ही तो 'भय' कहानी के न तुरसी और न पत्नी धूपों में इतनी शक्ति है कि वे अपनी बहु के साथ हुई बर्बर अमानुष्यता के प्रति मुँह खोल सके। उल्टे धूपों सोचती है-" यह बात तो कैसे भी छिपानी होगी।"2 अपने खिलाफ हुएं अन्याय के प्रति आवाज नहीं उठा सकते। प्रस्तुत कहानियों में अंतहीन गरिबी, भुखमरी और भीख ही जैसेउनकी नियति है। लेखक समाज में छोटे, उपेक्षित, गरीब, आवारा समझे जानेवाले लोगों का यथार्थ चित्रण करते है।

K. G. B. L. Mahavidyalaya KUNDAL Tal. Palus. Dist. Sangli

Dr. G. Bapu Lad Mahavidyalaya, Kundal, Krantiagrani

ISSN 2349-638x
Impact Factor 6.293

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

PEER REVIEW & INDEXED JOURNAL
Email id : aiirjpramod@gmail.com
www.aiirjournal.com

SPECIAL ISSUE No. 64

Executive Editor
Dr. S.M. Maner
Principal
Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Co-Editor
Prof. V. H. Chavan
Head, Dept. of Hindi
Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Chief Editor
Prof. Pramod Tandale

Sr No	Author Name	Title of Article / Research Paper	Page No.
87.	डॉ. विजय कुमार	इलेक्ट्रॉनिक मीडिया	239
88.	प्रा.डॉ.एस.एस. कदम	हिंदी वर्तनी का मानक रुप	243
89.	श्री जगन्नाथ आबासो पाटील	वेब साहित्य का हिंदी भाषा के विकास में योगदान	245
90.	प्रा. निर्मला लक्ष्मण जाधव	मिडिया में फिचर लेखन की कला	247
91.	डॉ. संजीव्कुमार नरवाडे	हिंदी भाषा अध्ययन के रोजगाराभिमुख आयाम (इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के विशेष संदर्भ में)	251
92.	संतोष तुकाराम बंडगर	इक्कीसवीं सदी का दौर और अनुवाद का महत्व	253
93.	सागर गणपत यादव	अनुवाद : अवधारणा एवं क्षेत्र	255
94.	सतीश कृष्णात पाटील-कोले	इलेक्ट्रोनिक मीडिया में रोजगार के अवसर	257
95.	डॉ. आरिफ महात	भाषा अध्ययन में रोजगार की स्थिति एवं गति	259
96.	प्रा.डॉ. विनय एस. चौधरी	हिंदी भाषा अनुवाद और रोजगार के अवसर	261
97.	सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण	रोजगारोन्मुख हिंदी का वर्तमान परिदृश्य	263
98.	डॉ. रमेश विठोबा कांबळे	मीडिया महिलाओं के लिए एक रोजगार	265
99.	डॉ. पल्लवी भूदेव पाटील	अनुवाद तथा भाषा विज्ञान अंतरूसंबंध	268

ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com

वेब साहित्य का हिंदी भाषा के विकास में योगदान

श्री जगन्नाथ आबासो पाटील
अध्यक्ष हिंदी विभाग
क्रांतिअग्रणी जी. डी. बापू लाड
महाविद्यालय, कुंडल, जिला- सांगली (महाराष्ट्र)

सारांश

हिंदी की विकास यात्रा ७०० इसवी से शुरू हुई है| जिस हिंदी को आज हम जानते है उसका भी दो सौ साल सें ज्यादा का इतिहास है | किताबी आंकडों के छलाव कुछ भी हो विश्व में हिंदी जाननेंवालें की संख्या सबसे अधिक है| सन १९३६ के बाद से तो हिंदी विश्व की सबसे तेज बढनेवाली भाषांओ में से एक है| कमाल की बात यह है कि हिंदी में कूँजी और तकनीक के बावजुद ऐसा संभव हुआ है और हो रहा है | अंग्रेजी, जिस के विकास और प्रसार के लिए अब तक अरबों डॉलर खर्च हुए और जिसे विश्व भाषा कहकर अमूमय हर कॉमनवेल्थ देश के सिर-माथे बैठाया गया, उसे वैज्ञानिक और तकनीकी खोजो का लाभ भी भरपूर मिला|

संचार के लगभग सभी मध्यमों में अंग्रेजी का कब्जा सबसे पहले हुआ| इसके कारणों को ढूँढना हमारा मकसद नहीं, मगर हम कुछ कमियों के बावजुद हिंदी के लगातार फैलते जाने की वजह जरूर सामने लाना चाहते है| इस भाषा की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और इसे बोलनेवालों की भावना, जिसका लोहा मनवाने के लिए किसी हिमायती की दरकार नहीं है | हिंदी जानने-समझनेंवालों की व्यापारिक – व्यावसायिक महत्वकांक्षाएं किसी से कम नहीं| इस भाषा का राग और रस, संस्कृत के छदों और उर्दू की पूरअसर शायरी की विरासत से झरता है| इसके बोलनेवालों में अदम्य जीजिविषा समाई है, इसलिए आजादी के पहले अंग्रेजों और उसके बाद अंग्रेजदां लोगों की बहुआओं के बाद इसका जादू चलता ही रहा|

शिक्षा क्षेत्र के नविनतम् अध्ययन् बता रहे हैं कि–"मानव मस्तिष्क की सर्वश्रेष्ठ क्षमताए उसकी मातृभाषा में ही विकसित होती है|" मुह्ल्लों तथा महाविद्यालयों की पोल लोगों की नजर आने लगी है | अब लोगों का ध्यान नए सिरे से अपने बच्चों को हिंदी सिखाने की तरफ जा रहा है, क्योकि अंग्रेजी मोह के चक्कर में हमारी पूरी एक पिढी न घर की और न घाट की रही है, इसलिए ताज्जूबनहीं होना चाहिए की आनेवाले दिनों में प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा का लोकप्रिय और प्रामाणिक माध्यम हिंदी तथा कुछ भारतीय भाषाए हो जाए |

दूसरी ओर अप्रवासी भारतीय भाषा-भाषियों के सामने खडे पहचान के संकट से निपटने में हिंदी संपर्क के भाषा के रूप में सार्थक सिद्ध हुई है | भाषा और पहरावा एक पताका की तरह उनके साथ होते है जो अपनी मां और मिट्टी से खुद को ममता के मजबूत तारको बांधे रहते है | नतीजा यह निकल रहा है की हिंदी फैलती गयी है| व्यापार, वाणिज्य तथा ज्योतिष के क्षेत्र में आज देश की प्रचलित भाषा हिंदी है यहा तक की कैरियर के विकास के लिए पिछलेएक दशक में हिंदी का चलन धीरे-धीरे बढा है | पिछले एक दशक से आईएएस औरएलाईड सेवाओं में लगभग एक चौथाई लोग हिंदी माध्यम में परीक्षा देकर प्रवेश पाने लगे है|

ऐसे वातावरण में इंटरनेट के जरिए पनप रहे विश्वव्यापी संजाल पर नजर जानी मुनासिब है| ऐसा हो नहीं सकता कि एक बढ्ती हुई भाषा और उसे बोलता हुआ महत्वाकांशी तबका तकनीकी बदलाव से देरतक मुंह मोडे रहे| संसदीय लोकतंत्र, जिसे गालिबन संवाद पर टिकी शासन व्यवस्था माना जाता हैं, खुलेपन के दौर में ऐसे संजाल को पनपानें और उसके लाभ उठाने में आखिर क्यों पीछे रहेगी? जाहीर है कि दुनिया के सबसे बडे लोकतंत्र और सबसे बहुरंगी विशाल बाजार व्यवस्था में जैसे जैसे मशिने सुलभ और सस्ती हो जायेंगी वैसे वैसे उन्हें अपने ढंग से इस्तमाल करने वाले भी आगे आयेंगे |

यही लगता हैं कि भारतीय भाषाओं, खास कर हिंदी का चलन कम्पुटर और इंटरनेट पर इससे भी आगे बढ़ेगा | माहोल को देखकर उद्यमियों और निवेशकों ने अपनी कमर कस ली हैं | इंटरनेट पर हिंदी महजमिशन या सेवाभाव का मामला नहीं हैं यह शुद्ध व्यवसाय है और वह भी लाभ का | यहा पूंजी फसाकर उतना लंबा इंतजार भी नही करना हैं जितना 'याहू' या इस किस्म के अंग्रेजी पोर्टलों को करना पडा | इंदोर में भी श्री विनय छजलानी ने हालत को तौलकर सितम्बर १९९९ में पूर्व प्रधानमंत्री इंद्रकुमार गुजराल के हाथों हिंदी के पहले पोर्टल 'वेबदुनिया का लोकार्पण दिल्ली में कराया | इंटरनेट पर इसका पता है www.webdunia.com | शुरुआती दौर में इंटरनेट परअपने उपयोग कर्ताओं के लिये उसके पास चार या पाच भाषा में संवाद की सुविधा और परोसने को उमदा सांस्कृतिक्साहित्यिक सुगंध सहित व्यापक समाचार सामग्री थी| श्री प्रकाश हिंदुस्थानी ने संपादकीय कमान संभाली और अमित गोयल जैसे लोग तकनीकी मोर्चे पर रहे|

19-20

SWOC Analysis of Kirana Shops

OPEN ACCESS

Volume: 7

Issue: 3

Month: July

Year: 2019

ISSN: 2320-4168

Received: 20.06.2019

Accepted: 27.06.2019

Published: 01.07.2019

Citation:
Lupane, P. B. "SWOC Analysis of Kirana Shops." *Shanlax International Journal of Commerce*, vol. 7, no. 3, 2019, pp. 39-42.

DOI:
https://doi.org/10.34293/sijash.v7i1.574

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License

P.B.Lupane
Assistnat Professor, K.G.D. Bapu Lad College, Kundal, Sangli District, Maharashtra, India

Abstract
The private village shops are the backbone of rural retail marketing. Private retail shops are ideal agencies for village distribution. There are around 2 million sales outlets at the retail level in rural India. One retail shop is serving around 600 families in the rural retail marketing. The retailer to consumer ratio has been very low with many such shops often located close to people residence, near to home and at the corner of the street, thus making location and convenience a major factor for their popularity. Kirana shop is one of the easiest ways to generate self- employment as it requires limited investment in land, capital and human resource. Kirana shops are unique business models in India especially in rural areas which are offering personal services and quality products as per demand of customers. A Kirana shop normally a range from 25 to 400 square feet with a various range of products which are daily requirement of customers. The total area of Sangli district is 8,572 sq. Mt. and there are 10 talukas and 734 towns in Sangli district and registered kirana shops are 5,741. The researcher has collected required information and data from Kirana shopkeepers in Sangli district. The primary data is collected through questionnaire. Discussion, interviews, observation and necessary field work. The sample selection of kirana shops have been selected on the basis of 'Stratified Sampling Method'. While selecting villages, factors considered are the geographical location of taluka, such as East, West, North, South and Middle, and one village from each direction has selected Therefore, researcher has used ' Proportionate Sampling Method' for selecting taluka- wise kirana shops. Researcher has found that the kirana shops are competing with local bazaars which are to be started by big traders and wholesalers in the sample study area. Competition is the major factor for existence of Kirana shops. Recovery of dues from customers is another challenging problem of the existence of Kirana shops, The consumer behavior is changing because of new technology. Fashions, life styles etc. However, changing consumer behavior is affecting rural based kirana shops. So, now a day, they are suffering for their existence.
Keywords: SWOC Analysis, Kirana Shops, Sangli district.

Introduction

The private village shops are the backbone of rural retail marketing. Private retail shops are ideal agencies for village distribution. There are around 2 million sales outlets at the retail level in rural India. One retail shop is serving around 600 families in the rural retail marketing. The retailer to consumer ratio has been very low with many such shops often located close to people residence, near to home and at the corner of the street, thus making location and convenience a major factor for their popularity. Kirana shop is one of the easiest ways to generate self-employment as it requires limited investment in land, capital and human resource. Kirana shops are unique business models in India especially in rural areas which are offering personal services and quality products as per demand of customers. A kirana shop normally a range from 25 to 400 square feet with a various range of products which are daily requirement of customers. A significant historical reason underlying the perceived increasing importance of retailing is that its contribution to the economy is much more visible in the modern era than it was in the past. Now, retailing is up-coming as one of the major non-farming occupations in India. The total area of Sangli district is 8,572 sq. Mt. and there are 10 talukas and 734 towns in Sangli district and registered kirana shops are 5,741.

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)	Special Issue No. 47	ISSN 2349-638x

Recent Trends in Indian Banking

*** Dr. Pratap Bhagwan Gaikwad,**
Asst. Professor,
S. B. Khade Mahavidyalaya, Koparde,
Tal. - Karveer, Dist. - Kolhapur

****Pravinkumar B. Lupane,**
Asst. Professor,
Krantiagrani G. D. Bapu Lad Mahavidyalaya,
Kundal,
Tal. – Palus, Dist. – Sangli (Maharashtra)

1. Introduction:

History of digital banking started in 1994 through Microsoft money.100000 households beganaccessing their bank accounts online and now a day's digital banking covers every activity conducted by financial institution for their customers. Traditionally Commercial banks are those banks which provide financial aid to the business organizations and needy persons. They collect money in the form of public deposits and distribute it to the persons who need finance for business activities. But now a day's banks means not only to accept deposits and issues loans to the needy peoples but it is wider term in the era of digital banking. Presently these digital banks has plays a very crucial role in each and every part of human activities such as Shopping, Travelling, Eating, Healthcare, Entertainment etc.

2. Objectives of the study:

2.1 To study and understand concept of digital banking.
2.2 To study significance of digital banking.

3. Research Methodology:

This paper is based on secondary data. The researcher has collected necessary information from various books, magazines, websites, newspapers articles and govt. publications.

4. Meaning And Definition Of Digital Banking:

Digital banking is the digitalization of all the traditional banking activities and programmes that historically were only available to customers physically inside the bank. It includes:

1. Money deposits withdrawals and transfer
2. Saving account management
3. Applying for physical products
4. Loan Management
5. Bill pay and
6. Account services.

Online banking include internet banking virtual banking and e-banking but digital banking is wider term it covers all the programmes and activities undertaken by financial institution for their customers.

5. Significance of digital banking:

1. ATM Cards and Credit Cards were pioneers of digital banking.
2. Digital banking has made banking very much easier.
3. Advanced banking options help a customer to keep alert with many different features without visiting to a bank.
4. Mobile banking options helps to a customer that the customer can do online banking with smart phone.
5. The productivity of business houses has increased due to online banking which saves a lot of time on the manual process.
6. Easy transfer of money and payments will be made possible through online digital banking.
7. Online banking has made everything easy such as Shopping, Travelling, Eating, Healthcare, Entertainment etc.
8. Digital banking is the face of advanced technology so it vital to embrace it in most of our personal and business banking with huge potentiality.

6. Recent trends in banking:

6.1 Electronic Fund Transfer (EFT)-

The normal mode of money transfer is replaced by EFT. Here funds transferred electronically. This mode is much faster than the traditional such as Demand draft, Telegraphic transfer and Mail transfer etc.

Challenges Before Indian Retail Industry

***Pravinkumar B. Lupane,**
Asst. Professor,
Krantiagrani G. D. Bapu Lad Mahavidyalaya,
Kundal,
Tal. – Palus, Dist. – Sangli (Maharashtra)

**** Dr. Pratap Bhagwan Gaikwad,**
Asst. Professor,
S. B. Khade Mahavidyalaya, Koparde,
Tal. - Karveer, Dist. - Kolhapur

Abstract

Retailing in India provides employment to about 7% of total work force in the country and contributes about 14% to GDP of India. The Indian retail sector is the 2nd largest employer after agriculture. There are about 12 millions retail outlet spreads across India and the country has the highest density of shops in the world. A retailer is one who stocks the producer's goods and is involving the act of selling it to the individual consumer, at a margin of profit. Retailers are often referred to as 'middlemen' or 'intermediaries'. This suggests they occupy a middle position, receiving and passing on products from producers and wholesalers to customers. Retail industry has contributed to the economic growth of many countries and is undoubtedly one of the fastest changing and dynamic industries in the world today. Retailing has become such an intrinsic part of our everyday lives that it is often taken for granted. In India, 92 percent share of Unorganized Retail Sector and 8 percent Organized Retail Sector. Food and Grocery is the largest category within the retail sector with 60 per cent share followed by Apparel and Mobile segment. Indian retail industry facing some challenges but also grown successfully.

Key Words: Retail, organized, unorganized, challenges.

1. Introduction

India is the fifth largest retail destination globally from among thirty emergent markets, with a size of US$500bn., and is expected to grow at 7% over the next 10 years, reaching a size of US$ 850 billion by 2020. The retail industry is definitely one of the pillars of the Indian economy. In India, the retail sector is the 2nd largest employer after agriculture. In fact due to wide network of retailing in India it is known as nation of shopkeepers. There are about 12 millions retail outlet spread across India and the country has the highest density of shops in the world i.e. one shop for every 20 to 25 families or 11 retail shop for every 1000 persons, While it is only four shops per 1000 persons in USA. Currently, India has one of the largest numbers of retail outlets in the world. Retailing in India provides employment to about 7% of total work force in the country and contributes about 14% to GDP of India. However the retailing sector in India is highly fragmented and consists predominantly of small, independent and owner managed shop.

2. Objectives

1) To understand growth of retail industry in India.
2) To know the challenges before retail marketing.

3. Research Methodology

This paper is based on secondary data and discussion with retailers and consumers.

Retailing is a marketing activity. As such, it is a vital part of the total system of activities that the business sector performs in planning, pricing, promoting, and distributing products and services that will satisfy the wants and needs of present and potential customers. This system begins with extractive and/or manufacturing firms and ends with the final consumer. Within the system there is an ongoing process of movement and storage of goods so that the consumer can conveniently purchase desired and needed products at the time that he or she wants to. Retailing is not only an integral part of our economic structure but also shapes, and is shaped by, our way of life.

The term **'retail'** has derived from French word **'retailer'** which means 'cutting off, clip and divide'. It was used first time in the year 1365. In commerce it referred as selling of a product in small quantity to an end user is known as retailing. A retailer is one who stocks the producer's goods and is involving the act of selling it to the individual consumer, at a margin of profit. As such, retailing is the last link that connects the individual consumer with the manufacturing and distribution chain. Retailers are often referred to as 'middlemen' or 'intermediaries'. This suggests they occupy a middle position, receiving and passing on products from producers and wholesalers to customers.

Retail is defined as:

'Any business that directs its marketing efforts towards satisfying the final consumer based upon the organization of selling goods and services as a means of distribution'.

The concepts assumed within this definition are quite important. The final consumer within the distribution chain is a key concept here, as retailers are at the end of the chain and are involved in a direct interface with the customer.

19-20

प्रकाशन - दि. ५ जुलै २०१९

(मासिक)

नवे-गांव आंदोलन

जुलै २०१९ जन-गण-मन

उद्याचा महाराष्ट्र भाग : ३

स्वातंत्र्य संग्राम स्मृती संस्था, शांतिनिकेतन, सांगली

Scanned by CamScanner

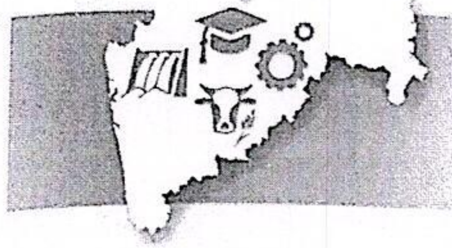

महाराष्ट्राचे आरोग्य सुधारणार कसे?

डॉ. मोहन सदामते
क्रांतीअग्रणी जी.डी.बापू लाड महाविद्यालय, कुंडल

प्रस्तावना : आज मानवाला जीवन जगण्यासाठी अन्न,वस्त्र, निवारा या मूलभूत गरजा बरोबरच नव्याने शिक्षण आणि चांगले आरोग्य या मूलभूत गरजा आवश्यक मानल्या जाऊ लागल्या आहेत. भारतीय राज्यघटनेच्या कलम ४७ नुसार जनतेच आर्थिक कल्याण साध्य करण्यासाठी लोकांची राहणीमानाची पातळी उंचावणे आणि लोकांच्या आरोग्याचे संरक्षण करणे हे सरकारचे प्रमुख कर्तव्य मानले आहे. देशात सार्वजनिक आरोग्याच्या दृष्टीने १९८३ मध्ये राष्ट्रीय आरोग्य धोरण राबविण्यात आले त्यानंतर सन २००२ मध्ये आरोग्य धोरण राबविण्याचा प्रयत्न केला. या धोरणाच्या माध्यमातून जनतेसाठी आरोग्यविषयक पायाभूत सेवा सुविधा विकासावर भर देण्यात आला.

महाराष्ट्र राज्य हे आरोग्य विषयक सेवा विकसित करण्यामध्ये अग्रेसर राज्य आहे. महाराष्ट्र सार्वजनिक, खाजगी तसेच स्वयंमसेवी संस्था यांच्याकडून आरोग्य विषयक सेवा पुरविल्या जातात. आरोग्य विषयक सेवा जनतेला पूरविणे या प्रमुख उद्देशानुसार महाराष्ट्रात ग्रामीण, आदिवासी आणि शहरी भागात आरोग्यविषयक सुविधा पुरविण्यावर महाराष्ट्रातील सरकारने लक्ष दिले आहे.

महाराष्ट्रातील सार्वजनिक आरोग्य सेवा:

महाराष्ट्राच्या सार्वजनिक आरोग्य सेवा विभागामध्ये प्राथमिक आरोग्य केंद्र १८११, त्यांचे उपकेंद्र १०८५० आणि ३७ आश्रयशाळा इत्यादीव्दारे राज्यातील जनतेला प्राथमिक आरोग्य सुविधा सेवा पुरविल्या जात आहेत.

१) प्राथमिक आरोग्य केंद्र : महाराष्ट्रातील आरोग्य सेवामध्ये प्राथमिक आरोग्य केंद्रात बाह्यारूग्ण विभाग, सहा खाटांचा आंतररूग्ण विभाग, तातडीच्या सेवा, शस्त्रक्रिया व प्रयोगशाळेच्या सुविधा विविध आरोग्य विषयक कार्यक्रमांची अंमलबजावणी आणि कुटूंबकल्याण सेवा इत्यादी प्राथमिक आरोग्य केंद्रामार्फत सुविधा दिल्या जातात. भारत सरकारच्या मार्गदर्शक सूचना प्रमाणे आदिवासी भागात २०००० लोकसंख्येमागे एक प्राथमिक आरोग्य केंद्र आणि बिगर आदिवासी भागात ३०००० लोकसंख्येचा निकष लावण्यात आला आहे. महाराष्ट्र जिल्हा परिषद परिनियम १९६१ नुसार प्राथमिक आरोग्य केंद्र बांधकामासाठी दुरूस्ती देखभालीसाठी अनुदान देण्यात येते. प्रत्येक प्राथमिक आरोग्य केंद्रात १५ कर्मचाऱ्यांची संख्या निर्धारित करण्यात आल्या आहेत. स्वच्छता व रूग्णवाहिका सेवा या करार पध्दतीने दिल्या जात आहेत.

२) उपकेंद्र : उपकेंद्रामध्ये प्रसूतीपूर्व तपासणी, किरकोळ आजारावर उपचार, माता आणि बाल आरोग्य सेवा, हिवताप, कुष्ठरोग इत्यादी विषयक औषधोपचार व सेवा पुरविल्या जातात. प्रत्येक उपकेंद्रामध्ये एक आरोग्य सेवक आणि एक आरोग्य सेविका व अर्धवेळ महिला परिचर कार्यरत आहेत. आदिवासी भागामध्ये ३००० लोकसंख्येमागे १ तर इतर भागात ५००० लोकसंख्येमागे १ उपकेंद्र स्थापन केले जाते.

३) व्दितीय स्तर आरोग्य सेवा (जिल्हा रूग्णालय) : महाराष्ट्रात जिल्हा रूग्णालयात विविध सेवा पुरविल्या जातात. त्यामध्ये शल्यचिकीत्सा, प्रसूतीशास्त्र, सामान्यवैधक, बालरोग, अस्थिरोग, मानसोपचार, त्वचारोग, छातीरोग, नेत्ररोग, नाक, कान, घसा, दंतआरोग्य इत्यादी विभागाच्या तज्ञ सेवा व्दितीय स्तर आरोग्य सेवेमध्ये दिल्या जातात. महाराष्ट्रात २८ उपजिल्हा रूग्णालये १०० खाटांची कार्यरत असून त्यापैकी २३ उपजिल्हारूग्णालय श्रेणीवर्धित करण्यात आले आहेत. १०० खाटांच्या रूग्णालयामध्ये दुय्यम स्तर रूग्णालयात ज्या सेवा दिल्या जातात त्याच सेवा उपजिल्हा रूग्णालयात दिल्या जातात.

४) ग्रामीण रूग्णालये : महाराष्ट्रात ३० खाटांची ३८७ ग्रामीण रूग्णालये मंजूर आहेत. त्यापैकी ३६० ग्रामीण रूग्णालये कार्यरत आहेत. ग्रामीण रूग्णालयामध्ये १ वैद्यकीय अधिक्षक, शल्यचिकित्सक, बालरोगतज्ञ व भूलतज्ञ यासारखे तज्ञ असतात. प्राथमिक आरोग्य केंद्राकडून संदर्भित केलेल्या रूग्णावर ग्रामीण रूग्णालयात उपचार केले जातात. रूग्णालयात २५ कर्मचाऱ्याचा आकृतिबंध असून सुरक्षा, रूग्णवाहिका, आहार स्वच्छता इ. सेवा करार तत्वावर दिल्या आहेत. राष्ट्रीय महामार्गावर असणाऱ्या रूग्णालयात ट्रामा दक्षता विभाग अलीकडे सुरू करण्यात आला आहे.

५) तृतीय स्तर दक्षता सेवा : राज्यात काही वैद्यकीय महाविद्यालयामध्ये अतिविशेष आरोग्य सेवा उपलब्ध आहेत. महाराष्ट्र सरकारने नाशिक येथे अतिविशेष उपचार रूग्णालय जून २००८ पासून सुरू केली आहे. या रूग्णालयामध्ये हृदयोपचार, शल्यक्रिया, मूत्रपिंड उपचार, व कर्करोग शल्यक्रिया या प्रकारच्या अतिविशेष सेवा दिल्या जातात. नाशिकप्रमाणेच अमरावतीमध्ये देखील अतिविशेष सेवा रूग्णालय स्थापन

Scanned by CamScanner

आधुनिक हिन्दी कविता के विविध आयाम

संपादक
डॉ० अनिल पाटील
प्रा० सुधाकर इंडी

ए. बी. एस. पब्लिकेशन
वाराणसी–221 007

15.	नागार्जुन के काव्य में यथार्थ एवं लोकदृष्टि **प्रा. डॉ.बालाजी बळीराम गरड**	86
16.	सुरेंद्र रघुवंशी की कविता में जनवादी चेतना **डॉ. चित्रा मिलिंद गोस्वामी**	90
17.	नागार्जुन : जनवादी काव्य एवं स्वरूप **पुष्पलता विठ्ठलराव काळे**	93
18.	जनआंदोलन के कवि निराला **प्रा. डॉ. अशोक बळी कांबळे**	96
19.	केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में जनवादी चेतना **सचिन मधुकर कांबळे**	99
20.	हिंदी काव्य में जनवादी चेतना **प्रा. सुवर्णा नरसू कांबळे**	103
21.	निर्मल गर्ग की कविता में नारी मन का चित्रण (पुत्रमोह कविता के संदर्भ में) **डॉ. रंजना आप्पासाहेब कमलाकर**	107
22.	मधुर शास्त्री की 'तदर्थ' काव्यसंग्रह में चित्रित जनवादी विचार **प्रा. डॉ. हेमलता वि. काटे**	110
23.	जनवादी कविता में चेतना **डॉ. भारत श्रीमंत खिलारे**	116
24.	'पहाड़ पर लालटेन' काव्य–संग्रह में चित्रित शोषण के विभिन्न आयाम **डॉ. संदीप जोतीराम किर्दत**	121
25.	आधुनिक हिन्दी कविता : एक सर्वेक्षण **डॉ. कुलदीप कौर**	128
26.	सर्वेश्वर के काव्य में जनवादी चेतना **डॉ. संतोष माने**	133
27.	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के काव्य में युग–यथार्थ **प्रा. सविता शिवलिंग मेनकुदळे**	137
28.	नागार्जुन की कविता में सामाजिक एवं राजनीतिक जनचेतना ('युगधारा' काव्य–संग्रह के विशेष संदर्भ में) **डॉ. एम. आर. मुंडकर**	140
29.	आधुनिक हिंदी कविता में जनवादी चेतना **प्रा. शुभांगी शंकर निकम**	145
30.	चंद्रकांत देवतालेजी की कविताओं में मध्यवर्गीय जीवन की त्रासदी **प्रा. जे. ए. पाटील**	151
31.	साठोत्तरी कविता में राजनीतिक चेतना **प्रा श्रीमती माधुरी शिवाजीराव पाटील**	156
32.	साठोत्तरी कविता में जनवादी चेतना **प्रा. संजय नारायण पाटील**	162
33.	जनवादी कवि शमशेर बहादुर सिंह **प्रा. संजीवनी पाटील**	168
34.	जनवादी कवि सुदामा पांडे 'धूमिल' **प्रा. डॉ. सरोज पाटील**	173
35.	केदारनाथ सिंह के समकालीन कविता में भावाभिव्यक्ति (यहाँ से देखो, अकाल में सारस के संदर्भ में) **प्रा. डॉ. विजया जगन्नाथ पिंजारी**	179
36.	जनवादी कवि गजानन माधव मुक्तिबोध **डॉ. वर्षाराणी निवृत्तिराव सहदेव**	184
37.	कवि धूमिल की स्वानुभूत जनवादी चेतना **डॉ. बबन सातपुते**	188
38.	मुक्तिबोध की कविता 'अंधेरे में' जनवादी चेतना **डॉ. सत्यनारायण एच.के.**	194
39.	मुक्तिबोध के काव्य में मानववाद **डॉ. मोहन सावंत**	198
40.	चंद्रकांत देवताले की कविताओं में जनवादी चेतना **डॉ. नाजिम शेख**	203
41.	धूमिल के काव्य में सामाजिक (जनवादी) भावबोध **डॉ. वैशाली सुनील शिंदे**	207
42.	'जंगल पहाड़ के पाठ' पढ़ाती आज की आदिम कविता **डॉ. शशिकांत सोनवणे 'सावन'**	211
43.	दिनकर के काव्य में नवचेतना **प्रा. डॉ. रशीद तहसिलदार**	216
44.	साठोत्तरी हिंदी कविता में सामाजिक चेतना **प्रा. शैलजा पांडुरंग टिळे**	219
45.	जनसरोकार की प्रखर अभिव्यक्तिः बाबा नागार्जुन **डॉ. दीपक रामा तुपे**	224
46.	अरुण कमल के काव्य में जनवादी चेतना और श्रमसाध्य यथार्थ **डॉ. राहुल उठवाल**	229
47.	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के काव्य में जनमानस के लिये संवेदना का भाव **डॉ. सुमन लता वर्मा**	236

बढाई है। अतः निश्चय ही आधुनिक दलित कविता अंधःकार से प्रकाश की ओर ले जानेवाली एक प्रखर विचारधारा की काव्यात्मक बुलंद अभिव्यक्ति है। 6

इतना ही नहीं आंबेडकरवादी साहित्यकार समस्याओं से रुबरु होकर क्रांति चाहता है और आधुनिक काव्यधारा में वह सफल रहा है।

समापन – इस प्रकार आधुनिक कवियों ने अपने काव्य में सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति दी है। उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि आधुनिक हिंदी कविता निरंतर विकासशील रही है। आज का आधुनिक हिंदी कविताओं को अनेक पड़ावों से गुजरना पड़ा है। सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अनेक परिवर्तन हुए हैं और अब भी उसमें अनेक परिवर्तन हो रहे हैं। मानव के बीच प्रेम–बंधुत्व, परोपकार, देश–प्रेम, साहस, सुख–दुःख, आर्थिक सामाजिक विषमता बाह्याडंबर का विरोध, मनोवैज्ञानिकता, सहृदयता, सांप्रदायिकता, ध्वन्यात्मकता, आलंकारिता, व्यंग्यात्मकता, यथार्थता आदि प्रवृत्तियों को समेट की गई काव्य की अभिव्यक्ति हिंदी साहित्य में खरी उतरी हैं। साथ ही सत्यं, शिवं, सुंदरम् को अपनाते हुए निरंतर परिवर्तन और विकास की दृष्टि से आधुनिक कविता अग्रसर हो रही है।

जीवन मूल्यों का निर्वाह करती हुई आधुनिक कविता हमेशा मानव जीवन की पथ–प्रदर्शक रही है। सीमित दायरे से बाहर निकलकर समाज का सर्वोपरि विकास करना आधुनिक कविता का लक्ष्य रहा है। आधुनिक कविता जीवनमूल्यों के साथ ही सभी परिपाश्र्वो का संस्पर्श करती हैं। अतः हम कह सकते हैं कि हिंदी कविता का भविष्य उज्ज्वल और आशामय है।

संदर्भ

1) संपादक – डॉ शिवाजी निकम, प्रा. जयवंत जाधव काव्यप्रभा – पृ.19
2) डॉ. हीरालाल जायसवाल 'हीरा' – साहित्यालोक – पृ.64
3) संपादक – डॉ. शिवाजी निकम, प्रा. जयवंत जाधव – काव्यप्रभा – पृ.87
4) संपादक – डॉ. अर्जुन चव्हाण, डॉ यादवराव धुमाल – साहित्य मंजूषा – पृ.123
5) दामोदर मोरे – हिंदी और मराठी साहित्य में आंबेडकरवादी चेतना – पृ.90
6) डॉ. पंडित बन्ने – अधुनिक हिंदी साहित्य विविध परिदृश्य – पृ.18
7) डॉ. हरदयाल आधुनिक हिंदी कविता – पृ.155

लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज
ऑफ आर्टस्, सायन्स ॲण्ड कॉमर्स,
सातारा ।

30

चंद्रकांत देवतालेजी की कविताओं में मध्यवर्गीय जीवन की त्रासदी

प्रा. जे. ए. पाटील

चंद्रकांत देवताले साठोत्तरी कविता के एक महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर है। साठोत्तरी हिन्दी कविता में शायद ही कोई कवि हो जो कविता को केवल सौंदर्य मूल्य तक रखना चाहता हो। कविता उसके लिए एक साधन है। आम जनता के दुःख दर्द के लिए कारण बनी विषम व्यवस्था को तोड़ने के लिए उनकी कविता अपने को सार्थक समझती है। कविता कवि के व्यक्तित्व का प्रामाणिक प्रारूप है तो यथार्थ की अनेक अनुभूतियों से सम्पन्न कवि व्यक्तित्व कविता लिखते समय सांस्कृतिक कार्यकर्ता भी रहेगा।

देवताले जी का स्वयं अपना जीवन भी सामान्य निम्नमध्यवर्गीय ही है। देवताले एक चिन्तनशील कवि है। धूमिल के बाद देवताले ही मध्यवर्गीय अपप्रवृतियों तथा उच्चवर्ग की हिंसक संस्कारहीनता पर टूट पड़ते हैं तब इनकी भाषा में अद्भुत धार पैदा होती है। देवताले की कविता का केंद्रीय विषय ही आम आदमी की हालत है। जनता की शक्ति पर उन्हें विश्वास है। जो लोग परिवेश से उठने से इन्कार कर देते है, उन्हें बौध्दिक समर्थन नहीं मिलता। कविता एक महत्त्वपूर्ण सार्थकता प्रदान करनेवाला साधन है। देवताले उपेक्षितों, शोषितों, पीड़ितों के पक्षधर है। श्रमिकों के साथ मध्यवर्गीय जीवन की यातना में उनकी दृष्टि मूलतः मनुष्य की वास्तविकता से सिध्द होकर संघर्षशील बनी हुई हैं। वे मनुष्य की यातना उसकी जिजिविषा और त्रासदी को देखते है।

राजनीतिज्ञों की चालाकी, निर्दयता, अमानवीयता और नकली मुखौटे के बीच जीवन जीने की व्यंग्यात्मकता पर कवि ने करारा व्यंग्य करते हुए कहा है कि देश में जब दंगे फसाद हो जाते है। तब शहर और गाँव में दहशत फैल जाती है। इन लोगों में साधारण जनता ही इस दहशत में भी डर के माहौल में भी अपनापन और भाईचारे का प्रमाण देती है। परंतु ये राजनीतिज्ञ साम्प्रदायिक दंगों में भी अपने ही स्वार्थ की बात करते हैं और जनता के सामने नकली हँसी हँसते हुए ईमानदारी का सबूत पेश करते है।

ISBN No. : 978-81-907287-8-2

शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर संलग्नीत

वुईमेन्स एज्युकेशन सोसायटी, सांगलीचे

श्रीमती मथुबाई गरवारे कन्या महाविद्यालय, सांगली.

शिवाजी युनिव्हर्सिटी इकॉनॉमिक्स असोसिएशन, कोल्हापुर.

(सुयेक)

२९ वे वार्षिक अधिवेशन

सोमवार, दि. २४ डिसेंबर व मंगळवार दि. २५ डिसेंबर २०१८

शिवार्थ

* अंक १८ वा * स्मरणिका २०१८

* स्वागताध्यक्ष *

प्राचार्य डॉ. आर. जी. कुलकर्णी

सुयेक, प्रमुख संपादक
प्रा. संजय ठिगळे

स्थानिक संपादक
प्रा. सुभाष दगडे

स्थानिक कार्यवाह
प्रा. डॉ. सौ. मंगल माळगे

स्थानिक सह.संपादक
प्रा. रोहिणी देशपाडे

* अर्थशास्त्र विभाग *

प्रा. मनोहर चादरे प्रा. संतोष शेळके प्रा. विनिता पाटील

Scanned by CamScanner

※ अनुक्रमणिका ※

- स्वागताध्यक्ष - मनोगत .... डॉ. आर. जी. कुलकर्णी ०५
- संपादकीय.. प्रा. संजय ठिगळे ०६
- स्थानिक संपादक - मनोगत.. प्रा. सुभाष दगडे ०८
- स्थानिक कार्यवाह-मनोगत.. प्रा.डॉ.सौ.मंगल माळी ०९
- सुयेक वार्षिक अहवाल २०१७-१८ .... प्रा.बी.जी.कोरे १०
- परिचय - अध्यक्ष, सुयेक २९ वे वार्षिक अधिवेशन.. १३
- अध्यक्षीय भाषण :.. प्रा. डॉ. प्रल्हाद माळकर १८

विषय : आरोग्याचे अर्थशास्त्र २७

- भारतातील सार्वत्रिक आरोग्य सुरक्षा (यूएचसी) .... डॉ. मोहन वाडापते ३०
- आरोग्य : मानव विकासाची गुरुकिल्ली.. प्रा.डॉ.सौ. सुनिता एस.राठोड ३४
- ग्रामीण आरोग्य व्यवस्था : एक दृष्टिक्षेप.. डॉ. बंडू जयसिंग कदम ४०
  .... डॉ. जगन्नाथ शामराव पाटील
- ठाणे जिल्ह्यातील मोखाडा तालुक्यातील आदिवासींच्या आरोग्यविषयक.... प्रा.डॉ.जे.एस.इंगळे ४१
- सरकार आणि सार्वजनिक आरोग्य.. प्रा. सुभाष दिगंबर दगडे ५७
  .... प्रा. संजय दादासो ठिगळे
- शेतीचे वाढते व्यापारीकरण आरोग्याला घातक .... प्रा. डॉ. अरुण योगेश्वर जाधव ६२
- सातारा जिल्ह्यातील आरोग्य विषयक सुविधांचा चिकित्सक अभ्यास ...... प्रा. प्रकाष के. टोणे ६६
- आरोग्य आणि मानवी विकास निर्देशांक.. प्रा.डॉ.प्रभाकर तानाजी माने ६९
  .... कु. गीता महादेव चिगरे (माने)
- आरोग्य संकल्पना आणि महत्त्व .... वृषाली विश्वासराव पाटील ७६
  .... अलका मारुती कचरे
- Health Status of Poor In Kolhapur District of Maharashtra In Social Perspective.. Prof. Dr. P. S. Kamble ८३
- Government financing for inclusive health in maharashtra ... Prof. (Dr.) P. S. Kamble १०४
  .... Dr. Vishal Vishnu Ovhal
- To Study Scenario Of National Rural Health Mission (Nrhm) In Maharashtra .... Prof. (Dr.) P. S. Kamble, ११५
  .... Mr. Vishal Madhukar Kurane
- Health cost: A case Study of Panchganga River Water Pollution in Kolhapur City .... Dr. Sachin A. Sardesai, १२६
  .... Prakash N. Shinde

Scanned by CamScanner

भारतातील सार्वत्रिक आरोग्य सुरक्षा (यूएचसी)

डॉ. मोहन सदामते
क्रांतिअग्रणी जी.डी. बापू लाड महाविद्यालय कुंडल
मोबा. ८०५५४९५५३७

गोषवारा

युनिव्हर्सल हेल्थ कव्हरेज अर्थात सार्वत्रिक आरोग्य सुरक्षा संबधी उच्चस्तरीय तज्ञ समूह ऑक्टोबर २०१० मध्ये भारताच्या नियोजन आयोगाने तयार केला होता, त्यांनी नोव्हेंबर २०११ मध्ये नियोजन आयोगाकडे आपला सादर अहवाल केला. खूप विचार-विमर्शानंतर, भारतातील सार्वत्रिक आरोग्य सुरक्षाची (यूएचसी) व्याख्या भारतातील यूएचसीची प्रणाली सादर करण्यासाठी दहा शिफारसींनी आमच्या शिफारसी तयार केल्या आहेत. २०२२ पर्यंत आरोग्य-देखभाल वितरण, पात्रता पॅकेज, आरोग्य-देखभाल हस्तक्षेपाच्या खर्चासंदर्भात केंद्रीय अर्थसंकल्पात वित्त पुरवठा करण्याच्या उद्देशाने यूएचसी साध्य करण्याच्या उद्दीष्टात सरकार अद्याप चिंताजनक आहे. हेल्थकेअर प्रदात्यांना तंत्रज्ञानाचा विकास आणि आरोग्य सेवा क्षेत्राला डिजिटाइज करण्यासाठी सरकारने प्रोत्साहन देणे आवश्यक आहे. सोशल मिडियाच्या माध्यामातून समाजाच्या आरोग्य विषयक गरजा, आरोग्य संवर्धक संदेश, आरोग्य विषयक कार्यक्रम, त्यांचे फायदे, त्या सेवा कुठे आणि कश्या मिळतील या सर्व गोष्टींच्या माहितीचा प्रसार करणे आवश्यकता आहे. सरकारच्या वतीने अशी माहिती नेशनल हेल्थ पोर्टल यावर उपलब्ध

Scanned by CamScanner

ROLE OF LIBRARIES IN CHANGING INFORMATION AND COMMUNICATION TECHNOLOGY (ICT) SCENARIO

Editor :
Dr. Manohar G. Shinde

SKILLS FOR LIS PROFESSIONALS IN THE DIGITAL ERA

Kishor N. Desai
Librarian,
Krantiagrani G.D. Bapu Lad Mahavidyalaya,
A/P-Kundal, Tal-Palus, Dist-Sangli.

Abstract

Libraries are of various types and each type has to fulfil certain objectives set out for it. In the 21^{st} century and communication technology are being redefined on a regular basis as per the characteristics the library has developed over a period of time. And, as we advance deep into the 21^{st} century, we may get all the information on our desks without even going to a library. Therefore if the libraries have to exist a temple of knowledge, as physical spaces, they have to become relevant and essential to their clientele.

We also notice that the users come to a library if it is relevant to them. In order to make a library relevant to its users, the library has to locate the precise requirements of its users and find out how it can help them. This is becoming important because of users have other options of getting information and these options are mostly through the Web.

Keywords: - Digital, Technology, ICT, Tacit, Institutional Repository, Skills.

Librarianship in the 21^{st} century: -

Various studies made recently about the changing role of librarians are not complimentary to the relevance of libraries. In the OCLC study "Research Libraries, Risk Systemic Change "reveals that Google and other resources may weaken the relevance of the library. The Ithaca faculty survey for 2009 reveals that librarians may have no role in the faculty information discovery and finding. Librarians are assigned to teaching departments and research facilities. It seems that libraries are facing pressures due to reduction in budgets, integrating new technologies, implementing new models, etc. The scene may worsen in future for libraries that do not become relevant in their institutions.

Classification of Skills: -

Gerolimas and Konsta findings based on the analysis of advertisements placed the skills in the order of priority:

Communication skills – experience – impersonal skills

Other skills mentioned included: communication; leadership and impersonal skills; independent; innovative confident, judgement, energetic and enthusiasm.

Glimpses of the Universe of Knowledge: -

Librarians should be able to understand and find relevant information on all types of knowledge. As such they should be conversant with the following:

- ✓ The Universe of Tacit Knowledge in the Minds of People/ Experts
- ✓ The Universe of Explicit Knowledge Already Available in All Forms
- ✓ The Universe of Knowledge Required by People Could be Unlimited
- ✓ The Universe of Untapped Knowledge: Could be Infinite
- ✓ Networking - The Universe of Complex Interactions between Tacit. Explicit and the Unlimited Knowledge Needs of Knowledge.

Journal of Current Science & Humanities(ISSN: P-2347-7784, [illegible]2347-7792)IP-2.5

||न हि ज्ञानेन सदृश्यं पवित्रमिह विद्यते ||

Chh. Shivaji Shikshan Mandal,Vaduj's

ARTS & COMMERCE COLLEGE, VADUJ

Tal- Khatav, Dist- Satara(MS)

One day Interdiciplinary
National Seminar
on

Recent Trends in Languages, Literature and Social Sciences

Saturday, 7th July, 2018

Special Issue

Chief Editor
Dr. S. G. Kamble

Co-Editor's

Prof. S. S Agrawal,
Prof. B. T. Sabale,
Dr. S.M. Patil,
Prof. D. N. Kathare,

Dr. S.S. Kenjle
Prof. V. B. Gujar,
Prof. S. N. Khade,
Dr. S.M. Gire,

Unicorn Publication Pvt. Ltd
www.jcsonline.in

INDEX

Sr. No.	Research Paper Title	Researcher Name	Page No.
English			
1.	PORTRAIT OF FEMALE CHARACTERS IN THE NOVELS OF PRATCHETT TERRY WITH REFERENCE TO WITCHES SERIES	*Dr. S. G. Patil **Mr. A. G. Shinde	1-3
2.	CULTURE-CLASH AND DIASPORA	*MR. L.N. SHIKALGAR, **DR. GHODAKE B. G.	4-8
3.	TROUBLED PARENT-CHILD RELATIONSHIPS IN GRAHAM SWIFT'S 'WATERLAND' AND 'OUT OF THIS WORLD'	*Mr. S. M. Chavan **Dr. N. V. Nalawade	9-13
4.	IDENTITY CRISIS IN UPAMANYU CHHATTERJEE'S ENGLISH AUGUST	DR. ASHWINI MANIK PURUDE	14-18
5.	THE NATIONALIST MOVEMENT AND INDIAN ENGLISH PROSE	DR. BHAGWAN S. LOKDE	19-22
6.	EXPATRIATE CONSCIOUSNESS AND WOMAN PROTAGONISTS	DR. S. I. NOORANI,	23-26
7.	HEGEMONY AND HENRIK IBSEN'S AN ENEMY OF THE PEOPLE	MR. SHIVKUMAR SURAJBHAN AGRAWAL	27-30
8.	SOCIAL CONFLICT IN HARISH GORE'S *A TRIBUTE TO MY FATHER'S STRUGGLE FOR LIFE*	DR. A. N. DADAS	31-35
9.	RACE AND ETHNICITY IN SHAWN WONG'S AMERICAN KNEE	DR. BHANDARE SHRIKANT JAYANT	36-42
10.	"ANITA DESAI'S NOVELS: MANIFESTATION OF QUEST FOR IDENTITY."	DR. JAYANT ANANT KULKARNI	43-45
11.	NGUGI'S PETALS OF BLOOD AS A CRITIQUE OF CAPITALISM	DR. BALKRISHNA DADA WAGHMARE	46-49
12.	CULTURE IDENTITY AND MAN-WOMAN RELATIONSHIP IN JHUMPA LAHIRI'S THE NAMESAKE	SHRI. BABU GOPAL PATIL	50-54
13.	CONVERSING MUTILATED BODY AND PHYSICAL RELATION IN J. M. COETZEE'S SLOW MAN	MR. DEVENDRA J. RANAWARE	55-59
14.	IMMIGRATION AND MARRIED WOMAN CONSCIOUSNESS	DR. SACHIN G. KAMBLE	60-65
15.	IMPORTANCE OF MOTHERTONGUE IN COMMUNICATION	DR. SUKHADEO RAGHUNATH BHOSALE	66-69
16.	THE WEAVE OF MY LIFE: A DALIT WOMAN'S MEMOIR	DR. MADHAVI PAWAR	70-72
17.	NATURE AND CULTURE IN THE AMITAV GHOSH'S THE HUNGRY TIDE	FULSAWANGE, S. U.	73-77
18.	THE CARIBBEAN COLONIZED' IDENTITY CRISIS	VAIJAYANTI OTARI	78-87
19.	JAYANTA MAHAPATRA'S 'RELATIONSHIP': A STUDY IN LANDSCAPE MYTH	DR. KAMBLE SANJAY PANDIT	88-92
20.	THE VOICE OF THE SUBALTERN THE WHITE TIGER	DR. KORE S. M.	93-95
21.	*SUICIDE AS PROTEST IN THINGS FALL APART*	SONTAKKE S.M.	96-98
22.	QUEST FOR SELF-IDENTITY IN DI MORRISSEY'S	MR. SACHIN BABAN	99-103

Ngugi's Petals of Blood as a Critique of Capitalism

Dr. Balkrishna Dada Waghmare

Head, Department of English
K. G. D. Bapu Lad Mahavidyalaya, Kundal
(Affiliated to Shivaji University Kolhapur)

Abstract: Capitalism is a system where the masses are exploited and a few with money are benefitted. It is a system which benefits the elite class of society. Ngugi's novel, Petals of Blood, offers a scathing critique of capitalism and accuses wealthy landowners and bureaucrats who exploit the poor and working classes. Ngugi has recorded the capitalistic approach of the local politicians as well as businessmen. He has also shown the commercialization of traditional things and the adverse of effect of capitalism on the psyche of Africans and also physical damages done to the land.

Key Words: Capitalism, Kenya, Africa, exploitation

Capitalism is a system where the masses are exploited and a few with money are benefitted. It is a system which benefits the elite class of society. It is "a system that bred hordes of round bellied jiggers and bedbugs with parasitism and cannibalism as the highest goal in society" (Ngugi, Devil on the Cross 344). In African of Kenyan context, the new class who come into power is more concerned with the welfare of their own. The betterment of their own is more important than their countrymen's. They act as described by Fanon in following words:

The national bourgeoisie of underdeveloped countries is not engaged in production, nor in invention, nor building, nor labor; it is completely canalized into activities of the intermediary type. Its innermost vocation seems to be to keep in the running and to be part of the racket. The psychology of the national bourgeoisie is that of the businessman, not that of a captain of industry (The Wretched of the Earth 149-150).

Ngugi wa Thiong'O is a major voice speaking on the behalf of Africans. He has criticized evils in the African societies through his works. His post-colonial novel Petals of Blood (1977) criticizes the evils of capitalism in Kenya. This is Ngugi's fourth novel and the last novel written under his Christian name James Ngugi. It reflects the exploitation and corruption in post-independent Kenya. The story of the novel deals with the investigation of the murder of three representatives of the new society, who have profited from neocolonialism. The novel offers a scathing critique of capitalism and accuses wealthy landowners and bureaucrats who exploit the poor and working classes. The novel is concerned with four principal characters Karega, a teacher and labour organizer; Munira, headmaster of a public school in the town of Ilmorog; Abdulla, a half-Indian shopkeeper who was once a guerrilla fighter during the war of independence; and Wanja, a barmaid and former prostitute. They are held by police on suspicion of the murder of the three

ISSN 2320 - 4494
RNI No. MAHAUL03008/13/1/2012-TC

POWER OF KNOWLEDGE

An International Multilingual Quarterly Refereed Research Journal

VOLUME : I ISSUE XXI July-Sept. 2018

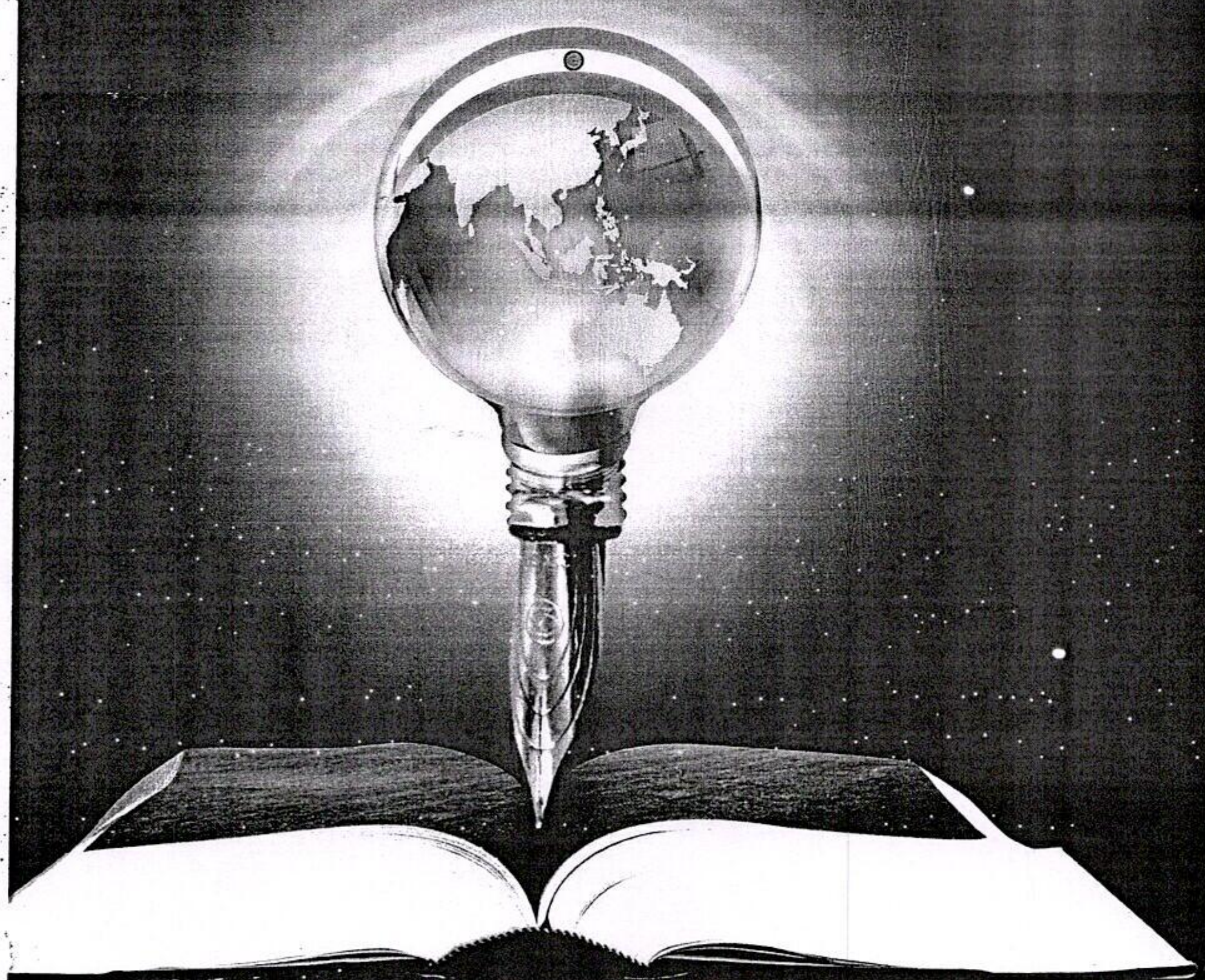

ARTS | COMMERCE | SCIENCE | AGRICULTURE | EDUCATION | MANAGEMENT | MEDICAL | ENGINEERING & IT | LAW | SOCIAL SCIENCES | PHYSICAL EDUCATION | JOURNALISM | PHARMACY

Editor
Sarkate Sadashiv Haribhau
Email : powerofknowledge3@gmail.com, shsarkate@gmail.com

अनुक्रमणिका (Index)

अ.क्र.	प्रकरण	संशोधक	पृष्ठ क्रं.
1	VIOLENCE AGAINST WOMEN & GIRLS	Dr. Mohamad Mustafa A. Mujawar Nadwi	1
2	INDIAN IMAGES IN NISSIM EZEKIEL'S POETRY	Dr.Subhash S. Waghmare	5
3	Dr. Babasaheb Ambedkar Important Suggestion for Reservation for Sheduled Castes and Adivasi Tribes	Prakash Kharat	8
4	MODES OF IRRIGATION IN BEED DISTRICT, A GEOGRAPHICAL STUDY	Mr. Usare Bharat Rupchand,	11
5	Experiment in Engaging men in Gender Equality	Dr. Arundhati Suryakant Patil	15
6	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांना अपेक्षित असलेली लोकशाही	प्रा. अरुण पडघन	18
7	मानव संसाधन विकास : सैध्दांतिक विवेचन	फुलारी ज्योती	22
8	बाबासाहेबांचे वाचन : एक वेध	डॉ. लक्ष्मण गीते	27
9	मराठी ग्रामीण कथेतील सहकाराचे चित्रण	प्रा. डॉ. बबन गायकवाड	30
10	दलित साहित्य : एक चिंतन	प्रा.लक्ष्मण गीते	35
11	आपत्ती व्यवस्थापन : आधुनिक काळाची गरज	प्रा. एकनाथ ज्ञानदेव खरात	37
12	महामानव नेल्सन मंडेला यांचे काव्यरूपाने दिसून येणारे चित्रण	डॉ. दादाराव गुंडरे	42
13	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि लोकशाही	प्रा.डॉ. रंदिल गजेंद्र साहेबराव	46
14	ओतारी समाजाचे लोकजीवन	ओतारी विक्रम अभिमन्यू	48
15	बदलत्या हमावानाचा भारतीय कृषीक्षेत्रावर परिणाम	प्रा.डॉ. देशमुख एस.बी.	50
16	नव्वदोत्तर स्त्रीवादी काव्य	प्रा. रेखा व्ही. इंगोल	53
17	'आदिवासींच्या विकास योजना व दिशा "(20 वे शतक) नाशिक	श्री. जी. डी. रुपवते	58
18	माळव्यातील धार व देवास संस्थानाची प्रशासकीय व्यवस्था	प्रा.डॉ.सुनिल रजपूत	60
19	चारमीनार एक सुंदर आणि आकर्षक इमारत	प्रा. डॉ. शेख कलीम मोहियोद्दीन	64
20	आदिवासी लेखकांनी लिहिलेले साहित्य : स्वरुप व विचार	प्रा. डॉ. जगतवाड शिवाजी पिराजी	66
21	अण्णाभाऊ साठे यांचे कादंबरी लेखन आशय आणि वेगळेपण काही निरीक्षणे	प्रा. डॉ.धनंजय महादेव होनमान	69
22	लीळाचरित्र : एक श्रेष्ठ वाङ्मयीन कलाकृती	डॉ. सौ. जयदेवी पवार	75

अण्णाभाऊ साठे यांचे कादंबरी लेखन : आशय आणि वेगळेपण- काही निरीक्षणे

प्रा. डॉ.धनंजय महादेव होनमाने
सहयोगी प्राध्यापक
क्रांतिअग्रणी जी.डी. बापू लाड महाविद्यालय कुंडल जि. सागली

प्रास्ताविक :

अण्णाभाऊ साठे हे मराठी साहित्य विश्वातील मान्यता पावलेले प्रतिभावंत लेखक होत. शाहिर, कथाकार, कादंबरीकार, नाटककार म्हणून त्यांची ओळख आहे. औपचारिक शिक्षण घेऊन विविध पदव्या प्राप्त करण्याची संधी मिळालेली नसतानाही त्यांनी साहित्याच्या क्षेत्रात केलेली उत्तुंग कामगिरी मनाला थक्क करणारी आहे.

अण्णाभाऊ साठे यांनी आपल्या स्फूट लेखनाला १९४२ साली प्रारंभ केला. सुरूवातीला पोवाडे, लावण्या, किसान गीते, छक्कड, गण, पदे, लोकनाट्य लिहिली. त्यापुढील काळात त्यांनी प्रामुख्याने कथा व कादंबरी हे वाङ्मय प्रकार हाताळले. तरल संवेदनशीलता, महत्वाकांक्षीपणा, जिद्दीपणा आणि हुरहुन्नरी त्यांच्यात होती. मैदानी खेळ खेळणे, नवनवीन गिते रचून ती बालमित्रांना गाऊन दाखविणे, तमाशात लहान मोठ्या भूमिका करणे हा त्यांना लहानपणापासूनचा छंद होता १९३६ पासून त्यांचा साम्यवादी चळवळीशी संबंध आला. भारतीय कम्युनिस्ट पक्षाची शिस्त अंगी बाणवली आणि त्यातूनच त्यांना जिवनाची खरी दिशा मिळत गेली. शाहीर अण्णाभाऊ साठे, शाहीर अमरशेख, शाहीर द.ना. गवाणकर या समविचारी कलावंत मित्रांनी 'लालबावटा कलापथक' स्थापन केले. त्या माध्यमातून महाराष्ट्राच्या तमाशा व कला पथकाच्या जुन्या परंपरेला नवी वर्गीय दृष्टी देण्याचा प्रयत्न त्यांनी केला.

अण्णाभाऊ साठे संपूर्ण आयुष्य समोर मांडून ठेवलेल्या कोणत्याही प्रकारच्या संघर्षात ताठपणे उभे राहिले. त्यांना लेखन निर्मितीसाठी हवा असलेला आत्मविश्वासाचा आधार जागतिक किर्तीचा मानवतावादी लेखक मॅक्झिम गॉर्कीच्या लेखनातून मिळाला, त्यांनी गॉर्कीला गुरू मानले. त्यांच्या लेखनाच्या वाटचालीतून जीवन दृष्टी समाजविचार आणि वाङ्मयीन दृष्टिकोन अंगीकारला. कार्ल मार्क्सच्या मानवमुक्तीचा डोळसपणा स्विकारला. कार्ल मार्क्सच्या विचारबाबत अण्णाभाऊचे असे मत होते की, "मानवाच्या जन्मापासूनचा इतिहास हा मानवमुक्तीचा क्रमबध्द इतिहास आहे."[१] यातून अण्णाभाऊला आकलनाची विशिष्ट दृष्टी आली. आर्थिक हितसंबंधातून आलेले वर्ग शोषण, संघटन आणि संघर्ष ही आला. सामाजिक भान ही आले. यातून त्यांना पटले की, मार्क्सवादी विचार हा राजकीय नेत्याच्या हातातील कळसुत्री बाहुली नसून परिवर्तनाच्या लढ्यातील साहित्यिकांच्या, धुरीणाच्या आतून आलेला जाणीवांचा तो अपरिहार्य परीपाक असतो. हे विचार अण्णाभाऊनी समाज जिवनाच्या संघर्षातून अनुभवले, पचविले आणि कथा कादंबरीच्या रूपात मांडले. "दलित माणसांची जीवन व्यथेशी चाललेली झुंज हे त्यांच्या साहित्याचे मूलतत्व आहे. सभोवतालच्या जगातील सर्वस्पर्शी व्यथा सागर अण्णाभाऊंच्या समोर उफाळत राहिला. म्हणूनच अण्णाभाऊ सारख्या अक्षर शत्रू असलेल्या जीवनाच्या पाईकाने लेखणीचे हत्यार बनविले आणि शब्दांना शस्त्राचे रूप दिले."[२]

विद्रोहाचे स्वरूप :

विद्रोहाची संकल्पना आधुनिक आहे. पश्चिमी देशात अठराव्या शतकात म्हणजेच औद्योगिक समाजाच्या उदयानंतर Protest म्हणजेच निषेध वा विद्रोहाची संकल्पना प्रचलित असल्याचे जाणवते. अमेरिकेतील निग्रो समाज, ऑस्ट्रेलियातील आदिवासी समाज आणि भारतातील आजवर अस्पृश्य मानला गेलेला समाज हे सर्व विद्रोही विचार सरणीने पेटलेले समाज आहेत. विद्रोह विषय आणि विद्रोही चळवळ ही एकमेकांच्या साथसंगतीने चालत असल्यामुळे 'सुख पाहाता जगाएवढे आणि दुःख पर्वताएवढे' अशीच अवस्था होऊन बसते. आयुष्य आणि अनुभव, समाज आणि समस्या, वेदना आणि विद्रोह या

18-19

Yoga for People's Mental Health and Well-Being

Vishwas. D. Sawant
K. G. D. Bapu Lad College, Kundal,
Tal –Palus, Dist- Sangli, (MH)

Abstract:

A person's state of being physical mental and social strongness is called as health. There seem to be lack of awareness regarding health due to various reasons like social Customs, Traditions, Illiteracy shyness etc. People worldwide are spending more and more time in front of television sets or computer screens and on cell phones, making media a central part of their lives. This causes many physical problems like obesity, B.P, hypertension & many psychological problems.

To maintain health practice of yoga is one of the important sources. Yoga can use as a tool to prevent many problems in physical and mental health. Yoga is art of living in Sanskrit Yoga means union with divine. Today, Yoga is a mainstay on the program schedules of most health clubs, Personal training studios, YMCAs and corporate fitness centers.

This article discusses yoga as a potential tool for children to deal with stress and regulate themselves. Yoga provides training of mind and body to bring emotional balance. We argue that children and young people need such tools to listen inward to their bodies, feelings, and ideas.

The ancient practice of yoga may help children and young people cope with stress and thus contribute positively to mental health. We think that yoga could provide tools for children and young people to remain centered or regain focus, so they may cope with the stress and challenges they experience in their everyday lives. First, we address how children and young people in today's world face numerous expectations and constant stimulation through the Internet and other media and communication technologies. One reason why children experience stress and mental health challenges is that globalization exposes the youth all over the world to various new demands, standards, and options. There is also increased pressure to succeed in school, partly due to increased competition

Our argument also partially rests on the fact that modern society offers plenty of distractions and unwelcome attractions, especially linked to new media technologies. The dominant presence of multimedia devices and the time spent on them by children are clear indicators of the shift in lifestyles and priorities of our new generation. While these media technologies are valuable resources in children and young people's lives for communication, learning, and entertainment, they also result in constant competition for youngster's attention. A main concept in our article is that yoga may help children and young people cope with stress and thus, contribute positively to balance in life, well-being, and mental health.

Reason's of disturbance mental health

Globalization exposes children and young people all over the world to various new standards and options. Now children not only have new resources in their lives, but are also expected to perform well.

New expectations and demands has the potential to create stress in young people's lives, especially related to evaluation of their performances.

It is common knowledge that stress can have serious health consequences. If unaddressed consistently, a high stress level could become a chronic condition, which could result in a range of health problems, including anxiety, insomnia, muscle pain, high blood pressure, and a weakened immune system. Recent research shows that the most stressed-out generation is the current young adults.

Behavior of disturbed person

When such young adults are responsible for child care, they may tend to transmit their tensions to their children; thus, the situation becomes doubly alarming and worrisome for their families.

Children learn to internalize the stresses. Their self-imposed expectations to meet the standards set by their caregivers, schools, and society may cause them anxiety.

Moreover, internalization of self-expectation may become non-malleable for young people.Children and young people interact with everyday life situations with world views that could be different from those of adults.

Need of Yoga

In line with this theory, we believe that children function as an agency for their own well-being and have the evolving capacity to be partners of wellness with their families, friends, and

18-19

"छत्रपती शिवाजी महाराज खरेखुरे दुर्गस्वामी होते.
त्यांचा जन्म दुर्गात झाला.
त्यांना जे वैभव प्राप्त झाले,
तेही सर्व दुर्गांच्यामुळे झाले.
त्यांच्या दुर्गांना जे सामर्थ्य प्राप्त झाले,
तेही त्यांच्याच प्रयत्नाने झाले.
त्यांचे दुर्ग म्हणजे त्यांच्या शत्रूंना धाक होता.
त्यांच्या राष्ट्राची ती संवर्धनभूमी होती.
त्यांच्या विषयाचा तो पाया होता.
त्यांच्या वाढत्या महत्वाकांक्षेचा तो जिना होता.
दुर्ग हेच त्यांचे निवासस्थान
व तेच त्यांच्या आनंदाचे निधान होते."
– डॉ. बाळकृष्ण

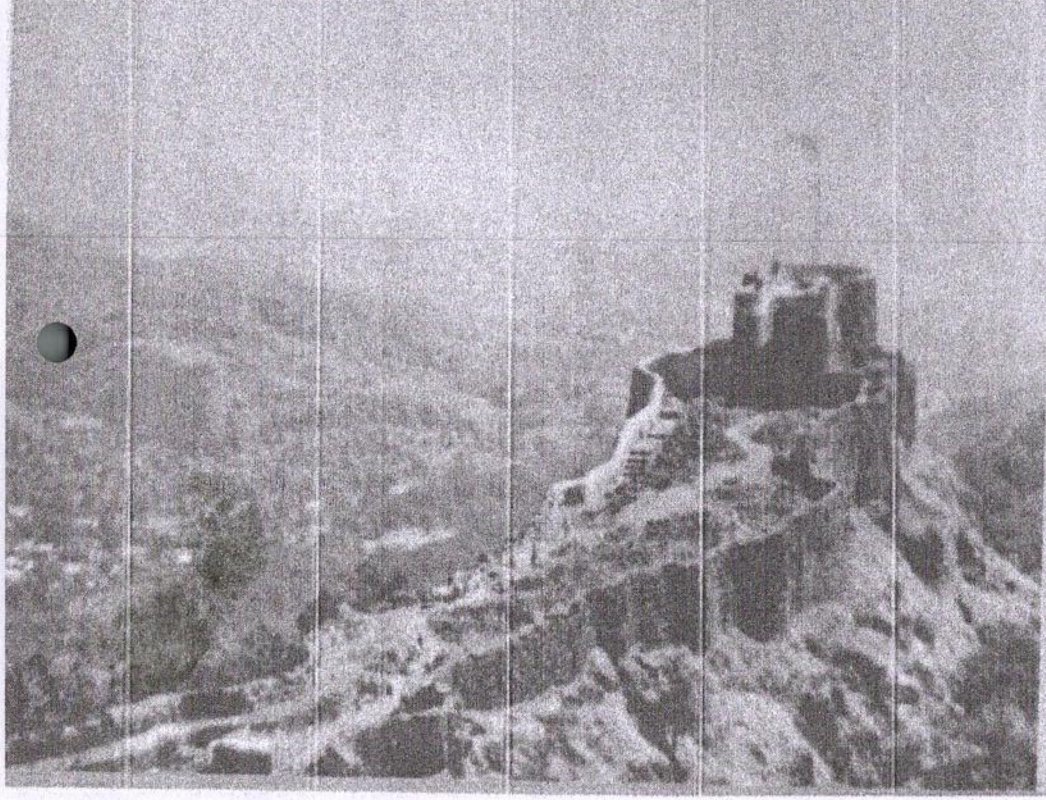

Sanshodhan, Satara Itihas Sanshodhan Mandal, Satara

ISSN2278-...
Satara Itihas Sanshodhan Mandal, Satara
(Inst. Reg. No. Maharashtra/13482/Satara/2010)

Research Booklet

SANSHODHAN
संशोधन

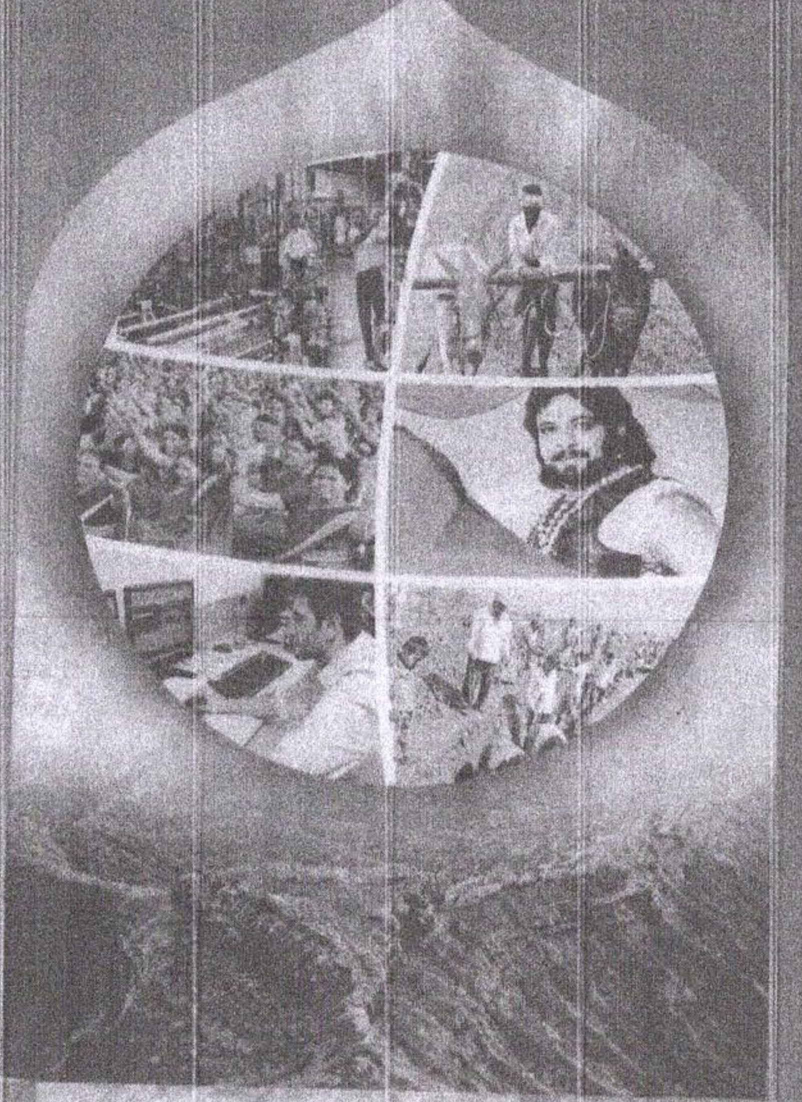

अनुक्रमणिका

१. सांगली जिल्ह्याचा सांस्कृतिक वारसा — १
प्रा.विवेकानंद माने.

२. ऐतिहासीक व प्राचीन कराड — ४
प्रा.ए.जी.थोरात

३. छत्रपती शिवाजी महाराजांचे शैक्षणिक धोरण — ९
डॉ.मधुकर विठोबा जाधव

४. महाराष्ट्रातील सूफी संत — १५
सौ.शर्वरी शैलेश कांबळे

५. न्यायनितिज्ञ अहिल्यादेवी — २१
डॉ.सौ संगीता संपत पाटील

६. माधवराव पेशव्यांच्या दक्षिण धोरणाचे मराठी राज्याला झालेले फायदे व परिणाम — २५
प्रा.डॉ.आर.बी.सातपुते

७. धावडशीचे ब्रह्मेंद्रस्वामी — ३०
प्रा.डॉ.दत्तात्रय ज्ञानदेव कोरडे

8. Balutedar :In accordance with Local History — 35
Prof.Kiran Sarjerao Pawar

९. किल्ले सज्जनगड : एक ऐतिहासिक दृष्टिक्षेप — ३८
प्रा.डॉ.दत्तात्रय जयसिंग ओवाळे

१०. संत तुकारामांचे धर्मचिंतन — ४१
श्री. महेशकुमार पांडुरंग सोनावणे

11. Vachana Culture and Education for Modern Life — 47
Dr.Nalini Avinash Waghmare

१२. भारतीय जातीसंस्थेच्या अन्वयार्थ आणि ऐतिहासिक विश्लेषण — ५४
डॉ.जयपाल चंद्रकांत सावंत

१३. कॉम्रेड के.आर.अक्कोळकर : कोल्हापूर महानगरपालिकेतील एक जागृत नगरसेवक — ६६
प्रा.रामचंद्र वसंत कुंभार

१४. यशोगाथा छत्रपती शिवाजी कॉलेज साताराची(१९४७ ते २०१८) — ७२
प्रा.डॉ.विश्वनाथ पवार

१५. प्रबोधन परिवर्तनाचे उपासक : संभाजीराव पाटणे — ८१
श्री.चंद्रकांत बाबुराव कुंभार

१६. १८५७ च्या उठावात आदिवासी क्रांतीकारकांचे योगदान — ८६
प्रा.पी.जे.चौधरी

१७. यशवंतराव चव्हाण : राजकीय जडण. घडण — ९५
प्रा.सौ.सषमा विलासराव जाधव.

१८. बाबूराव बागूलांच्या मार्क्सवादी विचारांची ऐतिहासिक परिप्रेक्षातून केलेली चिकित्सा — १०३
श्री.डिगांबर राधाकिसन जाधव
श्री.सचिन नारायणराव बोराडे

१९. विद्यापीठीय उच्च शिक्षण व यशवंतराव चव्हाण — १११
प्रा. उर्मिला नरसिंगराव क्षीरसागर

२०. १९४२ च्या चळवळीमधील सांगली परिसरातील भूमिगतांच्या रेल्वेवरील कारवायांचा अभ्यास — ११७
प्रा. डॉ. सौ. एम. डी. उदगांवकर
प्रा. बी. ए. कोटलगी.

२१. जात पितृसत्ता व लिंगभावाधारित परिप्रेक्षातून ताराबाई शिंदे यांच्या विचारांची मीमांसा (इ.स. १८४० ते १९१०) — १२१
प्रा.डॉ.गीतांजली भीमराव बोराडे

२२. राजर्षी शाहू महाराज यांचे आर्थिक कार्य — १२८
प्रा.सरला ब्रह्मदेव चव्हाण

२३. लोक शिक्षक : गाडगे बाबा — १३५
प्रा.एच.पी.पाटील

24. Socio Economic Aspects And Scope of Agrotourism — 140
R.G. Kamble

25. The Study of Flesh Trade In Modern India — 147
Dr. Smt. S. R. Sarode

२६. ताराबाई शिंदे यांच्या साहित्याची समीक्षा — १५२
डॉ.स्वराली चंद्रकांत कुलकर्णी

२७. १८५७ च्या उठावाचे भारतीय अर्थव्यवस्थेवरील परिणाम १५६
प्रा.डॉ.चंपाताई श्रीरंग बोधले
२८. महर्षी विठ्ठल रामजी शिंदे जीवन व कार्य (इ.स. १८७३ ते १९४४) १६०
कु.प्रतिभा गुलाब मोरे
२९. छ.राजर्षी शाहू महाराज यांचे औद्योगिक धोरण : एक आढावा. १६५
प्रा.एस.एस काशिद
प्रा.सी.पी.गायकवाड
३०. सातारा जिल्हा लोकल बोर्डातील लोकनेते बाळासाहेब देसाई यांचे कार्य १६८
प्रा.डॉ.संतोष तुकाराम कदम
३१. कोल्हापूर – कित्तूर संबंध १७२
प्रा.डॉ.सी.बंदना रामचंद्र लोंढे
३२. क्रांतिसिंह नाना पाटील यांचे स्वातंत्र्य लढ्यातील योगदान प्रस्तावना १७६
प्रा. लता दिगंबर आंदे
33. Nature And Classification of AIDS and Tuberculosis Diseases In Satara District(MS) : A Geographical Analysis 182
Mr. Santosh Prakash Patil
Prof. C. U. Mane
३४. अहमदनगर शहरातील विडी कामगारांची घरकुल योजना १९१
प्रा.गणेश शंकर विधाटे
३५. स्त्रीवादी दृष्टीकोनातून गावगाड्यातील लोहार स्त्रीयांचे स्थान १९७
डॉ.संघमित्रा वि.सरवदे
३६. माण तालुक्यातील पर्यटन एक ऐतिहासिक अभ्यास २०१
प्रा. के.एस. शिंदे
प्रा. डि.के.रसाळ
३७. इतिहास संशोधन आणि वैज्ञानिक दृष्टिकोन : एक दृष्टिक्षेप २०७
प्रा.शशिकांत महादेव मोहिते
३८. इतिहास लेखन आणि इतिहास संशोधनासमोरील आव्हाने २१४
प्रा.विनोद सखाराम बोरकर
३९. इतिहास लेखनासमोरील आव्हाने २१९
प्रा.एम्.डी. चिंदे

१. सांगली जिल्ह्याचा सांस्कृतिक वारसा:

प्रा.विवेकानंद माने.
क्रांतिअग्रणी जी.डी.बापू लाड महाविद्यालय, कुंडल,
ता. पलूस, जि. सांगली.

सांगली जिल्ह्याने अनेक मातब्बर कलावंतांची देणगी महाराष्ट्राला दिली आहे. त्यामुळे या जिल्ह्याला कलावंतांचा जिल्हा किंवा नाट्यपंढरी असे संबोधले जाते. प्रसिध्द नाटककार गोविंद बल्लाळ देवल, विष्णुदास भावे, कृष्णाजी प्रभाकर खाडिलकर हे मूळ सांगलीचेच आहेत. विष्णुदास भावे यांनी सीता स्वयंवर हे पहिले मराठी नाटक ५ नोव्हेंबर १८४३ रोजी सांगलीत सादर केल्याने ती नाट्यपंढरी म्हणून ओळखली जाते. मराठी नाटकाचा जन्मशताब्दी सोहळा ५ नोव्हेंबर १९४३ रोजी स्वातंत्र्यवीर सावरकर यांच्या अध्यक्षतेखाली सांगलीत पार पडला. तोच दिवस रंगभूमीदिन म्हणून ओळखला जातो. याच कार्यक्रमात नटवर्य केशवराव दाते यांनी सांगलीचा नाट्यपंढरी असा प्रथम उल्लेख केला.[१] नाट्याचार्य गोविंद बल्लाळ देवल यांनी रंगमंचावर आणलले शारदा हे नाटक देशभर गाजले. नटसम्राट बालगंधर्वांनी साकारलेल्या शारदा या पात्राने नाट्यरसिकांना वेड लावले. देवलांची शापसंभ्रम, संशयकल्लोळ, मृच्छकटिक ही नाटकेही अत्यंत लोकप्रिय झाली.

कृष्णाजी प्रभाकर खाडिलकर उर्फ काकासाहेब खाडिलकर यांनी मानापमान, किचकवध, कांचनगडची मोहना, भाऊ-बंदकी अशी नाटके लिहीली. ब्रिटीश सत्तेविरूद्ध आपल्या नाटकाच्या माध्यमातून असंतोष निर्माण करण्यात काकासाहेब यशस्वी ठरले. नारायण हंसराज उर्फ बालगंधर्व हे सांगली जिल्ह्यातील नागठाणे गावचे होते. अनेक नाटकांमधील स्त्री भूमिका त्यांनी साकारल्या. शारदा नाटकातील शारदा, संशयकल्लोळ नाटकातील रेवती, मानापमान नाटकातील भामिनी, द्रौपदी नाटकातील द्रौपदी या स्त्री भूमिका त्यांनी अजरामर केल्या. मास्टर दीनानाथ मंगेशकर यांनी आपल्या गायिकीने मराठी संगीत रंगभूमीची किर्ती दिगंत केली. सांगलीतील मॉडर्न बेकरी जवळच्या घरात ते राहत होते. मंगेशकर भगिनींचे बालपणही येथेच गेले. गावभागातील मुरलीधर मंदिराजवळील शाळेत लता मंगेशकर काही महिने शिकल्या होत्या.[२] दीनानाथ मंगेशकर चौदा वर्षे सांगलीत मराठी रंगभूमीवर विविध भूमिका साकारत होते. मास्टर अविनाश उर्फ गणपतराव मोहिते यांनीही मराठी रंगभूमी आणि चित्रपट या दोन्ही क्षेत्रात खूप प्रसिद्धी मिळवली. बलवंत संगीत मंडळीच्या ध्रुव, प्रल्हाद, शाकुंतल, पुण्यप्रभाव, मूकनायक, चौदावे रत्न, राजसंन्यास, मानापमान, संन्यस्त खड्ग, ब्रह्मकुमारी अशा अनेक नाटकात मास्टर अविनाश यांनी विविध भूमिका केल्या. नंतरच्या काळात विष्णुदास भावेंचे नातू रावसाहेब भावे, दादासाहेब खाडिलकर, विनायकराव पाटणकर यांच्या पुढाकाराने भावे नाट्यमंदिर स्थापन झाले. नाट्य चळवळीत

Interdisciplinary International Conference contemporary Issues & Challenges in Social Sciences & Languages

22nd Sept.2018

Organizer

Department of Political Science,

Shri Sahaji Chhatrapati Mahavidyalaya, Kolhapur

Special Issue published By

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

ISSN 2349-638x

Peer Review and Indexed Journal

Impact Factor 4.574

Website www.aiirjournal.com

Email :- aiirjpramod@gmail.com

Sr.No.	Author Name	Research Paper / Article Name	Page No.
41.	Mr. Mahesh S Jadhav	Indian Heritage Tourism: Challenges& Suggestions	133 To 135
42	Prof. Dr. Mohan Chougule	India-Israel Relations: Current Status And Future Prospects	136 To 137
43	Shri. N. N. Lokhande.	The Role of ICT, In Library Service	138 To 140
44	Shri. N.D. Tadasare	ICT Applications in Libraries and ICT based Information Services	141 To 142
45	Dr. Nandkumar Baburao Bodhgire,	An Analysis of African Continent: using ANOVA Techniques for Economic Indicators	143To 146
46	Miss. Amruta Shital Nilakhe	Study of contemporary social sciences with references to women health issues in Maharashtra	147 To 149
47	Nyaribo N. Moses	A Review Of The Key Issuesof Micro-Finance And The Empowerment Of Women	150 To 151
48	Dr.M.B.Waghmode Prof. P.Y.Phadnis	Challenges Before Primary Education In Sangli District	152 To 154
49	Dr. Smt. Smita N. Pakdhane	Agricultural extension services in India [Bust or Boost to Indian Agriculture	155 To 163
50	Dr.Pandit S. Waghmare	Study of Contemporary Issues in Social Sciences	164 To 167
51	R.B. Patil	Agricultural Problems And Prospects in Jath Tahasil Dist. Sangli	168 To 174
52	Prof. Smt. Sharada Shamrao Patil	Issues and Challenges on Education	175 To 177
53	Mrs. Smita Prakash Patole	Weblogs-A tool to disseminate the Library and Information Services in an innovative way	178 To 180
54	Dr. Pramod P. Lonarkar	Issues and Challenges of Global Poverty	181 To 183
55	Miss. Pranali B. Gedam	Classification Web: A Study of Multiple Search Strategies	184 To 188
56	Dr. Pravinchandra D. Bhakare	The Prospectus Of An Inclusive Sustainable Rural Development In India	189 To 191
57	*R. R. Salunkhe * *Dr. S.G.Chavare *** Dr. S.B. Gaikwad	Spatialpatterns Of Distribution And Concentration Of Rural Population In Drought Prone Area Of Sangli District (Maharashtra) : A Geographical Analysis	192 To 195
58	Dr. Raju Kalmesh Sawant	Challenges Before Indian Democracy: A Study	196 To 199
59	Prof. Ramesh S. Kattimani	Internet Addiction Of High And Low Socio-Economic Status Undergraduate Students Of Both Genders	200 To 203

Spatialpatterns Of Distribution And Concentration Of Rural Population In Drought Prone Area Of Sangli District (Maharashtra) : A Geographical Analysis

*R. R. Salunkhe   * *Dr. S.G.Chavare   *** Dr. S.B. Gaikwad

Abstract

The concept of population distribution and density are very useful for tools for analysis diversity of man's distribution in space. Population analysis is a part and parcel of any regional study as population is a great resource of all the resources and essential element of all regional geography, although past regional studies involved detailed examinations of demographic influences and effects. The term density of population refers to a ratio between population and land area. It is measure of degree of population concentration and gradually expressed in terms of number of persons per unit area. The objective of present research paper is to investigate spatial patterns of distribution and concentration of rural population in drought prone area of Sangli district. The present paper is based on 2011 census data. In the present paper tahsil is taken as unit of study. Location quotient has been used to determining concentration of population in the study region.The choropleth maps are used to show the spatial patterns of distribution and concentration of rural population. The study reveals that there are significant variation in distribution and concentration of rural population. This type of study will be useful for planners.

Key words: Distribution, Concentration, Location quotient.

*Associate Professor and Head Department of Geography, Chandrabai-ShantappaShendure College, Hupari (Affilated to Shivaji University, Kolhapur) Tal Hatkanangale Dist. Kolhapur.
**Assistant Professor of Geography, KrantiAgrani G.D. Bapu Lad College, Kundal (Affilated to Shivaji University, Kolhapur) Tal. Palus Dist. Sangli.
***Associate Professor and Head, Department of Geography, MirajMahavidyalaya, Miraj (Affilated to Shivaji University, Kolhapur) Tal. Miraj Dist. Sangli.

Introduction:

The analysis of population distribution and density is fundamental for understanding the population geography of area (Chandana and Sidhu, 1980).

Population density is related to the number of people and the space occupied by them. The concept on density of population is most revealing and is a useful tool in the analysis of the diversity of man's distribution in space (Clarke, 1972). The patterns of population distribution reveals that how man has attributed himself, at a particular point of time in the context of his physical environment, types of economy, cultural patterns and history. The study of population is concerned not only with its size and characteristics but also with its distribution in various spatial divisions and the changes that occur in the patterns of population distribution over the year.The distribution of population in terms of numbers, degree of concentration size and spacing of settlements is the most fundamental aspect of the population geography of an area. It includes the analysis of relative concentration of man, who acts as an important force in the synthesis of all geographic phenomena operating in an area. Distribution of population also provides a base for the analysis of other attributes of population (Chandana, R.C. 1986).

Size and density of population are the fundamental issues and their disparities are of prime concern to population geographers. The geographer's task is to explain this diversity in terms of physical, social, demographic, economic, political and historical factors as an inter-related influence (Clarke, 1976).Economic characteristics play an important role in the overall development of an area. These characteristics reflect on the economic status of any region of given point of time. Hence, it is essential to study the distribution of population in the study area.

The variation in size and population numbers it is difficult to compare nations directly. Moreover, it must remember that in nearly every country, there are vast differences in population densities from one region to another (Richard, 1974). The density of population and their disparities are prime concerns to population geographers. The geographer's task is investigating this disparity in terms of physical, social, demographic, economic, political and historical factors (Ghosh, 1987). Hence the regional disparities in the distribution and density of population are to be understood in the context of physical and cultural environment of area.

Geographer's goal is to understand regional disparities in distribution. The economic, social and political factors play their role as effectively as others in the distribution of

Interdisciplinary International Conference contemporary Issues & Challenges in Social Sciences & Languages

22nd Sept.2018

Organizer

Deparitment of Political Science,

Shri Sahaji Chhatrapati Mahavidyalaya, Kolhapur

Special Issue published By

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

ISSN 2349-638x

Peer Review and Indexed Journal

Impact Factor 4.574

Website www.aiirjournal.com

Email :- aiirjpramod@gmail.com

Sr.No.	Author Name	Research Paper / Article Name	Page No.
21	Dr. D. L. Kashid-Patil	Role of Government Schemes enhancing in Environmental Protection	59 To 61
22	Dr. D.B.Karnik	Impact Of Population On Indian Economy	62 To 65
23	Asst. Prof. Dadasaheb B. Mane	Environmental Impact Of Large Dams	66 To 68
24	Dr.Dayanand P. Gawade	Balance of Payment in India	69To 73
25	Shri.Dhanraj Ravsaheb Bikkad	The Problems and Remedies in Social Sciences	74To 75
26	Dr. Digambar M. Tangalwad Assistant Registrar	The Emerging Challenges in the Positivistic Method	76To 78
27	Dr.Dilip Khairnar*,	Challenges In Social Sciences And Humanities In India	79To 82
28	Mr. Dipak Gopinath Chavan	Agriculture Income In India: Issues And Threats	83 To 85
29	Dr. Santosh Barale Dr. V. M. Patil	Education and Poverty in India: An assessment	86To 87
30	Dr. Bipin Kumar Mehta	Issue and Challange in Social Science	88 To 92
31	Dr.Dudhkawade Suresh Ramji	Women Political Participation In Vidhansabhaand Local Self Government	93To 95
32	Mr. N. V. Gaikwad	The Study Of Population And Foodgrain Crops Landuse In Satara District	96 To 103
33	Dr. H. N. Kathare	Microfinance And Women"s Economic Empowerment: Bridging The Gap And Redesigning Future	104to 107
34	Pro. Vithal Nivratirao Hangargekar	Problem of in Indian Women after Globalisation	108 To 110
35	S. J. Jadhav	Contemporary Issues in e-commerce in Emerging Economies	111To 115
36	Prof. Jayashri Dhondiram Hatkar	Use of Library User Tracking System in Dr. Patangrao Kadam Mahavidyalaya, Sangli	116To 118
37	Kishor N. Desai	Librarians Role towards Digital Library System in IT Based Society: Today and Tomorrow	119To 121
38	Assit. Prof. M. B. Thorat	Challenges in Historical Research	122To 124
39	(Dr.) M. C. Sheikh	Conceptual Foundation of „Freedom of Speech" and its Intricacies	125 To 128
40.	Dr. Smt. M. B. Desai	Employment Of Women: Importance And Challenges	129To 132

Librarians Role towards Digital Library System in IT Based Society: Today and Tomorrow

Kishor N. Desai
Librarian, Krantiagrani G.D. Bapu Lad Mahavidyalaya, A/P-Kundal ,Tal-Palus, Dist-Sangli.Pin-416 309

Introduction:-

The advent of digital information, electronic issues SMS, wikis, RSS, Library 2.0, Web 2.0, Blogs, Taggings, OA, OSS, etc.have changed the libraries worldwide from the printed era to the digital era. The old practice of teacher centred of library text books centred teaching is to be replaced by student centred teaching leading to integration of library activities and classroom teaching resulting in individual instruction rather than mass lecturing or merely reading a text book or dictating or taking down notes. The librarians in the digital environment must be acquainted with a wide range of personal transferrable skills in order to manage the changing environment in which they work.

Keywords;- Digital, web, ICT, knowledge, network, database etc.

Objectives:-

- ✓ To define and explain the concept of digital learning environment;
- ✓ To explore the skills and abilities required for digital librarian;
- ✓ To know the component of establishing digital library;
- ✓ To know the necessity of digital librarian;
- ✓ To explore the challenges faced and the changing role of librarians and various skills expected for librarians to meet the need.

Librarian-Profession-Attitude:-

Librarianship essentially concerns the problem of storage, retrieval and access to documents in other words, information.

It basically refers to

- ✓ Document collection development
- ✓ Technical processing for organization of documents.
- ✓ Providing references and bibliographic access to documents.
- ✓ Providing physical facilities for reading.
- ✓ Handling the different states of knowledge behaviour of the users of the library.

Digital Library:-

The component characteristics of digital libraries are the storage of information in digital format, direct usage of communication networks for accessing, obtaining information, and copying by either downloading or online/offline printing from a master file. Digital librarians enable managing very large amount of data, preserve unique collections, provide faster access to information, facilitate dealing with data from more than one location, and enhance distributed learning environments. Digital library is not a single entity and digital library collections are not limited to document surrogates: they extend to digital artefacts that cannot be represented or distributed in printed formats. A digital library is a collection of electronic knowledge resources developed and maintained in order to meet the totality of information needs for a given user.

Skills and Knowledge Required for Digital Librarian:-

The skills and knowledge are required on areas mentioned below

- ✓ Knowledge management and metadata;
- ✓ Capacity in evaluating and filtering digital resources;
- ✓ Computerised library systems;
- ✓ Database searching in the Web;
- ✓ Keeping up to date of information resources;
- ✓ Optical character recognition;
- ✓ Knowledge in web publishing
- ✓ Searching information through internet;
- ✓ Expertise in multimedia or imaging technologies;
- ✓ Effective communication skills and
- ✓ Interpersonal skills.

2017-18

ISBN No: 978-81-907287-8-2

शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर संलग्नीत
गांधी एज्यूकेशन सोसायटी, कुंडलचे

क्रांतिअग्रणी जी. डी. बापू लाड महाविद्यालय, कुंडल

ता. पलूस, जि. सांगली

अर्थशास्त्र विभाग आयोजित

शिवार्थ

स्मरणिका
२०१८

१) सहकारी अर्थकारण- काल, आज आणि उद्या

२) पद्मभूषण डॉ. वसंतदादा पाटील यांचे महाराष्ट्राच्या विकासातील योगदान

शिवाजी युनिव्हर्सिटी
इकॉनॉमिक्स असोसिएशन, कोल्हापूर (सुयेक)

२८ वे

वार्षिक अधिवेशन

शुक्रवार दि. ०५ जानेवारी व ०६ जानेवारी २०१८

अनुक्रमणिका

- श्री वारणा महिला सहकारी पतसंस्थेच्या आर्थिक प्रगतीची सद्य स्थिती
  - डॉ. धर्मा धेडे (९३)
- सहकारी शेती: एक सैद्धांतिक विश्लेषण
  - डॉ. संजय रुपे (९९)
- सहकारी साखर कारखाना: आव्हाने व उपाय
  - प्रा. डी. एम्. पाटील (१०६)
- ९७ वी घटना दुरुस्ती मधील तरतुदी आणि सहकार चळवळ
  - प्रा. कबीर वाघमारे (११३)
- भारतातील सहकारी क्षेत्रासमोरील आव्हाने
  - डॉ. संतोष यादव (१२०)
- Co-operative Movement in Maharashtra
  - Sadhna Shirke (128)
- Vasantdada Patil: The Inclusive Leadership in Maharashtra
  - Prof. Dr. P. S. Kamble & Dr. Vishal Ovhal (138)
- Role of Dairy Co-operative in Indian Economy
  - Dr. M. S. Deshmukh & Prof. Tanaji Ghagare (42)
- Co-operative Movement In Maharashtra
  - Dr. R. G. Dandge & Miss. Nishigandha Bansode (145)
- सांगली जिल्हा मध्यवर्ती सहकारी बँकेचा विकास आणि आर्थिक स्थिती
  - डॉ. एम्. जी. सदामते (१५१)

सांगली जिल्हा मध्यवर्ती सहकारी बँकेचा विकास आणि आर्थिक स्थिती

डॉ. एम. जी. सदामते
अर्थशास्त्र विभाग,
क्रांतिअग्रणी जी.डी.बापू लाड महाविद्यालय, कुंडल.
मोबा नं. ८०५५४९५५३७.

प्रस्तावना:

सांगली जिल्हा मध्यवर्ती सहकारी बँक, ही महाराष्ट्रातील एक आधुनिक व नाविन्यपूर्ण सेवा देणारी जिल्हा मध्यवर्ती बँक म्हणून नावरुपास आली आहे. या बँकेच्या २१८ शाखा आहेत. बँकेने अत्याधुनिक अशा बँकिंग सेवा आपल्या सभासद, ग्राहक व जिल्ह्यातील सर्व जनतेच्या उपयोगासाठी सुरु केल्या आहेत. त्यात प्रामुख्याने कोणत्याही शाखेत आर्थिक व्यवहार, ए.टी.एम. व आर.टी.जी.एस./ एन.ई.एफ.टी. सेवा ग्राहकांना देण्यात येत आहेत. तसेच शेतकऱ्यांच्या विकासासाठी 'शेतकरी मंडळ ही नवीन योजना राबविण्यात आली आहे. प्रस्तुत शोध निबंधामध्ये सांगली जिल्हा मध्यवर्ती सहकारी बँकेचा विकास आणि आर्थिक सध्यस्थितीचा अभ्यास करण्यात आला आहे.

सांगली जिल्हा मध्यवर्ती सहकारी बँकेची स्थापना व विकास सांगली संस्थानचे राजे कै. चिंतामणराव आप्पासाहेब पटवर्धन यांनी केली त्यावेळी प्रांतिक राज्यातील पुरोगामी सुधारणा संस्थानमध्ये करण्याच्या हेतूने केवळ ५०००/– रुपयांच्या भाग भांडवलावरती दि. २८ मार्च १९२७ रोजी बँकेची स्थापना केली. स्वातंत्र प्राप्तीनंतर संस्थानांचे विलीनीकरण झाल्यानंतर २७ जुलै

International Multilingual Research Journal ®

Vidyawarta

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार
- शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी साळूंखे

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha, Kolhapur's

Raje Ramrao Mahavidyalaya, Jath.

Tal.Jath Dist. Sangli 416404

(Affiliated to Shivaji University, Kolhapur)

Re-accredited 'B'by NAAC (CGPA2.50)

Proceedings of

INDIAN COUNCIL OF SOCIAL SCIENCE RESEARCH (ICSSR)

Sponsored Two Days National Conference

On

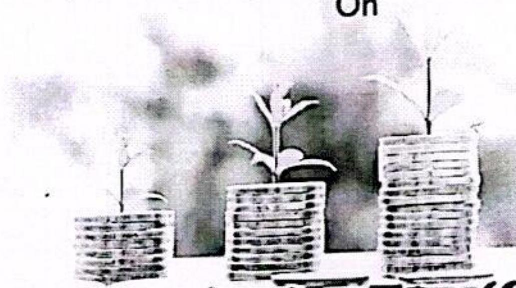

Goods and Service Tax (GST) in India

23rd to 24th February 2018

Executive Editor
Mr. A. H. Bogulwar

Co-Editor
Dr. S V. Kale

Organized by

DEPARTMENT OF ECONOMICS

Raje Ramrao Mahavidyalaya, Jath.

Tal.Jath Dist. Sangli 416404

Phone : 02344-246251 E-mail : rrcecoicssr@gmail.com

Scanned by CamScanner

13) "वस्तू व सेवा कराचा महत्त्वपूर्ण क्षेत्रावर झालेला परिणाम" || 54
बुध्देवार सुभाष राजेन्ना, नांदेड

14) वस्तू व सेवा करप्रणीलचे फायदे व तोटे –अर्थशास्त्रीय विश्लेषण || 57
हळदेकर एम.बी., जि. नांदेड.

15) वस्तु आणि सेवा कर : संकल्पना व स्वरुप || 60
सुनिल गणेशराव पाटील, डॉ. सोनाजी. एस. पतंगे, प्रा.डॉ. विकास व्ही. सुकाळे, नांदेड

16) जी.एस.टी. आणि भारतीय शेतकरी || 63
के.एस.पाटील, तासगांव

17) Tax Revolution in India: Special Reference to GST || 66
Dr. Satish Ghadage, Dr. Nitin Babar

18) वस्तू आणि सेवा कर आणि स्थानिक सरकारे || 69
डॉ. बंडू जयसिंग कदम, तासगांव

19) IMPACT OF GST ON AGRICULTURAL SECTOR || 72
Dr. M. G. Sadamate, Kundal

20) वस्तू आणि सेवाकर (जी.एस टी) : एक मूल्यमापन || 74
जे.ए.यादव, तासगांव

21) ROLE OF GST IN NATIONAL AGRICULTURAL MARKET || 76
Dr. Vijaykumar A.Patil,Mr. Abhijeet Giri, Dist. Sangli

22) A study of Goods and Services Tax (GST) and itsBenefits || 80
Mhetre N. M, Raut S.P, Dist. Sangli

23) An Impact of GST || 84
Dr. Arjun Wagh, Ms. Rani Shinde Dist.Sangli

24) Implications of Goods and Services Tax and Its Impact on Indian Economy || 87
Dr. Anil D. Kolape, Pune

25) सामान्य लोकांसाठी "जीएसटी" || 90
काटकर तात्यासाहेब शिवाजी, सोलापूर

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal/ http://www.vidyawarta.blogspot.com

Scanned by CamScanner

19

IMPACT OF GST ON AGRICULTURAL SECTOR

Dr. M. G. Sadamate
K.G.D. Bapu Lad Mahavidyalaya Kundal

****

Introduction

Agriculture still employs the largest section of India's workforce. It commands around 16% of India's GDP. The proper implementation of the GST is expected to boost the sector. Transportation of agro products across India is one of the persistent problems faced by the sector. Before GST, different states had different tax rates. GST is expected to address this problem. It may provide India with its first national market for the agricultural goods. GST was a long-awaited tax reform since Independence that was passed by both houses of Parliament including Lok Sabha and Rajya Sabha and came into effect from 1st July 2017 across India.

GST is essential to improve the transparency, reliability, timeline of supply chain mechanism. A better supply chain mechanism would ensure a reduction in wastage and cost for the farmers/retailers. GST would also help in reducing the cost of heavy machinery required for producing agricultural commodities. Under the model GST law, dairy farming, poultry farming, and stock breeding are kept out of the definition of agriculture. Therefore these will be taxable under the GST.

Thus, there is a need to explore the possible implications of the GST on the Indian Agricultural Sector. This study will mainly focus on tax rate the agri – inputs of the agricultural sector of the economy.

Impact of GST on Agricultural Sector

The impact of GST on agricultural sector is foreseen to be positive. The agricultural sector is the largest contributing sector the overall Indian GDP. It covers around 16% of Indian GDP. The implementation of GST would have an impact on many sections of the society. One of the major issues faced by the agricultural sector is the transportation of agriculture products across state lines all over India. It is highly probable that GST shall resolve the issue of transportation. GST may provide India with its first National Market for the agricultural goods. There are a lot of clarifications which need to be provided for rates for agricultural products. Special reduced rates should be declared for items like tea, coffee, and milk under the GST.

Fertilizers an important element of agriculture was previously taxed at 6% (1% Excise + 5% VAT). In the GST regime, the tax on fertilizers has been increased to 12%. The same impact is on Tractors. Wavier on the manufacture of Tractors is removed and GST of 12% has been imposed. This is beneficial as now the manufacturers will be able to claim Input Tax Credit. Main Agriculture inputs current rates of GST shown in following table

Table 1; GST Rates on Agriculture Sector

Goods	Old Rate	GST	Diff (%)
Cheaper			
Seed, Organic compost without brand	0	0	0
Head pump and its parts	12.5	5	-7.5
Tractor	12.5	12	-.5
Chemical Fertilizer	12	5	-7
Expensive			
Tractor Tire & Rim	12.5	18	+5.5
Other tractor parts	12.5	18	+5.5
Harvester, Earth, Grader, Parts	0	12	+12
Insecticide	5.5	18	+11.5

Source: https://gst.caknowledge.com/impact-gst-agriculture-sector-gst-rates/

Agricultural sector will remain largely exempt from GST, any input taxes suffered on inputs used in the farm sector such as seeds, fertilizers, pesticides, tractors etc, will remain blocked and contribute to increase in prices of farm output.

Scanned by CamScanner

REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2018

CO-OPERATIVE MOVEMENT IN MAHARASHTRA

Dr. M. G. Sadamate
Krantiagrani G. D. Bapu Lad Mahavidyalaya, Kundal,
Dist: Sangli Maharashtra.

ABSTRACT
Co-operation means working together with another or others for a common purpose, in the modern day co-operative Institution is similar to the traditional community institution of the primitive post where group of people would till the end. As per the lines of central government Maharashtra government has also identified the importance of the co-operative movement as the best source through which to apply it for rural development, people's empowerment and poverty alleviation programme. The basic nature of the co-operative societies is to encourage the values of self-help, democracy equality and solidarity. Co-operative members believe in the ethical values of honesty, openness and social responsibility and caring for others. so this paper attempt to study that how co-operative movements helps to develop Maharashtra and how it helps to create opportunities in different sectors in Maharashtra.

KEY WORDS: *Co-operation, Act of Co-operation, Movement, etc.*

INTRODUCTION

The co-operative movement in Maharashtra has played a significant role in the social and economic development of the state particularly in the rural areas. Initially, this movement was confined mainly to the fields of agricultural credit. Later it rapidly spread to other fields like agro-processing, agro-marketing, rural industries, consumer stores, social services, etc. Progress of co-operative movement in the last four decades showed increase more than four times. The co-operatives in Maharashtra have a political, historical, social and cultural heritage. It is particularly strong in Western Maharashtra as the independent movement and the leaders from Pune, Mumbai and Ahmednagar initiated social reforms. Due to favorable climate conditions, soil and the development of irrigation facilities Maharashtra made good progress in sugarcane and sugar production through the help of co-operative sugar factories.

HISTORICAL BACKGROUND:

The co-operative movement was started in India as a result of the economic distress caused to the peasants during the latter port of the 19th century. A real beginning of the co-operative movement was, however made when the co-operative credit societies act of 1904 was passed, societies formed under the Act were given legal status and were authorized to raise funds and carry on business in a corporate capacity. The co-operative played a vital role after independence. In 1942, the British government enacted the multi-unit co-operative society's

Scanned by CamScanner

ISN 2249-0817WARUL

वारूळ (त्रैमासिक)

वर्ष आठवे
जानेवारी २०१८

पहिले वारकरी कीर्तन संमेलन विशेषांक

अनुक्रमणिका

१)	शुभ संदेश	मा. श्री. विजयसिंह मोहिते-पाटील
२)	शुभ संदेश	महंत शिवरूपानंद स्वामीजी
३)	पहिले वारकरी कीर्तन संमेलन अध्यक्षीय भाषण जगद्‌गुरूद्वाराचार्य	डॉ. रामकृष्णदास लहवितकर
४)	आमची कीर्तनपरंपरा	मा. श्री. अण्णासाहेब डांगे
५)	न करावा शिष्य	डॉ. सदानंद मोरे
६)	कीर्तन चांग	ह.भ.प. श्यामसुंदर सोन्नर
७)	खांब दिला भागवत	ह.भ.प. सुधाकर इंगळे
८)	वारकरी कीर्तनपरंपरेचा उद्‌गाता-संत नामेदव	डॉ. धनंजय होनमाने
९)	वारकरी कीर्तन परंपरा-काल, आज आणि उद्या	ॲड. बाबूराव हिरडे
१०)	संत गाडगेबाबांच्या कीर्तनातील वेगळेपण	डॉ. प्रकाश दुकळे
११)	वारकरी कीर्तन आणि माहिती तंत्रज्ञानाचे युग	डॉ. श्यामसुंदर मिरजकर
१२)	दुर्लक्षित संत बाळकृष्ण महाराज घाणवकर	डॉ. पांडूरंग जगन्नाथ ऐवळे
१३)	वारकरी कीर्तनपरंपरेची सामाजिक फलश्रृती	डॉ. कैलास एस. महाले
१४)	माझी कीर्तन साधना	ह.भ.प. रुक्मिणी ढोणे
१५)	संतांची दिवाळी	देवीदास ढोपे
१६)	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज	डॉ. कमल दणाणे
१७)	मुस्लिम मराठी (हुसैन अंबरखान) संत कवींचे कीर्तन परंपरेतील योगदान	प्रा. डॉ. झेड. एच. संदे

मुस्लिम मराठी (हुसैन अंबरखान) संत कवींचे कीर्तन परंपरेतील योगदान

प्रा. डॉ. झाकीरहुसेन हाकीम संदे

प्रास्ताविक

किर्तन परंपरा ही भारतीय समाज प्रबोधन संस्कृतीतील मूलगामी आणि मध्यवर्ती परंपरा असल्याचे सिध्द झाले आहे. भारत ही एक बहुधर्मिय, बहुसांस्कृतिक तरीही एकात्मतेच्या मर्मबंधाने घट्ट बांधलेली समाज संहिता आहे. प्रबोधनाची अनेक माध्यम भारतीय विचार संस्कृतीला एक मजबूत आणि सदृढ अशी विचारांची बैठक प्रदान करतात. व्याख्यान, ग्रंथ, शाहिरी, नाट्य, संगित, हस्तलिखित, मौखिक साधने या सर्व माध्यमांचा उपयोग समाज प्रबोधनाच्या संस्कृती निर्मितीतील एक अविभाज्य घटक बनली. त्यातील एक अत्यंत प्रभावी आणि समाज मनावर घट्ट पकड साधणारे माध्यम म्हणजे 'किर्तन' होय.

किर्तन परंपरेने भारतीय उपखंडातील भाषा वैविद्यामुळे प्रत्येक भाषेत अनेक संत जन्माला आले. जात, धर्म, भाषा, लिंग, वय, विद्वत्ता या सर्व भिन्नतेच्या पलिकडे जाऊन लोकांची मने जोडून एकात्मतेचा पाया दृढ केला. संपूर्ण भारत वर्षामध्ये दशदिशांत किर्तनकारांनी मानवी मनाची आणि वर्तनाची मशागत अव्याहतपणे करून एक श्रेष्ठ भारतीय मानवी संस्कृती उभी केली की जी जगभरात आदरस्थानी पाहिली जाते.

एखाद्या राष्ट्राची संस्कृती उभी करणे हा प्रचंड मोठा प्रयत्नवादाचा एकात्मिक प्रयत्न असतो. एडवर्ड टेलर हा सामाजिक मानववंश शास्त्रज्ञ संस्कृतीची व्याख्या करताना असे म्हणतो की, सामाजिक रूढी परंपरा, त्या समाजाचे ज्ञान, त्यांचा विश्वास, श्रध्दा, कला आणि नितीमत्तांचा संकलित परिणाम म्हणजे संस्कृती असते. ऑक्सफर्ड डिक्शनरी ऑफ सोशॉयलॉजीमध्ये संस्कृतीची परिभाषा स्पष्ट करताना संस्कृती ही मानवाची सर्वसमावेशक संहिता असते. मानवी समाजातील जे प्रतिकात्मक व ज्ञानविषयक घटक असतात त्यांना लागू पडणारा सर्वसामान्य शब्द म्हणजे 'संस्कृती' होय.

संस्कृती निर्माण करणे, तिचे रक्षण करणे, ती टिकवणे आणि ती मानवी समुदायाच्या मनावर संस्कार करण्यासाठी प्रज्वलीत ठेवणे हा मोठा आणि दिव्य अश्वमेध असून प्रचंड कालापव्यय ही त्याची गरज असते. अशा या भारतीय संस्कृतीच्या उभारणीच्या कार्यात सर्व भाषिक संत-कवींनी, किर्तनकारांनी मोठी परंपरा उभी केली आहे. त्यामध्ये उत्तर भारतीय मुस्लिम हिंदीतील कबीर, रहिम, रसखान यांची नावे अग्रस्थानी आहेत. तर दक्षिण भारतात विशेषतः मराठी मुलुखात शहामुनी, शेख महंमद, आलमखान, शेख सुलतान, शहा मुंतोजी ब्रम्हणी, हुसैन अंबरखान, शेख चाँद बोधले या मुस्लिम मराठी संत कवींनी किर्तन परंपरेला खूप मोठे योगदान दिले आहे.

किर्तन परंपरेमध्ये अनेक ज्ञात, अल्पज्ञात, अज्ञात अशा मुस्लिम कवींनी किर्तन हा समाज परिवर्तनाचा राजमार्ग मानून किर्तनाची अवधारणा नव्याने रचली. अशा अनेक संत कवींचा अभ्यास व्यापक कॅनव्हॉसवर होऊ शकतो. शोध निबंधाची मर्यादा लक्षात घेता त्यातील फक्त एकाच हुसैन अंबरखान या मराठी संत कवीच्या किर्तन परंपरेतील योगदानाचा अभ्यास इथे करणे उचित ठरेल.

2017-18

वर्ष ११ वे /अंक ०२/दि. २७ जानेवारी २०१८

थोडे परि निरे । अविट ते घ्यावे खरे ॥
घ्यावे जेणे नये तुटी । बीज वाढे बीजा पोटी ॥ - संत तुकाराम

क्रांतिअग्रणी पर्व

(प्रबोधन । संघटन । संघर्षासाठी) पाक्षिक

ISSN 2320 - 9895

१९ फेब्रुवारी

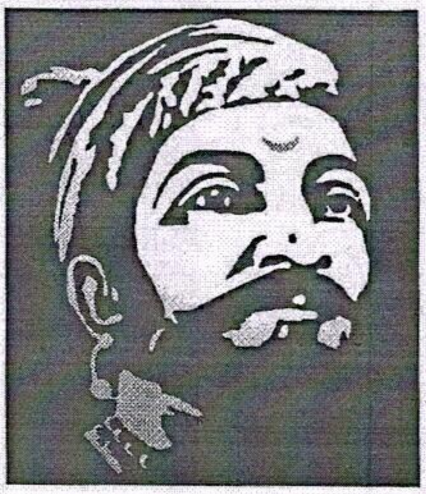

स्वराज्य संस्थापक

छत्रपती शिवाजी महाराज ह्यांना

त्रिवार मुजरा...!

krantiagrani@gmail.com

क्रांतिअग्रणी पर्व

प्रबोधन । संघटन । संघर्षासाठी पाक्षिक

थोडे परि निरे । अविट ते घ्यावे खरे ॥
घ्यावे जेणे नये तुटी । बीज वाढे बीजा पोटी ॥
- संत तुकाराम

संस्थापक
स्व. क्रांतिअग्रणी डॉ. जी. डी. बापू लाड

संपादक मंडळ अध्यक्ष
अरुण लाड

संपादक व प्रकाशक
व्ही. वाय. पाटील
'योगायोग', घर नं. १०, रामानंदनगर - ४१६ ३०८
ता. पलूस, जि. सांगली.
मोबा.: ९७६३७७९९६३.

RNI No.: MAHMAR/2008/24954

वर्ष ११ वे

अंक : ०२

शनिवार, २७ जानेवारी २०१८

पृष्ठे : २०

मूल्य : ₹ ५

वार्षिक वर्गणी : ₹ १००

अंकमांडणी : चंद्रकांत रोकडे, संतोष पाटील

अक्षरमांडणी : अमोल शिंदे

मुद्रितशोधन : गजानन पेटकर

क्षणचित्रे : सचिन फोटो, कुंडल

छपाई : श्री लक्ष्मी प्रिंटिंग प्रेस, कुंडल

कार्यालयीन पत्ता
संपादक, 'क्रांतिअग्रणी पर्व' पाक्षिक
मु. पो. कुंडल - ४१६ ३०९.
ता. पलूस, जि. सांगली (महाराष्ट्र)
फोन नं.: (०२३४६) २७११५०.
Email : krantiagrani@gmail.com

या अंकात प्रसिद्ध झालेल्या मतांशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही.
(पलूस न्याय कक्षेत)

अंतरंग

- क्रांतिज्योती सावित्रीबाई आणि राजमाता जिजाऊ
  संपादकीय

मा. अरुणअण्णा लाड ह्यांच्या ७० व्या वाढदिनानिमित्त
हृदयरोग चिकित्सा व उपचार शिबिर वृत्तांत......

- मा. अरुणअण्णांच्या वाढदिवसानिमित्त
  आरोग्य शिबिराबरोबरच अन्य उपयुक्त उपक्रमांचे आयोजन
  - अशोक पवार
- रुग्णांना मदतीचा हात दिला जाईल तेव्हाच
  आरोग्यदायी समाज घडेल
  - डॉ. ईश्वर झंवर
- अण्णांच्या विचाराप्रमाणेच
  आरोग्य शिबिरामध्ये अभिनवपणा
  - प्रांताधिकारी डॉ. विजयजी देशमुख
- सामान्यांच्या आरोग्यासाठी तज्ज्ञ डॉक्टरांनी
  प्रयत्नशील रहावे
  - अरुणअण्णा लाड

- आजचा तरुण - नवनाथ गुंड
- ग्राहकराजा : हक्क, कर्तव्ये आणि जबाबदारी
  - डॉ. नाथा सुखदेव काळेल
- वर्षभर हिरव्या चाऱ्यासाठी 'मुरघास'
  - डॉ. सचिन दगडूराम रहाणे
- वार्ता/कविता

१२ जानेवारी स्वामी विवेकानंद जयंती - 'राष्ट्रीय युवा दिन' त्यानिमित्ताने....

आजचा तरुण

- नवनाथ गुंड

'तरुण' ह्या तीन अक्षरी शब्दातच संपूर्ण जग सामावले आहे. जगातील उत्साहाचं कुतूहल म्हणजे आजची तरुणाई! नव्या विचारांची आणि विचारांची नांदी म्हणजे 'आजची तरुणाई'. तरुण म्हटलं की तेजस्वी प्रकाश आणि परिवर्तनाच्या शैलीचा प्रभाव असेच चित्र आज आपल्यासमोर उभे राहते. आजच्या तरुणाईला आपण वेगवेगळ्या आचारांनी आणि विचारांनी बांधतो. पण सद्य परिस्थिती बघता आजची तरुणाई बदलत चाललेली आपणास दिसते नव्हे 'तरुण' हा शब्द फक्त नावापुरता राहिला आहे.

भारताची लोकसंख्या इतर देशांचा विचार करता अधिक आहे. तरुणांच्याकडून भारताच्या अपेक्षा वाढल्या आहेत. स्वातंत्र्यपूर्वकाळातील तरुणांनी देशासाठी बलिदान दिले. भारताला पारतंत्र्यातून मुक्त करण्यासाठी त्यांनी जीवनभर वाटचाल केली. देश स्वतंत्र झाला पण समाजातील, जातीधर्मातील तेढ, व्यसनाधीनता, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, लोकशाहीची होत असलेली पायमल्ली व तरुणांच्यातील वाढता चंगळवाद या सर्वांविरोधात तरुणांनी एकत्र येऊन लढले पाहिजे.

आजची युवा पिढी देशाचे उज्ज्वल भविष्य समजले जाते. एकविसाव्या शतकात युवा पिढीला विविध व्यसनांनी ग्रासले आहे. शरीराला अपायकारक असणाऱ्या तंबाखू, सिगरेट, अमली पदार्थांचे सेवन आदी व्यसनांनी आजचे तरुण गुरफटले आहेत.

तरुणांच्या समोर अनेक समस्या उभ्या आहेत. तरुणांमध्ये वाढत चाललेली बेकारी, गुन्हेगारी, दहशतवाद यांचे प्रमाण पाहता परिस्थिती गंभीर होत असलेली दिसते. इंटरनेट म्हटलं की फेसबुक, व्हॉट्सअप, ट्विटर हे येतेच. मात्र या सर्वांचा वापर करताना तरुणाईला कशाचेही भान राहत नाही. रोजच्या दिनचर्येमधील बराच वेळ यासारख्या गोष्टीतच वाया जातो. त्यामुळे सोशल मेडिया डोकेदुखी ठरते.

यासोबतच तरुणाईचे गुन्हेगारीतील वाढते प्रमाण ही देखील मोठी समस्या आहे. आज तुरुंगात असलेल्यापैकी ४०% प्रमाण हे १५ ते ३० वर्ष वयोगटातलं आहे. ही आकडेवारी पाहून प्रश्न पडतो की, ज्या युवकांच्यामध्ये विश्व जिंकायची ताकद आहे तोच युवक वाममार्गाला जाऊन या सर्व मायाजालात का गुंततो?

वाढत्या लोकसंख्येमुळे स्पर्धा निर्माण होते. या स्पर्धेतून बाहेर फेकले गेलेला युवक हा निराशेच्या गर्तेत अडकला जातो. पदवीधर असूनही वाढती बेरोजगारी आणि त्यामुळे येणारी निराशा यातून आजचा तरुण व्यसनांचा स्वीकार करताना दिसतो, नव्हे तो आपले तारुण्य नष्ट करतो. अमली पदार्थांचे सेवन करणाऱ्यांपैकी युवकांचे प्रमाण ७०% पेक्षा जास्त आहे. त्यामध्ये महाविद्यालयीन युवकांचे वाढते प्रमाण ही धोक्याची घंटा आहे. बेकारी, नैराश्य, व्यसनाधीनता या सर्वांमुळे हा तरुण गुन्हेगारीकडे वळतो व न कळत या युवकांच्या हातून गंभीर गुन्हे घडतात. याच युवा शक्तीचा गैरवापर करणारे धर्मांध समाजकंटकही आहेत. फसवणूक, आमिष दाखवून धर्म, समुदायाच्या नावाखाली 'ब्रेन वॉश'ला बळी पडून तरुण दहशतवादाकडे वळवले जातात. अशाच धर्मांध शक्तींना बळी पडून देशातील अनेक तरुण 'इसिस'च्या दहशतवादी कारवाईत सहभागी होताना दिसत आहेत. ही गोष्ट सुद्धा धोक्याची घंटा आहे.

या सर्वांमुळेच आपल्या देशापुढील आव्हाने अजून जास्तच बिकट व वाढत आहेत. भारतात जरी युवाशक्ती असली तरी त्या शक्तीचा दुरुपयोग होवू न देता युवकांच्या विकासासाठी, उध्दारीकरणासाठी तरुणांनी सजग झाले पाहिजे, जेणेकरून ही युवकांची शक्ती समाज विघातक न बनता राष्ट्रविकासक बनावी.

स्वामी विवेकानंद नेहमी म्हणत, देवावर विश्वास आहे किंवा नाही यापेक्षा युवकांचा स्वतःवर विश्वास आहे का? जर असेल तरच युवकाचे व्यक्तिमत्त्व घडते. खरा आस्तिक तोच आहे जो आपल्या मनात नवा विचार घेऊन पुढे जातो. ज्याच्यामध्ये आभाळाला शिवायची धमक असते आणि क्षितिजाला पार करण्याची उर्मी असते, अशा तरुणांच्या

आंतरविद्याशाखीय राष्ट्रीय चर्चासत्र (दि. १२ जानेवारी २०१८)
विषय : आजच्या संदर्भात वैचारिक साहित्याची प्रस्तुतता

आयोजक	श्री शाहू छत्रपती शिक्षण संस्थेचे, श्री शहाजी छत्रपती महाविद्यालय, दसरा चौक, कोल्हापूर	ISSN 2349-638x Impact Factor 3.025

'कविता श्रमाची' तील वैचारिकता

प्रा. नवनाथ किसन गुंड

शेतकरी- कामकरी यांच्या संसार रथाचे एक चाक म्हणजे स्त्री. पुरुष-स्त्री दोघेही मिळवते-कमवते असतील तरच गरिबांचा संसार रथ रखडत का होईना चालतो. कामगार वर्गात आर्थिक सुबत्ता व सुखसोई नसल्याने साहजिकच पोरवडा वाढत जातो. कमावते हात चार आणि खाणारी तोंडे दहा. त्यातच त्यांचे वास्तव्य म्हणजे झोपडीत किंवा झोपडपट्टीत. यातील काही कामगार गिरण्यातून- कारखान्यात आपले रक्त व घाम आटवित असतात. त्यांचे घर म्हणजे रोगट जंतूचे माहेरघर. जणू ती मृत्युची भेसूर प्रयोगशाळाच होय. एसे विंदा करंदीकर म्हणतात (मजूर कविता) त्यातच आजारी पोरे, त्यांचे कुथने, रडणे, पिरपिर, अर्धनग्न नि अर्धउपाशी पत्नी. घरात लुगडे गेले, मीठ संपले अशा सतत तक्रारी, त्यामुळे कामावरून येताच दारू पिऊन येणारा, कुणाचा बाप, कुणाचा पती, तोही कुणाचा तरी गुलाम, कुणाचा वेठबिगारी अशी अवस्था कामगार शेतमजुरांच्या घरी असते. त्यातच ती सोशीक बिचारी आई वा पत्नी घराचा व्याप सांभाळून, मोलमजुरी, कुणाची भांडी धुणी करून संसाराला हातभार लावीत असते.

अशा या श्रमिक स्त्रीचे चित्रण अनेक कथा-कादंबऱ्यातून बऱ्याच लेखकांनी रेखाटलेले आहे. 'कविता श्रमाची' या संग्राहातही विविध कवींनी या स्त्रीचे दुःख, दैन्य, दारिद्र्य, कष्ट, उपास-तापास, मारहाण, अपमान वर्णन केलेले आहे. त्याचा थोडक्यात आढावा घेण्याचा मी येथे प्रयत्न केला आहे.

केशवसुतांच्या 'मजुरावर उपासमारीची पाळी' या कवितेत दिवसभर वणवण करूनही काम व दाम न मिळाल्याने रिकाम्याहाती घरी येणाऱ्या नवऱ्याला बघून ती (पत्नी) मुलांना काय सांगत असेल.

घेवोनि चारा आपुल्या पिलांप्रती
जाती अहा ! पक्षी सुखी घरीं किती;
बाळांस हे दावुनि कारभारीण
कैसे तया देत असेल सांगुन ?

हा मजुरापुढचा प्रश्न केशवसुत आपल्यापुढे मांडून प्रश्नांकित करत आहेत. तर ग.ल. ठोकळ आपल्या 'मजूर' या कवितेत मजुराचे कष्ट, त्याचा मोडका तोडका संसार पण या संसारातही हसतमुख जगणारी पत्नी,

मालकीण माझी गोड
तळहातावरला फोड
प्रेमाला नव्हती जोड
पण हाय, कोपला देव-आडवे पडे दुर्दैव !

असा गरिबांचा संसार करता करता ती शिणून गेली. राबराबून अंथरूणाला खिळली. त्यातच अंगावरचे दूध पिते लेकरू, अब्रू झाकायलाही अंगावर चिरगूट नाही. गाडग्यात पसाभरही धान्य नाही. त्याने पत्नीला वाचविण्याचा प्रयत्न केला पण व्यर्थ. अशी ही तळहाताच्या फोडाप्रमाणे जपणारी मजूर स्त्री या कवितेत आपणांस भेटते.

अनंत काणेकरांच्या 'कवने' या कवितेतील मजूर स्त्री कशी तर-

अपुरी भाकर चट्ट खाऊनी,
रडता आणखी हवी म्हणोनी,
कामकऱ्यांच्या मुलास जननी,
अश्रु दाबुनी नाही म्हणते.

ISSN 2277-8063

March 2017
Vol. VI / Issue - I / 2017

Navjyot
नवज्योत

International Interdisciplinary ResearchJournal
[Humanities, Social Sciences,Languages, Commerce &Management]

Chief Editor
Prof. Dr. Ravindra P. Bhanage
Dept. Of Political Science,
Shivaji University,
Kolhapur.

Editor
Dr Pyarelal Suryawanshi
Prof Rajabhau Deshmukh
Mahavidyala ,Nandgaon,(kh)
Dist .-Amravati.

K.Dr.G.D.B.L.Mahavidyalaya * Tal.Palus.Dist.Sangli * KUNDAL

- Published by-
HOUSA Publication,Kolhapur

 ISSN 2277-8063

CONTENTS

S. N	Subject	Title	Author	P.No
1	Sociology	Women Farmers In India: An Overview	Dr.PratimaPawar, Dr. Pratibha. Desai	1-6
2	Political Science	Demand For New Districts In Maharashtra	Dr.VasantiRasam Shri. Anil Patil,	7-11
3	Political Science	India's International Relations And Foreign Policy In Contemporary Decadal	Smt.Varsha. M. Potdar	12-15
4	Law	India's Economic development and Dr. Babasaheb Ambedkar's Thoughts(AnOverview)	Shri .Nandkishor K. Ramteke	16-19
5	Economics	Nais-Crop Insurance Scheme In Maharashtra	Miss.ShirkeSadhana Uttam	20-25
6	English	Image Of Race In Theautobiography Of May Angelou's *I Know Why The Caged Bird Sings*	Shri. D.K. Kamble	26-28
7	अर्थशास्त्र	नागपूर विभागातील गैर प्राथमिक क्षेत्राचा वाढता विस्तार व शहरीकरण	डॉ . जयंतकुमारएम . मस्के	29-31
8	अर्थशास्त्र	ग्रामिण विकासात ग्रामसभेचा सामाजिक व आर्थिक दृष्टिकोन	श्री . गुरूनाथ इश्राम सावंत	32-36
9	अर्थशास्त्र	महाराष्ट्रातील उद्योजकता विकास कार्यकम व महिला उद्योजक	श्री . मदनजी . प्रधान	37-39
10	अर्थशास्त्र	मातीवरील प्रकिया एक महाउद्योग	डॉ . नितीनवी . कावडकर	40-43
11	राज्यशास्त्र	वैश्वीकरणकी तपिश और मानवाधिकार हनन	प्रा . अल्पना वैद्य	44-47
12	राज्यशास्त्र	अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यातील बंडखोर स्त्री	सुप्रिया थोरात	47-50
13	राज्यशास्त्र	शीतयुध्दोत्तर भारत–चीन संबधाची वाटचाल	डॉ . प्यारेलाल सूर्यवंशी प्रा . दत्तात्रय ढवारे	51-53
14	राज्यशास्त्र	भारतीय संविधान आणि धर्मनिरपेक्षता	प्रा . डॉ . भगवान माने	54-56
15	राज्यशास्त्र	भारत–पाकिस्तान संबध सर्जिकल स्ट्राईक	प्रा . संतोष केशव खडसे प्रा . सुनिता सं . बोर्डे खडसे	57-60
16	राज्यशास्त्र	शितयुध्दोत्तर भारत आणि शेजारी देश	प्रा . ए . वी . मोहिते प्रा . यु . एन . लाड	61-63
17	राज्यशास्त्र	१९९० नंतरचे भारतीय राजकारण	श्री . प्रविण अरूण पोवार	64-65
18	राज्यशास्त्र	भारतीय राज्यघटनाआणि धर्मनिरपेक्षता	प्रा . डॉ . मनोज जाधव प्रा . बाबुराव पवार	66-67
19	राज्यशास्त्र	भारतीय राज्यघटना आणि धर्मनिरपेक्षता	प्रा . डॉ . टी . एम . पाटील प्रा . शरद विठ्ठल पाटील	68-71
20	राज्यशास्त्र	डॉ . बाबासाहेबआंबेडकरांचा भारतीय राज्यविषयक सिध्दांत : तत्व आणि व्यवहार	मोहन रमेश कांबळे	72-74
21	राज्यशास्त्र	२१ व्या शतकातील भारताचे आंतराष्ट्रीय संबध : परराष्ट्र धोरणातील बदल	प्रा.शिंदे ए.जे.	75-76
22	हिंदी	रांगेय राघव के कथा साहित्य मे यौन–संबंधो की अभिव्यक्ति	प्रा . जे . ए . पाटील	77-78
23	मराठी	मराठी विज्ञान साहित्य	प्रा . डी . जे . दमामे	79-82
24	शारिरीक शिक्षणशास्त्र	आंतराष्ट्रीय कबड्डी स्पर्धेवेळी वापरलेल्या कौशल्यांचा विश्लेषणात्मक अभ्यास	श्री . देवेंद बापुसो बिरनाळे	82-85

K.Dr.G.D.B.L.Mahavidyalay * Tal.Palus.Dist.Sangli * KUNDAL

रांगेय राघव के कथासाहित्य में यौन -संबंधों की अभिव्यक्ति

प्रा. जे.ए.पाटील. क्रांतिअग्रणी जी.डी. बापू लाड महाविद्यालय, कुंडल तहसिल- पलुस, जिला - सांगली (महाराष्ट्र)
ईमेल- jagannathapatil@gmail.com मोबा–9960765862

भूमिका-

मानव समाज की प्रगति एवं विकास के लिए स्वतंत्र मानवीय संबंधो की जितनी आवश्यक्ता है उसमें कही अधिक महत्वपूर्ण है स्त्री-पुरूषों के समभावपूर्ण, सहवास के धरातल पर मुक्त और आदर्श संबंध। मानवीय स्तर पर स्त्री-पुरूष अधिक महत्वपूर्ण इसलिए है कि सृष्टि और आदर्श समाज के निर्माण में इनका महत्वपूर्ण योगदान स्वीकार किया गया है। आज यौन संबंधों की यथार्थ स्थिति के संबंध में कहा जा सकता है कि स्त्री-पुरूष के आस्थाहीन, कृत्रिम संबंध ही सर्वत्र देखे जाते हैं जिसमें परस्पर स्नेह, सोहार्द और विश्वास के स्थान पर वासना, संदेह और अविश्वास के प्रभाव से दिशाहीन जीवन के दर्शन होते है।

हमेशा से ही देखा गया है कि पुरूषवर्ग नारी के शरीर का भूखा रहा है। पति या पर पुरूष की वासना के शिकारसे नारी छटपटाती रही है। उसका यौवन,निराश्रय आर्थिक विवशता एवं सौंदर्य उसे वासना के कर्दम की ओर ले जाते हैं। स्त्री-पुरूष के वासनामय अवैध संबंधों में कभी-कभी नारी की भी उद्दाम वासना जिम्मेदार होती है। नव परंपरा एवं अतृप्ति की पीडा उसे वासनामय बना देती है। रांगेय राघव ने अपनी कहानियों में पुरूष की वासना,कामुकता एवं लंपटता के साथ नारी की वासनामयता के चित्रों को भी उभारा है।समाज में अधिकार यह देखने को मिलता है कि उच्चवर्ग का पुरूष जहाँ धनलोलुप होता है वही कामुक भी । इनमें स्नेह ,संवेदना तथा आत्मीयता के झरने सूखे मिलते है और मिलते ही भोग, विलास, दानवीयता के रेतीले प्रदेश । इस वर्ग की नारी पुरूषों को आकृष्ठ करनें, सुख प्राप्त करने तथा भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए उच्छृखल हो जाती है। जैसे 'देवदासी' कहानी की सुर्यमणि निम्नवर्ग का पुरूष और नारी दोनों ही अर्थाभाव में अतृप्त कामनाओं व वासनाओं को तृप्त करनें में प्रयत्नशील दिखाई देते है। रांगेय राघव की कुछ कहानियों में वैध यौन संबंधों और अधिकांश में अवैध यौन संबंधों की अभिव्यंजना हुई है। अवैध संबंधों में स्त्री - पुरूषों की परवशता, विवशता, अतृप्ति की पीडा, कुंठा के साथ उनके छलकपट, वासना और कामुकता को उभारने का प्रयास उन्होंने किया है।

(१) नैतिक धरातल पर यौनसंबंधों का चित्रण :-

यौन संबंधों के अंतर्गत नैतिक संबंधों में पति - पत्नी संबंध और निस्वार्थ भावना से बने स्त्री - पुरूष संबंध आते है। रांगेय राघव की कहानियों में नैतिक संबंधों का चित्रण पति- पत्नी संबंधों में ही देखा जा सकता है। उनकी अधिकतर कहानियों में अर्थविषमता, वर्गविषमता, घूटन, पीडा और विवशता से उत्पन्न अनैतिक संबंधों का ही चित्रण अधिकांश में मिलता है: इनमें उच्चवर्गीय लोगों और पदाधिकारियों ब्दारा विवश नारी के जबर्दस्ती संबंध स्थापित करना या जीने के लिए दो पैसे पाने की इच्छा से नारी का पुरूष से जानबुझकर मासंल संबंध स्थापित करना जैसे विविध रूप है। रांगेय राघव के ' चिडी के गुलाम', 'आकर्षण', 'घासपूस', आवाज घुटने लगी', धर्म - संकट', 'जाति और पैशा', ' विसिटता कंबल', आदि कहानियों में क्रमशः प्रताप और उसकी पत्नी, सुखदास और चंपा, सुबोध और सरस्वती, गुरूदयाल सिंह और पत्नी आदि के रूप में पति - पत्नी के यौन संबंधों को चित्रित किया हैं वे नैतिक धरातल, पर दिखाए गएं हैं। 'देवदासी' और 'अनुवर्तिनी' जैसी कहानियों में रूक्मिणी और रंगभद्र नंदिनी और आनंद भिक्षु के आपसी संबंध मित्रता के धरातल पर दिखाएँ गऐ है। जिन्हें अधिकतर नैतिक संबंध ही कहा जा सकतो है।

(२) अनैतिक यौन संबंधों का चित्रण :-

स्त्री - पुरूषों के अनैतिक कामुक, वासनामय संबंधों का चित्रण 'देवदासी' 'अनुवर्णिनी', 'तिरिया', बॉबी और मुंतर', 'उँट की करवट' , 'पंचपरमेश्वर', 'काई',
'नरक', 'साँझ के शिकारी', आदि कहानियों में मिलता है।

'देवदासी' कहानी में धनंजय कामुक पुरूष है जिसका प्रेम बासनामय हैं इसीलिए वह राजमाता सुर्यमणि को छोडकर देवदासी रूक्मिणी के यौवन को देखकर वासना में अंधा हो उसपर टूट पडता है।

'अनुवार्तिनी' कहानी में बौध्द भिक्षुसंघ स्तविर जैसे स्वयं को धर्म के रक्षक माननेवाले भी मौका पाते ही किस तरह कामुक हो उठते है इसका चित्रण करते हुए रांगेय राघव ने एक कटु सत्य को उभारा है -" आज का बुध्द भिक्षु हो या कोई और इससे बच नहीं पाता, कहीं न कहीं यह ज्वाला भडक उठती है।"[१] उन्होंने इस कहानी में यह दिखाया है कि " संघस्तविर अनुवर्तिनी के मांसल शरीर को देखकर व्याकुल हो जाता है तथा उसके नजदीक जाकर उससे संबंध स्थापित करने के अनेक प्रयास भी करता है।"[२] 'नारी का विक्षोभ' कहानी में कामुकता और आकर्षण की शिकार युवा पीढ़ी को दिखाने का प्रयास किया गया है। " इसी सतई कामुक्ता के कारण ही विद्यार्थिनी सविता और मास्टर के अनैतिक संबंध बनते दिखाई देते है।"[३] इसीतरह अनैतिक यौन संबंधों पर रांगेय राघवजी ने अपनी कहानियों में चित्रण किया है।

G.D.B.L. Mahavidyalaya KUNDAL Tal.Palus.Dist.Sangli

-17-18

Generated by CamScanner

Total No Pages 44

भारतवाणी

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा (कर्नाटक), धारवाड

जनवरी २०१८

वार्षिक चंदा रु. १००-००

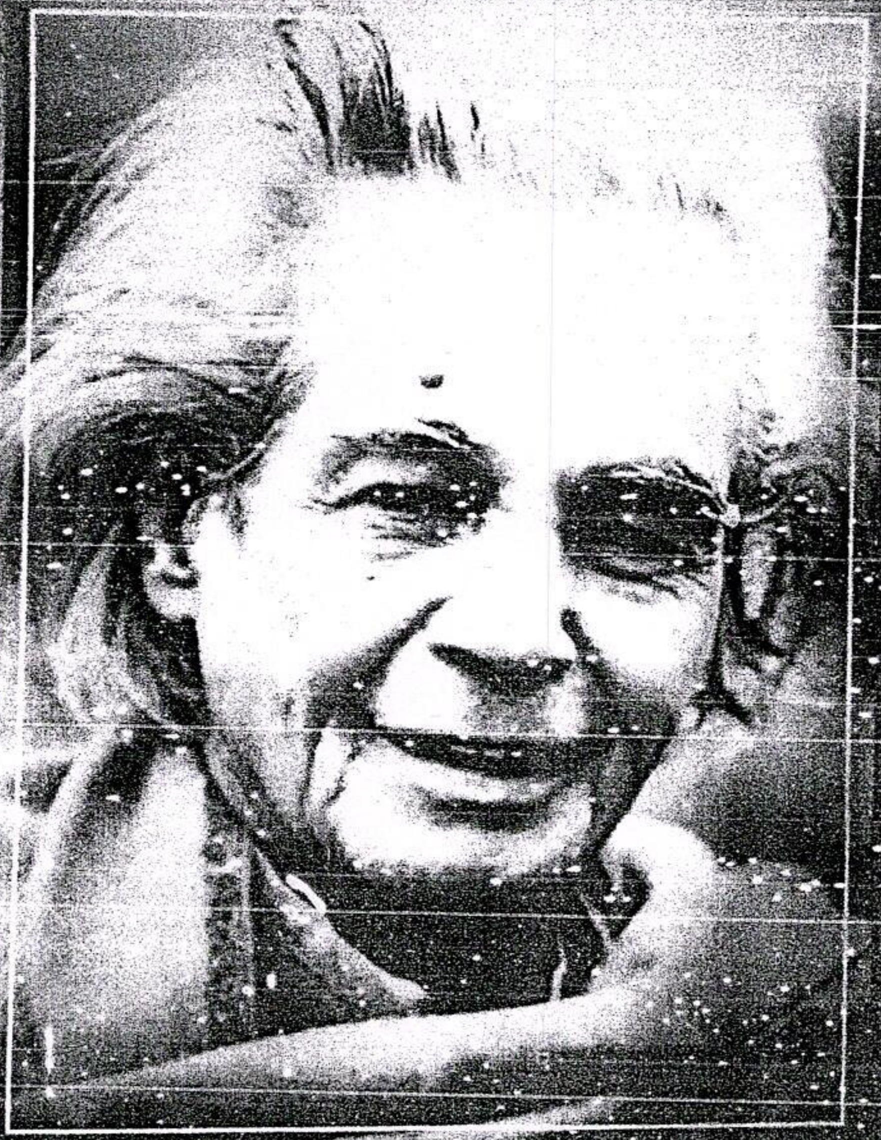

अली सरदार जाफरी

२९ नवंबर १९१३ - १ दिसंबर २०००

Generated by CamScanner

भारतवाणी

हिंदी मासिक

(केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार दिल्ली द्वारा प्राप्त अनुदान से प्रकाशित)

वर्ष : 60 जनवरी- 2018 अंक - 10

संरक्षक
आर.एफ.नीरलकट्टी जी

व्यवस्थापक संपादक
के. विजयन
सचिव

संपादक
डॉ. अमरज्योति

संपादक मंडल
डॉ. पंचाक्षरी हिरेमठ
डॉ. वी.वी. हेब्बल्ली

वार्षिक चंदा
रू. 100/-

मनीआर्डर या डिमांड ड्राफ्ट के द्वारा
सचिव, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा,
धारवाड -580 001
के नाम पर ही भेजें
(न कि संपादक के नाम)

● संपादकीय ....

1. अंगिका लोककहावतों में जन जीवन
   ✍ कृष्णा मुरारी सिंह 'किसान' ....
2. रांगेय राघव के उपन्यासों में चित्रित अर्थचेतना
   ✍ प्रा. जे.ए. पाटील ....
3. बसंत पंचमी पर : भगवती सरस्वती पूजा का महत्त्व
   ✍ डॉ. रामसिंह यादव ....
4. गढ़वाली लोकसाहित्य एवं लोक संस्कृति
   ✍ डॉ. पंडित बन्ने ....
5. साठोत्तरी कविता एक दृष्टिक्षेप
   ✍ डॉ. उत्तरा प्रसाद कुलकर्णी ....
6. विष्णु प्रभाकर के वैज्ञानिक नाटक : वर्तमान संदर्भ में
   ✍ डॉ. सुरेश शिंदे 2

● प्रसंग

1. धन किसका
   महेंद्रसिंह शेखावत 'उत्साही' ....

● कविता

1. सत्य और सद्‌कर्मों से
   ✍ सुनील कुमार गुप्ता ....
2. हिंदी अपने देश में बेगानी ✍ डॉ. महताब अहमद 'आजाद' ....

● लघुकथा

1. दादाजी का भोजन ✍ डॉ. महेंद्रसिंह शेखावत 'उत्साही' ....

● कन्नड विभाग

1. गुलाबी हुवु
   ✍ डॉ. पंचाक्षरी हिरेमठ ....

● सभा समाचार .... 33-3[illegible]

Generated by CamScanner

रांगेय राघव के उपन्यासों में चित्रित अर्थचेतना

प्रा. जे.ए. पाटील

आधुनिक युग की भौतिकता में अर्थ की आवश्यकता एवं महत्व को देखते हुए, मनुष्य अर्थ-प्राप्ति में विशेष जुडा दिखाई देता है । आज अर्थ मानव जीवन के विधायक तत्व के रूप में है क्योंकि धन के बिना कुछ भी पाना असंभव है । यहाँ तक की जीवित रहने के लिए आवश्यक सामग्री जुटाने का मुख्य साधन धन ही है । धन के इस महत्व के कारण सभी धन जुटाने की दौड में चल रहे है। इस दौड में कुछ बहुत आगे निकल जाते हैं तो कुछ बहुत पीछे रह जाते है । परिणाम स्वरूप समाज में आर्थिकविषमता का घिनौना रूप दिखाई देता है। रांगेय राघव ने अपनी औपन्यासिक रचनाओं का उद्‌घाटन करते हुए आर्थिक विषमता से पीडित बहुजन समाज के दुःखों एवं अभावों का यथार्थ चित्रण किया है ।

रांगेय राघव मानव मात्र के हित के लिए अपने समाजवादी विचारों के अनुरूप, धन से घृणा न कर धन प्राप्ति के अनैतिक साधनों को घृणास्पद बताते है । और परिश्रम के बल पर मिले धन का स्वागत करते है । इस कथन के अनुरूप ही उसके 'पक्षी और आकाश' उपन्यास में धन और अधिकार लोलूप भाई अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए अपने भाई धनकुमार के खून के प्यासे हो जाते है । 'पराया' उपन्यास में अर्थ प्राप्ति को ही जीवन की उन्नति का पर्याय माननेवाले पूँजीवादी वृत्ति के युवक का विवेचन रांगेय राघव ने किया है, जिसमें दिखाया गया है कि धनसंग्रह की भावना मनुष्य को मनुष्यत्व से गिराकर इतना स्वार्थी, कठोर और अंधा बना देती है । वह अपने संपूर्ण मानवीय संबधो एवं इंसानियत को लात मारकर, सत्य-असत्य, उचित-अनुचित की सीमा को न मानता हुआ जीवन की शांति में भयकर तूफान उठा देता है । इस तरह रांगेय राघव ने दिखाया है - ''पूँजीवादी समाज में मानव का उत्थान वास्तव में उसका चारित्रिक पतन है ।'' इसलिए वह जितना ही धन के कारण सम्मान पाता है उतनी ही उसकी आत्मा मरती जाती है । तब और अधिक धन के लालच को मिट्टी में डालकर वह अपनी आत्मा की लाश को ढूँढता जाता है । ताकि वह भीतर ही सड़ती रहे, बाहर बदबू न दे । ऐसी स्थिति में समाज की उन्नति मुश्किल है । इसलिए रांगेय राघव पूँजीवादी वृत्ति तथा व्यवस्था को मानवता के लिए अभिशाप मानते है ।

'पथ का पाप' उपन्यास का धनलोलुप किशनलाल तो यहाँ तक कहता है कि धन तो धोखे से जमा किया जाता है । और सपनरायन से कहता है - ''धोखा ! व्यापार में धोखा है और सारी दुनिया में व्यापार है । चक्की चला के धम की कटौती करके जमा कैसी होती है दौलत ? धोखो से ।'' वह दुनिया में हर काम में धोखा देखते हुए धन के लिए एक के बाद एक धोखा तथा घृणित कृत्य करता जाता है ।

'हुजुर' उपन्यास में तो सभी जगह आर्थिक विषमता दिखाई देती है । जिसमें उच्चवर्ग की विलासिता है और निम्नवर्ग की घूटन तथा पीड़ा । उपन्यास का 'जैक' (कुत्ता) उच्च तथा मध्यमवर्गीय जीवनानुभवों से गुजरता हुआ अंत में निम्नवर्ग में

-12-18

ISSN 2277- 8063

Navjyot

नवज्योत

International Interdisciplinary Research Journal
(Humanities, Social Sciences, Languages, Commerce & Management)

www.navjyot.net

E-mail : editornavjyot@gmail.com

CONTENTS

S.N.	Subject	Title	Author	P.No.
1	English	Study of the Nature in David Malouf's novel Harland's Half Acre (1984)	Chandan S. P. Mishra	1-5
2	Political Science	Good Governance	Miss. Supriya D. Thorat	6-11
3	Economics	A Study of Family Expenditure on Food Articles and Non Food Articles in Chandgad Taluka of Kolhapur District	Miss-Vrushali Kamalakar Herekar.	12-17
4	अर्थशास्त्र	जयसिंगपूरमधील वडार समाजातील स्त्रीयांची उच्चशिक्षणातील सद्यस्थिती.	श्री. विजय रामचंद्र डोंगरे	18-20
5	हिंदी	अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य पर संकट : मुक्तिबोध की कविता 'अंधेरे में'	सौ. विद्या शामराव चौगले	21-24
6	मराठी	महाराष्ट्रातील शेतीच्या अल्पउत्पादकतेची मिमांसा	प्रा.डॉ.शिवप्रसाद पं. वायाळ	25-26
7	राज्यशास्त्र	शहरीकरण आणि झोपडपट्टीची समस्या	प्रियांका आबासो शिंदे	27-29
8	राज्यशास्त्र	आचार्य विनोबा भावे यांचे धर्मचिंतन	डॉ. वकील टी. शेख	30-34
9	राज्यशास्त्र	18 व 19 व्या शतकातील कायदा आणि लिखाणांच्या माध्यमातून स्त्री सुधारणा चळवळ :– एक दृष्टीक्षेप	डॉ.सुजाता पाटील	35-37
10	राज्यशास्त्र	राजारामशास्त्री भागवत यांची स्वराज्याची संकल्पना	श्रावण धोंडीराम पाटील	38-40
11	राज्यशास्त्र	कोल्हापूर जिल्हयातील धरणग्रस्तांच्या पुर्नवसनाचे प्रश्न	पुजा काकासाहेब चव्हाण	41-42
12	राज्यशास्त्र	राजनीति में महिला आरक्षण : एक दृष्टिक्षेप	डॉ.विवेक दिवाण	43-45
13	राज्यशास्त्र	भारतातील दारिद्रय व दारिद्रय निर्मुलनाचे कार्यक्रम	सचिन श्रीरंग चव्हाण	46-52
14	इतिहास	ब्रिटीश शिक्षणपद्धती व त्याचा भारतीय समाजावर पडलेला प्रभाव – एक ऐतिहासीक अध्ययन	भोगेकर सचिन पत्रुजी	53-56
15	English	Pt. Jawaharlal Nehru's Views On Indian Democracy	Dr. Wale Nagesh Gurappa	57-59
16	Law	Suggestions towards Improvement of Right to Information	Dr. Savita Rasam	60-63
17	मराठी	कोल्हापूर संस्थानातील १८५० ते १८९५ या काळातील शैक्षणिक प्रगती	विवेकानंद राजाराम माने	64-66

 ISSN 2277-8063

कोल्हापूर संस्थानातील १८५० ते १८९५ या काळातील शैक्षणिक प्रगती

विवेकानंद राजाराम माने इतिहास विभागप्रमुख, क्रांतिअग्रणी जी.डी.बापू लाड महाविद्यालय, कुंडल जि. सांगली

प्रस्तावना:

दक्षिणी संस्थानात कोल्हापूर संस्थानाला फार महत्व होते. कोल्हापूर राज्य म्हणजे कोल्हापूर संस्थान होय. सन १७१० ते १९४९ या काळातील कोल्हापूरास कोल्हापूर राज्य असे म्हटले जाते. छत्रपती शिवाजी महाराजांच्या मृत्युनंतर छत्रपती संभाजीनी नऊ वर्षे व छत्रपती राजारामांनी अकरा वर्षे औरंगजेबाशी लढा देऊन स्वराज्य टिकविले. राजाराम महाराजांचे निधन २ मार्च १७०० रोजी सिंहगडावर झाले. त्यांच्या निधनासमयी त्यांच्या राणी ताराबाई व राजसबाई या पन्हाळ्यावर होत्या. रामचंद्रपंत अमात्य यांनी सिंहगडावर राजाराम महाराजांची उत्तरक्रिया आटोपून पन्हाळ्यावरील राण्यांचे सांत्वन केले आणि सर्व सेना प्रमुखांना पत्रे पाठवून राज्यरक्षणची आज्ञा केली. या दरम्यान महाराणी ताराबाईनी आपला मुलगा शिवाजी यांची मुंज करून विशाळगड येथे त्यांचा राज्याभिषेक केला आणि औरंगजेबाशी त्याच्या मृत्युपर्यंत संघर्ष सुरु ठेवला.[१] फेब्रुवारी १७०७ मध्ये औरंगजेबाचा मृत्यु झाल्यावर मोगलांच्या कैदेतील संभाजीपुत्र शाहूची सुटका झाली. शाहू —ताराबाई संघर्षात शाहू विजयी झाल्याने ताराबाईने सन १७१०ला कोल्हापूर राज्याची स्थापना केल्याची घोषणा केली. त्यावेळी कोल्हापूर राज्याच्या सीमा पुढीलप्रमाणे होत्या. उत्तर अक्षांश १७–१०'–४५" व १५–५०'–२०" पुर्व रेखांश ७४–४४'–११" व ७३–४३'–१६".[२] आजच्या कर्नाटकामधील रायबाग व कटकोळ हा भाग पूर्वी कोल्हापूर राज्यात होता. कोल्हापूर राज्य २८५५ चौरस मैलाचे होते. दक्षिणी संस्थानात कोल्हापूर हे सर्वात मोठे संस्थान होते. या राज्याच्या उत्तरेला सातारा जिल्हा असून वारणा नदी तर ईशान्येला कृष्णा नदी होती. पूर्व व दक्षिण दिशांच्या सरहद्दीस बेळगाव जिल्हा होता. नेऋत्य दिशेला सावंतवाडी राज्य होते पश्चिमेला रत्नागिरी जिल्हा होता तसेच पूर्वेस व ईशान्येस सांगली, मिरज व कुरूंदवाड हा पटवर्धनांचा प्रदेश होता.[३] कोल्हापूर राज्याचा पृष्ठभाग उंच सखल असून त्याची समुद्रसपाटीपासूनची उंची साधारण २००० फूट होती. कृष्णा, वारणा, हिरण्याकेशी, पंचगंगा, दूधगंगा, वेदगंगा या मुख्य सहा नद्या या राज्यात होत्या. पश्चिम सीमेवर दक्षिण–उत्तर सहयाद्रीची रांग होती. त्यामुळे अनेक टेकड्या व घनदाट अरण्यांनी व्यापलेला डोंगराळ प्रदेश हे या राज्याचे वैशिष्ट्य होते. राज्याच्या हद्दीतील डोंगर टेकड्यांची समुद्रसपाटी पासून सरासरी उंची २५०० फुट होती.[४] या राज्याच्या सह्याद्री पर्वत पठारावर पन्हाळा, विशाळगड, भुदरगड, रांगणा, सामानगड, गगनगड, पावरगड, मुडागड, शिवगड, महिपालगड, कलानिधीगड, पारगड, गंधर्वगड, हे दुर्ग होते.

कोल्हापूर संस्थानातील शिक्षणव्यवस्था :

कोल्हापूर संस्थानात पारंपारिक पद्धतीने शिक्षण दिले जात होते. बापाचा व्यवसाय शिकून घेवून पुढे तोच व्यवसाय चालविणे हाच शिक्षणाचा प्रकार होता. वडिलांची हत्यारे त्याला आयती मिळत असत. वडिलोपार्जित धंद्याचे ज्ञान त्याला घरबसल्या मिळत असे. जाता येता वडिलांचे काम त्याच्या नजरेखाली जाई. ते काम करण्यासाठी लागणारे साहित्य त्याला घरीच उपलब्ध होत असे. त्यामुळे आधुनिक शिक्षणचा गंधही समाजाला नव्हता. शिक्षणाची ज्ञानगंगा बहुजन समाजापर्यंत नेण्याचा प्रयत्न काही खाजगी शिक्षणप्रेमी मंडळींनी व ब्रिटिश सरकारने केला होता. पण तत्कालीन राजकारण व बहूजन समाजात असणारी शिक्षणविषयक अनास्था हे शिक्षण प्रसाराच्या व प्रचाराच्या मार्गातील अडसर होते. सन १८५४ पर्यत कोल्हापूर संस्थानात शिक्षण क्षेत्रात म्हणावी तशी प्रगती झाली नव्हती.

सन १८४८ मध्ये कोल्हापूर संस्थानात कोल्हापूर शहरी तसेच आळते, पन्हाळा व शिरोळ येथे सरकारी शाळा सुरू झाल्या. सन १८५१ मध्ये कोल्हापूर शहरात पहिली इंग्रजी शाळा सुरू झाली होती. या शाळेमध्ये एकोणीस विद्यार्थ्यांनी प्रवेश घेतला होता.[५] याच सुमारास कागल, बावडा, गडहिंग्लज, भुदरगड, व मलकापूर या ठिकाणी शाळा सुरू झाल्या होत्या. सन १८५३ मध्ये कोल्हापूरात पहिली मुलींची शाळा सुरू होती. परंतु काही दिवसांनी मुलींची संख्या कमी होत गेली.

सन १८६६ मध्ये जेव्हा सर ग्रँट हे शाळा पाहण्यासाठी आले तेव्हा शाळेचे नाव फक्त शिल्लक असलेले दिसून आले होते.[६] सन १८५३ नंतर कोल्हापूर संस्थानात शिक्षण क्षेत्रात प्रगती होत गेली. सन १८५४ मध्ये शाळांची संख्या नऊ होती. त्याच्या पुढील वर्षी शाळांची संख्या पंधरा झाली होती. त्या शाळांमध्ये ७०७ विद्यार्थी शिक्षण घेत होते. सन १८५५ मध्ये बालक्रीडा मंदिर, व उर्दूशाळा सुरू करण्यात आली. याच वर्षी भुदरगड येथे मुलींची शाळा सुरू करण्यात आली. सन १८५९ मध्ये कोल्हापूर संस्थानातील शाळांची संख्या सतराच्यावर गेली होती. या शाळांमध्ये ११७३ विद्यार्थी शिक्षण घेत होते अशी नोंद आढळते.[७] सन १८६३ मध्ये अल्पवयीन सरदारांच्या शिक्षणासाठी कोल्हापूर येथे एक शाळा सुरू करण्यात आली होती. त्यात चोवीस विद्यार्थी होते. सन १८६६ पर्यंत या शाळेत फक्त नऊ सरदारपुत्र शिकत होते.[८]

छत्रपती शिवाजी तिसरे उर्फ बाबासाहेब महाराजांनी सन १८६३ मध्ये राज्यकारभार हाती घेतला तेव्हा सरकारी शाळांची संख्या आठरा झाली. बाबासाहेब महाराजांनी शिक्षण प्रसारावर भर दिली. तसेच समाजातही शिक्षणाविषयी आस्था वाढत गेली. कोल्हापूर संस्थेसाठी श्री. बाळ परशुराम पंडित यांची पहिले डेप्युटी एज्युकेशनल इन्स्पेक्टर म्हणून नेमणूक झाली. चांगले शिक्षक तयार करण्यासाठी एक ट्रेनिंग शाळा सुरू करण्यात आली. ट्रेनिंग शाळेमध्ये छपन्न विद्यार्थी शिक्षण घेत होते. तसेच कोल्हापूर राज्यात इंग्रजी–मराठी व मराठी शाळा अशा एकूण बत्तीस शाळा होत्या.[९] सन १८६७ राजाराम हायस्कूल स्थापना करण्यात आली. या हायस्कूलची इमारत भव्य

विद्यार्थी बहुदा निर्व्यसनी असत. संयम व शिस्त यांनी बांधले गेलेले होते. गुरूजनांबद्दल, वडिलधा—यांबद्दल त्यांना आदर होता. 'छडीलागे छम छम विद्या येईल घम घम' ही म्हण त्याकाळी सर्वाच्या तोंडी असायची. अभ्यासात कच्च्या व उनाड मुलांना गुरूजी छडीने मारत. तरी मुले हू की चू करीत नसत. याशिवाय अंगठे धरणे, कान धरून ऊठ बशा काढणे, मानेवर खडा ठेवून वाचायला लावणे अशा शिक्षा विद्यार्थ्यांना देत.[१६]

निष्कर्ष:

भारतातील प्रथापरंपरेनुसार कोल्हापूर संस्थानातही पारंपारिक शिक्षणव्यवस्था होती. मात्र हळूहळू आधुनिक शिक्षणव्यवस्थेला सुरवात झाली. मराठीप्रमाणेच इंग्रजी शाळा सुरु करण्यात आल्या. सुरवातीला मुलींच्या शाळांना प्रतिसाद नव्हता मात्र नंतरच्या काळात तो मिळत गेला. छत्रपती शिवाजी तिसरे उर्फ बाबासाहेब महाराजांनी शिक्षण प्रसारावर भर दिला. राजाराम हायस्कूल व राजाराम कॉलेज यांचा शिक्षण प्रसार करण्यामध्ये फार मोठा वाटा होता. ट्रेनिंग शाळा, रात्रशाळा यांचाही शिक्षण प्रसार करण्यामध्ये मोलाचा वाटा आहे. मुस्लीम धर्मियांच्या मुला—मुलींना शिक्षण देण्यासाठी असलेल्या शाळा व मागासवर्गीय मुलांना शिक्षण देण्यासाठी असलेल्या शाळा यावरुन राज्यकर्त्यांचा सर्वसमावेशक दृष्टिकोन स्पष्ट होतो.

संदर्भ:

१. महल्ले—पाठक, मराठा सत्तेचा इतिहास, विद्या प्रकाशन, नागपूर; १९९७ पृ. ६२
२. करवीर राज्याचा इतिहास, श्री महाराणी ताराबाई टिचर्स कॉलेज पुस्तकमाला नं.१, १९७१, पृ. ३
३. कित्ता पृ.४
४. शिंदे खंडेराव, कोल्हापूर राज्याचा इतिहास निर्मिती विचारमंच, कोल्हापूर; २००९ पृ .१६
५. शिंदे खंडेराव, उपरोक्त पृ. १६
६. मोडक बा. प्र., कोल्हापूर राज्याचा इतिहास, अनंत प्रकाशन, कोल्हापूर; १८९३ पृ. ७०
७. कित्ता पृ. १२०
८. कित्ता पृ. १५८
९. शिंदे खंडेराव, उपरोक्त पृ. १०५
१०. राजाराम हायस्कूल शत सांवत्सारिक महोत्सव विशेषांक; १९५३, पृ. ३६
११. शिंदे खंडेराव, उपरोक्त पृ. १०६
१२. शिंदे खंडेराव, उपरोक्त पृ. १०७
१३. मोडक बा. प्र., उपरोक्त पृ. २१४
१४. शिंदे खंडेराव, उपरोक्त पृ. १०८
१५. शिंदे खंडेराव, उपरोक्त पृ. १०९
१६. कोल्हापूर जिल्हा गॅझेटियर, महाराष्ट्र शासन प्रकाशन; १९६०, पृ. ४२६

17-18

ISSN 2277- 8063

Navjyot

नवज्योत

International Interdisciplinary Research Journal
(Humanities, Social Sciences, Languages, Commerce & Management)

www.navjyot.net

E-mail : editornavjyot@gmail.com

Content

S.N.	Subject	Title	Author	P. No.
1	Economics	Area and Production of Oilseeds Crops In Maharashtra With Special Reference to Sangli District	Mr. Rohit Dinkar Barsing Dr. K. Yuvaraj	1-5
2	Economics	A Study of Economic Status of Small Farmers in Kolhapur District	Dr. D. K. More Patil J. P.	6-10
3	Sociology	Different Approaches In Maratha History	Mr. Mayuresh Tanaji Patil,	11-12
4	Sociology	Health Problems In Slums Of India	Phalrani Shivramsing Rajput	13-17
5	Sociology	Burud Community A Sociological Study	Pooja Narendra Patil (Gotkhindikar)	18-19
6	वृत्तपत्रविद्या व संवादशास्त्र	नारायण मेघाजी लोखंडे एक उत्तम जनसंज्ञापक	प्रमोद श्रीरंग फरांदे	20-22
7	मराठी	संगीत एक कला	प्रेमीला जोतिबा पाटील	23-24
8	मराठी	महात्मा फुले यांच्या व्यक्तिमत्वाची जडण घडण 'महात्मा' या कांदबरीच्या आधारे	हरिहर मनिषा शिवाजी	25-26
9	राज्यशास्त्र	जागतिकीकरणाचा भारतीय शेती क्षेत्रावर झालेला परिणाम	राहुल नागुर्डेकर	27-28
10	राज्यशास्त्र	सरदार वल्लभभाई पटेलांची संस्थानाच्या विलीनीकरणातील भूमिका	प्रा . शरद वि . पाटील प्रा . टी . एम . पाटील	29-30
11	राज्यशास्त्र	नक्षल चळवळीचा उदय व विकास	प्रा . व्ही . बी . चादजकर	31-33
12	राज्यशास्त्र	गडचिरोली जिल्हयातील वरिष्ठ महाविद्यालयीन शिक्षकांचा राजकीय सहभाग	भगवान व्ही . धोटे	34-35
13	राज्यशास्त्र	चीनचे डोकलाम हे निमित्त ओबोरे हेच लक्ष?	प्रा . डॉ . प्रदीप दंदे	36-37
14	राज्यशास्त्र	पंडित नेहरूचे लोकशाही विषयक विचार	प्रा . डॉ . विकमराव पाटील	38-39
15	राज्यशास्त्र	कोल्हापूर संस्थानातील शाहू महाराजांच्या सर्वासाठी लोकपयोगी शिक्षण योजनेचा प्रयोग	डॉ . एन . बी . पोहकर	40-41
16	राज्यशास्त्र	दक्षिण आशियाई देशांतील संघर्ष	प्रा. डॉ. रविंद्र भणगे	42-44
17	राज्यशास्त्र	चौथी मतदारसंघ पुनर्रचना व सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील निवडणुकीय राजकारण	लक्ष्मण दादासो भोगम	45-49
18	commerce	"A study of family expenditure on food articles and non food articles in chandgad taluka of kolhapur district"	Dr. Mahesh Danapa Chougule	50-53
19	राज्यशास्त्र	गांधी आणि नेहरूंचा शिक्षणविषयक दृष्टिकोन	संदीप तुंडूरवार	54-55
20	मराठी	दलित आत्मकथनातील मानवी हक्कांचे दर्शन—'अंतस्फोट' व 'मरणकळा' या आत्मकथनाच्या अनुषंगाने	प्रा. डॉ. सुजय बाबुराव पाटील	56-57
21	इतिहास	सांगली जिल्ह्यातील डाव्या पक्षांचे सामाजिक कार्य	विवेकानंद राजाराम माने	58-61
22	राज्यशास्त्र	कोल्हापूर जिल्ह्यातील कृषी उत्पन्न बाजार समितींचा परिचय	डॉ. शहाजीराव धोंडीराम वारके	62-64

सांगली जिल्ह्यातील डाव्या पक्षांचे सामाजिक कार्य

विवेकानंद राजाराम माने इतिहास विभागप्रमुख, क्रांतिअग्रणी जी.डी.बापू लाड महाविद्यालय, कुंडल जि. सांगली

प्रस्तावना:

१८५७च्या उठावानंतर भारतात शिक्षणाचा प्रसार होऊन राजकीय चळवळ उभी राहिली. इंग्रजी शिक्षणाच्या मुशीतून बाळशास्त्री जांभेकर, लोकहितवादी, विष्णुशास्त्री पंडीत, गोपाळ गणेश आगरकर असे अनेक समाज सुधारक निर्माण झाले. आपल्या लेखणीने त्यांनी बालविवाह–प्रतिबंध, विधवाविवाह, केशवपन– प्रतिबंध, स्त्रीशिक्षण यासारख्या विषयांना वाचा फोडली. परंतु या समाजसुधारकांचे कार्य लिहिता–वाचता येणाऱ्या विशिष्ठ वरिष्ठ वर्गापुरते मर्यादित राहिले. सामाजिक सुधारणेचे कार्य लक्षावधी गरीब, अडाणी व शूद्र मानले गेलेले शेतकरी तसेच कामगार, कष्टकरी या वर्गापर्यंत नेण्याचे कार्य महात्मा फुले यांनी केले. त्यांच्या चळवळीचा वारसा राजर्षी शाहू महाराज, भास्करराव जाधव, केशवराव जेधे, कर्मवीर भाऊराव पाटील व क्रांतिसिंह नाना पाटील यांनी चालविला. सांगली जिल्ह्यातील डाव्या पक्षांच्या नेत्यांवर म. फुले यांच्या सत्यशोधक समाजाच्या विचारांचा प्रभाव होता. साहजिकच समाजातील अज्ञान, विषमता, दारिद्र्य, पिळवणूक दूर करण्याचा प्रयत्न त्यांनी केल्याचे दिसून येते.

सांगली जिल्ह्यातील डाव्या पक्षांचे सामाजिक कार्य:

१. क्रांतिसिंह नाना पाटील यांचे कार्य:

साक्षरता प्रसार:

नाना पाटील यांनी राजकीय चळवळीला प्राधान्यक्रम दिलेला असला तरी त्यांचा मूळचा पिंड सामाजिक कार्यकर्त्याचाच होता. त्यांनी वैयक्तिक जीवनात महात्मा गांधीच्या १४ कलमी कार्यक्रमापैकी साक्षरता प्रसार यामध्ये महत्वपूर्ण योगदान दिले आहे. त्यांनी आपल्या निरक्षर असलेल्या पत्नीला लिहण्यावाचण्यास शिकवून साक्षर केले. खेड्यातील शेतकऱ्यांना साक्षरतेचे महत्त्व पटवून देण्यासाठी त्यांनी जिल्हाभर पायी दौरे काढले. तासगाव नजीक मोराळे या गावी त्यांनी प्रौढ साक्षरतेसाठी शाळा काढली. तसेच काही काळ तेथे स्वतः शिकविण्याचेही कार्य केले. पुढे अशा अनेक शाळा जिल्हाभर सुरू झाल्या. प्रौढ साक्षरता प्रसाराची नानांची ही तळमळ पाहून कॉंग्रेसचे प्रौढ साक्षरतेचे एक कार्यकर्ते एस. आर. भागवत यांनी त्यांनी एक सायकल भेट दिली.[१] या सायकलमुळे नानांच्या साक्षरता प्रसाराच्या कार्याला अधिकच गती आली.

गांधी लग्न पद्धत:

नाना पाटलांनी जनतेला सावकारशाहीच्या पाशातून वाचविण्यासाठी सत्यशोधकीय विवाहांचे पुनरूज्जीवन करुन लग्नातील खर्चाला फाटा दिला. लग्नातील रूसवे–फुगवे वर्ज्य केले. नवरा–नवरीला खादीचे कपडे व मंगळसूत्र असे मोजकेच साहित्य घेऊन २०–२५ रुपयात लग्ने लावण्यास सुरूवात केली. या लग्नात महात्मा गांधीजींचा फोटो ठेवला जाई. नाना पाटील व त्यांचे मित्र स्वामी रामानंद भारती मंगलाष्टका म्हणत. लग्नानंतर वधू–वर गांधीजींच्या फोटोस नमस्कार करुन देशसेवेसाठी कटिबद्ध राहण्याची शपथ घेत. तसेच गरज पडल्यास आपले अपत्य देशसेवेसाठी देण्याचेही अभिवचन देत. अशा लग्नाला नानांनी 'गांधी लग्न' असे नाव दिले.[२] सर्व विधी झाल्यानंतर नाना पाटील व स्वामी रामानंद भारती यांची भाषणे होत असत. नानांची समाज प्रबोधन करणारी 'गांधी लग्ने' तत्कालीन सातारा जिल्ह्यात फारच लोकप्रिय झाली होती. नानांनी अशी अनेक 'गांधी लग्ने' लावली. तसेच अनेक सामुदायिक विवाहही लावले. लग्नातील धार्मिक विधी नाकारून धार्मिक गुलामगिरीविरुद्ध बंड पुकारून लग्नातील वारेमाप खर्चाला फाटा देऊन सावकारशाहीला आळा घालणे, मानपान टाळून नात्यागोत्यातील संघर्ष कमी करणे आदि हेतू बरोबरच स्वातंत्र्याची चळवळ समाजापुढे तेवत ठेवण्याचे कार्य नाना पाटील साध्य करत होते. त्यांनी स्वतःच्या लग्नात स्वतःच मंगलाष्टका म्हटल्या. आपली बहीण गंगूताई हिचे लग्न कुंडलचे स्वातंत्र्यवीर नाथाजी लाड यांच्याशी 'गांधी लग्न' पद्धतीनेच लावून दिले. लग्नसमारंभात भोजनाच्या समारंभांना नानांचा विरोध होता. परंतु आपल्या घरच्या विवाहप्रसंगी नानांनी पंचक्रोशीतील महार, मांग, चांभार, ढोर आदी अस्पृश्य समजल्या जाणाऱ्या लोकांना समाजातील पाटील वगैरे उच्चवर्गीय लोकांबरोबर पंक्तीत बसवून प्रितीभोजनाचा समारंभ घडवून आणला. ते स्वतःही मागासवर्गीय लोकांच्या पंक्तीला बसले. काही वृद्ध मंडळींनी याला विरोध दर्शविला. परंतु हा थोडासा विरोध वगळता सर्व गावाने दलितांबरोबर सहभोजन घेतले.[३] पुढील काळात त्यांनी एकुलती एक मुलगी हौसाताई हिचे लग्न हणमंतवडियेचे भगवानराव मोरे यांच्याशी 'गांधी लग्न' पद्धतीने जून १९४० मध्ये लावून दिले. अशा प्रकारे त्यांनी आपण खऱ्या अर्थाने सत्यशोधकीय समाजसुधारक असल्याचे दाखवून दिले.

२. स्त्री–पुरुष समता चळवळ:

जागतिक पातळीवर १९७५ हे वर्ष आंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष म्हणून साजरे करण्यात आले. त्यानंतरच्या कालखंडात विविध देशातील स्त्री–पुरुष समता चळवळीने गती घेतली. सांगली जिल्ह्यातही विविध डाव्या राजकीय पक्षांच्या महिला संघटना दिर्घकाळ कार्यरत आहेत. त्यामध्ये शेतकरी कामगार पक्षाच्या प्रभाताई सूर्यवंशी, लाल निशाण पक्षाच्या गिता ठाकर, समाजवादी पक्षाच्या विद्या स्वरसी, भारतीय कम्युनिस्ट पक्षाच्या सुमनताई पुजारी, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पक्षाच्या रेहाना शेख, श्रमिक मुक्ती दलाच्या इंदुताई पाटणकर, गेल ऑम्वेट यांचा सहभाग दखलपात्र आहे. या महिलांच्या नेतृत्वाखाली असलेल्या संघटनानी स्त्री–पुरुष समता चळवळीचे कार्य प्रभाविपणे सुरु ठेवले. आजही या चळवळी जिल्ह्यात कार्यरत असलेल्या दिसून येतात.[४]

३. डाव्या चळवळीतील सामाजिक उपक्रम–बळीराजा स्मृती धरण:

खानापूर तालुक्यातील बलवडी (भा.) व तांदूळवाडी या दोन गावाजवळ वाहणाऱ्या येरळा नदीकाठी बळीराजा

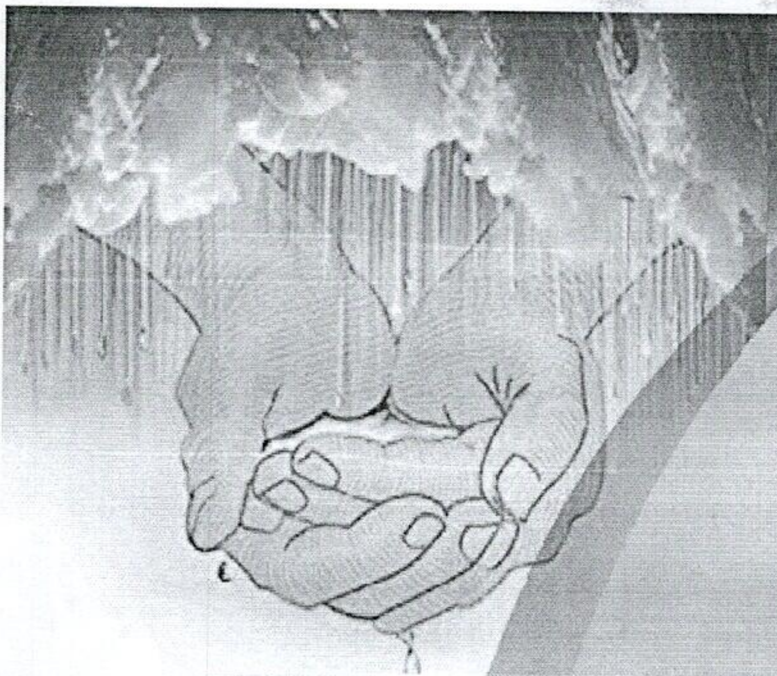

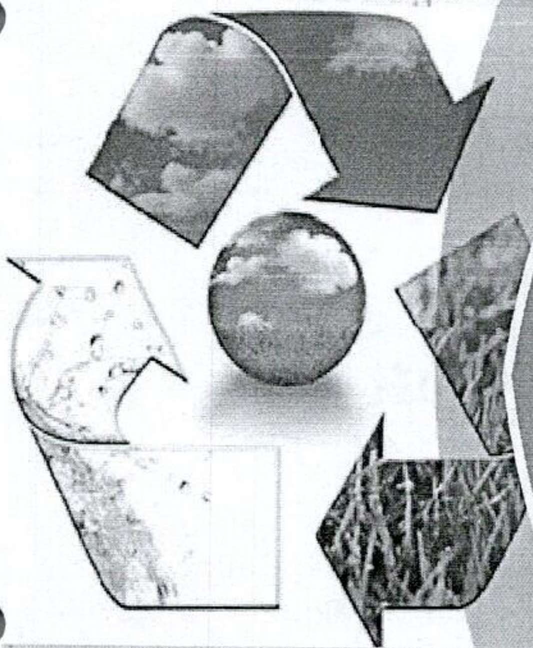

Sant Dnyaneshwar Shikshan Sanstha's

HON. SHRI. ANNASAHEB DANGE
ARTS, COMMERCE AND SCIENCE
COLLEGE, HATKANANGALE

PROCEEDING

ICSSR
SPONSORED NATIONAL SEMINAR

RAINWATER HARVESTING FOR WATER RESOURCE MANAGEMENT

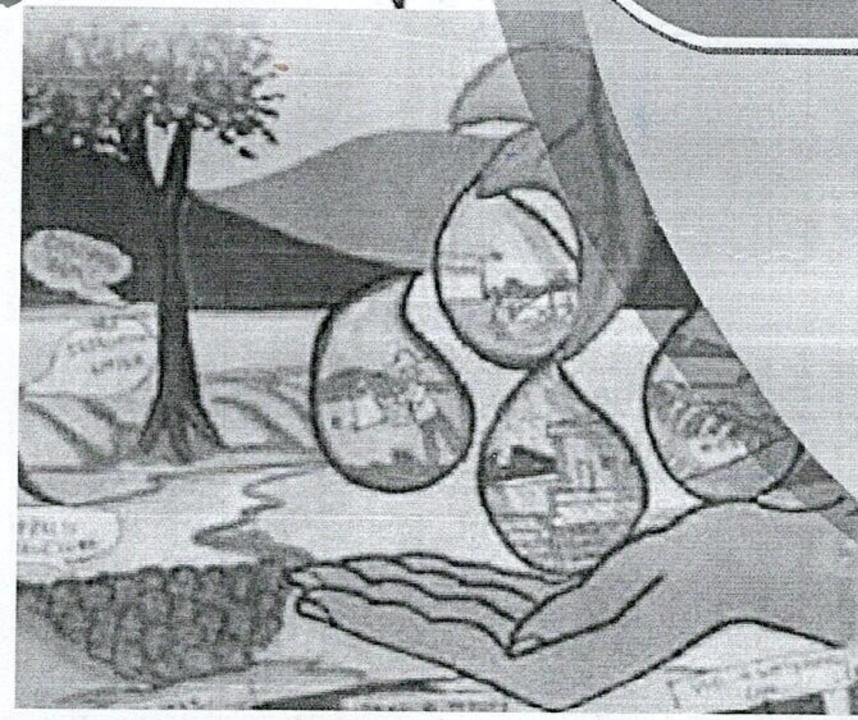

Mrs. Sunita S. Telsinge
Convener & Editor

Dr. Yojana V. Jugale
Principal

ISBN – 978-81-927211-8-6

Sr. No.	Name of Author	Title of Paper	Page No.
20	Shri.R.R.Wadagavi Shri.V.R.Vadagavi	Methods and Technologies used in Rain Harvest	132
21	Reena Gupta	Reuse Water: Water Harvesting System	138
22	Dr. Hindurao V. Sankpal Dr. Anil T. Gaikwad Dr. Vijay B. Desai	Rain Water Harvesting with Respect to Urban Development for Sustainable Water Use	146
23	Pralhad Kamble Nilesh Wankhade	Economic Analysis of Water Resources in Sindhudurg District of Maharashtra	152
24	Prof. Ramchandra Keshav Wakarekar	Need and Advantage of Rain Water Harvesting	162
25	Dr. Mohan G. Sadamate	Watershed Development Programme in Maharashtra	168
26	Smt. M. M. Puranik	Rain Water Harvesting for Water Resource Management Watershed Management	173
27	Dr. Rekha Deodhar	Watershed Management in India: An Overview	178
28	Ms. Rasiya Padalkar Prof. (Dr.) P. D. Raut	Rational Utilization of Natural Resources	185
29	Dr. M. N. Survase	Potentiality of Rainwater Harvesting in Dange College Campus of Hatkanangale for Shrinking The Water Scarcity	194
30	Trishala Kadam	Critical Issues in Rainwater Harvesting	200
31	Dr. S. A. Kamble	Rainwater Harvesting for Textile Processing	204
32	प्रा. विकास विधाते	पावसाच्या पाण्याचे व्यवस्थापन आणि ऐतिहासिक प्रसंग *(राधानगरीच्या पाण्याचे व्यवस्थापन)*	208
33	प्रा. डॉ. मंगल भास्कर माळगे	जलप्रदूषण नियंत्रण आणि उपाय काळाची गरज	213
34	प्रा.डॉ.मोहन मंगेशराव सावंत	पर्यावरण प्रदुषण	222
35	अक्षय दळवी	पाण्याच्या नियोजनासाठी पर्जन्यजल संवर्धन	228

ISBN - 978-81-927211-8-6
Proceedings of National Seminar on "Rainwater Harvesting For Water Resource Management"

WATERSHED DEVELOPMENT PROGRAMME IN MAHARASHTRA

Dr. Mohan G. Sadamate
K.G. D. Bapu Lad Mahavidyalaya Kundal

Abstract:

Integrated Watershed area Development Programme (IWDP), these schemes has major objective to minimize the effects of drought through an integrated development of the area. Its main emphasis is on irrigation projects, land development programmes, afforestation, grassland development, rural electrification and other programmes for infrastructural development relating to roads, markets, credit, servicing and processing etc. The main objective of the research is to study role and growth of watershed development programmes in Maharashtra. To achieve the objective has methodology used for research papers, books, study reports, govt. published reports, and interpretation of secondary data analyzed with tabulation and chart.

Introduction:

Maharashtra is India's third largest state with a geographical area of 3,07,58300 ha. Though agriculture and related activities are the major source of livelihood for more than two-thirds of its population, agriculture is characterized by low productivity. Except for sugarcane, the productivity/ha of all other major crops such as food grains, cereals, oilseeds, cotton etc. are below the national average. The causes lie in the low irrigation coverage (15.36 percent), high extent of light soil (39 percent), general degradation (42.50 per cent), poor drainage, and salinity (4 lakh ha) and proneness to drought (52 per cent). Besides this, 38 per cent of the land is affected by different categories of soil erosion, badly affecting the soil's micronutrient status and hence productivity. The problem is aggravated by monsoon failure, untimely rain, lack of institutional credit facilities and indebtedness driving marginal farmers and the poor to extreme steps such as suicide.

These attempts made by the state and other agencies to reverse this situation and to stabilize dry land farming through watershed development over the past two-and. a-half decades has led to enormous resources being poured into this area. Many watershed programmes funded by the national and state government, multilateral and bilateral agencies, and by a large number of NGOs have been implemented.

Page 103

जनता शिक्षण संस्था संचलित,

किसन वीर महाविद्यालय, वाई

हिंदी विभाग

अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, २०१७

डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर : विचारधारा और हिंदी कथा साहित्य

संपादक
प्रा. डॉ. संतोष कोळेकर
प्रा. डॉ. भानुदास आगेडकर

स्वच्छंद प्रकाशन, कोल्हापुर
ISBN : 978-93-83796-41-1

३३	रत्नकुमार सांभरिया के 'शर्त' कहानी में आम्बेडकर विचार	अर्चना तराळ	६५
३४	डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर : विचारधारा और प्रेमचंद की कहानी कफन	प्रा. डॉ. यशवंते एस.जे.	६६
३५	डॉ. आम्बेडकर की विचारधारा के परिप्रेक्ष्म में हिंदी दलित कथा	प्रा. सौ. स्नेहलता पुजारी	६९
३६	ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी "सपना" पर डॉ. आम्बेडकर के विचारों का प्रभाव	प्रा. मदन खरटमोल	७१
३७	हिंदी उपन्यासों पर आम्बेडकरी विचारधारा का प्रभाव	सचिन जाधव	७३
३८	डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर की विचारधारा और सलाम (कहानी)	प्रा. दत्तात्रय साळवे	७५
३९	डॉ.बाबासाहब आम्बेडकर : विचारधारा और हिंदी कथा साहित्य	डॉ. संगीता उप्पे	७७
४०	मोहनदास नैमिषराय के 'मुक्तीपर्व' उपन्यास में आम्बेडकरवादी विचारधारा	प्रा.डॉ. बाजीराव शेलार	७९
४१	डॉ बाबासाहब आम्बेडकर विचारधारा और हिंदी कथा साहित्य	प्रा. विकास विधाते	८१
४२	डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर और ओमप्रकाष वाल्मीकि की कहानियॉं	डॉ. अनघा तोडकरी	८३
४३	डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर : विचारधारा और हिंदी कथा साहित्य	प्रा. नितिन कुंभार	८५
४४	आम्बेडकरवादी विचारधारा और 'आज बाजार बंद है' उपन्यास	श्रीमंडळे वैशाली शिवाजीराव	८७
४५	'उपरा' उपन्यास पर आम्बेडकरी विचारधारा का प्रभाव	प्रा. युवराज मुळये	८९
४६	प्रेमचंद की कहानियोपर डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर के दलित आंदोलनो का प्रभाव	प्रेम कुमार	९१
४७	डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर : विचारधारा और साहित्य	प्रा. डॉ. बोबडे आर. एस.	९३
४८	डॉ. आम्बेडकर और साहित्य में दलित चेतना	डॉ. वि. गोविन्द	९४
४९	'डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर : विचारधारा और हिंदी कथा साहित्य'	डॉ. रेखी अमरजा अजित	९६
५०	दलित साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि	डॉ. सुनिता पी. बन्सोड	९७
५१	'महानायक बाबासाहेब डॉ. आम्बेडकर' उपन्यास और विचारधारा	प्रा.डॉ.सौ.सुरैया शेख	१००
५२	"जयप्रकाश कर्दमजी के 'छप्पर' उपन्यास में आम्बेडकर विचारधारा"	अश्विनी जाधव	१०२
५३	'महानायक बाबासाहब डॉ. आम्बेडकर' उपन्यास में चित्रित यथार्थबोध	श्री. जे. ए. पाटील	१०३
५४	डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर : विचारधारा और हिंदी साहित्य	सुश्री आनंदी शिंदे	१०४

 ISBN : 978-93-83796-41-1

'महानायक बाबासाहब डॉ. आम्बेडकर' उपन्यास में चित्रित यथार्थबोध

श्री. जे. ए. पाटील, कुंडल

भारतीय समाज व्यवस्था में सवर्णो के अन्याय – अत्याचारों से त्रस्त होकर घुटनभरा जीवन जीनेंवाले दलित इससे छुटकारा पाना चाहता थे। इसी व्यवस्था से बाहर आने के लिए उन्हें एक किसी मजबूत डोर की आवयश्यकता थी। वह डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर रूपी डोर से मिल गई। आंबेडकरजी के विचारों से प्रेरित होकर दलितों ने विद्रोह किया। और स्वयं पर होनेवाले अन्याय – अत्याचार को दूर किया। इस सवर्ण व्यवस्था को हटाने का प्रवास चारवाक्, बुध्द, संत, कबीर, रैदास, नवलदास आदि दलित संतोंने किया। लेकिन फूले – शाहू – आंबेडकर के विचारों से दलित प्रभावित हुएं और उन्होंने मानवीय अधिकारों को प्राप्त करने के लिए विद्रोह किया।

मोहनदास नैमिशराय एक श्रेष्ठ दलित साहित्यकार माने जाते है। छात्रदशा से ही उनका जीवन संघर्षमय रहा है। उनके परिवार में बाबू, जगजीवनराम, कांशीराम, मायावती आदि नेतागण आते – जाते थे। नैमिशमराय उनके सहयोग से सामाजिक गतिविधियों में हिस्सा लेने थे। वे एक प्रतिभाशाली तथा बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यिक है। मोहनदास नैमिशरायजी को मौलिक सामाजिक कार्यो के कारण तथा प्रसिध्द दलित साहित्यकार होने से उन्हें विभिन्न पुरस्कार मिले है। आंबेडकरवाद का अर्थ गौतम बुध्द से लेकर, फुले, आंबेडकर आदिने ब्राह्मणवाद तथा जातिव्यवस्था के विरूध्द पीडित जातियों व्दारा विभिन्न स्तरों पर किये जा रहे आंदोलन का सारांश। आंबेडकरजी के विचारों से प्रेरित होकर अन्याय के खिलाफ रास्तेपर उतरकर आंदोलन करना था अपने लेखनी के व्दारा समाज प्रबोधन करना।

मोहनदास नैमिशराम ऐसे ही उपेक्षित, अपमानित, पीडित दलितों में से एक है। उन्होंनें अपने मन में दबे हुएं विचारों को अभिव्यक्त करते हुएँ साहित्य, लेखन किया। हिंदी दलित साहित्य में उनका 'महानायक बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर' यह पहला ऐतिहासिक उपन्यास है। यह उपन्यास, समय, समाज, राजनीति, धर्म को आंकते हुएँ युग सत्य को स्पष्ट करता है। तथा समाज में फैली गलत धारणाओं के वास्तविकता को स्पष्ट करता है। इतिहास की वास्तविकता को जानकर कालक्रम से घटनाओं को आंकते हुएँ स्थान और तिथि को सही रूप में बद्ध किया है। प्रस्तुत उपन्यास आंबेडकर के सूक्ष्मातिसूक्ष्म घटनाओं को भी बारिकियों से लेखक ने पाठकों के सामने रखा है। महाराजा सयाजीराव गायकवाड के रियासत में इकारनामें के प्रति वफादार रहकर नौकरी के लिए गएँ थे। लेकिन वहाँ के सवर्णो के अन्याय, अत्याचार से अपमानित हुएँ, उनमें विद्रोह उभरा लेकिन वे चुप रहे। इस प्रसंग को बहुत ही अच्छी तरह से प्रस्तुत किया है।

भारतवर्ष की तरह से तीनों गोलमेज परिषदों में शम्मिलित होनेंवाले नेताओं में आंबेडकर एक थे जो दलितों से चुने गएँ थे और यह उनकी विद्वत्ता का करिश्मा था। वहाँ के सभी नेतागण आंबेडकर की विद्वत्ता को जानते थे। दूसरी गोलमेज परिषद में गांधीजी भी अंग्रेजो की कूटनीति में बूरी तरह फैस गएँ और 'प्रांतीत स्वायत्तता' को स्वीकारने के पक्ष में थे। किंतु आंबेडकर ने इस कूटनीति का भंडाफोड किया। इतिहास के इस यथार्थता और वास्तविकता पर उपन्यास प्रकाश डालता है। गांधी – आंबेडकर के हर प्रसंग को नैमिशराय ने निष्पक्षता से पाठकों के सामने उतारा है। उनकी भेट आमने सामने नहीं तो पत्र के माध्यम से ही हुआ करती थी। उनमें मतभेद थे लेकिन एक दूसरे के प्रति व्देष नहीं था। भारतीय इतिहास में स्वतंत्रता एवं समाज सुधार के लिए देश की विभिन्न संस्थाएं कार्य कर रही थी।

स्वतंत्रता प्राप्ति एवं समाजसुधार के लिए पूरे भारतवर्ष में यह कार्य चल रहा था। इसमें बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, केरला, तमिलनाडू, महाराष्ट्र, बंगाल आदि कई राज्यों में संस्थाएं और नेतागण काम रहे थे। लेकिन इनका किसी इतिहास में नामोल्लेख नहीं मिलता। जस्टिस पार्टी, धर्म आंदोलन, रोहिदास विद्यावर्धक समाज, डॉ. आंबेडकर सेवादल आदि संस्थाओं ने दलितों को जागृत किया। इन्हीं संस्थाओं के कार्य की जानकारी इस उपन्यास में मिलती है। भारतवर्ष के कट्टर हिंदूओं ने आंबेडकर को देशद्रोही कहने की कोई कसर नहीं छोडी। लेकिन देश के प्रति अत्यधिक लगाव, प्रेम था। उन्होंने संविधान सभा में भाषण दिया इससे बाबासाहेब का देशप्रेम दिखाई दिया। यह जीवित चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में ही मिलता है। समाज, राष्ट्र, राष्ट्रीयता, राष्ट्र की अखंडता पर संविधान सभा में उनके विचार सुनकर उनके आलाचकों ने भी उनकी तारीफ की। आजादी के पहले और बादमें भी सवर्णो का अन्याय अत्याचार दलितों, को सहना पडा।

निष्कर्ष :–

'महानायक बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर' उपन्यास में लेखक घटनाओं की ऐसी कडी पेश करते है जिसे इतिहास के गहरे समंदर में डूबो दिया हो। इस उपन्यास में सचमुच महानायक उपेक्षित अपमानित, प्रताडित, बांधित, पीडित, दुखी, अछुत, बंधुआ, दास, निराश्रित लगता है तथा उन सभी पर विद्रोह करते हुएं विजय हासिल करता हुआ दिखाई देता है। सच यह उपन्यास दलित साहित्य कहलाया जा सकता हैं।

आधुनिक हिंदी साहित्य में वैषम्य के विविध आयाम

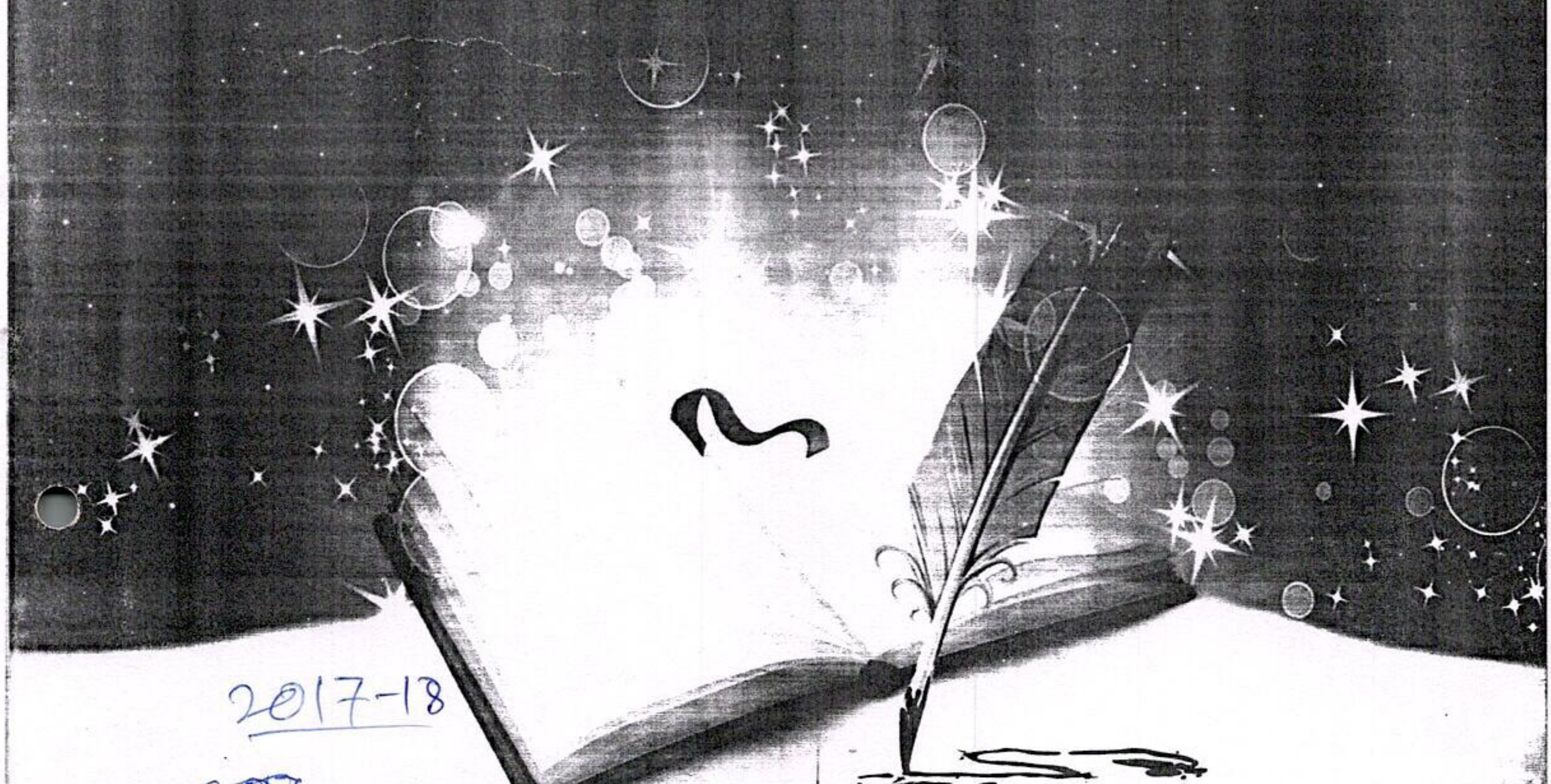

डॉ. प्रकाश चिकुर्डेकर

प्रकाशक :
प्राचार्य डॉ.सौ. सुरेखा बाळासाहेब शहापुरे
यशवंतराव चव्हाण वारणा महाविद्यालय,
वारणानगर -416113
तह.पन्हाला, जिला कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
संपर्क : 02328-224041, 222820
वेबसाईट : www.ycwm.ac.in
ई- मेल : ycwarana@yahoo.co.in

लेखक : प्रा. डॉ. प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर
सहयोगी प्राध्यापक एवं शोध निर्देशक,
हिंदी विभाग ,
यशवंतराव चव्हाण वारणा महाविद्यालय,
वारणानगर -416113
तह.पन्हाला, जिला कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
संपर्क : भ्रमणध्वनिः- **9404264646**
ई- मेलः prakashchikurdekar@yahoo.com

ISBN: 978-81-933230-1-4

प्रथम संस्करण : 2017

Printed By,
Shreekant Computers and Publishers,
Opp. Khare Mangal Karyalaya,
Shivaji University Road, Kolhapur Mob. 9890499466

संपादक मंडलः प्रा. डॉ.प्रकाश चिकुर्डेकर
प्रा.डॉ. मनोहर शिंदे
प्रा.डॉ. सुधाकर खोत

मूल्य : **250**/- रुपये

•प्रस्तुत ग्रंथ में प्रकाशित साहित्य , विचार, कल्पना और शोध तथा शोध संदर्भ संबधित जिम्मेदारी लेखकों की हैं । लेखक - संपादक, संपादक मंडल एवं संस्था तथा महाविद्यालय इससे सहमत हो यह आवश्यक नहीं हैं ।•

"आधुनिक हिंदी साहित्य में वैषम्य के विविध आयाम "

(Adhunik Hindi Sahitya Mai Vaishamya ke Vividh Aayam)

By: Dr.Prakash Shankarrao Chikurdekar.

अ.क्र.	शोध निबंध विषय	लेखक	पृष्ठ क्र.
18.	हिंदी उपन्यासों में प्रतिबिंबित किसानों का रहन-सहन और वैषम्य के विविध संदर्भ	प्रा.डॉ.संदीप जोतीराम किर्दत	54
19.	आधुनिक हिंदी कहानी साहित्य में वैषम्य के विविध आयाम	डॉ. सौ. शोभा माणिक पवार	59
20.	हिंदी कविताओं में द्रष्टव्य नर-नारी में विषमता	प्रा. सौ. चंद्रलेखा चव्हाण	62
21.	श्रीपाद जोशी के 'ध्वस्त नीड़' उपन्यास में वैषम्य के विविध आयाम	डॉ. अशोक आनंदराव साळुंखे	66
22.	''दलित आत्मकथा में वैषम्य के आयाम''	डॉ. सौ. भारती वि. शेळके	69
23.	आधुनिक कहानी साहित्य में चित्रित आर्थिक वैषम्य	विक्रम बालकृष्ण वारंग,	72
24.	'आधुनिक हिंदी उपन्यास साहित्य में नारी विषमता का चित्रण'	प्रा. मारूफ मुजावर	74
25.	''आधुनिक हिंदी 'धार' उपन्यास में वैषम्य के विविध आयाम''	प्रा. देविदास क. बामणे	77
26.	आधुनिक हिन्दी कविता : वर्ग–वैषम्य भेद प्रभावित चेतनाभिव्यक्ति	डॉ. बबन सातपुते	81
27.	"चंद्रकांता की 'सूरज उगने तक' कहानी संग्रह में चित्रित सामाजिक विमर्श।"	डॉ.भास्कर उमराव भवर	85
28.	कृष्णा सोबती का साहित्य : स्त्री मुक्ति का द्वार	प्रा.सुवर्णा नरसु कांबळे.	90
29.	आधुनिक हिंदी कविता में वैषम्य	प्रा.डॉ.सौ. शैलजा र.पाटील	93
30.	'नीलू नीलिमा नीलोफर' में चित्रित धार्मिक वैषम्य के विविध आयाम	डॉ. नारायण विष्णु केसरकर	97
31.	मैत्रेयी पुष्पा के कहानी साहित्य में स्त्री-पुरूष विषमता के विविध आयाम	प्रा.श्री एस.एस. .बिचुकले	100
32.	वैषम्य को अभिव्यक्त करनेवाला सशक्त उपन्यास : मुक्तिपर्व	प्रा.डॉ.संतोष कोळेकर	103
33.	हिंदी में अनुदित मराठी आत्मकथाओं में सामाजिक वैषम्य	प्रा.डॉ.भारत श्रीमंत खिलारे	105
34.	'मैला आंचल' उपन्याम में सामाजिक वैषम्य	प्रा. डॉ. सरोज पाटील	109
35.	समकालीन हिंदी दलित कविता में वैषम्य	प्रा. सौ. मानसी संभाजी शिरगांवकर	113
36.	आधुनिक हिंदी कहानियों में चित्रित धार्मिक वैषम्य	प्रा. सुधाकर इंडी	116
37.	ओमप्रकाश वाल्मीकि के 'जूठन' आत्मकथा में अभिव्यक्त वर्ग वैषम्य	प्रा. जे.ए. पाटील.	119

ISBN 978-81-933230-1-4

ओमप्रकाश वाल्मीकि के 'जूठन' आत्मकथा में अभिव्यक्त वर्ग वैषम्य.

प्रा. जे.ए. पाटील.
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
क्रांतिअग्रणी जी.डी. बापू लाड महाविद्यालय, कुंडल .
जिला - सांगली (महाराष्ट्र)

प्राचीन काल से साहित्य में युगानुरुप परिवर्तन हो रहा है | इन्हीं परिवर्तनों ने मानव संमाज को नई दिशा प्रदान करने का प्रयास किया है | इस बात का साक्षी साहित्य का इतिहास है | इसीकारण आज विभिन्न भारतीय भाषाओं मराठी, हिंदी, कन्नड, गुजराती, पंजाबी आदि में दलित साहित्य लेखन किया जा रहा है| इन दलित साहित्यकारों में जयप्रकाश कर्दम, कौसल्या बैसंगी, सुशीला टाकभौरे मोहनदास नैमिशराय आदि नाम महत्त्वपूर्ण है | उन्हींने दलित साहित्य पर उपन्यास, कहानी, निबंध, आत्मकथाएं आदि साहित्य में अपनी दस्तक दी | मुलतः दलित आत्मकथा को साहित्य विधा के रूप में गठित होने का श्रेय मराठी साहित्य के लिए है | मराठी दलित आत्मकथाओ से प्रेरणा लेकर बाद में यह विधा भारत के अन्य भाषाओं में प्रचलित हुई | आज हिंदी दलित साहित्य तथा आत्मकथाओं ने अपनी जडे मजबूत की है | प्रस्तुत आत्मकथाओं के माध्यम से व्यक्तिगत तथा जातिगत शोषण, जुल्म आदि का चित्रण करनें का सफल प्रयास किया है |

ओमप्रकाश वाल्मीकि ने 'जूठन' आत्मकथा में अपना बचपन, प्रेम, शिक्षा, जातीय अनुभव, बाहरी संघर्ष तथा पारिवारिक संघर्ष को अभिव्यक्ति दी है | 'जूठन' में सवर्णो की ओर से दलितों पर किए गएं अन्यायों का चित्रण मिलता है | वस्तुतः कई बार उन्होंने अपनी आत्मकथा लिखने का प्रयास किया था | उन्होंने कई बार लिखे हुएं पन्ने फाड डाले थे | अनेक प्रयासों के बाद भी उन्हें सफलता नहीं मिली थी | अपनी इस आत्मकथा के बारे लेखक ने स्वयं 'जूठन' की भूमिका में लिखा था - "इन अनुभवों को लिखने के कई प्रकार के खतरे थे | एक लंबी जद्दोजहद के बाद में सिलसिलेवार लिखना शुरू किया | तमाम कष्टो, यातनाओ, उपेक्षाओं, प्रताडनाओं को एक बार फिर जीना पडा | उस दौरान गहरी मानसिक यंत्रणाए मैने भोगी | स्वयं परत-दर-परत उधेडते हुए कई बार लगा | कितना दुखदायी है यह सब | कुछ लोंगो को यह अविश्वसनीय और अतिरंजनापूर्ण लगता है | तात्पर्य यह है कि सवर्ण दलितो के साथ अमानवीय व्यव्हार करते थे | दलितो की उपेक्षा करना उनकी मानसिकता ही बनी थी | उनका शिकार स्वयं लेखक बने थे |

ओमप्रकाश वाल्मीकि मुज्जफरनगर जिले के बरला गाँव में रहते थे | वही पर चुहडे परिवार के मकान में उनका बचपन गुजर गया | उनके मकानो के पीछे खुला शौचालय था | चारों तरफ से गंदगी फैली थी | तंग गलियो मे कुत्ते-सुअरों के साथ नंग धडंग बच्चे घुमते रहते थे | मानो गंदगी भरे माहोल मे वाल्मीकि जी का बचपन बीता था | बस्ती मे एक कुआँ था, उसमे कीडे पडे थे | वही पानी दलितों को मजबूरन पीना पडता था | जूठन की भूमिका मे वाल्मीकि लिखते है- "इस माहोल मे यदि वर्णव्यवस्था कहनेवालो को दो चार दिन रहना पड जाए तो उनकी राय बदल जाएगी | " १ तात्पर्य यह है कि लेखक सवर्णो की मानसिकता को फटकारते है | लेखक जिस स्कूल मे पढते थे ,उस स्कूल मे सुकरवनसिंह जैसे तगा मास्टर थे | वे लेखक से स्कूल का मैदान साफ करवा लेते थे | इसी कारण पिताजी ने उन्हे स्कूल से निकालकर दुसरे स्कूल मे भेजा | उद्देश यह था कि वे अपने बेटे को शिक्षित कर स्वयं के साथ अपनी जाति सुधारने के लिए प्रेरित करते है |

सवर्णो के घर शादी ब्याह के समय दलितो द्वारा बिना मजदूरी काम करवा लिए जाते थे | उन्हें खाना भी नहीं मिलता था | दलितों को झुठा खाना दिया जाता था | दलित परिस्थिति के वजह से मजबूर थे | ऐसी विषम स्थिति मे भी वाल्मीकि *जी की माँ निडर और स्वाभिमानी थी | उन्हेंने सुखदेव त्यागी जैसे सवर्ण की लडकी के शादी मे काम किया था |* *काम के* बदले खाना माँगने पर उन्हें झूठी पत्तलो से भरी टोकरी की ओर इशारा किया जाता था | यह बात वाल्मीकि जी के माँ को अच्छी नही लगी | उन्होने सुखदेव त्यागी जैसे सवर्णो को कहा-"इस ठाके को अपने घर मे

Gund Nh. 2017-18

क्रांतिशलाका

मा. अरुणअण्णा लाड गौरव ग्रंथ

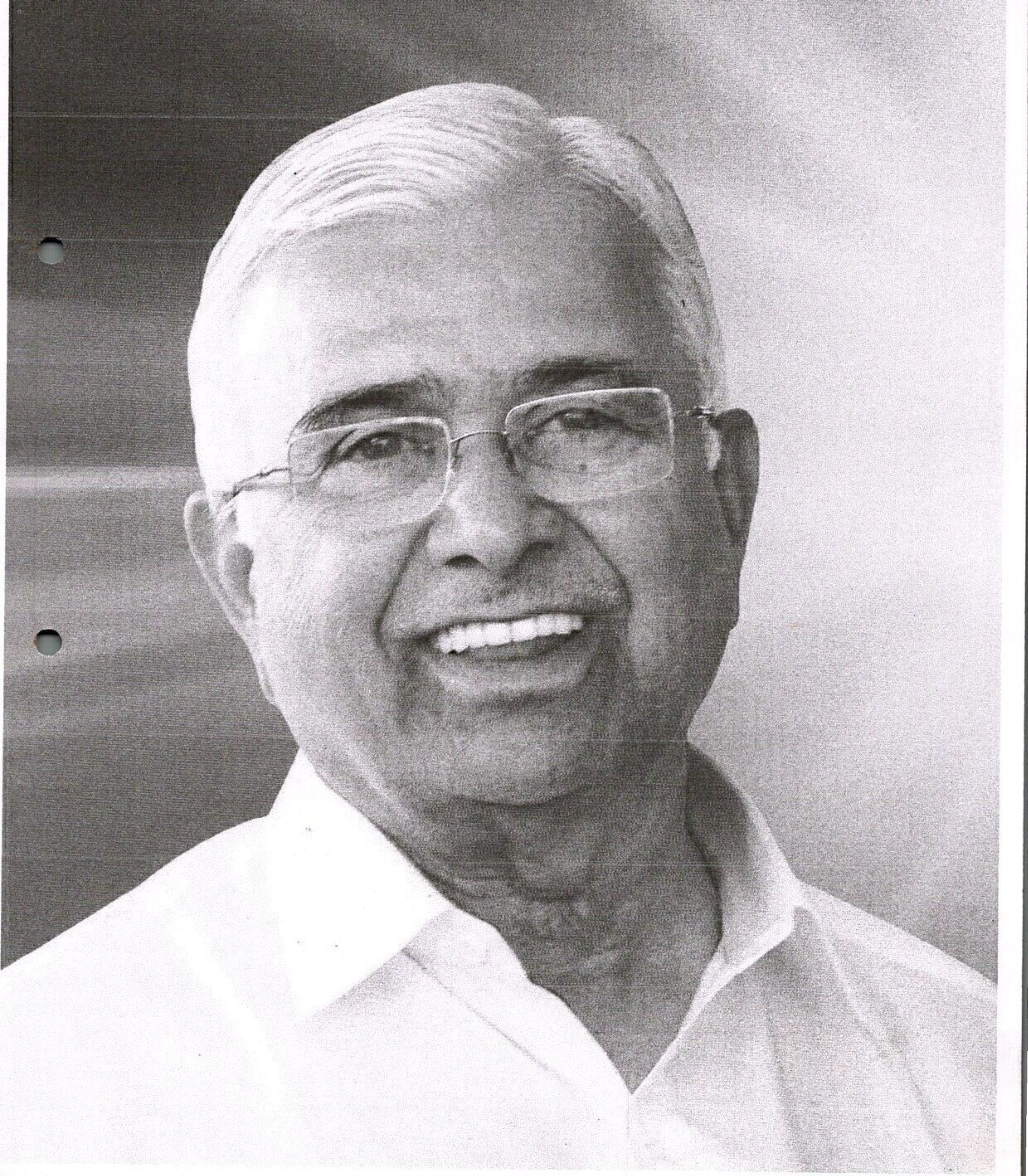

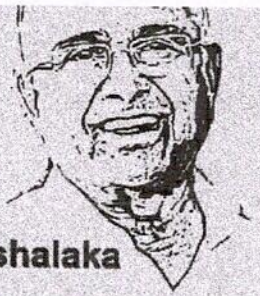

Krantishalaka

क्रांतिशलाका

मा. अरुणअण्णा लाड गौरवग्रंथ

प्रकाशन

९५ वी 'क्रांतिअग्रणी जयंती'

२०१७, ४ डिसेंबर

संपादक मंडळ

चंद्रकांत रोकडे

अशोक पवार

गोविंद डुबल

धनंजय होनमाने

नवनाथ गुंड

सर्जेराव खरात

जयवंत आवटे

श्रीकांत माने

ऋषीकेश खारगे

मांडणी

चंद्रकांत रोकडे, संतोष पाटील

अक्षरमांडणी

अमोल शिंदे

मुद्रितशोधन

गजानन पेटकर

मुद्रक

श्री लक्ष्मी प्रिंटिंग प्रेस, कुंडल

ता. पलूस, जि. सांगली.

फोन : ०२३४६-२७१२४६

महाराष्ट्र ही भूमी शूरांची, वीरांची, समाजसुधारकांची, धुरंधर राजकारण्यांची, क्रांतिकारकांची आणि पुरोगामी विचारवंतांची खाणच आहे. हिंदवी स्वराज्य संस्थापक छत्रपती शिवाजी महाराज, राजर्षि शाहू महाराज, महात्मा फुले, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्यासारख्या महापुरूषांच्या विचाराने आणि कार्याने प्रेरित झालेल्या क्रांतिसिंह नाना पाटील व १९४२च्या स्वातंत्र्य लढ्यातील प्रतिसरकारचे फिल्डमार्शल, हैद्राबाद मुक्ती लढा, गोवा मुक्ती संग्राम, संयुक्त महाराष्ट्र आंदोलनातील अग्रणी जी. डी. बापू लाड यांच्या कष्टकरी, शेतकरी, गोरगरीब, पददलित यांच्यासारख्या तळागाळातल्या लोकांच्या न्याय्य हक्कासाठी संघर्ष करण्याच्या भूमिकेचा कृतिशील वारसा आपल्या कृतितून, विचारातून आणि आचारातून चालवणारे क्रांतिअग्रणी डॉ. जी. डी. बापू लाड सहकारी साखर कारखान्याचे चेअरमन मा. अरुणअण्णा लाड हे आपल्या वयाची सत्तरी पूर्ण करत आहेत. त्यानिमित्ताने त्यांच्या विषयची माझ्या मनातील भावना मांडत आहे.

भुकेलेल्यांना अन्न, उघड्या-नागड्यांना वस्त्र, बेघरांना निवारा, बेकारांना काम, निराशेच्या गर्तेत गेलेल्यांना हिम्मत, गोरगरिबांच्या मुलींचे हुंड्याविना लग्न त्याचबरोबर प्राणीमात्रास अभय मिळावे म्हणून अण्णांची तळमळ त्यांच्या प्रत्येक कृतीतून, विचारातून आणि आचारातून दिसते. उदाहरणच द्यायचे झाल्यास माझे स्वतःचे आईवडील सोलापूर सारख्या ग्रामीण दुष्काळी भागातून कुंडलला शेतीकामासाठी, मोलमजुरीसाठी आले होते. त्यामुळे साहजिकच माझे शिक्षण प्रतिनिधी हायस्कूल व क्रांतिअग्रणी जी. डी. बापू लाड महाविद्यालयामध्ये झाले. अण्णांनी कुंडलसाख्या ग्रामीण भागात उच्चशिक्षणाची दारे उघडल्यामुळेच माझ्यासारखा शेतमजुराचा मुलगा उच्च शिक्षण घेऊ शकला. एवढेच नाही तर आज शिक्षण क्षेत्रात एवढा प्रचंड प्रमाणात बाजार वाढलेला असताना शिक्षकभरती करताना अनेक शैक्षणिक संस्था लाखो रुपये घेऊन शिक्षक भरती करतात. परंतु क्रांतिअग्रणी जी. डी. बापू

असामान्य व्यक्तिमत्त्व

प्रा. नवनाथ गुंड
क्रांतिअग्रणी महाविद्यालय,
कुंडल

2016-17

V.P. Institute of Management Studies and Research
Sangli-416416

Research Publication Book

(ISBN: 978-93-86077-14-1)

February, 2017

Editorial Board

Prin. Dr. R.A. Shinde : Chief Editor

Dr. S.T. Bhosale : Editor

Dr. Mrs. N.U. Deshpande : Editor

Advisory Board

Dr. M.M. Ali
Dr. V.D. Chavan
Dr. D.M. Kumthekar
Dr. R.M. Yallatti
Prof. S.N. Bhosale

INDEX

Sr. No	Paper Title and Author	Page No
1	**Growth & Development of Tourism Sector in India** S S Digarje	1-4
2	**Working on Digital Wallets in cashless Economy** *Dheeraj Deshpande*	5-9
3	**Introspection to the Entrepreneurial Potential of Tourism Industry in Tripura** *Shubrata Debnath*	10-16
4	**Performance Evaluation of Mudra Yojana Initiated by Government of India** *Umadevi Kokku*	17-21
5	**Good Governance and India** *Gangadhar Joshi*	22-28
6	**Morden Concept of Digital Libarary** *Vichare Dattatrey*	29-32
7	**India's Tourism Industry – Progress and Emerging Issues** *Yallama Chawan*	33-38
8	**Emerging Trends in Banking Sector-Challenges, Opportunities and Technological Impact on Banking Sector.** *Laxman Karangale*	39-44
9	**Emerging Trends in Education - Micro Schooling** *Farheen Belgaumwala*	45-51
10	**Research Methodology: Some Aspects** Kishore Desai	52-56
11	**Millennium Development Goals and Muslims of India** *Parveen kausar Yalagi*	57-63
12	**A New Way of Selecting Trending Stocks for Traders and Investors on National Stock Exchange, India** *Sameer Deshpande*	64-66
13	**A research paper on 'Data Envelopment Analysis – An Effective Way to Measure Performance and Efficiency of Banking Sector in India'** *Bharat Nagargoje*	67-70
14	**Consortia: Need of Time** *Satvashila Salgar*	71-74
15	**Influence of Motivation on Various Personality Groups and Work Allocation** *Bina S.Kundargi*	75-78
16	**Succession Planning Puzzle: A Generalized Idea on Succession Planning in Family Business in the Current Scenario** *Khushboo Vachhani*	79-88
17	**Future Of E-Commerce in India - A Review** *Zeeshan Indikar*	89-92
18	**Impact of Self Help Group in India** *Kanwaljit Kaur*	93-98

 ISBN: 978-93-86077-14-1

RESEARCH METHODOLOGY: SOME ASPECTS

Kishor N. Desai
Librarian, Krantiagrani G.D. Bapu Lad Mahavidyalaya, A/P-Kundal , Tal-Palus,Dist-Sangli.Pin-416 309
Email-kishor.desai007@gmail.com
Mobile No.-9730820255

ABSTRACT:
The scientific research relies on the application of the scientific method, a harnessing of curiosity. This research provides scientific information and theories for the explanations of the nature and the properties of the world around us. It makes practical applications possible. Scientific research is funded by public authorities, by charitable organisations and by private groups, including many companies. Scientific research can be subdivided into different classifications according to their academic and application disciplines.
New product design and development is more often than not a crucial factor in the survival of accompany. In an industry that is changing fast, firms must continually revise their design and range of products. This is necessary due to continuous technology change and development as well as other competitors and the changing preference of customers.

Keywords: *Research, design, method, computer, ICT etc.*

I RESEARCH:
Research can defined as the search , for knowledge , or as any systematic investigation, with an open mind , to establish novel facts, usually using a scientific method. Research in common parlance refers to a search for knowledge. Once can also define research as a scientific and systematic search for pertinent information on a specific topic. In fact, research is an art of scientific investigation.

II OBJECTIVES OF RESEARCH:
The purpose of research is to discover answers to questions through the application of scientific procedures. The main aim of research is to find out the truth which is hidden and which has not been discovered as yet. Though each research study has its own specific purpose, we may think of research objectives as falling into a number of following broad groupings:

1. To gain familiarity with a phenomenon or to achieve new insights into it (studies with this object in view are termed as *exploratory* or formulative research studies);

2. To portray accurately the characteristics of a particular individual, situation or a group (studies with this object in view are known as *descriptive* research studies);

3. To determine the frequency with which something occurs or with which it is associated with something else (studies with this object in view are known as diagnostic research studies);

To test a hypothesis of a causal relationship between variables (such studies are known as hypothesis-testing research studies.
Criteria of Good Research

Whatever may be the types of research works and studies, one thing that is important is that they all meet on the common ground of scientific method employed by them. One expects scientific research to satisfy the following criteria:

Page -113

रयत शिक्षा संस्था का,

डी. पी. भोसले कॉलेज, कोरेगाव

ISBN: 978-81-927095-1-2

सम्मेलन स्मरणिका

हिंदी, मराठी तथा अंग्रेजी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

व्दि दिवसीय अंतरविद्याशाखीय अंतरराष्ट्रीय संम्मेलन

'वैश्विक संदर्भ में शोषितों का साहित्य'

१३ तथा १४ फरवरी, २०१७

संपादक
डॉ. गजानन भोसले

प्रकाशक और प्रमुख संपादक
प्रधानाचार्य डॉ. विजयसिंह सावंत

विषय समन्वयक
श्रीमती रावन मुल्ला

K.Dr.G.D.B.L.Mahavidyalaya KUNDAL Tal.Palus Dist.Sangli

प्रकाशन अधिकार : डी. पी. भोसले कॉलेज, कोरेगाव

मुद्रक : सुमन इंटरप्रायझेस, एस सी १, अश्विनी पार्क, वनवासवाडी, (खेड) सातारा, मो. ९१७५२०५४०७

सूचना : प्रस्तुत अंक में प्रकाशित आलेखों में व्यक्त विचारों से संपादक मंडल तथा संस्था सहमत हो यह आवश्यक नहीं।

Index

Sr. No	Subject	Writer	Page No.
26	कुसुम अंसल के हिंदी उपन्यास साहित्य में नारी शोषण	प्रा.डॉ.आर.पी.भोसले	86
27	'शुभ्रा' उपन्यास में चित्रित नारी शोषण की समस्या	प्रा.डॉ.शिवाजी उत्तम चवरे	89
28	**कोल्हाटी स्त्री की वेदना का जीवंत दस्तावेज़ : छोरा कोल्हाटी का**	**संगीता सूर्यकांत चित्रकोटी**	92
29	कठगुलाब, अकेला, हस्तक्षेप, छिन्नमस्ता, पाँव तले की डूब, डंक, इदन्नमम उपन्यास में नारी शोषण	डॉ. संजय चोपडे	95
30	फेमिनिज़म और मीडिया	डॉ. विजय महादेव गाडे	98
31	भीष्म साहनी जी के उपन्यासों में नारी शोषण की समस्याएँ	प्रा. नितेश चंदू गांगवे	103
32	कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासों में नारी शोषण की समस्या	प्रा.डॉ.सौ.सुगंधा हिंदूराव घरपणकर	106
33	कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यास में चित्रित नारी शोषण	डॉ. बेबी श्रीमंत खिलारे	108
34	शोषितों का साहित्य–वैश्विक संदर्भ–नारी संदर्भ में	डॉ.शाहीन अब्दुलअजीज पटेल	111
35	चित्रा मुदगल के 'आवां' उपन्यास में चित्रित नारी समस्या	श्री. जे. ए. पाटील	113
36	हिंदी काव्य में चित्रित नारी शोषण की समस्या	प्रा. रगडे पी. आर	115
37	मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी शोषण की समस्या	प्रा. बाळु भोपू राठोड	119
38	हिंदी कहानियों मे नारी समस्याओं का चित्रण	प्रा.डॉ.मिलिंद नामदेव साळवे	123
39	नारी शोषण के अधुनातम आयाम	प्रा. डॉ. बाजीराव राजाराम शेलार	129
40	रत्नाकर साभरिया के कहानी साहित्य में दलित नारी शोषण	श्री.प्रदीप माणिकराव शिंदे	132
41	कृष्णा सोबती के उपन्यासों में शोषित नारी	सौ.वैशाली शिंदे	134
42	"सूरजमुखी अंधेरे के" उपन्यास के रत्ती का मनोवैज्ञानिक अध्ययन	प्रा. डॉ. तांबे सुरेखा लक्ष्मण	136
43	'ओमप्रकाश वाल्मिकी की कहानी में नारी शोषण	अर्चना वसंत तराळ	139
44	सूर्यबाला के उपन्यास में नारी शोषण	प्रा. सौ. वर्णेकर मंदाकिनी विजय	141
45	आदिवासी उपन्यासों में नारी शोषण की समस्याएँ	डॉ. साताप्पा शामराव सावंत	143
46	समकालीन हिंदी कविता में आदिवासियों के शोषण की समस्या	प्रा. बहिरम देवेंद्र मगनभाई	146
47	**हिन्दी उपन्यास 'धार' में चित्रित आदिवासी स्त्री चेतना**	डाकोरे कल्याणी लिंगराम	150
48	आदिवासियों के शोषण की समस्या	प्रा. गणेश दुंदा गभाले	152
49	'नदी के मोड पर' उपन्यास में चित्रित आदिवासी समस्याएँ	गीता दिनकर राऊत	155
50	आदिवासियों के शोषण की समस्या	प्रा.अशोक गोविंदराव उघडे	158
51	उपन्यासों में चित्रित आदिवासियों के शोषण की समस्या	प्रा. डॉ. बोबडे आर. एस.	161
52	शोषितों के साहित्य का अर्थशास्त्रीय अध्ययन	प्रा.डॉ.बळवंत बी.एस.	163
53	आम आदमी के शोषण की पीड़ा से साक्षात्कार 'बकरी'–नाटक'	प्रा. डॉ. नितीन धवडे	165

K.Dr.G.D.B.L.Mahavidyalaya * Tal.Palus Dist.Sangli * KUNDAL

'चित्रा मुदगल के 'आवां' उपन्यास में चित्रित नारी समस्या'

श्री. जे. ए. पाटील
के. जी. डी. लाड कॉलेज, कुंडल.

सारांश :–

चित्रा मुदगल का बहुचर्चित उपन्यास 'आवां' है। प्रस्तुत उपन्यास में महनगरीय नारी जीवन का सशक्त चित्रण हुआ है। 'आवां' यह मेट्रोसिटी में अपना जीवन व्यथित करनेंवाली नारी का जीवंत चित्रण है। प्रस्तुत उपन्यास में स्त्री संसार जगत के सारे दस्तावेज सामने आएं है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने नमिता पांडे, अंजना, वासवानी, सुनंदा, गौतमी, किशोरीबाई, स्मिता, नीलम्मा आदि पात्रों के माध्यम से विविध समस्याओं को उद्घाटित किया है। अर्थचेतना उपन्यास की प्रमुख जड रही है जो सभी समस्याओं के मुल में होती है। निम्नमध्यावर्ग परिवार का जिम्मेदार कामकाजी मुखिया जब मृत्युशैया पर पडा हो तो घर की सारी जिम्मेदारी घर के बडे बेटे अथवा बेटी पर आ जाती है। प्रस्तुत उपन्यास में इसी समस्या का जीवंत चित्रण हुआ है।

लेखिका चित्रा मुदगल ने 'आवां' उपन्यास के माध्यम से नारी जीवन से जुड़े अनगिनत ऐसे जटिल प्रश्नों की ओर इशारा किया है जो प्राचीन काल से चली आ रही समस्या के रूप में आज भी विद्यमान है। एक ओर रखैल, वेश्या, विधवा, परित्यकता आदि परंपरागत नारी समस्याओं का चित्रण किया है। वही दूसरी ओर बेरोजगार, श्रमजीवी, मॉडेलिंग करनेवाली, व्यसनाधीन, कुँवारी माता जैसे महानगरीय जीवन की आधुनिक समस्याओं को भी उठाया है। प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से महानगरीय जटिल समस्याओं में जल रही महानगरीय नारी का यथार्थ एवं संघर्षपुर्ण जीवन का चित्रण किया है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखिकाने नारी को हर समस्या से मुक्त होने के लिए आर्थिक स्वयंपूर्णता को अधिक महत्त्व दिया है। अतः 'आवां' पूर्णतः नारी के अस्तित्व से जूडे सवालों को उठानें वाला उपन्यास है। इसमें साधारण झोपड़ी में रहनेवाली अशिक्षित, श्रमजीवी नारी से लेकर उच्चशिक्षित अमीर घर की नारी तक के सभी समस्याओं का चित्रण हुआ है।

सदियों से भारतीय समाज व्यवस्था में नारी उपेक्षित तथा अन्याय अत्याचार से पीडित रही है। समय के अनुसार समाज व्यवस्था में काफी परिवर्तन होते रहे। परंतु नारीविषयक संस्कार समाज में पुरातन पंथी और जडवादी ही दिखाई देते हैं। वैदिक काल में नारी को सम्मान प्राप्त था। सभी दृष्टि से नारी स्वतंत्र थी। पारिवारिक, सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्र में उसे सम्मान प्राप्त था। परंतुउत्तरवैदिक काल में यह सम्मान समाप्त हुआ। यहाँ से भारतीय नारी अपने स्वत्व तथा अधिकारों से वंचित हो गई थी। स्त्री – पुरुष समानता का संतुलन बिघड गया। इसके संदर्भ में डॉ. राजरानी शर्मा लिखते है, "भारतीय नारी वैदिक युग के संभावनापुर्ण पद पर अधिक दिन तक प्रतिष्ठित नहीं रह सकी । धीरे – धीरे उसकी सम्मान जनक और समानता की स्थिति का न्हास होने लगा।"[1] मध्ययुग तक आते – आते नारी अपनी आजादी को पूर्णतः खो चुकी थी। इसके लिए जिम्मेदार थी पितृसत्ताक पध्दति। इसी पध्दतिने पुरुष को ही सभी अधिकार बहाल किए और नारी को हमेशा दुय्यम स्थान दिया। पितृसत्ताक पध्दतिने नारी के सभी अधिकार छिन लिए। "आदिम समाज से आजतक स्त्री को हमेशा पुरुष संरक्षण में रहना पड़ा। प्रश्न तो केवल यह उठता है कि उनका भावक कौन होगा? पिता, भाई या पति? वह सत्ताधारी पुरुष की केवल मध्यस्थ थी।"[2]

साहित्य समाज का दर्पण है ऐसा कहा जाता है। समाज का प्रतिबिंब साहित्य में दिखाई देता है। आदि काल से नारी जीवन साहित्य में चित्रित हुआ हैं। प्रेमचंदपूर्व, प्रेमचंदयुग तथा प्रेमचंदोत्तर युग के उपन्यासों में नारी जीवन का यथार्थ चित्रण दिखाई देता है। इस काल के उपन्यासकारों ने नारी प्रधान उपन्यास भी लिखे। आज यही परंपरा निरंतर रही है। इसमें महिला रचनाकार भी पिछे नहीं रहे। 'आवां" चित्रा मुदगल का बहुचर्चित बृहदकाय उपन्यास है। यह उपन्यास महानगरीय नारी जीवन के वास्तविकता को उद्घाटित करता है। 'आवां' मेंट्रोसिटी में अपना जीवन व्यतीत करनेवाली निम्नमध्यवर्गीय नारी जीवन का सशक्त दस्तावेज है। 'आवां' में स्त्री संसार के सारे दस्तावेज सामने आएं है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका नमिता पांडे, अंजना वासवानी, सुनंदा, गौतमी, किशोरीबाई, स्मिता, नीलम्मा आदि पात्रों के माध्यम से विभिन्न समस्याओं को उद्घाटित किया है। उपन्यास की आर्थिक समस्या जो समस्या की जड होती है।

Rayat Shikshan Sanstha's

K.Dr.G.D.B.L. Mahavidyalaya KUNDAL Tal.Palus.Dist.Sangli

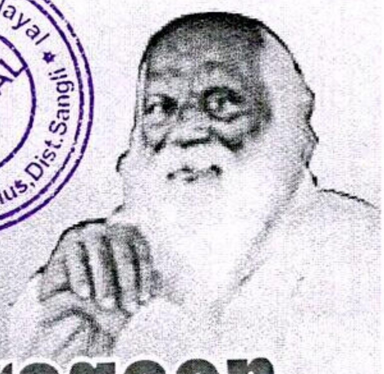

D.P. Bhosale College, Koregaon

ISBN: 978-81-927095-1-2
Volume - III

13th and 14th
February, 2017

Proceedings of
A Two Day Interdisciplinary International Conference
On
Literature of the Underprivileged in the Global Perspecti
Organized by Departments of English, Hindi and Marath

Editor
Dr. B. S. Chavan
D.P. Bhosale College, Koregaon.

Chief Editor
Prin. Dr. V. S. Sawant.
D.P. Bhosale College, Koregao

रयत शिक्षण संस्थेचे,

डी. पी. भोसले कॉलेज, कोरेगाव

ISBN: 978-81-927095-1-2

परिषद स्मरणिका

मराठी, हिंदी आणि इंग्रजी विभाग आयोजित

दोन दिवसीय आंतरविद्याशाखीय आंतरराष्ट्रीय मराठी परिषद

"जागतिक परिप्रेक्ष्यातून शोषितांचे साहित्य"

१३ व १४ फेब्रुवारी, २०१७

प्रमुख संपादक
डॉ. विजयसिंह सावंत
प्राचार्य, डी. पी. भोसले कॉलेज, कोरेगाव

संपादक
डॉ. बाळासाहेब चव्हाण

मराठी विषय समन्वयक
प्रा. दत्तात्रय डांगे

मराठी विषय सह समन्वयक
डॉ. विद्या नावडकर

प्रकाशक
प्राचार्य, डी. पी. भोसले कॉलेज, कोरेगाव

मुद्रक
सुमन इंटरप्रायझेस
एस सी १, अश्विनी पार्क, वनवासवाडी, (खेड) सातारा मो. ९१७५२०५४०७

K.Dr.G.D.B.L.Mahavidyalayal KUNDAL * Tal.Palus,Dist.Sangli

Index

Sr. No.	Subject	Writer	Page No.
58	[illegible] कालखंडातील मराठी आणि हिंदी [illegible] बलुतेदारांच्या (उपेक्षित वंचितांच्या) [illegible]	प्रा. राहूल भालेराव पाटील,	247
59	[illegible] साहित्य : संकल्पना, स्वरुप व व्याप्ती	डॉ.सौ.चंदना अनिल लोखंडे	254
60	**[illegible], परंपरा, स्त्री आणि स्त्रीवादी साहित्य**	प्रा. डॉ. शिवकुमार सोनाळकर	257
61	[illegible] – विमुक्तांच्या साहित्याचे वेगळेपण	प्रा. डॉ. सदाशिव हरिभाऊ सरकटे	265
62	[illegible] चंदन शिव यांच्या कथेतील षोशितांचे चित्रण	प्रा. डॉ. मल्हारी मसलखांब	270
63	[illegible]ची संकल्पना : एक चिंतन	प्रा. डॉ.भारती रेवडकर,	273
64	**[illegible] एक संवेदनशील हुंकार :– ब्र**	डॉ. रेश्मा दिवेकर	279
65	[illegible] फुल्यांचा शिक्षण विचार	आबासाहेब उमाप	282
66	[illegible]तिक स्त्रीवादी साहित्यावर फुले– [illegible]डकरवादाचा प्रभावं	प्रा. सुनिता गोरख रोकडे	286
67	मराठी दलित आत्मकथने	डॉ. शशिकला रणदिवे–वाणी.	289
68	'स्त्रीवादी साहित्य संकल्पना स्वरूप व व्याप्ती' ;पाश्चात्य व भारतीयद्ध	डॉ. संदीप अ.बनसोडे	293
69	'दलित कवितांमधील शोषणाची जाणीव'	प्रा. प्रवीण सदानंद गायकर	300
70	स्त्रीवादी साहित्य संकल्पना स्वरूप आणि व्याप्ती	प्रा. सौ. मोरे निर्मला [illegible]	306
71	दलित कविता	प्रा. नंदिनी काळे	313
72	'७२ मैल' मधील राधाक्काचे विदारक चित्रण	डॉ. मानसी दशरथ [illegible]	318
73	**स्त्रीवादी साहित्य संकल्पना, स्वरूप व व्याप्ती**	डॉ. सविता सुनिल केंजळे	322
74	स्त्रीवादी साहित्य : संकल्पना, स्वरुप व व्याप्ती	प्रा.एन.व्ही. शिंदे	325
75	'श्रमिक, शोषितांच्या व्यथांचा हुंकार म्हणजे नारायण सुर्वे यांची कविता होय'	श्री. नवनाथ किसन गुंड	329
76	डककलवार : अत्यवस्थ जातवास्तव	प्रा. प्रदीप मोहिते	333
77	कैकाडी समाजातील जातपंचायत आणि प्रथा–परंपरा	प्रवीण सखाराम लोंढे	336
78	1980 नंतरच्या महानगरीय जीवनातील आर्थिक दुर्बलांचे साहित्य	प्रा. सुकुमार दादू आवळे	339
79	1990 नंतरची स्त्रीलिखित मराठी कादंबरी	प्रा. डॉ. विनोद राठोड	342
80	"शोषितांचे साहित्य संकल्पना, स्वरुपः व अनंत कदम यांचे साहित्य"	माणिक सर्जेराव वांगीकर	346
81	शोषितांचे शिक्षण : ही ज्वलंत समस्या	प्रा. सोनवले राजकुमार रंगनाथ	251

K.D.G.D.B.L. Mahavidyalaya KUNDAL * Tal.Palus, Dist.Sangli

... शोषितांच्या व्यथांचा हुंकार म्हणजे नारायण सुर्वे यांची कविता होय'

श्री. नवनाथ किसन गुंड
सहाय्यक प्राध्यापक, मराठी विभाग
क्रांतिअग्रणी जी. डी. बापू लाड महाविद्यालय, कुंडल

...मर्ढेकरांच्यानंतर नारायण सुर्वे हे एक महत्त्वाचे कवी उदयास आले. 1956 पासून सुरु झालेली सुर्वे ... ऐसा गामी ब्रह्म' (1962), माझे विद्यापीठ(1966) 'जाहीरनामा' (1975) आणि 'नव्या माणसाचे आगमन' या ... प्रसिध्द झाली. त्यांच्या पहिल्याच कविता संग्रहाने त्यांच्या कवितेचे वेगळेपण, तिचे स्वतंत्र अस्तित्व लक्षात ...

... कवितेत मर्ढेकरांनी मानवी जीवनाचे भकासरूप यंत्रामुळे आलेली खंडितता, विज्ञान युगातील मनुष्याचे ... आणि भयाण एकाकीपणा यांचे दर्शन प्रथम घडविले. मात्र नारायण सुर्वे यांच्या कवितेत श्रमिकांचे दर्शन ... अचूक, अस्सल आणि प्रामाणिक.

...सुर्वे' यांची कविता यामध्ये दिगंबर पाध्ये म्हणतात. ऐसा गामी ब्रह्म पासूनच, आधुनिक समाज ... वेदनेची चित्रे शब्दबध्द करीत असताना, भावी जीवनाविषयी आशावाद जपणारी सुर्वे यांची वृत्ती वेगळी ... स्वतः सुर्वे यांनीही 'कामगार आहे मी तळपती तलवार आहे,' "जसा जगत आहे मी तसाच शब्दांत आहे." ... हे वेगळेपण 'ऐसा गामी ब्रह्म' या संग्रहातील पहिल्याच कवितेत नोंदवून ठेवले आहे. सुर्वे यांच्या कवितेत ...चे बाहय विश्व, आजवर मराठी कवितेचा विषय झालेल्या विश्वाहून भिन्न आह, हे सहज ...खे आहे. हे जग कामगारांचे, कष्टकऱ्यांचे आहे. केवळ जगण्यासाठी ज्यांना रोज संघर्ष करावा लागतो, ...चे जग हा सुर्वे यांच्या कवितेतील एक महत्त्वाचे घटक आहे.

सदर निबंधातून नारायण सुर्वे यांच्या काही निवडक कवितेतून आलेल्या श्रमिक, शोषितांच्या व्यथा, वेदनांचा ...चाप्रयत्न केला आहे.

...पीठ या कवितेची सुरुवात –

न घर होते, ना गणगोत, चालेन तेवढी पायाखालची जमीन होती
दुकानांचे आडोसे होते; मोफत नगरपालिकेची फूटपाथ खुलीच होती.

... संत लयीतील निवेदनाने होते. या शब्दातून व पुढे येणाऱ्या 'उठवळ आयुष्याची उठबस'.. टोपलीखली ... जग झाकीत दररोज अंधार येत जात होता.'यासारख्या शब्दांतून व्यक्त होणारे भाव भोवतालच्या वास्तवाचे ... व्यक्त करीत राहतात.

या कवितेत सुर्वे अनाथ मुलाची व्यथा मांडतात. कारण सुर्वे स्वतः अनाथ म्हणून वाढले. परंतु सर्व काही ते ... शिकले रस्त्याने जाताना दुकानांचे बोर्ड वाचले, रस्त्याचे खांब मोजले, व्यवहाराची वजाबाकी पाहिली, ...–जातीत बाटलेले वाडे, वसत्या, वेश्यागृहे त्यांनी पाहिली. वांदेवाडीच्यावस्तीत याकुब नालबंदवाला टांग्याच्या ... नाल ठोकायचा. त्याच्या हाताखालीच सुर्वे काम करू लागले, तसा याकुब जातीय दंगलीत मेला. ना तो ... त्याचे प्रेम पाहून आपोआप डोळयांत पाणी उभा राहिले. त्याच्या प्रेताला खांदा देऊन 'मिलाद–कलमा'च्या ... तोही सामील झाला. तेव्हाच त्याने मनाशी खूणगाठ बांधली की, ही दुनिया नंग्यांची आहे. इथे वाट चालावीच ... मात्र सगळया खाणाखुणा लक्षात ठेवून जगलास तरच 'हे नारायणा' तुला जगता येईल.

'माझे विद्यापीठ' या कवितेत येणाऱ्या तीन घटना धर्मभेद, युध्द व राज्यकर्त्यांची दमणयंत्रणा याची प्रतिके ... आणि कवीमनाला पडणाऱ्या प्रश्नांतून तद्विषयक विचारांतून प्रत्यक्ष भाष्य न करताच, कविचा सामाजिक ... व्यक्त होतो. म्हणूनच 'माझे विद्यापीठ' ही एक वैशिष्टयपूर्ण कविता ठरते.

कार्ल मार्क्स या कवितेत सुर्वे सांगतात, माझ्या पहिल्या संपातच मला मार्क्स भेटला. मी मिरवणुकीच्या मध्यभागी ... खांद्यावर त्याचा बॅनर होता. तेव्हा जानकी अक्का माझ्याजवळ आली आणि तिच्या रांगडया पण जिव्हाळयाच्या ... म्हणाली याला ओळखले का? हा आपला मार्क्स बाबा हा जर्मनीत जन्मला. याने पोतेभर ग्रंथ लिहिले आणि ... इंग्लंडच्या मातीत मिसळून गेला. सन्याशाला काय? सर्व भूमी सारखीच

K.Dr.G.B.L. Mahavidyalaya KUNDAL Tal Palus, Dist. Sangli

Rayat Shikshan Sanstha's

Krantiagrani Dr.G.D.Bapu Lad Mahavidyalaya, Kundal

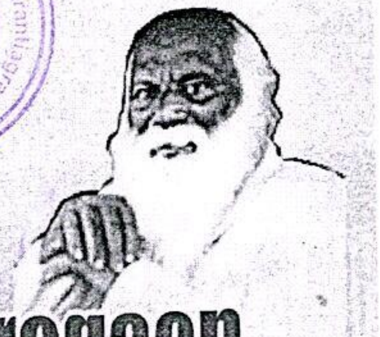

D.P. Bhosale College, Koregaon

ISBN: 978-81-927095-1-2

Volume - III

13th and 14th February, 2017

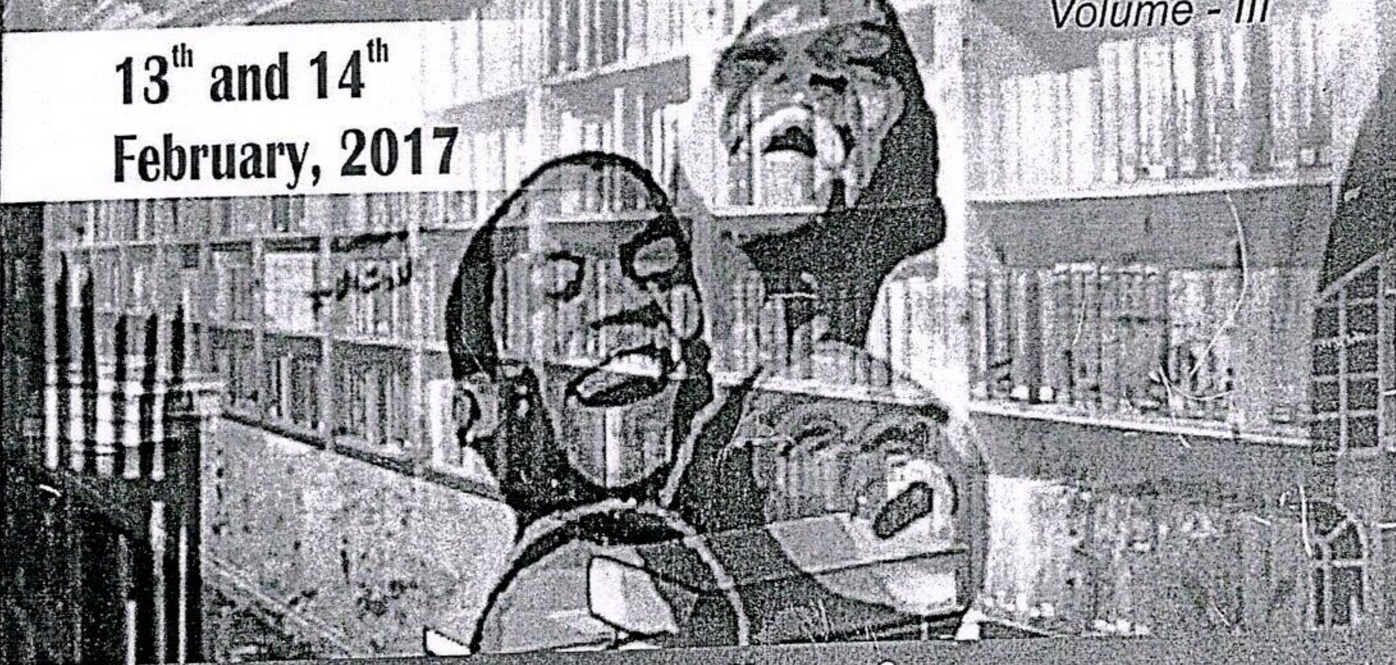

Proceedings of A Two Day Interdisciplinary International Conference On Literature of the Underprivileged in the Global Perspective

Organized by Departments of English, Hindi and Marathi

Editor
Dr. B. S. Chavan
D.P. Bhosale College, Koregaon.

Chief Editor
Prin. Dr. V. S. Sawant.
D.P. Bhosale College, Koregaon.

Index

Sr. No	Subject	Writer	Page No.
82	भारतीय स्त्रीवाद.	डॉ. पैकेकरी एस. पी.	354
83	ग्रामीण कादंबरीत प्रतिबिंबित शोषितांचा राजकीय संघर्ष आणि वास्तव	झुंबाडे संजय बालाजी	358
84	'माणदेशी माणसं' मधील 'शोषितांचे जीवनदर्शन	प्रा. श्रीकांत बोधे	362
85	कैकाडी समाजाचे लोकजीवन व लोकसंस्कृती	प्रा. सुहास मुरलीधर उघडे	264
86	संघर्षमय जीवनाची कहाणी:माझ्या जन्माची चित्तरकथा	पाटील विजया पांडुरंग	372
87	आदिवासी कविता	प्रा. विजयकुमार रामदास घोडके	375
88	आदिवासींच्या शिक्षणविषयक समस्या	प्रा. विनायक राऊत	389
89	मराठी कवितेतील कवयित्रींचा शोषणमुक्तीचा ध्यास	श्री. वामन नानासो सरगर	382
90	दलित स्त्री आत्मकथनाचे स्वरूप	प्रा. श्री. बाळासो आण्णा सुतार	385
91	एक उपेक्षित संत कवयित्री : संत निर्मळा	डॉ. धनंजय महादेव होनमाने	388
92	स्त्रीवाद : संकल्पना, स्वरूप, व्याप्ती व आव्हाने'	डॉ. रचना सचिन माने	392
93	स्त्रीवादी साहित्य : संकल्पना व स्वरुप	प्रा.डॉ.सौ.यू.आर.पाटील	395
94	जागतिकीकरणाच्या परिप्रेक्ष्यातून आदिवासी साहित्याची सद्यःस्थिती आणि भवितव्य	डॉ. आशा मुंडे	400
95	भारतातील जोगते–देवदासींची प्रथा : स्वरूप, दु:ख व शोषणाचे विविध पदर	प्रा. डॉ. सिध्देश्वर नवलाखे	404
96	उपेक्षीत वंचितांच्या आर्थिक समस्या	सहा. प्रा. शरद विठ्ठल पाटील	410
97	वंचितांचे दलित आदिवासी साहित्य	डॉ. राजेंद्र ठाकरे	415
98	स्त्रीजिवन एक सामाजिक संघर्ष -'माज्या जल्माची चित्तरकथा'	श्रीमती मुलाणी एस.पी.	418
99	महात्मा फुले :शोशितांच्या साहित्याचा सशक्त आविश्कार	प्रा. बापूराव भगवानराव पवार	421
100	बालसाहित्य	प्रा. अजित जयराम जाधव	425
101	मराठी साहीत्यातील शोशितांचे साहित्य	श्री.कोळेकर एस.एन	428
102	स्त्रीवादी साहित्य संकल्पना स्वरुप व व्याप्ती	डॉ. वर्षा शिरीष फाटक	430
103	शोपितांच्या साहित्याची संकल्पना व स्वरुप	प्रा. दत्तात्रय महादेव डांगे	433
104	पारधी समाजजीवनाचे विदारक चित्रण करणारी कादंबरी - दर कोस दर मुक्काम.	डॉ.नानासाहेब शामराव यादव	437
105	आधुनिक स्त्रीवादाचे स्वरूप व परंपरा	प्रदीप यशवंत पाटील	441
106	दलित मराठी स्त्रीवादी कविता	प्रा. डॉ. मानसी लाटकर,	445

Mahavidyalaya, Kundal ... Krantiagrani G.D. Bapu Lad

ISBN: 978-81-927095-1-2

एक उपेक्षित संत कवयित्री : संत निर्मळा

डॉ. धनंजय महादेव होनमाने

प्रास्ताविक

भारतीय भक्तिसंप्रदायामध्ये महाराष्ट्रात मध्ययुगीन काळखंडात उदयास आलेल्या वारकरी संप्रदायाचे स्थान अनन्यसाधारण स्वरूपाचे आहे. वैदिक धर्मतील कर्तकांड, उच्चनियता, स्त्री – पुरूष मतभेद दूर करून समताधिष्ठित मानवधर्म स्थापन करण्यासाठीच हा संप्रदाय उदयास आला.13 व्या शतकात संत नामदेवांनी आपल्या समत्ववादी भूमिकेतून आणि संत ज्ञानेश्वरांच्या वैश्विक विचारधारेतून या संप्रदायाची मुहूर्तमेढ कार्तिक शुध्द एकादशी शके 1289 ला चंद्रभागेच्या वाळवंटात रोवली गेली. भक्ती आणि अध्यात्म हे एका विशिष्ठ वर्गाच्या बंदिखान्यात बंदिस्त असलेले दोन महत्त्वपूर्ण भाग या दोन संतांनी सर्वासाठीच खुले केले. त्यातूनच आध्यात्मिक लोकशाहीची स्थापना झाली. 'या रे या रे लहान थोर। याति भलत्या नारीनर।' अशी आर्त हाक दिल्यामुळे अठरापगड जातीधर्माचे लहान –थोर, स्त्री – पुरूष समतेचं प्रतीक असणाऱ्या भागवत धर्माच्या झेंडयाखाली एकत्र आले. 13 व्या शतकात सुरू झालेल्या या सामाजिक उत्थानाच्या क्रांतीमुळेच मध्ययुगीन काळखंडात अठरापगड जातीधर्माचे संत होऊन गेले. महाराष्ट्रातील वारकरी संतांच्या नावाची यादी ओझरती पाहिली तरी या गोष्टीचा प्रत्यय आल्याखेरीज राहणार नाही.

महाराष्ट्रीयन संताच्या समत्ववादी भूमिकेमुळे लोकाभिमुख असणाऱ्या वारकरी संप्रदायामध्येही आलीकडच्या काळात भेदाभेद, उच्चनियता व स्त्री – पुरूष भेद यांनी शिरकाव केलेला दिसून येतोय.'साधू थोर जाणा साधू थोर जाणा ।साधू थोर जाणा कलियुगी।' कलियुगामध्ये ज्याने अंगभूत असणारे षढविकार धुतले, समूळ नष्ट केले तोच खरा साधू या युगामध्ये श्रेष्ठ आहे. परमेश्वराच्या दरबारात सर्वजण समान आहोत, स्त्री ही मुक्तीच्या मार्गावरील धोंड आहे. 'स्त्री' म्हणजे नरकाचे व्दार, पापाची खाण अशी विचारधारा असणाऱ्या वैदिक परंपरेला दूर करून स्त्री – पुरूष समानतेचा विचार जनमानसामध्ये रूजविण्यासाठी वारकरी संप्रदाय उदयास आला. स्त्रियासुधा संतपदापर्यंत जाऊ शकतात. आणि वारकरी संप्रदाय त्यांना संतपदापर्यंत घेऊन जाऊ शकतो हे संत जनाबाई, संत मुक्ताबाई, संत सोयराबाई, संत कान्होपात्रा इ. स्त्री संतांच्या रूपाने सिध्द केलेले आहे. मध्ययुगीन काळखंडात अठरापगड जाती धर्मातील स्त्रियांना संतत्व बहाल करणाऱ्या याच संप्रदायात आज स्त्री संतांना म्हणावे तेवढे स्थान हा संप्रदाय देताना दिसत नाही. संत निर्मळा या अशाच एक उपेक्षित संतस्त्री आहेत. त्यांच्याच अभंगाचा परामर्श प्रस्तुत शोधनिबंधात घेतलेला आहे.

चरित्र :–

संत चोखामेळा यांच्या धाकटया बहिणी म्हणून संत निर्मळा वारकरी संप्रदायाला सुपरिचित आहेत. त्यांच्या जन्म व मृत्यु विषयी निश्चित अशी नोंद आज आपणास उपलब्ध नाही. 'संत चोखातेळा यांचा समाधी काल इ.स. 1338 हा र. रा. गोसावी यांनी सांगितला आहे'. संत निर्मळा या चोखेबांच्या धाकटया बहिणी असल्यामुळे त्यांचाही कालखंड 13 वे शतकच आपणास मानावा लागेल. बंका हा निर्मळा यांचा पती होत. बंका व निर्मळा हे पती – पत्नी मेहूणपूर येथे राहात. हे गाव मंगळवेढा जवळचेच असावे असे वाटते. संत चोखामेळा हे एकनिष्ठ विठ्ठलभक्त व वयानेही मोठे असल्याने पारमार्थिक क्षेतातील तेच त्यांचे गुरू असावेत असे वाटत. त्याच्या अभंगांमध्येही अशा स्वपरूपाचे काही संदर्भ येताना दिसतात. संत नामदेवांच्या सहवासात भक्तिप्रेमात न्हाऊन गेलेल्या चोखोबांना पंढरीचा विठ्ठल प्रत्यक्ष भेटून त्यांच्या नित्याच्या कामात सहाय्य करीत आहे. त्यामुळे त्यांचे सारे कुंटुंबीय त्यांना पारमार्थिक क्षेत्रात आदर्शच मानत, चोखोबांचा

Rayat Shikshan Sanstha's

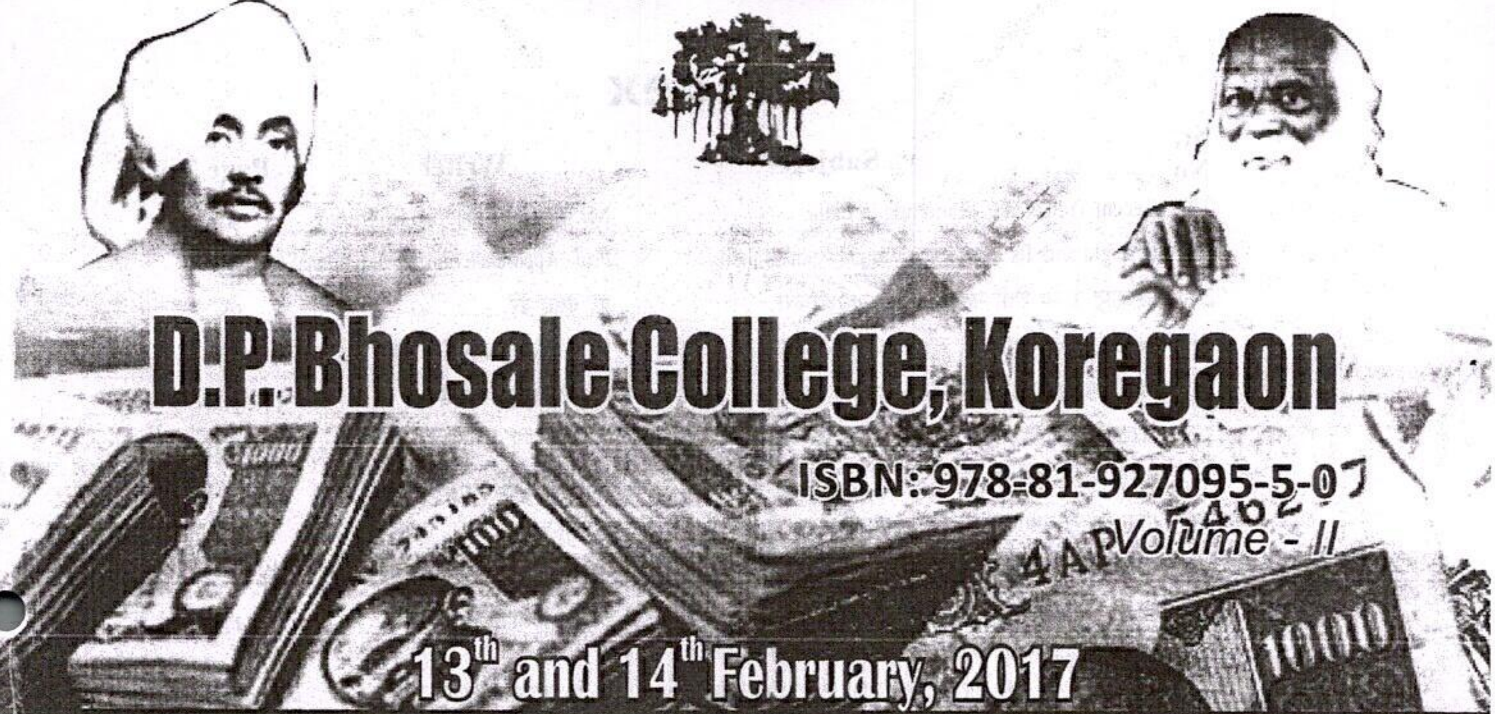

D.P. Bhosale College, Koregaon

ISBN: 978-81-927095-5-0
Volume - II

13th and 14th February, 2017

Proceedings of
A Two Day Interdisciplinary International Seminar
On
Geographical & Historical Perspective of Global Problems
Organized by Departments of History

Editor
Dr. Vijay Vishnu Padalkar
D.P. Bhosale College, Koregaon.

Chief *Editor*
Prin. Dr. V. S. Sawant.
D.P. Bhosale College, Koregaon.

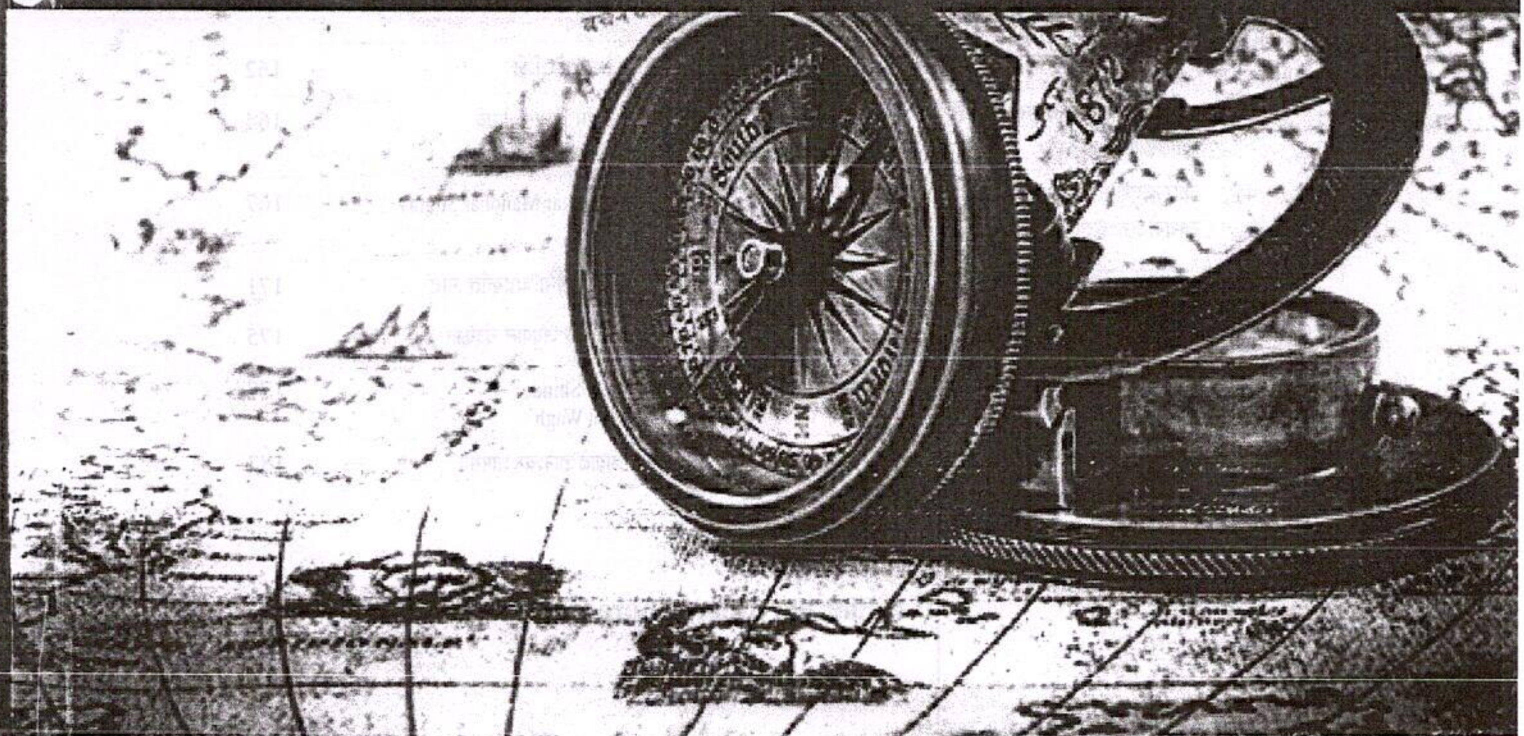

Index

Sr. No	Subject	Writer	Page No.
22	Recent Trends in E-Marketing in India.	Mr. Pawar Sarjerao Shamrao	91
23	Drought and Its Impact on Mangalwedha Tahsil	Prof. Appasaheb ramchandra birunake	95
24	महाराष्ट्र राज्य शेती महामंडळ – एक अभ्यास	प्रा. वसंत ढेरे	98
25	महाराष्ट्रातील आदीवासी समाज आणि समस्या	प्रा. श्रीकांत विक्रांत सिरसाठे	102
26	भारतीय मार्क्सवादीइतिहासलेखक – दा.ध. कोसंबी	प्रा.सुनिल सुखदेव लोखंडे	108
27	भारतातील 1949 मधील बँकिंग नियमन कायदा एक अभ्यास	प्रा.सौ.कल्पना सं.गुंजवटे	110
28	भारत आणि पर्यावरणवाद	सहा. प्रा. पाटील पांडुरंग विष्णू	114
29	गोवा मुक्ती आंदोलनातील कोल्हापूर जिल्हयाची भूमिका	प्रा. पाटील एस्. आर.	117
30	पर्यटनातील भारतीय इतिहासाचे महत्त्व	डॉ. वरेकर निवासराव अधिकराव	119
31	Shashi Deshpande's Shorter Fiction-A Move towards Women Emancipation	Dr. Lovleen Bains,	122
32	भारतातील वारसा स्थळे आणि स्मारके यांच्या समस्या : एक आकलन	प्रा.किरण गणपत कुंभार	125
33	मराठेकालीन महाराष्ट्रातील स्त्रिया आणि राजकारण	डॉ.ज्योती व्हटकर-खगत	128
34	मलकापूर नगरीची ऐतिहासिक पार्श्वभूमी	प्रा.सोनावले गजेंद्र रघुनाथ	132
35	अनाथांची माई सौ.सिंधुताई (सपकाळ)	डॉ.सुरेश मारूती चव्हाण	134
36	भारतीय स्त्री–समस्या : एक ऐतिहासिक आढावा	श्रीमती. सरकाळे तेजश्री तानाजी	138
37	सातारा शहरातील सामाजिकचळवळी	प्रा.डॉ.संजीव सुखलाल वोडखे	141
38	भारतातील डाव्या चळवळींचा उगम	विवेकानंद माने,	145
39	राजर्षी छत्रपती शाहू महाराजांची स्त्रीयांच्या सुधारणेविषयीच्या अडचणी व कार्य	प्रा.डॉ.कोरडे दत्तात्रय ज्ञानदेव	149
40	श्री क्षेत्र जरंडेश्वरचा चिकीत्सक अभ्यास	सहा. प्रा.क्षत्रिय कमलसिंग विक्रमसिंग	153
41	राजर्षी शाहू महाराजांचे अस्पृश्याच्याविषयींचे शैक्षणिक कार्य	श्री. आवारी उत्तम मर्जेराव	157
42	राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज व वि.रा.शिंदे यांची अस्पृश्यतेविरूद्धची चळवळ	प्रा.श्रीमती पी.के.घाटगे	160
43	पन्हाळा किल्ल्याचे ऐतिहासिक महत्त्व	प्रा.डॉ.एस.पी.शिंदे	162
44	अस्पृश्यता निवारण चळवळीतील डिप्रेस्ड क्लासेस मिशनचे कार्य	श्री. कृष्णात विलास जाधव	164
45	'कोल्हापूर जिल्ह्यात पर्यटन व्यवसायाला स्वयंरोजगाराची संधी'	Dr. Kolasekar Manohar Subrav	167
46	संस्कृत भाशेतील नाटके आणि स्त्री–संभाशण	प्रा.डॉ.सौ.पौर्णिमा चंद्रकांत मोटे	171
47	सन १८५७ चा उठाव व सातारा	डॉ. प्रा.सावंत जयपाल चंद्रकांत	175
48	Recent Challenges before Indian Agriculture	Ms. Rani Shinde Dr.Arjun Wagh	177
49	जागतिकीकरण आणि भारतीय राज्यघटना	श्री. आवाळे ज्ञानेश्वर शामराव	182

भारतातील डाव्या चळवळींचा उगम

विवेकानंद माने,
सहा. प्राध्यापक,
क्रांतिअग्रणी जी. डी. बापू. लाड महाविद्यालय,
कुंडल, जि. सांगली. मो. 9860881214
तलूंतप/हउंपसणबवउ

प्रस्तावना

जागतिक राजकारणात डाव्या व उजव्या या राजकीय प्रवाहात डावी चळवळ किंवा डावा प्रवाह हा अल्पसंख्यांक वर्ग आणि वंश यांचे समर्थन करतो. या संज्ञेमधे सामाजिक उदारमतवाद, सामाजिक लोकशाही, समाजवाद, मार्क्सवाद, साम्यवाद, क्रांतिकारी कामगार संघटना, वसाहतवादविरोधी, ग्रीन पार्टी या सर्व घटकांचा समावेश होतो. डावी विचारप्रणाली ही निधर्मी म्हणून ओळखली जाते. भारतीय कम्युनिस्ट पक्षाच्या कार्याची सुरवात हा वादाचा विशय आहे. सोव्हिएट रशियातील मास्को येथे एम. एन. रॉय, मोहम्मद शफिक आणि अवानी मुखर्जी यांनी एकत्र येवून 17 ऑक्टोबर 1920 रोजी भारतीय कम्युनिस्ट पक्षाची स्थापना केली. मोहम्मद शफिक हे पहिले सेक्रेटरी झाले. भारतात भारतीय कम्युनिस्ट पक्षाच्या स्थापनेपूर्वी विविध भागात अनेक संघटना कार्यरत होत्या. कम्युनिस्ट विचारधारेच्या ह्या संघटना मुंबई, कलकत्ता, मद्रास, लाहोर आणि कानपूर या ठिकाणी कार्यरत होत्या. सत्यभक्तने 26 डिसेंबर 1925 रोजी कानपूर येथे कम्युनिस्ट विचारधारेच्या या संघटनांची परिशद आयोजित केली होती. नलिनी गुप्ता, मुझफ्फर अहमद, सी. के. अय्यंगार, के. एन. जोगळेकर, एस. व्ही. घाटे, आर. एस. निम्बकर, जे. पी. बैरगरहट्टा, अयोध्या प्रसाद आणि अब्दुल मजिद हे सर्व कॉम्रेड कानपूरला उपस्थित होते. याच परिशदेत भारतीय कम्युनिस्ट पक्षाची स्थापना झाली.

डाव्या संकल्पनेचा उगम व विकास

डाव्या उजव्या राजकीय परिभाशेची निर्मिती 1789 च्या फ्रेंच राज्यक्रांतीच्या फ्रेंच इस्टेट जनरलच्या सभेने झाली. इस्टेट जनरल उघडण्याच्या सत्रात राजा उच्च सिंहासनावर स्थानापन्न झाला. सिंहासनाच्या पायथ्याशी राजाच्या डाव्या बाजूला राणी, युवराज्ञी तर सिंहासनाच्या उजव्या बाजूला युवराज अशी रचना होती. त्यांचे खालोखाल दोन्ही बाजूस राज्याचे सचिव व समोरील बाजूस नॅशनल असेंब्लीचे सर्व सदस्य अशी रचना स्पश्टपणे केली होती. राजाच्या सिंहासनासमोर नॅशनल असेंब्लीचे राजाचे समर्थक उजव्या बाजूस विरोधक डाव्या बाजूस असे विभागले गेले. नंतरच्या कालखंडात हीच व्यवस्था कायम राहिली.' उजवा हा नेहमी उच्चभ्रू किंवा हाती सत्ता असलेल्या प्रबळ वर्गात रूची असलेला पक्ष आहे. तर डावा पक्ष कमी आर्थिक, सामाजिक घटकांची बाजू घेणारा पक्ष आहे. 17व्या व 18व्या शतकात झालेल्या औद्योगिक क्रांतीने भांडवलशाहीचा उदय झाला.भांडवलशहा औद्योगिक कारखान्यात काम करणाऱ्या कामगार वर्गाचे प्रचंड शोशण करु लागले. युरोपियन देशामध्ये अनेक विचारवंतांनी समाजवादी विचार मांडण्यास सुरवात केली. जर्मन विचारवंत कार्ल मार्क्सने दास कॅपिटल या ग्रंथात अतिरिक्त मूल्यांचे विचार मांडले. क्रांतीच्या मार्गाने भांडवलशाही नश्ट करुन कामगारांची हुकुमशाही स्थापन करावी असे प्रतिपादन केले. 1917 मध्ये रशियात लेनिनच्या नेतृत्वाखाली उठाव होऊन झारशाहीचा शेवट करण्यात आला. रशियात साम्यवादी सरकारची स्थापना होऊन जगभर साम्यवादाच्या प्रसारासाठी प्रयत्न केले जावू लागले.

भारतीय कम्युनिस्ट पक्षाच्या कार्याची सुरवात

एम. एन. रॉय यांचे कार्य

भारतीय कम्युनिस्ट पक्षाच्या कार्याची सुरवात हा वादाचा विशय आहे. एम. एन. रॉय यांचे मूळ नाव नरेंद्रनाथ भट्टाचार्य हे आहे. त्यांचा जन्म 21 मार्च 1887 रोजी बंगालमधील चोविस परगणा जिल्ह्यातील अर्बालिया या खेडेगावात झाला. वयाच्या 14 व्या वर्शापासून त्यांनी क्रांतीकार्यात भाग घेण्यास सुरवात केली. अनुशिलन समिती, युगांतर समिती या बंगालमधील क्रांतीकारी संघटनांच्या कार्यात त्यांचा सहभाग होता. पहिल्या महायुद्धाला सुरवात झाल्यानंतर भारताबाहेरील क्रांतीकारी संघटनांची मदत मिळते का याची चाचपणी करण्यासाठी त्यांनी देश सोडला. जर्मनी, मलेशिया, इंडोनेशिया, फिलिपाईन्स, जपान, कोरीया, व चीन या देशांचा प्रवास करून अमेरिकेतील सॅनफ्रान्सिस्को येथे ते आले. तेथिल वास्तव्यात त्यांची भेट मायकेल बोरोडीन

ISBN NO. 978-81-927095-5-0

Proceedings Of One Day National level Seminar on

Contribution of Padmabhushan Dr. Vasantraodada Patil

In Overall Development of Maharashtra

28 Jan 2017

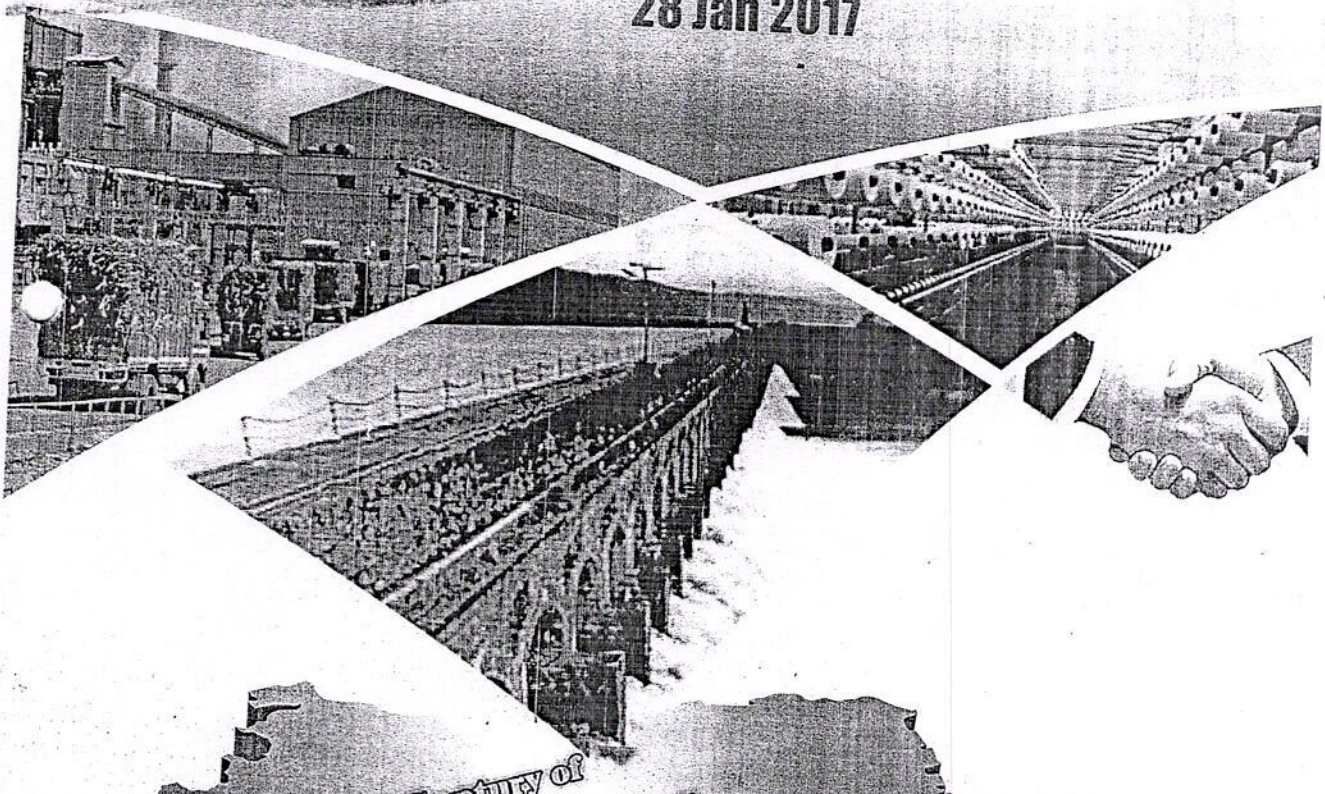

'ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यासाठी शिक्षणप्रसार' – शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha, Kolhapur's

ARTS AND COMMERCE COLLEGE, KADEPUR

Tal. Kadegaon, Dist. Sangli.

ccredited 'B' By NAAC Affiliated to Shivaji University Kolhapur Ph. 02347 241327 Email : acc.kadepur@gmail.com

ISBN- 978-93-85456-23-7

13	मा. डॉ. वसंतरावदादा पाटील यांचे उच्च शिक्षणातील योगदान	श्री कुलदीप नारायण पाटील प्रा. डॉ. व्ही.बी. ककडे,	78
14	वसंतदादा पाटील एक क्रांतीकारक	प्रा. डॉ. बाळासो निवृत्ती कर्पे	81
15	डॉ.वसंतरावदादा पाटील आणि महाराष्ट्रातील सहकार चळवळ	प्रा.संजय सदाशिवराव मंडलिक प्रा.डॉ.टी.एम.पाटील	84
16	वसंतदादा पाटील—एक स्वातंत्र्यसैनिक	प्रा. विवेकानंद राजाराम माने	92
17	पद्मभूषण वसंतदादा पाटील यांचे महाराष्ट्राच्या सहकार चळवळीतील योगदान	प्रा. रामलिंग कुंडलिक नाळे.	96
18	बहुआयामी वसंतदादा पाटील	प्रा.पद्माकर सदाशिव	101
19	A GREAT PERSON: DR. VASANTDADA PATIL	Shri. Sambhaji Kallappa Naik	106
20	वसंतराव पाटील यांचा वनप्रवास व स्वातंत्र्यलढ्यातील योगदान	कु.साळवे स्नेहलता जगन्नाथ	108
21	महाराष्ट्राच्या विकासातील वंसतरावदादा पाटील यांचे योगदान	प्रा उषादेवी एकनाथ साळुखे	117
22	वसंतदादा पाटील आणि महाराष्ट्राचे राजकारण	डॉ. संजय सागरू सपकाळ	121
23	वसंतदादा पाटील यांचेसहकार व शैक्षणिक क्षेत्रातील योगदान	प्रा.डॉ. संतोष तुकाराम कदम	128
24	"महाराष्ट्राच्या सर्वांगीण विकासात पद्मभूषण डॉ. वसंतरावदादा पाटील यांचे योगदान"	प्रा.सौ.सुरेखा धनवडे, प्रा.डॉ.दत्तात्रय शिंदे,	132
25	वसंतदादा पाटील यांचे महत्त्वपूर्ण योगदान	प्रा. उमाकांत आण्णाप्पा हत्तीकर प्रा. सोमनाथ बी. गायकवाड	136
26	डॉ.वसंतदादा पाटील यांचे सांगली जिल्हयातील सहकारी चळवळीमधील योगदान	वनमोरे व्ही वाय. पाटील एस.एम.	139
27	महाराष्टाच्या सर्वसमावेशक विकासातील पद्मभूषण डॉ. वसंतरावदादा पाटील यांचे योगदान	प्रा. जालींदर आनंदराव यादव	142

ISBN- 978-93-85456-23-7

वसंतदादा पाटील—एक स्वातंत्र्यसैनिक

प्रा. विवेकानंद राजाराम माने
क्रां. जी. डी. बापू लाड महाविद्यालय, कुंडल

महाराष्ट्रातील सहकार क्षेत्राला एक वेगळे निर्णायक वळण देवून विकास साधणारे नेते म्हणजे वसंतदादा पाटील होत. क्रांतीकारक,स्वातंत्र्यसैनिक ते विधायक कार्य करणारे, पक्षसंघटना वाढवणारे राजकिय नेते प्रभावी मुख्यमंत्री व सहकारमहर्षी असा त्यांचा जीवनप्रवास आपल्याला थक्क करणारा आहे. सांगली जिल्ह्यातील,तासगाव तालुक्यातील पद्माळे या छोट्या गावी वसंतदादांचा जन्म झाला.१९५२च्या पहिल्या निवडणूकीत ते सांगलीतून आमदार म्हणून निवडून आले. पुढील २५वर्षे त्यांनी सांगलीचे प्रतिनिधीत्व केले. १९७२ मध्ये ते प्रथम मंत्री झाले. १९७७ ते१९८५ याकाळात त्यांनी चार वेळा त्यांनी महाराष्ट्राचे मुख्यमंत्रीपद भुषविले. ते काही काळ राजस्थानचे राज्यपालही होते. राजकिय जीवनात त्यांनी महाराष्ट्र राज्य सहकारी बँक, राष्ट्रीय मील मजदूर संघ व महाराष्ट्र प्रदेश कॉंग्रेस आदी संस्था संघटनांची अध्यक्षपदे सांभाळली. ग्रामीण महाराष्ट्रात कॉंग्रेसचा प्रभाव कायम राहण्यात व वाढण्यात दादांचाच मोठा वाटा आहे.[१]

पार्श्वभूमीः

वसंतदादा पाटील यांचा जन्म बंडोजी व रुक्मिणीबाई यांच्या पोटी १३नोव्हेंबर १९१७ रोजी झाला.सांगलीच्या उत्तरेस ३ कि. मी. अंतरावर असलेले पद्माळे हे त्यांचे मूळ गाव होते. बंडोजीकडे पद्माळे गावची पाटीलकी तसेच ३० एकर जमीन होती. वसंतदादा १० महिन्याचे असताना त्यांचे आईवडील एन्फ्लूएंझाच्या साथीने मरण पावले. त्यानंतर त्यांचा व त्यांचे मोठे बंधू शामराव यांचा सांभाळ त्यांचे कागलमधील मामा दत्तात्रय पाटील यांनी केला. त्यांनी वसंत शामराव व त्यांची आजी ताई पाटलीन यांना कागलमध्ये ठेवले. सुमारे दहा वर्षांनी मुल सज्ञान झाल्यावर ताई पाटलीन पद्माळे येथे आली. वसंतदादांचे प्राथमिक शिक्षण पद्माळे येथे व त्यानंतर सातवीपर्यंतचे शिक्षण सांगली येथे झाले.[२]

सुरवातीचे कार्यः

गावातील जास्त शिकलेला व मनमिळावू मुलगा म्हणून गावकरी त्यांचे कौतुक करीत. कृष्णा नदीवर घाट बांधण्याचे पहिले सार्वजनिक काम वसंतदादांनी आपल्या सहका—यांच्या मदतीने केले. एका गरीब स्त्रीची १५०रु.च्या कर्जापायी सावकाराच्या घशात जाणारी जमीन त्यांनी मित्रांच्या मदतीने पैसे गोळा करून वाचवली. त्यांनी कॉंग्रेस पक्षाच्या कार्यात भाग घेण्यास सुरवात केली. १९३७ मध्ये त्यांची तासगाव तालुका कॉंग्रेसचे चिटणीस म्हणून निवड झाली. त्यांना

ISBN-978-81-927211-3-7

"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार"
- शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha, Kolhapur's

Shikshanmaharshi Dr. Bapuji Salunkhe College, Miraj

(NAAC Accredited with CGPA of 2.89 on a seven point scale at B++ Grade)

Affiliated to Shivaji University, Kolhapur

Proceedings of the

ICHR

Indian Council of Historical Research Sponsored

One day National Seminar on

Bhakti Movement in India

on Saturday, 7th January, 2017

Organized by

Department of History

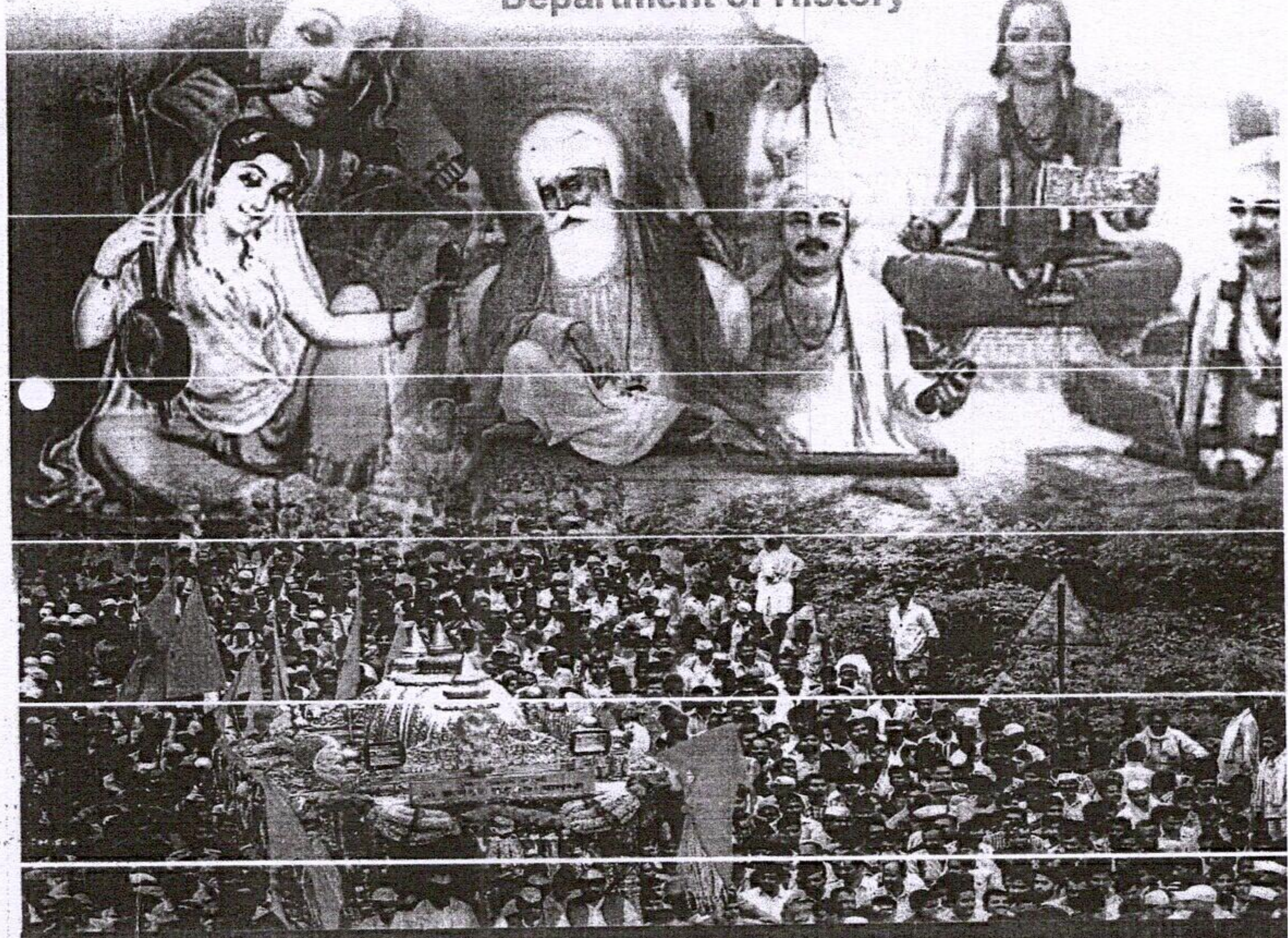

Editor : Dr. Archana Shriram Jadhav

Publishers : Prin. Dr. Udaysinh Manepatil & Prarup Publication, Kolhapur.

Bhakti Movement in India
भारतातील भक्ती चळवळ

Sponsored:
Indian Council of Historical Research (ICHR), New Delhi

Editor:
Dr. Archana Shriram Jadhav

Publisher:
Dr. Udaysinh Manepatil
Principal,
Shikshanmaharshi Dr. Bapuji Salunkhe College, Miraj
and
Prarup Publication, Kolhapur.

© Principal, Shikshanmaharshi Dr. Bapuji Salunkhe College, Miraj
& Prarup Publication, Kolhapur.
All rights reserved. This book or any part thereof may not be reproduce in any form without the written permission of the publisher.

Printed by:
Pdmashri Printers,
Mangalwar Peth, Miraj.

Disclaimer:

The views expressed by the authors in their articles, reviews etc. insight issue are their own. The editor and publisher are not responsible for them. All disputes concerning the proceeding/book shall in the court at Miraj, Maharashtra.

ISBN-978-81-927211-3-7

35.	प्रा. सौ. अनुराधा गोरे (पवार)	भक्तिचळवळीची समाजभिमुखता व संतांचे कार्य : एक दृष्टिक्षेप	147-151
36.	डॉ. प्रदीप पांडुरंग यादव	२१ व्या शतकातील वैज्ञानिक जीवनात आध्यात्मिक भक्तीचा [illegible]	152-155
37.	उदयसिंह मानसिंगराव राजेयादव	भक्ती	156-158
38.	डॉ. सौ. मंजिरी कुलकर्णी	क्रांतदर्शी समाजसुधारक संत एकनाथ	159-161
39.	डॉ. सीमा नवनाथ इंदलकर	पंढरपूरच्या नावाचा इतिहास	162-165
40.	प्रा. माधव मारूती भोसले	संत ज्ञानेश्वर, संत नामदेव आणि संत एकनाथ यांच्या काव्यातील भक्ती	166-170
41.	सौ. सुवर्णा वैभव यमगर	भक्तशिरोमणी संत नामदेवांचे अद्वितीय कार्य	171-173
42.	राजेंद्र कृष्णराव घोरपडे	ज्ञानेश्वरी परंपरा आणि देवनाथांचा शोध	174-176
43.	विवेकानंद माने	संत कबीरांचे तत्वज्ञान	177-179
44.	प्रा. बाळासाहेब कोटलगी	मध्ययुगीन समतावादी व क्रांतीकारी संत कबीर — एक अभ्यास	180-183
45.	सौ. श्रुती परचुरे	भक्तिमार्ग — संस्काररूपी वाटचाल	184-186
46.	सौ. स्वाती प्रदिपकुमार हाके	रामभक्त तुकाराम	187-189
47.	सौ. एस. बी. इंगवले	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज यांचे योगदान	190-192
48.	श्री. जोतीराम वामन आंबवडे	संत विष्णूदास: एक चिकित्सक अभ्यास	193-196
49.	डॉ. [illegible]	[illegible] : जीवन व कार्य	197-199
50.	डॉ. डी. बी. जाधव	खंडोबाची भक्ती व उपासना: एक चिकित्सक अभ्यास	200-203
51.	सौ. अनघा उदयसिंह राजेयादव	यात्रा — नवरात्रोत्सव : एक [illegible]	204-206
52.	डॉ. अशोक सदाशिव तवर	माणूस घडविण्यात भक्ती चळवळीचे योगदान	207-211

 ISBN-978-81-927211-3-7

संत कबीरांचे तत्वज्ञान

श्री. विवेकानंद माने.
सहा. प्राध्यापक,
क्रांतिअग्रणी जी. डी. बापू लाड
महाविदयालय, कुंडल,
ता. पलूस, जि. सांगली.

हिंदू धर्मामध्ये भक्तीला अनन्यसाधारण महत्व आहे. भक्ती ही निर्गुण, निराकार अशा परमेश्वरापासून ते सगुण व साकार अशा परमेश्वरापर्यंत करण्याची पध्दत हिंदू धर्मामध्ये आहे. भक्तीचे बळ हे प्राचीन काळापासून वेळोवेळी दिसून आले आहे. भक्ती व तिचे महत्त्व पुराणे व इतर धर्मग्रंथातून प्रकट झाले आहे. प्राचीन काळानंतर मध्ययुगात हीच भक्तीची परंपरा भारतात ठिकठिकाणी संतांच्या कामगिरीतून दिसून आली. भक्तीच्या स्वरूपाबद्दल डॉ. के. एन. चिटणीस म्हणतात की, "भक्तीचा उगम प्रेमात होतो, तिची वाढ प्रेमात होते व तिचे पर्यवसनही प्रेमातच होते. हे प्रेम लौकिक नसून अलौकिक आहे. परमेश्वराबद्दलचे हे [illegible] अपेक्षा नाही, भक्तीमध्ये स्वार्थीपणाचा कलंक नाही, अपेक्षापूर्तीचा डाग नाही, लौकिकतेचा गंधही नाही, परमेश्वरावरील प्रेमाचा हा एक उत्स्फूर्त वर्षाव आहे." [१]

मध्ययुगीन कालखंडात मुस्लिम आक्रमकांनी राज्यविस्ताराबरोबरच धर्मप्रसारही मोठ्या प्रमाणात सुरू केला. त्यांच्या आगमनामुळे भारतीय सभ्यता व संस्कृती यामध्ये मोठे परिवर्तन झाले. मुसलमानांनी हिंदूवर अत्याचार केले, त्यांची मंदिरे उध्वस्त केली व त्यांना जबरदस्तीने इस्लाम बनविले. त्यामुळे हिंदू–मुस्लिम सांस्कृतिक समन्वय निर्माण होणे कठीण झाले. प्रारंभी मुसलमान आपल्या धार्मिक कट्टरतेवर आणि हिंदू आपल्या स्वाभिमानावर चिकटून राहिले. परंतु नंतरच्या काळात ते परस्पराजवळ आले. त्यांना परस्पराजवळ आणण्याचे व दोन्ही धर्मात समन्वय निर्माण करण्याचे महत्वाचे कार्य दोन्ही धर्मातील भक्तीसंप्रदायातील संतानी केले.[२] संत कबीर हे या भक्तीसंप्रदायातील एक महत्वपूर्ण संत होत.

संत कबीरांचे पूर्वचरित्र:

संत कबीरांचा जन्म उत्तर प्रदेशात काशी या गावाजवळ असलेल्या मगहर या गावी इ. स. १४४० साली झाला. त्यांच्या आई–वडिलांचे नाव निरू आणि निमा असे होते. आई निमा हिचे आई–वडिल कोरी (हिंदू) जातीचे होते. पण मुस्लिमांच्या अन्याय अत्याचारामुळे मगहर येथील कापड विणण्याचा व्यवसाय करणाऱ्या कोरी (हिंदू) लोकांनी सामुहिक धर्मांतर केले होते. [illegible] स्विकारला होता. निरू आणि निमा हे जोडपे कपडे विणण्याचा वडिलोपार्जित धंदा करीत असून ते मुस्लिम असले तरी ते जुलाहा म्हणून ओळखले जात होते. जुलाहा म्हणजे विणकर, या विणकरांच्या अनेक पोटजाती आहेत. कबीर हे त्यातील कोरी जातीतील जुलाहा होते. त्यांच्या पत्नीचे नाव लोई होते. त्यांच्या मुलाचे नाव कमाल व मुलीचे नाव कमाली होते. त्यांचा मृत्यु मगहर या गावी इ. स. १५१८ साली झाला.[३]

संत कबीरांचे तत्वज्ञान :

संत कबीरांचा वाणीसंग्रह 'बीजक' या नावाने ओळखला जातो. कबीरांच्या रचना पंजाबी राजस्थानी, अवधी पूर्वी, बृजभाषा, खडी बोली इत्यादींचे मिश्रण आहे. कबीरांनी तत्कालीन प्रतिकूल परिस्थितीत सामाजिक व धार्मिक व्यवस्थेविरूद्ध बंड पुकारले. त्यांचे तत्वज्ञान पुढीलप्रमाणे–

ईश्वर हाच सर्वस्व आहे :

कबीर एकेश्वरवादाचे समर्थक होते. ते वेद व कुराणाचा आदर करीत असत, पण ब्राह्मण व मुल्ला यांचा समाजात असलेला प्रभाव त्यांना मान्य नव्हता. ईश्वराची भक्ति केल्याने मोक्षप्राप्ती मिळते. कबीर ईश्वर हाच सर्वस्व आहे असे मानताना म्हणतात.

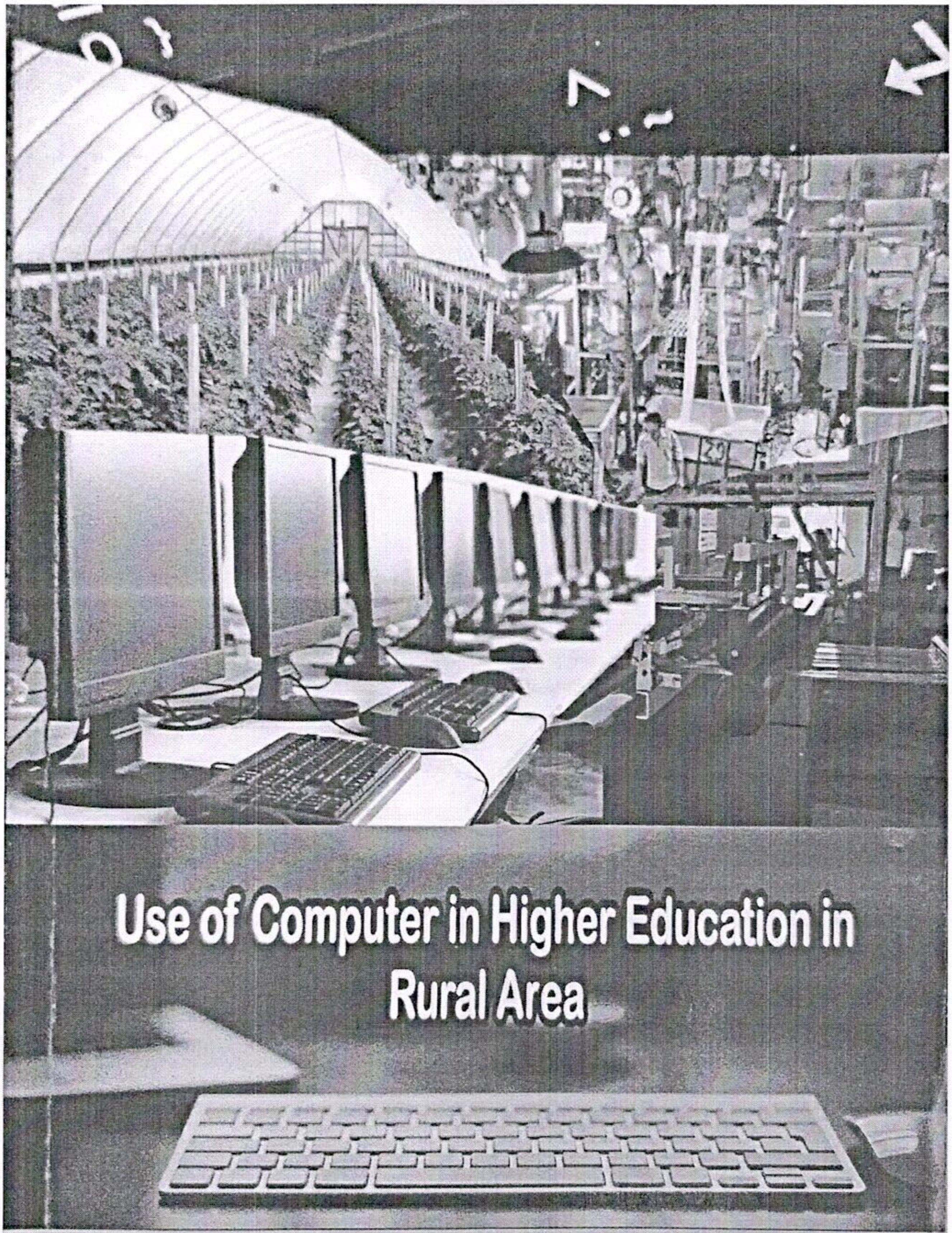

Use of Computer in Higher Education in Rural Area

Chief - Editor

Asst. Prof. Suresh J. Patil

Art's, Commerce & Science College, Kowad
Tal. Chandgad, Dist. Kolhapur.

K. Dr. G.D.B.L. Mahavidyalaya KUNDAL Tal.Palus, Dist.Sangli

Scanned by CamScanner

Knowledge and Adoption of ICT Application by Rural Communities in India
Dr.Huchhe Gowda' / 75

Enhancing Quality of Education through ICT in Rural Classrooms
Mrs. Sharda Kumari Parihar Dr. Sushma R. / Mrs. Sharda Kumari Parihar / Dr. Sushma R. / 86

INTEGRATION OF ICT IN TEACHING LEARNING PROCESS
Mrs.Geeta S. Dayannavar / Dr.A.V.Karabasanagoudra / 93

ICT IN HIGHER EDUCATION **Dr. M. G. Sadamate / 99**

Banking and Technology **Prof. Patil Jayashree Pandurang / 103**

Understanding of Conceptual Physics using Java based Computer Interactions and animated experiments **S. A. Masti / 108**

USE OF COMPUTER IN MICROSTRIP PATCH ANTENNA TECHNOLOGY
Dr. Rajesh Ajit Ghorpade / 112

USE OF COMPUTERS IN HEIGHER EDUCATION INRURAL AREA USE OF COMPUTER IN LANGUAGE EDUCATION **POORNIMA G PALLED / 116**

"Use of Computer in Higher Education" Presented By
Prof. D.M.Patil / 118

Impact of Information and Communication Technology on Education Sector **Prof. Dr. P. S. Kamble / Dr. K. R. Tanange / 125**

COMPUTER USE IN ECONOMIC ANALYSIS **Prof. K.P. Waghmare / 131**

K.Dr.G.B.L.Mahavidyalaya KUNDAL Tal.Palus, Dist.Sangli

ICT IN HIGHER EDUCATION

Dr. M. G. Sadamate

K.G.D.Bapu Lad Mahavidyalaya Kundal

Introduction

The last two decades have witnessed the inclusion of developments in Information and Communication Technology (ICT) in higher education systems around the world. Higher education systems have grown exponentially the demands of quality education for all. This aspect has further gained momentum due to swift advancements in ICT. Demand for skilled and competent employment is ever increasing in the contemporary globalised society. In this backdrop, access to quality in higher education for all has emerged as determining factor of economic growth and development. In order to increase the access to higher education and improving its reach to the remotest parts of the India contribution of open and distance learning facilities is on the increase.

- **Higher Education in India**

In the last five half decades, the growth of higher education presents a very impressive picture. There has been commendable quantitative expansion in terms of students' enrolment, number of teachers, colleges, universities and research degrees.

All India Survey on Higher Education, all the institutions of higher education in the country have been divided in 3 categories:

Category I: University & University Level Institutions – All Institutions which are established - under Central Act, a Provincial Act or a State Act (Central University/State University) - as an institution deemed to be a university under section 3 of the UGC Act 1956 e.g. Deemed University - as an institution specially empowered by an Act of Parliament to confer or grant degrees e.g. Institution of National Importance (IITs, NITs etc.), Institutions set up by other Central

K.Dr.G.D.B. Mahavidyalaya KUNDAL Tal.Palus,Dist.Sangli

Scanned by CamScanner

XHS- 2016-17

ISSN 2277- 8063

Navjyot

नवज्योत

International Interdisciplinary Research Journal
(Humanities, Social Sciences, Languages, Commerce & Management)

www.navjyot.net

E-mail : editornavjyot@gmail.com

INDEX

S.N.	Subject	Title	Author	P.No.
1	Psychology	A Role of Emotional Intelligence and Academic performance in Professional and Non-Professional student's education	Mr. Mali Gajendra B.	1-3
2	Physical Education	Effect of yoga on mental health among college students	Dr. Ulape B.N.	4-7
3	History	Socio Economic Backwardness of Youths of Marginalized Sections of India	Dr. P. M. Tale	8-10
4	Journalism & Communication	Media And Cultural Awakening In 21st Century	Mr Milind Chandrasen Awatade	11-13
5	Economics	A Study Of Population Growth In Hilly Talukas Of Kolhapur District	Mr Mahadev Kamble	14-21
6	संगीत	अभिनय आणि तंत्र	डॉ. संजय तोडकर	22-23
7	संगीत	तालवाद्य : संबळ	श्री. अमोल जयवंत रणदिवे	24-26
8	संगीत	ठुमरी आणि बनारस शैली -काही टिपणे	डॉ. विनोद ठाकूरदेसाई	27-30
9	इतिहास	नवाब कालीन वऱ्हाडची कृषी व्यवस्था	श्री. हर्षवर्धन सु. भुसारी	31-33
10	समाजकार्य	आश्रमशाळा आणि भटका समाज	कु. सोनल विलास मंगल	34-37
11	समाजशास्त्र	शालेय पोषण आहार योजनेच्या अमहादनगर जिल्हयातील प्राथमिक शाळेतील विद्यार्थ्यांवर होणाऱ्या परिणामाचा चिकित्सक अभ्यास	प्रा. सुजाता सानप	38-41
12	पत्रकारीता व संवादशास्त्र	स्त्री- पुरूष समानतेच्या हानीची कारणमिमांसा	डॉ. नितीन रणदिवे	42-45
13	शिक्षणशास्त्र	शिक्षक विचार प्रक्रीया	प्रा. विजया लोखंडे	46-48
14	राज्यशास्त्र	आधुनिक राष्ट्र म्हणून भारताच्या विकासामध्ये गांधी विचारांची उपयुक्तता	प्रा. राजेंद्र ओ. बेलोकार	49-50
15	राज्यशास्त्र	दहशतवाद आणि भारत - पाक- चीन संबध	प्रा. डॉ. विनोद को. गायकवाड	51-54
16	राज्यशास्त्र	ना. गोपाळकृष्ण गोखले व त्यांचे समकालीन नेतृत्व : एक दृष्टीक्षेप	डॉ. सुजाता पाटील	55-56
17	राज्यशास्त्र	भारतातील स्थानिक शासनसंस्था : ७३ व्या घटनादुरूस्तीचे स्वरूप आणि फलनिष्पत्ती	प्रा. झाकीरहुसेन हाकीम सय्यद	57-59
18	राज्यशास्त्र	सातारा तालुक्यातील ग्रामपंचायत निवडणूकावर महात्मा गांधी तंटामुक्त गांव मोहिमेचा प्रभाव	डॉ. वसंत भुपाल शिंदे	60-65
19	राज्यशास्त्र	चार राज्याच्या निवडणुका एक परामर्श	डॉ. रविंद्र भणगे	66-69
20	शारिरिक शिक्षणशास्त्र	आरोग्य आणि तंदुरूस्तीच्या समस्या	प्रा. एम. एस. इंगळे	70-72
21	मराठी	अण्णाभाऊ साठेंची ग्रामिण दलित कथा: एक आकलन	डॉ. आर. एम. केदार	73-75

भारतातील स्थानिक शासनसंस्था: ७३ व्या घटनादुरूस्तीचे स्वरूप आणि फलनिष्पत्ती

प्रा. झाकीरहुसेन हाकीम संदे
क्रांतिअग्रणी जी.डी.बापू लाड महाविद्यालय, कुंडल ता. पलूस जि.सांगली मोबा. ९२७०५३३००३

प्रस्तावना २०१४ च्या मे महिन्यात केंद्र सरकारमध्ये सत्तातंर होवून संयुक्त पुरोगामी आघाडीचे (UPA) सरकार पायउतार झाले आणि राष्ट्रीय लोकशाही आघाडीचे (NDA) सरकार पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांच्या नेतृत्वाखाली सत्तारूढ झाले काही दिवसातच सरकारने १०० स्मार्ट सिटी बनविण्याची घोषणा केली. त्याचबरोबर जगभरातील खाजगी गुंतवणूकदारांना भारतात विविध क्षेत्रात गुंतवणूक करण्यासाठी निमंत्रित करण्यात आले. या सर्व परिप्रेक्षात ग्रामीण भारत दुर्लक्षित होतो की काय? असा प्रश्न मनात निर्माण होणे स्वाभाविक होते परंतू ११ ऑक्टोबर २०१४ रोजी स्व.जयप्रकाश नारायण यांच्या जयंतीचे औचित्य साधून वाराणसीजवळच्या जयापूर खेडयामध्ये पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांच्या हस्ते सांसद आदर्श ग्राम योजना (SAGY) कार्यान्वीत करण्यात आली तसेच दूसरी एक योजना भारत सरकारने १४ एप्रिल २०१६ रोजी डॉ. आंबेडकरांचे जन्मस्थान असलेल्या मध्यप्रदेशातील महू या खेडयातून पंतप्रधान नरेंद्र मोदींच्या हस्ते "ग्रामोदय से भारत उदय अभियान" या योजनेची सुरूवात केली हे अभियान १४ एप्रील ते २४ एप्रील २०१६ असा फक्त ११ दिवसांचा होता व या अभियानात अनेक कार्यक्रमांची रेलचेल होती.

रालोआ सरकारने ग्रामीण भारताच्या उन्नतीसाठी केलेल्या या दोन्ही योजनांचा तटस्थपणे अभ्यास केल्यास या दोन्ही योजना म्हणाव्या तेवढया प्रभावशाली झालेल्या दिसून येत नाहीत. त्यामुळेच आपोआप १९९३ साली झालेल्या ७३ व्या घटना दुरूस्तीचे स्मरण होणे व त्यातील बारकावे अभ्यासणे स्वाभाविक ठरते.

७३ वी घटना दुरूस्ती ही भारतीय ग्रामीण राजकीय व्यवस्थेमध्ये अमुलाग्र बदल घडवून आणणारी ऐतिहासिक घटना ठरली. ग्रामीण भारताच्या जडणघडणीत महत्त्वपूर्ण भूमिका बजावणारी ही घटना अचानक किंवा आकस्मित घडलेली नव्हती. त्याला फार मोठा कालापव्यय करणारा इतिहास आहे. या घटना दुरूस्तीमुळे महिला आणि अल्पसंख्याकांना राजकीय प्रवेशासाठी हक्काचे प्रवेशद्वार उपलब्ध झाले व हे दोन दुर्लक्षित घटक देशाच्या ग्रामीण राजकारणात महत्त्वपूर्ण भूमिका बजावताना किंबहुना निर्णय निर्धारण प्रक्रियेमध्ये सहभागी होताना दिसू लागली.

भारतीय राज्यघटनेने सुरूवातीपासूनच लोकशाही आणि सत्तेच्या विभाजनाचा पुरस्कार खंबीरपणे केला. सत्तेचे विभाजन अर्थातच विकेंद्रीकरण किंवा सत्तेचे तळागाळापर्यंतचे सर्व घटकातील वितरण हे भारतीय लोकशाही राज्यघटनेचे वैशिष्ठ्य ठरले आहे. लोकशाही व्यवस्था मजबूत आणि सक्षम करावयाची असेल तर सत्तेचे विकेंद्रिकरण हा घटक अपरिहार्य ठरतो. किंबहुना त्याशिवाय लोकशाहीला कोणतेही भवितव्य उरत नाही. देशाच्या उन्नतीसाठी किंवा प्रगतीसाठी गाव, खेडे किंवा ग्राम हा अत्यंत महत्त्वाचा आणि मध्यवर्ती घटक आहे. देशातील बहुसंख्य लोक शेती आणि संबंधीत व्यवसायानिमित्त खेडयातच रहिवास करतात.

पुराणात तरी गावांची व्याख्या अशी दिली आहे.
तथाशूद्र जन प्राया। सुसमृध्द कृषीवला।
क्षेत्रो पभोग भूमध्ये वसतिर्ग्राम संज्ञिता।।

जिच्याभोवती किर्दसार — वहितीला योग्य — जमीन आहे, आणि जिच्यामध्ये मातब्बर शेतकरी व पुष्कळसे मजुर आहेत. अशा वस्तीला गाव म्हणतात.[१] या वरून आपणास खेडयाचे महत्त्व देशाच्या अर्थव्यवस्था व समाज व्यवस्थेत किती आहे हे स्पष्ट होते अशाच ग्राम किंवा खेडयामध्ये देशाची बहुसंख्य जनता राहिलेली आहे. त्यामुळे देशाच्या विकासाची सुरूवात खेडयातून शहराकडे अर्थातच खालून वर म्हणजे केशाकर्षन पध्दतीने झाली पाहिजे. म. गांधींना देखील ग्रामराज्य, रामराज्य, सर्वोदय व्यवस्था या अंगाने विकसित होणारी समाजव्यवस्था अभिप्रेत होती.

संसदिय लोकशाही व्यवस्थेमध्ये अधिकारांचे वितरण पध्दतशीरपणे होते या गोष्टीवर घटना समितीमध्ये मतभिन्नता होती परंतु शेवटी पंचायती राजव्यवस्थेचा स्विकार घटना समितीने देखील केला. परोपकारी व सहकार्यशील पंचायतींनी युक्त असे सुधारित ग्रामीण जीवन आणि विकेंद्रित शासनव्यवस्थेमुळे अगदी तळागाळापर्यंत पोहोचणारी लोकशाही याचे घटना समितीच्या सदस्यांनाही आकर्षण वाटले.[२] अर्थातच घटना समितीने देखील पंचायती राज व्यवस्थेवर शिक्कामोर्तब केले होते.

Krantiagrani Dr. G.D. Bapu Lad Mahavidyalaya, Kundal.

2HS 2016-17

ISSN 2277- 8063

Navjyot
नवज्योत

International Interdisciplinary Research Journal
(Humanities, Social Sciences, Languages, Commerce & Management)

www.navjyot.net

E-mail : editornavjyot@gmail.com

CONTENTS

S. N.	Subject	Title	Author	P.No.
1	Economics	Food Security & Nutritional Level On Rural Livelihoods In Karad Taluka	Ku. Pawar Punam Prakash ,	1-7
2	Commerce & Management	Insurance Services And Its Utilities In India	Dr, P.M. Taley,	8-9
3	Commerce & Management	Prospects of Raisin Production and Marketing in western Maharashtra	Dr. N. Y. Rajeshirke Mr. J. G. Mulani,	10-12
4	Commerce & Management	Role Of Co-Operative Banks In Agriculture Credit With Reference To Maharashtra	Ms. Rupali Sadashiv Sasane	13-14
5	Political Science	Parliamentary Democracy in India: A continuum	Dr. (Mrs.) Alpana Vaidya	15-16
6	Political Science	Gandhian Satyagrah In South Africa And Womens Participation	Khadase Santosh Keshav	17-20
7	Geography	Contribution's By The Indian Census To Info In Geography	Dr. Khade Sominath Sarangdhar	21-23
8	Economics	India's Demographic Dividend and Global Competitiveness	Dr.Vikas J. Pawar	24-29
9	राज्यशास्त्र	भारत आणि पश्चिम आशिया संबध	कु माया अशोकराव मालेकर	30-30
10	समाजशास्त्र	महाराष्ट्र शासनाच्या शालेय पोषण आहार योजनेचा बीड जिल्हयातील प्राथमिक शाळेतील शिक्षकांवर होणाऱ्या परिणामांचा चिकित्सक अभ्यास	श्रीमती प्रा. सुजाता विक्रम सानप	31-35
11	राज्यशास्त्र	७४ वी घटनादुरूस्ती : नागरी सामाजिक राजकीय परिवर्तनाची कोणशीला	झाकीर हुसेन हाकीम संदे	36-38
12	राज्यशास्त्र	कोल्हापूर संस्थान पेशवे संबध	विजयाराणी रघुनाथ पाटील	39-42
13	राज्यशास्त्र	महाराज सयाजीराव गायकवाड यांचे स्त्रियां विषयक केलेले कार्य	सिमा रमेश मोरे	43-44
14	समाजशास्त्र	गडचिरोली जिल्यातील भात गिरणी कामगार : एक समस्या	प्रा. चंद्रशेखर वासुदेव प्यारमवार	45-47
15	जनसंवाद व पत्रकारिता	भारतीय शेतकऱ्याच्या आत्महत्या : काही प्रमुख धोरणे	साधना रामचंद्र काळे	48-49
16	मराठी	प्राचीन काळातील वऱ्हाडातील वाङःमयीन साहित्य एक दृष्टीक्षेप	प्रा. डॉ. सी. एस. झगताप	50-51

Krantiagrani ... Lad Mahavidyalaya, Kundal.

७४ वी घटनादुरूस्ती : नागरी, सामाजिक, राजकीय परिवर्तनाची कोनशीला

प्रा. झाकीरहुसेन हाकीम संदे. क्रांतिअग्रणी जी.डी.बापू. लाड महाविद्यालय, कुंडल. ता. पलूस जि.सांगली.

प्रस्तावना : भारतामध्ये नागरीकरणाला सुरवात स्वातंत्र्यपुर्व काळातच झालेली आहे. औद्योगिक क्रांतीचे जेवढे म्हणून चांगले वाईट परिणाम झाले त्यातील एक सकारात्मक परिणाम म्हणजे शहरीकरण होय. भारत हा जरी खेडयांमध्ये वसलेला देश असला तरी आधुनिक काळात मात्र मोठया प्रमाणात शहरीकरणाला चालना मिळत आहे. खेडयात राहणाऱ्यांची संख्या दिवसेंदिवस घटत असून शहरांमध्ये राहण्याची प्रवृत्ती लोकांमध्ये वृध्दींगत होताना दिसते. परिणामी शहरांची संख्या आणि शहरातील लोकांच्या संख्येत प्रचंड वाढ होणे स्वाभाविक आहे. भारतामध्ये शहरांच्या निर्मितीस आणि तेथील स्थानिक शासन संस्थेमार्फत कारभाराला स्वातंत्र्यपूर्व कालखंडातच म्हणजे १७ व्या शतकातच सुरवात झाली होती. "ब्रिटिशांनी १६८७ साली मद्रास येथे आणि १७२६ साली मुंबई व कलकत्ता येथे महानगरपालिकांची स्थापना करून पंचायत व्यवस्थेला सुरूवात केली. १८५० साली नगरपालिका कायदा करून, प्रमुख शहरात नगरपालिका स्थापन केल्या" [१] हे सर्व करीत असताना शहरात मोठया प्रमाणात सामाजिक समस्या देखील निर्माण होत होत्या हे यात दुर्लक्षित होत गेले.

भारत सरकारने स्वातंत्र्यानंतर औद्योगिकरण, व्यापार,व्यवसायांना पोषक वातावरण दिल्यामुळे साहजिकच शहरीकरणाला चालना मिळत गेली. भारतामध्ये लहान आकाराचे, मध्यम आकाराचे आणि मोठे किंवा महाकाय अशी शहरांची प्रतवारी दिसते. ग्रामीण भागातून शहराकडे वाटचाल करणाऱ्या छोटया शहरांमध्ये नगरपंचायती स्थापन होतात. छोटया शहरांमध्ये नगरपालिका आणि मोठया शहरांमध्ये मात्र महानगरपालिका कार्यरत असताना दिसतात. भारतीय राज्यघटनेने सत्तेच्या विभाजनाचा प्रयोग अंगिकारला आहे. त्यानुसार ग्रामीण भागात त्रिस्तरीय पंचायत राज व्यवस्था निर्माण झाली तर नगरवस्तीमध्ये देखील वरील प्रमाणे स्थानिक शासन व्यवस्था निर्माण झाली.

भारतातील नागरी समाज हा बहुभाषिक, बहुधर्मिय, बहुजातिय व बहुआर्थीक स्तरीय स्वरूपाचा बनलेला आहे. अर्थातच कॉस्मॉपॉलिटीन स्वरूपाचा बनलेला आहे. अशा या बहुजिनसी समाजामध्ये भारतात मुळच्याच असलेल्या सामाजिक समस्या आणखीन ठळक स्वरूपात दिसून येवू लागल्या नव्वदच्या दशकामध्ये भारतीय राज्यघटनेत ज्या दुरूस्त्या होवून नवीन प्रतिमाने दाखल झाली. त्यामध्ये मंडल आयोगाच्या शिफारशी आणि ७४ वी घटनादुरूस्ती ही दोन प्रतिमाने शहरी समाज आणि राजकीय प्रक्रियेमध्ये प्रचंड उलाढाल करणारी ठरली. पैकी मंडल आयोगाने देशात एक उपेक्षित आणि दुर्लक्षित असलेल्या इतर मागासवर्गीय घटकाला भारतीय राजकीय परिघामध्ये दाखल केले, तर ७४ व्या घटना दुरूस्तीने शहरातील मागासलेल्या घटकांना योग्य प्रमाणात प्रतिनिधित्व देतानाच नगरपालिका, महानगरपालिकांच्या स्वरूप, रचना आणि अस्तित्वाला घटनात्मक चौकटीत बसविले. परिणामी नागर समाजावर नियंत्रण आणि नियमन करणाऱ्या या स्थानिक शासन संस्था अधिक जबाबदार आणि क्रियाशील बनल्या. आजच्या नागरी विभागात दिसून येणाऱ्या सुधारणांना ७४ व्या घटना दुरूस्तीची पार्श्वभूमी कारणीभूत असल्याचे जाणवते. ७४ व्या घटना दुरूस्तीचे स्वरूप आणि परिणाम पुढीलप्रमाणे अभ्यासता येतील.

७४ व्या घटना दुरूस्तीचे स्वरूप आणि परिणाम भारतीय संसदेमध्ये ७४ व्या घटनादुरूस्ती बरोबरच ७३ व्या घटना दुरूस्तीचे कामकाज देखील चालू होते. या विधेयकांना २२ डिसेंबर १९९२ रोजी लोकसभेने मंजूरी दिली तर २३ डिसेंबर १९९२ ला राज्यसभेने मंजुरी दिली. २० एप्रिल १९९३ ला त्यावर राष्ट्रपतींनी मंजूरी दर्शक स्वाक्षरी केली तर २४ एप्रिल १९९३ पासून त्याची अंमलबजावणी संपूर्ण भारतात सुरू झाली. या घटनादुरूस्तीमुळे राज्यघटनेत ९ वे परिशिष्ट जोडण्यात आले.

१ नागरी स्थानिक शासन संस्थांचा अर्थ आणि व्याख्या स्पष्ट झाल्या –घटनेतील कलम नं. २४३ त नुसार महानगर क्षेत्र, नगरपालिका क्षेत्र, नगरपालिका, पंचायत, लोकसंख्या या संकल्पनांचा अर्थ आणि व्याख्या अगदी साध्या आणि सोप्या भाषेत करण्यात आला. याचा परिणाम म्हणजे नागरिकांच्या मनात असलेली द्विरूक्ती आणि संदिग्धता नष्ट झाली. आणि सर्व संकल्पना सुर्यप्रकाशाइतक्या स्वच्छ झाल्या, त्यामुळे या संस्थांचा अभ्यास आणि प्रवेश सोपा झाला.

२ नगरपालिका घटित करण्यात आल्या –घटनेतील क. नं. २४३ थ नुसार नगराच्या निर्मितीस सुरूवात झाल्यापासुन त्याचे महानगरात रूपांतर होईपर्यंत ते ज्या ज्या पायऱ्यावरून पूढे सरकते त्या सर्व पायऱ्यांची रचना, व्याख्या आणि अर्थ स्पष्ट करण्यात आला. ग्रामीण भागातुन छोटया शहरात संक्रमित होत असलेल्या भागाला नगरपंचायत तर त्यापेक्षा मोठया नागरी क्षेत्राला नगरपरिषद तर अधिक मोठया नागरी क्षेत्राला महानगरपालिका अशी रचना स्पष्ट करण्यात आली.नागरी भागातील सत्तेचे विभाजन अत्यंत काटेकोर आणि पध्दतशीरपणे राज्य घटनेने केलेले आहे. सत्तेचे विभाजन हा लोकशाहीचा आधार असतो. "सत्ता व जबाबदारी या दोहोंच्या वाटपामुळे आपापल्या स्तरावर कार्य करणा–या यंत्रणांना क्षेत्रीय आणि कार्यात्मक स्वायत्तता प्राप्त होते हे सत्तेच्या विकेंद्रीकरणाचे महत्त्वाचे साधन आहे."[२] सत्तेचे वितरण समाजातील प्रत्येक घटकामध्ये झाल्यामुळे त्यांच्यातील लोकशाहीला आवश्यक जबाबदार नागरिक घडविता येतो.

३ नगरपालिकांची रचना निश्चित करण्यात आली –घटनेतील क.नं. २४३ द नुसार संपूर्ण देशामध्ये समान नागरी शासन संस्था प्रस्थापित झाल्या. नगरपालिका, त्यांचे क्षेत्र, मतदार, विशेष ज्ञान आणि अनुभवी व्यक्तींचा नगरपालिकेत समावेश, विविध समित्या, सभाध्यक्ष, सभाध्यक्षाची निवड, मतदान प्रक्रिया, यांचा स्पष्ट उल्लेख करणेत आला. याचा अत्यंत चांगला प्रभाव दिसुन आला. तो म्हणजे नगरपालिकांच्या कार्यक्षेत्रात राज्य सरकारचा हस्तक्षेप पुर्णपणे थांबला. व नगरपालिकेच्या प्रत्येक बाबीला कायदयाचा आधार प्राप्त झाला

४ जागांचे आरक्षण निश्चित करण्यात आले. –घटनेच्या कलम नं. २४३ न नुसार नगरपालिका कार्यक्षेत्रात असणाऱ्या अनुसूचित जाती आणि अनुसूचित जमांतीच्या लोकसंख्येच्या प्रमाणात आरक्षण ठेवण्यात आले व हे आरक्षण प्रत्येक वेळी फिरते किंवा बदलते ठेवण्यात आले.

Jaywant Pratishtan Humgaon Sanchalit

AMDAR SHASHIKANT SHINDE MAHAVIDYALAYA, MEDHA

Tal - Jawali, Dist - Satara, Pin - 415012 (Maharashtra)

One Day National Level Seminar
on

Financial Inclusion & Rural Development

Saturday 18 March 2017
Organized by

Department of Economics

Journal of Current Science & Humanities
ISSN: 2347-7784 (IF 2.5)

Special Issue

Guest Editor
Dr. Pramod R. Ghatage

G.B.B.L. Mahavidyalaya, KUNDAL, Tal. Palus, Dist. Sangli

Scanned by CamScanner

Website: www.jcsonline.in JCSH Journal of Current Science & Humanities
P-ISSN: 2347-7784 e-ISSN: 2347-7792
Impact Factor: 2.05
Proceeding of National Seminar on Financial Inclusion & Rural Development, Saturday, 18th March 2017

Sr. No.	Research Paper Title	Researcher Name	Page No.
1.	FINANCIAL INCLUSION AND MICROFINANCE IN INDIA: AN OVERVIEW	*PROF. DR. P. S. KAMBLE, **MR. K. R. TANANGE	1-5
2.	PRADHAN MANTRAI JAN DHAN YOJANA – A REVOLUTIONARY FINANCIAL INCLUSION PROGRAM IN INDIA	*DR. V. B. KAKADE, **MR. G. C. KHAMKAR	6-11
3.	STUDY OF QUALITY OF BANKING SERVICES IN RURAL AREA OF SATARA DISTRICT – A PILOT	*ASMA BAGWAN, **DR. SARANG S. BHOLA,	12-20
4.	MICRO UNITS DEVELOPMENT AND REFINANCE AGENCY (MUDRA) BANK: SCHEME OF FUNDING FOR UNFUNDED SMALL BUSINESS UNITS	*DR. VIJAY M. KUMBHAR	21-24
5.	FINANCIAL LITERACY AND INTERNET BANKING: A LITERATURE REVIEW	*DR.ANIL K. WAVARE, **NANASO K. AWATADE	25-36
6.	PROSPECTS AND CHALLENGES TO AGRICULTURAL FINANCE IN PUNJAB	*DR. KANWALJIT SINGH	37-41
7.	FINANCIAL INCLUSION POLICY OF RBI	*PROF. MOHAN SADAMATE	42-43
8.	ROLE OF BANKS IN RURAL DEVELOPMENT	*DR. B. H. DAMJI	44-46
9.	ORGANIZATION OF RURAL CREDIT FOR THE PROGRESS AND UPLIFTMENT OF FARMERS IN INDIA	*DR. MRS. CHOUGULE H. A.	47-49
10.	KISAN CREDIT CARD: AN IMPORTANT TOOL FOR AGRICULTURAL CREDIT IN INDIA	*SHRI. ANANTKAWLAS M.B.	50-52
11.	CONTRIBUTION OF BANKS TO AGRICULTURAL DEVELOPMENT	*MR. AJAYKUMAR NANDKUMAR DHAYGUDE	53-55
12.	RURAL CONSUMER BEHAVIOUR AND RURAL MARKETING	*DR. SAWANT V.K.	56-58
13.	ROLE OF REGIONAL RURAL BANKS IN RURAL DEVELOPMENT AND FINANCIAL INCLUSION	*PROF. JYOTSNA BORATE	59-60
14.	ROLE OF RURAL SELF EMPLOYMENT TRAINING INSTITUTES (RSETIS) IN RURAL DEVELOPMENT	*DR. SACHIN A. SARDESAI, **PRAKASH N. SHINDE	61-63
15.	ROLE OF CO-OPERATIVE BANK IN AGRICULTURAL CREDIT: A STUDY BASED ON MAHARASHTRA	*MRS. RATHOD DEVAKI NILESH	64-68
16.	THE IMPACT OF MICROFINANCE ON RURAL DEVELOPMENT IN INDIA	*MRS. SONALI MAHADEO PAWAR, **MR. PRAVIN GULABRAO BABAR	69-71
17.	COOPERATIVE CREDIT SOCIETIES IN RURAL MAHARASHTRA	*PROF. B. R. GADAVE	72-74
18.	RURAL DEVELOPMENT THROUGH MICRO FINANCE AND MGNREGA IN INDIA	*DR. PRAKASH Y. BURUTE	
19.	THEORETICAL APPROACH OF DR.B.R.AMBEDKAR ON RURAL DEVELOPMENT	*MR. RAJSHEKHAR K. NILLOLU	75-76
20.	ECONOMICAL INCLUSIVE DEVELOPMENT AND VILLAGE PANCHAYATS: A MICRO STUDY	*SMT. USHADEVI EKANAT SALUNKHE, **DR. BANDU	77- 80

K.D.G.D.B.L. Mahavidyalaya KUNDAL Tal.Palus, Dist.Sangli

www.jcsonline.in

JCSH

Journal of Current Science & Humanities
P-ISSN: 2347-7784 e-ISSN: 2347-7792
Impact Factor: 2.05
Proceeding of National Seminar on Financial Inclusion & Rural Development, Saturday, 18th March 2017

FINANCIAL INCLUSION POLICY OF RBI

*Prof. Mohan Sadamate
Karantiagrani G. D. Bapu Lad College Kundal
Email; sadamatemg@gmail.com

Introduction:

In the 21st century, India has been pulling all the right levers to advance financial inclusion and economic citizenship by channeling its own transactions to lubricate the system. Inclusive growth as a strategy of economic development has received renewed attention in recent years owing to rising concerns that the benefits of economic growth have not been equitably shared. Growth is inclusive when there is equality of economic opportunities. Financial inclusion makes growth broad based and sustainable by progressively encompassing the hitherto excluded population.

Financial inclusion is to ensure universal access to a wide range of financial services like savings and payment account, credit insurance and pensions. Further, financial inclusion also aims to provide services for business opportunities, education, and savings for retirement and insurance against risks including emergency loans. Thus, the main target of financial inclusion is better standards of living and income for a larger number of residents in the country. The main objective of study is which financial inclusion policy of Reserve Bank of India and which are benefits for Indian economy.

Definitions of Financial inclusion

'Financial inclusion may be defined as the process of ensuring access to financial services and timely and adequate credit where needed by vulnerable groups such as weaker sections and low-income groups at an affordable cost' (The Committee on Financial Inclusion, Chairman: Dr. C. Rangarajan).

'Financial Inclusion, broadly defined, refers to universal access to a wide range of financial services at a reasonable cost. These include not only banking products but also other financial services such as insurance and equity products' (The Committee on Financial Sector Reforms, Chairman: Dr. Raghuram G. Rajan).

RBI Policy Financial Inclusion

RBI has adopted a bank-led model for achieving financial inclusion and removed all regulatory bottlenecks in achieving greater financial inclusion in the country. Further, for achieving the targeted goals, RBI has created conducive regulatory environment and provided institutional support for banks in accelerating their financial inclusion efforts.

- Basic Saving Bank Deposit (BSBD; Advised all banks to open Basic Saving Bank Deposit (BSBD) accounts with minimum common facilities such as no minimum balance, deposit and withdrawal of cash at bank branch and ATMs, receipt/ credit of money through electronic payment channels, facility of providing ATM card.
- Relaxed and simplified KYC norm; to facilitate easy opening of bank accounts especially for small accounts with balances not exceeding Rs. 50,000 and aggregate credits in the accounts not exceeding Rs. 1lakh a year. Further, banks are advised not to insist on introduction for opening bank accounts of customers. In addition, banks are allowed to use Aadhar Card as a proof of both identity and address.
- Simplified Branch Authorization Policy; to address the issue of uneven spread bank branches, domestic SCBs are permitted to freely open branches in Tier 2 to Tier 6 centers with population of less than 1 lakh under general permission, subject to reporting. In North-Eastern Sates and Sikkim, domestic SCBs can open branches without having any permission from RBI. With the objective of further liberalizing, general permission to domestic scheduled commercial banks (other than RRBs) for opening branches in Tier 1 centres, subject to certain conditions.
- Compulsory Requirement of Opening Branches in Un-banked Villages; banks are directed to allocate at least 25% of the total number of branches to be opened during the year in un-banked (Tier 5 and Tier 6) rural centers.
- Opening of intermediate brick and mortar structure; for effective cash management, documentation, customer grievances and close supervision of BC operations, banks have been advised to open intermediate structures between the present base branch and BC locations. This branch could be in the form of

K. Dr. G. L. Mahavidyalaya KUNDAL Tal. Palus, Dist. Sangli

Vol. No. 5, Issue No. 5 Jun. 2017 ISSN No. : 2394 - 8809

संस्कार... अविरत पेरत आहे... ज्ञानाची 'सुवर्णक्रांती' कोरत आहे.

Vishwawarana National Research Journal

A Multi-Disciplinary Biannual Research Journal

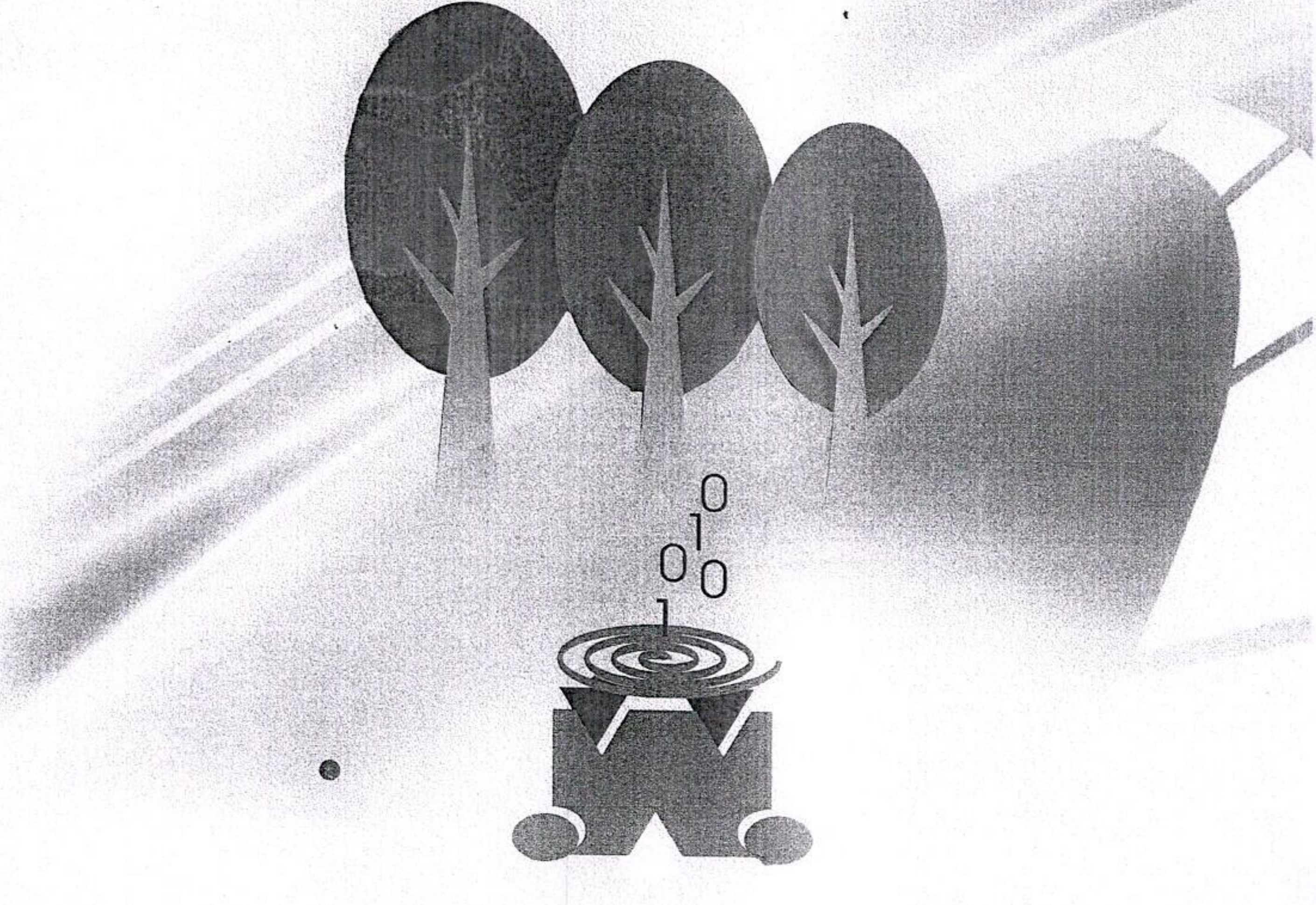

Shree Warana Vibhag Shikshan Mandal's

Yashwantrao Chavan Warana Mahavidyalaya, Warananagar

NAAC RE-ACCREDITED : 'B' (CGPA : 2.85)

CONTENTS

Sr.No.	Subject	Author	Title of Research Article	Page.No.
1	English	Prof. B M Badiger	Identity Conflict reflected in the Selected Novels of Arun Joshi's the Foreigner and the Strange Case of Billy Biswas	7
2	Hindi	डॉ. अमिता	आधुनिक हिन्दी कहानी साहित्य में वैषम्य के विविध आयाम	10
3	Lib.&Inf.Sci.	Kishor N. Desai	Changing Trends in Academic Libraries in ICT Environment	14
4	Chemistry	Dr. Deelip Baburao Patil	Impedance study of MFC with different organic wastes	18
5	Chemistry	Dr. Deelip Baburao Patil	Performance of MFC with Synthetic medium using *Enterobacter aerogenes* for Generation of Electricity	23
6	Lib.&Inf.Sci.	Mr. Shivaji Pandurang Kamble	"Changing Scenario of Library Services: Traditional to Modern"	29
7	Lib.&Inf.Sci.	Mr. Vijaykumar K. Jagtap Mr. Yuvraj G. Jadhav	Use of OPAC by the students of Shivaji University, Kolhapur	34
8	Physics	Dr. Vilas. S. Patil Dr. Manisha V. Patil	Green Marketing and its implementation for the changing environment	39
9	Physics	Dr. Vilas S. Patil Dr. Manisha V. Patil	Preparation & X-ray Diffraction Characterization of Some Li-Zn Ferrites	47
10	Hindi	डॉ. प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर	'आधुनिक हिन्दी आत्मकथा साहित्य में दलितोत्थान'	54
11	Botany	M. N. Patil[a], S. M. Arde[a], A. B. Patil[b], D. S. Jadhav[c]*	Phytochemical and Pharmacological Review on *Annona squamosa* Linn: A Review	57
12	Lib. & Inf. Sci.	डॉ. नमिता खोत श्री. मधुकर दिनकर पाटील	कोल्हापूर शहरातील राजाराम महाविद्यालय या ग्रंथालयातील दोलामुद्रितांचा अभ्यास	63
13	Hindi	डॉ. सौ. भारती वि. शेळके	दलित आत्मकथा में वैषम्य के आयाम	66
14	Botany	Khot S. S.[1] and Joshi A. J.[2]	Coastal Ecosystem Interactions - A Case Study of Floral Vegetation at Narara Island in the Marine National Park of India	69

3

Changing Trends in Academic Libraries in ICT Environment

Kishor N. Desai

Abstract :

Doing so in the present resource constrained regime, when on the one hand Library and Information Professionals (LIPs) experience unbelievable information downpour and on the other when they also witness complex information needs of their ever increasing and highly demanding patrons, appears to be a major challenge, Information Communication Technology(ICT) and ICT enabled: (i) profiling of the users; (ii) information products and resources; and (iii) information services have come to the rescue of LIPs in a big way in meeting such challenges.

Keywords:

ICT application; ICT services; value of applying ICTs; academic library resource.

Need for Modernization and Restructuring of Academic Libraries :

Now there is a need for the academic libraries to change the practices and maintain their status in the educational society and for this purpose modernization and re-engineering aspects are to be considered as a top priority. There is also a need to shift the activities from local to universal access to information so as to provide a strong base for developing the research concepts in users and increase use of libraries and this could be achieved using information technology freely in the area of LIS. The developments of electronic resources, internet use as information provider are very beneficial and economical for procurement and storage, as well information retrieval. The concept of OAI and IR is gaining momentum to disclose the information fast which is generated in a particular organization and area of interest and information generated is disseminated to the users, using net. Hence there is a need to apply ICT and needs to gain IT based skills for managing and handling information by both users and library professionals.ces; e-learning; grey literature; scholarly community; librarians' role.

ICT Application in Academic Libraries

The emerging new technologies have revolutionized the methods of information storage and retrieval in academic library field. In this Internet era more and more libraries in the world make use of these new technologies for storage, retrieval and dissemination of information in more effective way. Libraries can store huge amount of information using new technologies and transmit this information to any where anytime without any geographical barrier. Scholars fulfill their thrust of information using new technologies without wasting their precious time. ICTs facilitate for rapid transmission of information globally through its networks. It helps library professionals to manage their housekeeping and documentation activities such as circulation, acquisition, maintenance of catalogue, periodical management etc. in the libraries by automating them. These innovative technologies made convenient platform for the scholars to make use the information as well as to explore them. The other automated services in the libraries are storage, dissemination and advance searched for the scholars such as SDI, compiling bibliographies, indexing/abstracting etc. Traditional library housekeeping methods are now carried by using newer technologies. Newer technologies have given better solution to most of the problems encountered in the field of library related to the acquisition, organisation of information, reference services, circulation and bibliographical services. Following technologies have applied in libraries to face their housekeeping problems and to seek better solution

Kishor N. Desai
Librarian, Krantiagrani G.D. Bapu Lad Mahavidyalaya, A/P-Kundal
, Tal-Palus,Dist-Sangli.Pin-416 309
Email-kishor.desai007@gmail.com,Cell-9730820255

STEREOTYPING IN PREMCHAND'S *THE SHROUD*

DR. BALKRISHNA WAGHMARE
Krantiagrani G. D. Bapu Lad
Mahavidylaya, Kundal
Tal-Plaus, Dist- Sangli
(MS) **INDIA**

ABSTRACT

In post-colonial theory, the term, 'stereotype' refers to the generalized views of the colonizers about the colonized. They are negative, debasing, humiliating, and mostly based on a racist or prejudiced view of the colonized people. This term can be applied to Premchand's short story, The Shroud. Premchand has associated Dalits with qualities like lazy, work shirkers, inhuman, thieves etc. Hence, this paper tries to explore the unintentional stereotyping of Dalits during colonial period.

Keywords: *Stereotypes, Dalits.*

INTRODUCTION

In post-colonial theory, 'stereotype' refers to the generalized views of the colonizers about the colonized. They are negative, debasing, humiliating, and mostly based on a racist or prejudiced view of the colonized people. Colonizers stereotypical views about the natives consider colonised as work shirkers, liars, corrupt, weak, inferior, uncivilized, impotent, cruel, lazy, irrational, violent and disorganized. Stereotyping can be defined as a negative image of a person in relation with a group or society. Edger and Sedgwick define the concept in these words:

> *"a stereotype is an oversimplified and usually value-laden view of the attitudes, behaviour and expectations of a group or individual. Such views, which may be deeply embedded in sexist, racist or otherwise prejudiced cultures, are typically highly resistant to change" (380-1).*

In 1978, Edward Said, a noted post-colonial critic, published his most famous work *Orientalism*. He made a ground-breaking analysis of the stereotypes and colonial assumptions

Histori City

ISSN : 2393-8900

Historicity

International Research Journal

Volume - 3 | Issue - 8 | April - 2017
Impact Factor : 1.9152 (UIF)

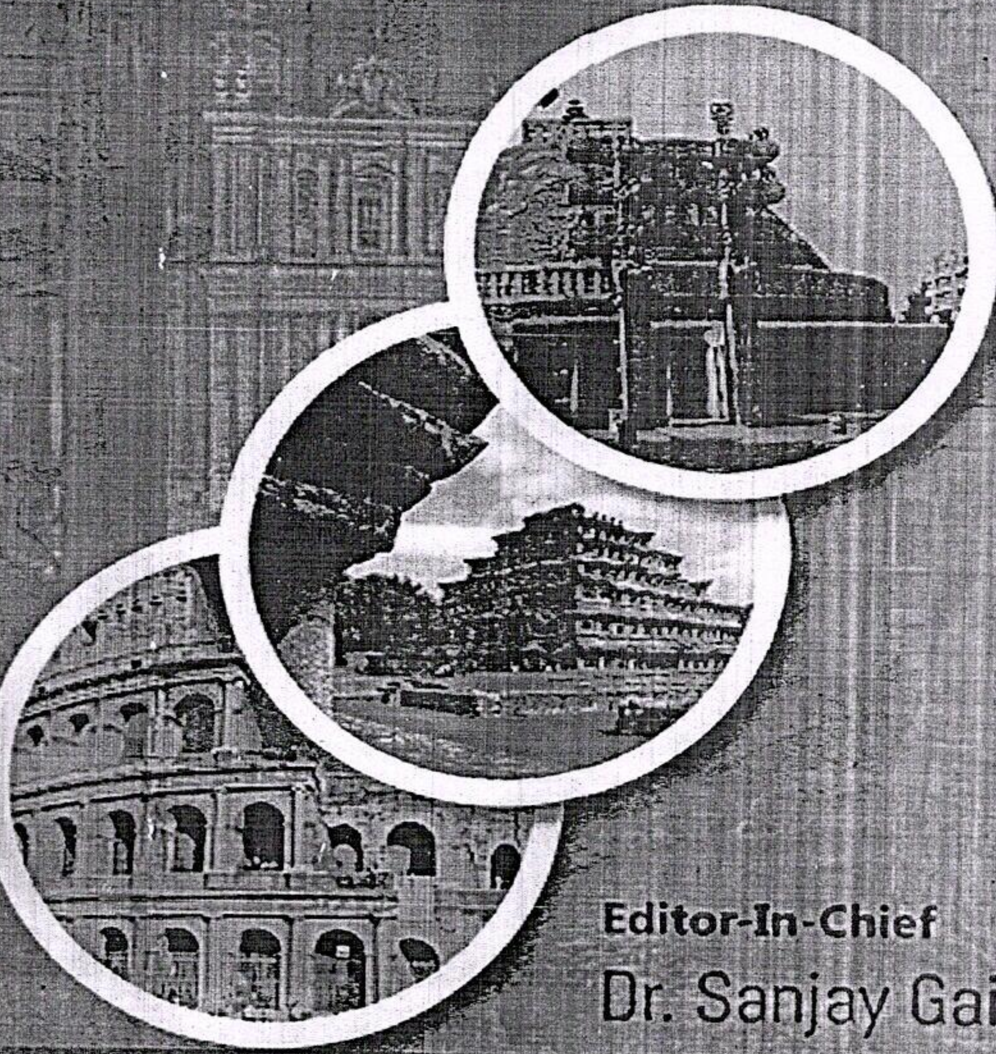

Editor-In-Chief
Dr. Sanjay Gaikwad

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

ISSN NO:- 2393-8900
Vol- 3| Issue 8 | April -2017

Contents

भाई भगवानराव सूर्यवंशी यांचे जीवन व कार्य

19
भाई भगवानराव सूर्यवंशी यांचे जीवन व कार्य
विवेकानंद राजाराम माने

23
भारतीय संविधान आणि मानवी हक्क चळवळ
प्रा. गायकवाड प्रेमचंद गुड्डू

1
पश्चिम विदर्भातील आदिवासींच्या समस्या व त्यावरिल उपाय योजनांचे चिकित्सक अध्ययन.
प्रा. अनिल शिवाजी भुरके , प्रा. विणा विनायकराव तोरकड

8
'Grow More Food' Campaign In The Madras Presidency
Dr. C. Swaminathan M. A.

12
The Emergence Of Janism And Buddhism In Ancient India: A Historical Necessity
Shesh Nath Vernwal and Le Dinh Son

17
आदिवासी विकासातील योगदान : आश्रमशाळा वाकडी : शांतिवन (ता. पनवेल जि. रायगड)
सौ. विजयश्री राजेंद्र पाटील

IN THIS ISSUE

बीड जिल्ह्याचा सांस्कृतिक इतिहास
प्रा. गणपत विष्णु गट्टी
28

साठोत्तरी दलित कवितेतील सामाजिक जाणिवा
प्रा. [illegible]
30

भारतातील पाणी व्यवस्थापनाची पारंपारिक पद्धती
प्रा.आर एम संगशेट्टी
34

Historicity Research Journal
ISSN : 2393-8900

Impact Factor : 1.9152 (UIF)
Volume - 3 | Issue - 8 | April – 2017

भाई भगवानराव सूर्यवंशी यांचे जीवन व कार्य

विवेकानंद राजाराम माने
इतिहास विभागप्रमुख, क्रांतिअग्रणी जी.डी.बापू लाड
महाविद्यालय, कुंडल जि. सांगली.

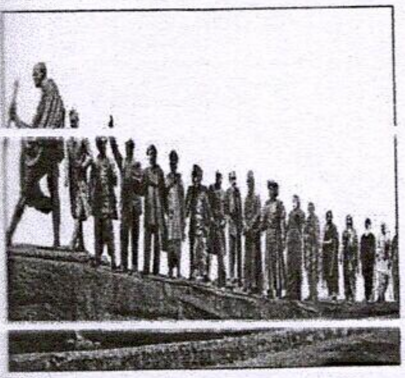

प्रस्तावना:

भगवानराव सूर्यवंशी सांगली जिल्ह्यातील ज्येष्ठ क्रांतिकारक, शेतकरी कामगार पक्षाचे ज्येष्ठ नेते गिरणी कामगार नेते आणि कष्टकरी मजूर जनतेचे पुढारी होत.भगवानराव सूर्यवंशी यांनी राज्यातील शेतकरी, कष्टकरी, कामगार व सर्वसामान्य जनतेच्या समस्या सोडविण्यासाठी मोठे प्रयत्न केले तसेच स्वातंत्र्य चळवळ, प्रतिसरकार, संयुक्त महाराष्ट्र चळवळ, सीमा लढा इ. लढ्यात त्यांनी निष्ठापूर्वक कार्य केले. सातारा, सांगली व कोल्हापूर परिसरात [illegible] व पुरोगामी पक्षांच्या वतीने जी आंदोलने झाली त्यामध्ये भगवानराव नेहमीच आघाडीवर राहिले. भगवानराव सूर्यवंशी शे. का. पक्षाशी स्थापनेपासून एकरूप राहिले. पक्षाने दिलेल्या विविध जबाबदाऱ्या त्यांनी यशस्वीरीत्या पार पाडल्या.

स्वातंत्र्य चळवळीतील कार्य :

सांगली जिल्ह्यातील पारे या गावी १५ जुलै १९२५ रोजी भाई भगवानराव सूर्यवंशी यांचा जन्म एका शेतकरी कुटूंबात झाला. भगवानरावांचे वयाच्या ६व्या वर्षी शाळेत नाव दाखल केले. पारे गावात त्यांचे सातवी पर्यंत शिक्षण झाले. परंतु इच्छा व कुवत असतानाही त्यांना पुढील शिक्षण घेता आले नाही.

भारतीय स्वातंत्र्यलढा हा इतिहासातील महत्वपूर्ण अध्याय असून त्यातील सन १९४२ चे आंदोलन ही घटना महाराष्ट्रामध्ये अत्यंत महत्वाची मानली जाते. ग्रामीण खेड्यापर्यंत पोहचलल्या या चळवळीत ज्ञात—अज्ञात राष्ट्रप्रेमी लोक सहभागी झाले होते. 'करा अथवा मरा' या संदेशाने म. गांधींनी स्वातंत्र्यासाठी लढण्यास हिंदी जनतेला शेवटचा संदेश दिला होता. परिणामी ही चळवळ मोठ्या प्रमाणावर सुरू झाली. तसेच जुन्या सातारा जिल्ह्यात ही चळवळ अधिक गतिमान झाली. अनेक कार्यकर्ते भूमिगत राहून [illegible] सहभागी झाले. क्रांतिसिंह नाना पाटील यांच्या नेतत्वाखाली भगवानराव सूर्यवंशी यांनी आपल्या परीने योगदान दिले आहे.

या काळात प्रथम तासगांव, इस्लामपूर येथे मोर्चे निघाले. त्यानंतर विट्याला मोर्चा काढण्याचा विचार झाला. चिंचणी, मंगरूळ या ठिकाणी नाना पाटील, जी. डी. लाड व भगवानराव सूर्यवंशी तसेच शेकडो कार्यकर्ते बैठकीसाठी जमले होते. परंतु पोलिसांना खबर मिळाल्यामुळे ही बैठक अचानक रद्द केली. त्यानंतर पुढील बैठक ही [illegible] भूमिगत राहून आंदोलन करण्याचा निर्णय झाला. पुढे भूमिगत आंदोलनाचे लोण सर्वत्र पसरत गेले. भगवानराव सूर्यवंशी कुंडल—पारे परिसरातील एक सक्रिय कार्यकर्ते म्हणून सर्वात पुढे होते.[१]

सेवादल आणि तुफान सेनेमधील योगदान :

सातारा जिल्ह्यात १९४३ ते १९४६ च्या उत्तरार्धापर्यंत भूमिगत चळवळ चालू होती. या आंदोलनात राष्ट्रीय पातळीवर एस. एम. जोशी, अच्युतराव पटवर्धन, अरूणा असफअली, राममनोहर लोहिया यांनी नेतृत्व केले. या नेत्यांच्या सभा कुंडल, पारे, रेठरे, मांजर्डे या ठिकाणी येथील कार्यकर्त्यांनी आयोजित केल्या. त्यामध्ये या परिसरातील सेवादलाचे स्वयंसेवक हेच तुफान सेनेचे प्रमुख कार्यकर्ते होते.

ISSN 2278-5914

Satara Itihas Sanshodhan Mandal, Satara

(Inst. Reg. No. Maharashtra/13482/Satara/2010)

Research Booklet

SANSHODHAN
संशोधन

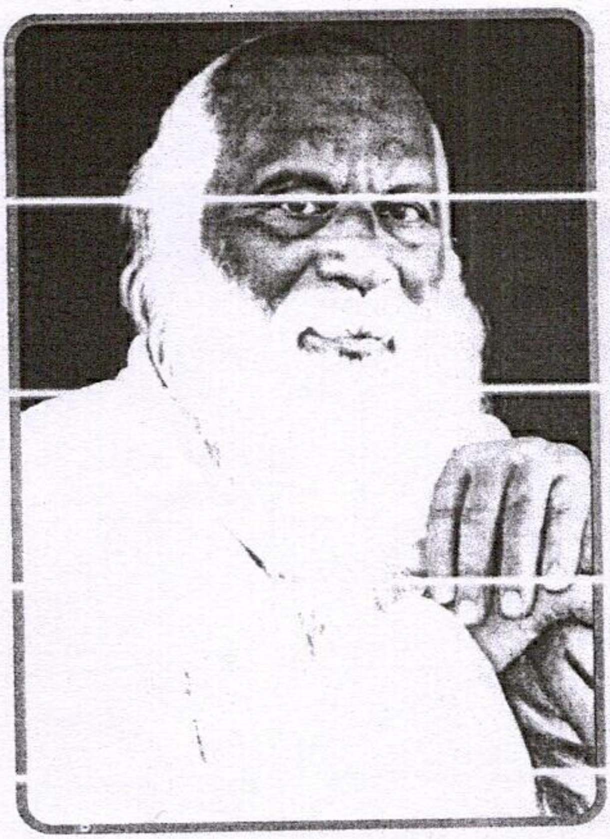

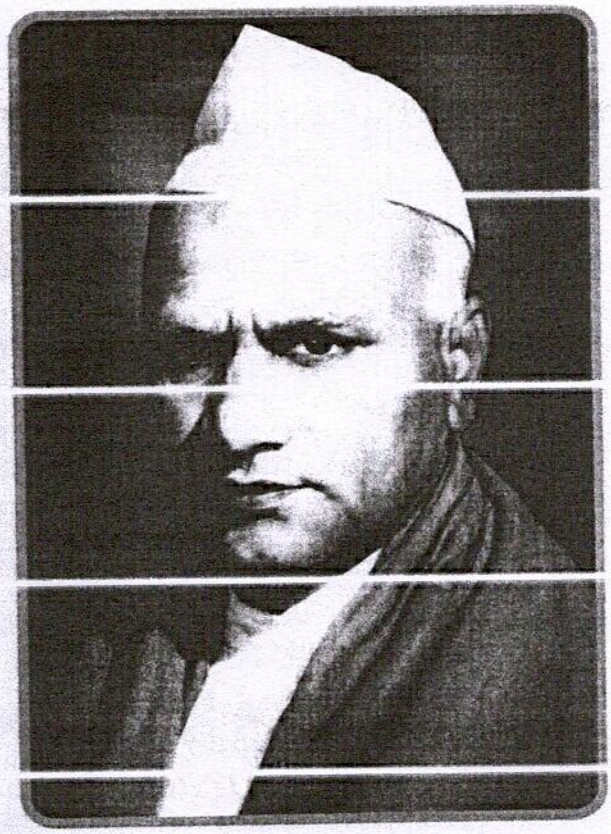

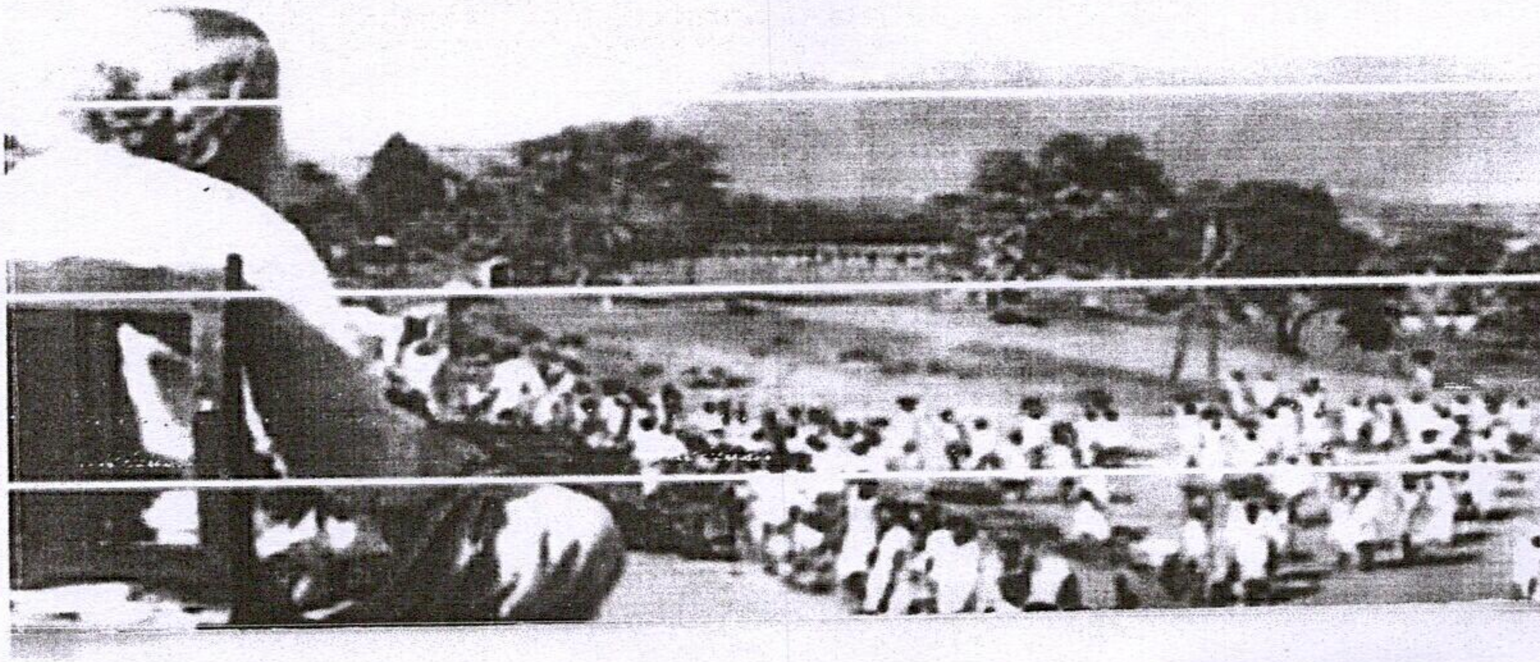

Walwa Taluka Education Society's

YASHWANTRAO CHAVAN ARTS AND COMMERCE COLLEGE

S. D. Patil Nagar, Urun-Islampur Tal. Walwa, Dist. Sangli 415 409

Organised by
Department of Physical Education

Organises in collaboration with
Shri S. D. Patil Charitable Trust Islampur
Senior College Physical Education Teachers Association

Krantiagrani Dr. G. D. Bapu Lad Mahavidyalaya, Kundal.

UGC Sponsored
Two Day National Conference
ON

FITNESS AND WELLNESS OF PEOPLE THROUGH SPORTS AND GAMES

2nd & 3rd December, 2016

Chief Editor
Dr. H. A. Narayankar

Co-Editor
Mr. V. B. Patil

Scanned with

Sr. No	Article Name	Author Name	Page No.
20	Analysis of Life Skills Developed amongst Regular Students, Athletes and NCC Cadets of Kisan Veer Mahavidyalaya, Wai	Shri Sameer Pawar, Dr. Mahesh Deshpande	102
21	Physical Education Sports and International Relation	Ranjit Anantrao Ingavale	108
22	The Role of Sport Psychologist in Physical Education	Mr. Thakur Arjunsing Narayansing, Kakde Bharat Pandurang	112
23	Role of Physical Activity and Sports in Women's Life	Suhas Nivrutti Bhairat	115
24	The Problem and Solution in Sports in India	Prof. Kundlik Ramchandra Gavade	120
25	Stress Management in Sports and Games	Prof. Smt. Sheela Babaso Mohite	125
26	The Effect of Plyometric Training on Selected Physical Fitness Variables of Men Hockey Players	Prof. Vikas Anandrao Jadhav, Prof.Ranjit Anantrao Ingavale	131
27	The Role of Sports and Yoga in Human Life	Mr. V.D. Sawant	136
28	Effect of Psychological Fitness on Sport Performances	Assi. Prof. Vijayanand Shivlal Nimbalkar	141
29	The Traditional Indian Wrestling Holds	Mr.Vikramsinh P. Nangare	145
30	Yoga for Sports Performance	Dr. R. B. Deshmukh, Mr. S. M. Patil	148
31	Effect of Eight Weeks Maximum and Dynamic Effort Training Program for Improving Bench Press Performance	Dr. Abhijit Kadam, Shashikant Pardeshi	155
32	Sports in India: Problems and Solutions	Dr. Savita .V. Bhosale	160
33	Evaluation of Fitness Centers in Urban Locality of Karnataka State	Dr. Shivamurthy A. Mr. Abhishek Dr. Gajanana Prabhu B	165
34	Strategies for the Sports Coach in the Management of Stress Situations in the Sports Competition.	Seema S Desai Sandip S Patil	173
35.	Overview of factor affecting penalty kicking	Khule Avinash Madhukar Gandhe Darshan Sunil Patil Abhijeet Arun Dhengale Dadasaheb Baban	181
36	A Brief View of Effect of Yogasana & Pranayama in Relation to Teaching Achivement and Working Capacity of Middle Aged Profile Women from Rural and Urban Area of Sangli District	Prof-Narayankar Dr.Chavan S.D. Prof-Patil J.S. Prof-Patil V.B.	186

Krantiagrani Dr.G.D. Bapu Lad Mahavidyalaya, Kundal.

Scanned with

ISBN 978-93-83796-42-7
UGC Sponsored National Conference on 'Fitness & Wellness of People Through Sports and Games'

THE ROLE OF SPORTS AND YOGA IN HUMAN LIFE

Mr. V.D. SAWANT
Krantiagrani G.D. Bapu Lad College,
Kundal, Tal- Palus, Dist Sangli. (MH)

Introduction:

Sports and strength are believed to be two sides of the same coin. A person who is good at sports or at least participates in any kind of sports activity not only remains fit and healthy at all times, rather they also develop great body strength with time. Sports help the body in getting rid of toxins and also help in strengthening the immune system. A sportsman is their punctuality as well as discipline, thus gifting to the society strong as well as well built individuals. It helps everyone to improve and maintain physical and mental ability.

Yoga is an art of living. It is a scientific method which affects our body and mind. Wellness of body and mind depends upon good working of internal organs. We get tired with our daily stressful life. Then we take rest at night and get fresh in the second morning. Our body gets rest but our internal organs still working. Since heart is involuntary organ. It is working without our will. But we can give rest to heart through Yoga. Yoga is an ancient discipline designed to bring balance and health to the physical, mental, emotional, and spiritual dimensions of the individual. In ancient times yoga was often referred to as a tree, a living entity with roots, a trunk, branches, blossoms, and fruit. The health and fitness benefits of yoga, Patanjali's writing also became the basis for a system referred to as "Ashtanga Yoga" ("Eight-Limbed Yoga").

Krantiagrani Dr. G.D. Bapu Lad Mahavidyalaya, Kundal.

Scanned with

ISSN 2278-5914

Fifth Annual Conference and National Conference
Chhatrapati Shivaji College Satara

Research Booklet

SANSHODHAN

Publisher :

Dr. Vinayakrao Jadhav

President, Satara Itihas Sanshodhan Mandal, Satara.
Flat No.2, 'Saivihar', Sadar Bazar, Satara.
Mob.: 9850279506

Editor :

Dr. Vishvanath Pawar

The Chief Executive, Satara Itihas Sanshodhan Mandal, Satara.
Mob.: 7798122026, 8698909707.

Printer :

Sidhivinayak Enterprises
322, Yadogopal Peth Satara
Mob.: 9420771326

Sixth Annual Conference, First edition : 9 October 2016

Donated Value : Rs.250/-

(All rights reserved under the Satara Itihas Sanshodhan Mandal, satara)
(The views expressed by the authors in 'Sanshodhan' Reaserch Booklet in this issue are there own. The editor and publisher are not responsible for them)

अनुक्रमणिका

प्राचीन व मध्ययुगिन विभाग

१. प्राचीन काळातील सांगली जिल्ह्यातील आढळणारी स्थळे
प्रा.विवेकानंद माने. — १

२. पेशवेकालीन विहीर स्थापत्याचे वैशिष्टपूर्ण नमुने अहिल्यापूर, चांदवड व करमाळा येथील विहीरी
प्रा.डॉ.शिवाजी वाघमोडे — ३

३. मराठवाडा प्रदेशातील स्थानिक उठाव (१८१८-१८५३)
प्रा. डॉ. अजितकुमार दादासो जाधव — ६

४. **Art and Architecture of Bahamani Period**
Dr. Nalini Avinash Wghmare — ९

५. भारतीय विष्णु मूर्तीशास्त्र आणि शास्त्रीय मूर्तीपूजा
प्रा.डॉ. विकास कदम
प्रा.उमेश साळुंखे — १२

६. गोविंदगड उर्फ गोवळकोटचा किल्ला व गोपाळगड यांची सद्यस्थिती
प्रा. प्रसाद सुरेश भागवत — १४

७. रूपयाचा इतिहास
डॉ.मधुकर विठोबा जाधव — १७

८. मुघलकालीन संगीत
प्रा.डॉ.दिलीप साहेबराव जाधव — [illegible]

९. माधवराव पेशव्यांचे दक्षिणेकडील धोरण
प्रा.डॉ.आर.बी.सातपुते — २२

१०. इतिहासातील सत्य, वास्तव आणि न बदलणारी मानसिकता
प्रा.एम.डी.चिंदे — [illegible]

११. शिवकालीन कर व्यवस्था
प्रा.डॉ.दादासाहेब बापूराव जाधव — २८

१२. श्री क्षेत्र चवणेश्वरचा इतिहास
प्रा.कमलसिंग विक्रमसिंग [illegible] — ३०

१३. मध्ययुगीन कालखंडातील कला व स्थापत्य
प्रा.मनिषा म्हेत्रे — ३४

१४. शिवचरित्र लेखन परंपरा - एक अभ्यास
प्रा.सौ. [illegible] — ४०

१५. नाशिक त्रंबक सिंहस्थ कुंभमेळा
प्रा.डॉ.राजश्री दिलीप निकम — ४४

१६. रामचंद्रपंतांचे कार्य
प्रा.डॉ. [illegible] — ४६

१. प्राचीन काळातील सांगली जिल्ह्यातील आढळणारी स्थळ

प्रा.विवेकानंद माने.
क्रांतिअग्रणी जी.डी.बापू लाड महाविद्यालय, कुंडल,
ता.पलूस, जि.सांगली.

प्रस्तावना : ब्रिटिश राजवटीत सातारा जिल्ह्यामध्येच सांगली जिल्ह्याचा समावेश होता. स्वातंत्र्य मिळाल्यानंतर १९४९ मध्ये सातारा जिल्ह्यातील तासगाव, खानापूर, वाळवा व शिराळा हे चार तालुके हस्तांतरित करून आणि राज्याच्या इतर संलग्न भागातून मिरज व जत हे आणखी तेच तालुके निर्माण करून सहा तालुक्यांचा दक्षिण सातारा नावाचा नविन जिल्हा निर्माण करण्यात आला. त्यामध्ये प्रामुख्याने औंध, जत, सांगली व मिरज या संस्थानांचा समावेश होता. कुरूंदवाड संस्थानातील वाटेगाव आणि इचलकरंजी संस्थानातील मणेराजुरी ही गावेही नव्या जिल्ह्यात समाविष्ट करण्यात आली.[१] महाराष्ट्र राज्याच्या निर्मितीनंतर दिनांक २१ नोव्हेंबर १९६० रोजी जिल्ह्याचे नाव बदलून सांगली असे करण्यात आले. सध्या सांगली जिल्ह्यात मिरज, तासगाव, खानापूर, आटपाडी, जत, कवठेमहांकळ, वाळवा, शिराळा, पलूस व कडेगाव असे दहा तालुके आहेत. सांगली जिल्ह्यात सांगली मिरज कुपवाड महानगरपालिका तसेच इस्लामपूर, आष्टा, तासगाव व विटा या चार नगरपालिका कार्यरत आहेत.[२] प्रतिसरकार या संकल्पनेचे निर्माते, संघटक आणि प्रसिध्द स्वातंत्र्यसैनिक क्रांतिसिंह नाना पाटील हे सांगली जिल्ह्यातील येडेमच्छिंद्र गावचे होत. या जिल्ह्यातील एक प्रसिध्द स्वातंत्र्यसैनिक व संघटक श्री वसंतदादा पाटील यांनी चार वेळा महाराष्ट्राचे मुख्यमंत्रीपद भूषविले आहे.

सांगली जिल्ह्यातील आढळणारी स्थळे : प्राचीन काळी दक्षिण महाराष्ट्रात सांगली, सातारा, कोल्हापूर आणि कर्नाटकातील विजापूर या जिल्ह्यांचा समावेश होता. त्यावेळी हा भाग कुंतलदेष या नावाने ओळखला जात होता.[३] सांगली जिल्ह्याच्या शेजारील सातारा, कोल्हापूर, रत्नागिरी आणि विजापूर या जिल्ह्यात प्राचीन आणि अतिप्राचीन इतिहासाच्या पाऊलखुणा सापडतात. कोल्हापूरजवळच्या ब्रह्मपूरी येथे झालेल्या उत्खननामुळ संपूर्ण दक्षिण महाराष्ट्र आणि उत्तर कर्नाटकातील इतिहासावर प्रकाश पडलेला आहे. जिल्ह्यातील मिरज, खानापूर, आटपाडी, जत, कवठेमहांकाळ व वाळवा तालुक्यात प्राचीन काळापासून वसाहती होत्या. खानापूर तालुक्यातील विटा या शहराजवळच शुक्राचार्य हे एक प्राचीन धर्मस्थळ आहे. तेथून जवळच बाणूरगड (भूपाळगड) आणि रेणावी ही प्राचीन धर्मस्थळे आहेत. वाळवे तालुक्यातील वाटेगाव येथे सातवाहनकालीन नाणी सापडली आहेत.[४] देशिंगबोरगाव (ता.कवठेमहांकाळ) मिरज, भाळवणी (ता.खानापूर), माडग्याळ, उमराणी (ता.जत) आदी ठिकाणी सापडलेल्या ताम्रपटावरून जिल्ह्यातील प्राचीन आणि अतिप्राचीन इतिहासाच्या पाऊलखुणा स्पष्ट होतात. कोल्हापूर, सातारा आणि कर्नाटकात सापडलेल्या अनेक शिलालेख व ताम्रपटामध्ये जिल्ह्यातील अनेक गावांचा उल्लेख आला आहे. कऱ्हाड येथे घराचा पाया खणताना मिळालेल्या इ.स. ९५९ मधील ताम्रपटात मिरज विभागातील काही गावांचा उल्लेख आढळतो. राष्ट्रकुट राजा कृष्णराज याने करहाट (कराड) विभागातील बौध्द भिक्खूंना करंजखेड आणि मिरज प्रांतातील कांके (कंकी) या गावातील जमीन दान दिल्याचा उल्लेख आहे. शिलाहारकालीन सम्राट गंडरादित्य याच्या २७ ऑक्टोबर ११३५ च्या कोल्हापूर ताम्रपटात अंकुलगोवी (अंकलखोप), आप्पेयवाड (भिलवडी), कूंडिदेश (कुंडल), आदगे (औदुंबर) गांवांचा उल्लेख आहे.[५] सम्राट भोजदेव याच्या इ.स. ११८७ च्या कोल्हापूर ताम्रपटात कमारकिर्ती नावाच्या जैन भिक्खूला मिरज प्रदेशातील कोरंबी हे गाव दान दिल्याचा उल्लेख आहे. देवगिरीचा राजा सिंगणदेव यादव याच्या खिद्रापूर शिलालेखात कोपेश्वरदेव मंदिरासाठी जमीन दान दिल्याची नोंद आहे. या ताम्रपटात सिरीगुप्प(षिरगुप्पी), जुगूल (जुगुळ), मिरिज (मिरज) आणि कुडलदामवाड (कुरूंदवाड) या गावांची स्पष्ट नोंद आढळते.[६] पंढरपूरच्या श्री विठ्ठल मंदिरातील शिलालेखत एरंडवल्ली (एरंडोली ता.मिरज), कविठे (कवठेमहांकळ) आणि माणदेष असे उल्लेख आहेत. सोलापूर जिल्ह्यातील मंगळवेढा येथील शिलालेखात कवठेमहांकाळ येथील श्री महांकालीदेवी मंदिराचा उल्लेख आहे. हे मंदिर आजही प्रसिध्द आहे. पंढरपूरच्या शिलालेखातील मायदेव, रांजणी (रांजोणी), मदिसाल (मैसाळ) या गावांचा उल्लेख आहे. मंगळवेढा ही त्यावेळची मानपूर (माणदेष) या देशाची राजधानी होती. तेथे मानांक नावाचा प्रबळ सम्राट होता.[७] जतमध्ये बंकेश्वराचे प्राचीन मंदिर आहे. तेथेही शिलालेख आहेत. २७ जानेवारी ११७२ चा माडगीहाळ (माडग्याळ) येथील महादेव मंदिरातील शिलालेखही प्राचीन इतिहासावर प्रकाश टाकतो. या शिलालेखात माडगीहाळ (माडग्याळ), वासुबिंगे (वासुंबे), लोणार आणि कोळनूर या गावांचा उल्लेख आहे.[८] प्राचीन बोरिगाव (बोरगाव)च्या शिलालेखात मिरज कवठेमहांकाळ रस्त्यावरील सिरिबोड्डुण (शिरढोण)चा उल्लेख आहे. तासगाव तालुक्यातील पेडला हेडनाडू म्हटले आहे. या गावाला प्राचीन काळी फार महत्व होते. यादव राजा कृष्ण (इ.स. १२४७ ते इ.स. १२६१) याने दिलेल्या भूदानाचा उल्लेख तासगावमध्ये मिळालेल्या ताम्रपटात आहे. त्यामध्ये तासगाव तालुक्यातील आजच्या मांजर्डेचा उल्लेख मंजरवाटक असा आहे. याशिवाय गोवरू (गौरगाव), बालगवाड (बलगवडे), हधिनौर (हातनूर), पेढ (पेड) अशा या परिसरातील गावांचीही नोंद आहे.[९] यादव राजा कान्हरदेव याचा २५ जानेवारी १२५७ चा शिलालेख कवलापूर ता. मिरज येथे आहे. त्यामध्ये कोवलापूर (कवलापूर) व मालघव (मालगाव) या गावांची नावे आहेत. शिलाहार वंशातील राजा जतिग आणि

2. Please provide web-link of research papers by title, author, Department/ School/ Division/ Centre/ Unit/ Cell, name and year of publication for all the 5 assessment years.

Krantiagrani G.D.Bapu Lad Mahavidyalaya, Kundal

3.2.2 Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ international conference proceedings per teacher during last five years (10)

Sr. No.	Name of the teacher	Title of the paper	Year of publication	ISBN/ISSN number of the proceeding	Name of the publisher
1	Jagannath Abaso Patil	ओमप्रकाश वाल्मीकि कृत 'दो चेहरे' नाटक में अभिव्यक्त दलित चेतना	2020-21	2582-5429	Akshara Multidisciplinary Research Journal
2	Dr. Waghmare Balkrishna Dada	Pain and Promise in Faiz's "Freedom's Dawn" and Nehru's "A Tryst with Destiny"	2020-21	2349-5189	Langlit
3	Dr. Waghmare Balkrishna Dada	Weeping Wounds of Namantar Andolan in Select Dalit Poems	2020-21	2582-5429	Akshara Multidisciplinary Research Journal
4	Dr. Waghmare Balkrishna Dada		2020-21	978-83-21523-57-0	Ornage Books
5	Dr. Waghmare Balkrishna Dada	Understanding the Characteristics of English Advertisements	2020-21	2277-8071	RESEARCH NEBULA
6	Dr. Waghmare Balkrishna Dada	Social Consciousness in Aravind Adiga's The White Tiger	2020-21	2349-638x	AIIRJ
7	Manikrao Shamarao Chavan	आर्य समाजाचे सामाजिक कार्य	2020-21	2230-9578	Journal of Research & Development

K.G.D.L College, Kundal * Tal.Palus, Dist.Sangli *

Incharge Principal
Krantiagrani Dr. G. D. Bapu Lad
Mahavidyalaya, Kundal.
Tal.Palus, Dist.Sangli.

8	Manikrao Shamarao Chavan	मुंबईचे शिल्पकार जगन्नाथ शंकर शेठ	2020-21	2230-9578	Journal of Research & Development
9	Manikrao Shamarao Chavan	सुभाषचंद्र बोस यांचा स्वातंत्र्य चळवळीतील प्रवास	2020-21	2230-9578	Journal of Research & Development
10	Manikrao Shamarao Chavan	आद्य समाजसुधारक राजाराम मोहन रॉय	2020-21	2230-9578	Journal of Research & Development
11	Shri.K.N.Desai	Application of Smart M-Libraries With Reference To Mobile Technology In Library After Covid-19	2020-21	2349-638x	Aayushi International International Research Journal
12	Dr.Pravinkumar Bharatkumar Lupane, Sunil Rajaram jadhav	Study of Changing Customer Behaviour in Palus Taluka	2020-21	*2230 - 9578*	Journal of Research and Development
13	S. L. Nalawade, A. M. Joshi	Linux: An Open Source Technology Tool	2020-21	2349-638X	Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
14	S. L. Nalawade A. M. Joshi	A Literature Review: Data Mining Techniques, Applications & Issues	2020-21	2349-638X	Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

K.G.D.L. College, Kundal * Tal.Palus, Dist.Sangli

Incharge Principal
Krantiagrani Dr. G. D. Bapu Lad
Mahavidyalaya, Kundal.
Tal.Palus, Dist.Sangli.

15	Rakshanda. L. Shinde, Swpnali. B. Lad	Study of Biodiversity of Phytoplankton and Zooplankton of A Fish Culture Pond and Wild Village Pond of Bhilawadi in Sangli District MS	2020-21	2230-9578	Journal of Research and Development
16	Dhanashri V. Bandgar and Urmila V. Bandgar	Physico-Chemical Characterization of Farmland Soil in Some Villages of Palus Taluka, Dist. Sangli (Maharashtra)	2020-21	2230-9578	Journal of Research & Development
17	Urmila V.Bandgar and Dhanashri V. Bandgar	Physico-Chemical Analysis of Borewell Water Samples of Palus Taluka Dist-Sangli, MS, India	2020-21	2230-9578	Journal of Research & Development
18	Rakshanda. L. Shinde	Investigation of Antioxident Activity and Total Phenolic Content in Red Raspberry	2020-21	2230-9578	Journal of Research and Development
19	Namrata. N.Patil, Rakshanda. L. Shinde	The study of natural Symmetry of dihedral group (Dn)	2020-21	2230-9578	Journal of Research and Development
20	Kamble P. D., Lad S. B., Suryawanshi P.T	Studies of Physicochemical Parameters to Assces the Water Quality of River Yerala for Drinking Purposes in Palus and Khanapur Tehsil (Sangli Distra)	2020-21	2230-9578	Journal of Research & Development

K.G.D.L. College, Kundal * Tal.Palus, Dist.Sangli *

Incharge Principal
Krantiagrani Dr. G. D. Bapu Lad
Mahavidyalaya, Kundal.
Tal.Palus, Dist.Sangli.

21	Dr. Zhakirhusen Hakim Sande	कोविड १९ चे परीप्रेक्ष आणि भारतातील मानवाधीकारांची प्रस्तुतता	2020-21	2349-638x	Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
22	Dr. Zhakirhusen Hakim Sande	कोविड १९ च्या परीप्रेक्षातील इ - गव्हर्नन्सची उपयुक्तता	2020-21	2230-9578	Journal of Research and Development
23	Dr. Zhakirhusen Hakim Sande	मानाधिकार संहिता आणि भारतीय संविधानातील मुलभूत अधिकार यांचा तौलनिक अभ्यास	2020-21	2349-638x	Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
24	Dr. Zhakirhusen Hakim Sande	कोरोना परीप्रेक्षात भारतीय समाज व अर्थ व्यवस्थेवर झालेला परिणाम	2020-21	2230-9578	Journal of Research and Development
25	Navnath Kisan Gund	लीळाचरित्रातील समाजदर्शन	2020-21	2349-638x	Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
26	Navnath Kisan Gund	लीळाचरित्रातील व्यक्तिचित्रण	2020-21	2320-4494	Power of Knowledge
27	Shubhangi Pralhad Kharat	Impact of the Partition on Indian Women	2020-21	2277-8063	Navjyot

K.G.D.L. College, Kundal * Tal.Palus, Dist.Sangli *

Incharge Principal
Krantiagrani Dr. G. D. Bapu Lad
Mahavidyalaya, Kundal.
Tal.Palus, Dist.Sangli.

28	Dr. Vivekanand Rajaram Mane	भाई भगवानराव पाटील यांचे जीवन व कार्य	2020-21	2277-8063	Navjyot
29	Anuradha D. Pawar	Analysis of Physicochemical Parameter, Heavy Metals and Micronutrients of Soil Sample of Kundal Village, Sangli District Maharashtra	2020-21	2349-638x	Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
30	Dr. Jagannath Abaso Patil	मृदुला गर्ग के उसके हिस्से कि धूप उपन्यास मे चित्रित नारी जीवन कि त्रासदी	2020-21	2319-9318	Vidyawarta
31	Dr. Jagannath Abaso Patil	इक्कीसवी सदि के दलित साहित्य मे आक्रोश और विद्रोह	2020-21	2319-9318	Vidyawarta
32	Dr.Mohan Sadamate	कृषी कायद्याचे वास्तव विश्लेषण	2020-21	2277-8063	Navjyot
33	Subhash Chavare and Dr. B. S. Jadhav	Land use and Land cover Mapping of Yerala river Basin Using Geospatial Technologies	2020-21	2230-9578	Journal of Research & Development
34	Dr.Pravinkumar Bharatkumar Lupane, Sunil Rajaram Jadhav, Ganesh Nandkumar	A Study of Awareness about Government Schems regarding Economic Empowerment of Women in Kundal Village	2020-21	978-81-951460-6-2	Dr. Naushad M. Mujumdar Dr. Sunita H. Mujumdar

K.G.D.L. College, Kundal * Tal.Palus, Dist.Sangli *

Incharge Principal
Krantiagrani Dr. G. D. Bapu Lad
Mahavidyalaya, Kundal.
Tal.Palus, Dist.Sangli.

	Kharge				
35	Dr.Mohan Sadamate	कृषी विधेयक २०२० स्वरूप आणि अडचणी	2020-21	978-81-931719-7-4	Amdar Shishikant Shinde Mahavidyalaya, Medha
36	S.M Mulani, Vijaykumar Gorakhnath Ghadage and Subhash Chavare	Groundwater Level Analysis of Sangola Tahsil using GIS	2020-21	978-81-946685-9-6	Dr.D.S.Gaikwad
37	Subhash Chavare, Sambhaji Shinde & Santosh P Mane	Morphometric Characteristics Analysis of Bend Nala using GIS and Spatial Data	2020-21	978-81-946685-9-6	Dr.D.S.Gaikwad
38	डॉ. धनंजय होनमाने	फकीरा क्रांतिकारी वेदनेचा हुंकार	2020-21	978-93-5408439-3	Janai Prakashan
39	Dr. V. R. Mane	कुंडल येथील स्वातंत्र्य सैनिक कॅप्टन आकारम पवार यांचे जीवन व कार्य	2019-20	978-81-939729-9-1	Dnyanjyot Publication, Kolhapur
40	Dr. V. R. Mane	भारतातील कंपनीच्या राजवटीची व्यवस्था	2019-20	978-93-89327-76-2	Dr. V.D.Nandvadekar, Registrar, Shivaji University, Kolhapur

K.G.D.L.College, Kundal * Tal.Palus, Dist.Sangli *

Incharge Principal
Krantiagrani Dr. G. D. Bapu Lad
Mahavidyalaya, Kundal.
Tal.Palus, Dist.Sangli.

41	Kishor N Desai	Managing Libraries and Information Centers in the Digital World	2019-20	978-93-5213-844-9	SHROFF Publishers and Distributors
42	Dr. Dhananjay Honmane	मूडलगी संप्रदायातील मराठी संत कवियत्री : राधाबाई	2019-20		शिविम संशोधन पत्रिका
43	Jagannath Abaso Patil	Maitreyi Pushpa Ke Upnyaso Me Chitrit Ghatate Huwe Manwiya Mulyon Ka Chitran"	2019-20	2277-5830	Manviya Mulya (21st March 2020)
44	M.G.Sadamate	Sustainable Agriculture Development in India	2019-20	2319-9318	Vidyawarta
45	Balkrishna Dada Waghmare	A Subaltern Study of Ngugi's Petals of Blood	2019-20	2349-638x	Aayushi International Interdisciplinary Reseaarch Journal
46	Balkrishna Dada Waghmare	Returning to Roots in Andrea Levy's	2019-20	2394-6075	Contemporary Literary Reviw India
47	Dr. Mohan G. Sadamate	Sustainable Agriculture Development After Economic Reforms in India	2019-20	2319-4766	Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
48	Dr. Vivekanand Rajaram Mane	यशवंत चंद्रोजी उर्फ वाय सी. पाटील यांचे डाव्या चळवळीतील कार्य	2019-20	2393-8900	Histrocity

K.G.D.L. College, Kundal * Tal.Palus, Dist.Sangli *

Incharge Principal
Krantiagrani Dr. G. D. Bapu Lad
Mahavidyalaya, Kundal.
Tal.Palus, Dist.Sangli.

49	Dr.Balksrishna Dada Waghmare	Rewriting of Nalayani Myth in Meena Kandaswamy's Poem Six Hours of Chastity	2018-19	2349-638x	Aayushi (AIIRJ)
50	Dr.Balksrishna Dada Waghmare	A Study of Andrea Levy's Short Story "Loose Change" as a Piece of Migrant Literature	2018-19	0975-8313	Themantics
51	Dr.Balksrishna Dada Waghmare	Land Alienation and Marginalization in Ngugi's Petals of Blood	2018-19	2278-5655	AARHAT MULTIDISCIPLINARY INTERNATIONAL EDUCATION RESEARCH JOURNAL
52	Navnath Gund	आसूड मधून व्यक्त झालेले शेतकरी कष्टकर्यांचे दर्शन	2018-19	2278-5655	Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal
53	Dr. Dhananjay Honmane	जनाबाईचे अभंग आणि श्रमसंस्कृती	2018-19	2319-6025	SHIVIM Marathi Sanshodhan Patrika
54	Dr. Mohan G. Sadamate	Agrarian Distress Problems and Solution	2018-19	2249-894X	Review of Research
55	Dr. Zhakirhusen Hakim Sande	भारतीय स्वातंत्र्य लढ्यातील मुस्लीम स्त्री : कुलसुमबेन सयानी	2018-19	2319-5908	Shodh Sandharbh

K.G.D.L. College, Kundal * Tal.Palus, Dist.Sangli *

Incharge Principal
Krantiagrani Dr. G. D. Bapu Lad
Mahavidyalaya, Kundal.
Tal.Palus, Dist.Sangli.

56	Vishwas D. Sawant	Women in Sports Participation Challenges and Issues	2018-19	2455-1511	Sanskruti
57	Vivekanand Rajaram Mane	नाथाजी लाड यांचे स्वातंत्र्य चळवळीतील कार्य : एक दृष्टीकोन	2018-19	2393-8900	Histrocity Research Journal
58	Vivekanand Rajaram Mane	सातारा जिह्यातील छोडो भारतचा क्रांतिलढा	2018-19	2393-8900	Histrocity Research Journal
59	Vivekanand Mane	क्रांतिवीरांगणा विजयाताई लाड-प्रतिसरकारमधील एक जिव्हार महिला	2018-19	2319-5908	Shodh Sandharbh
60	Vivekanand Mane	ग्रामीण विकासातील भूदान चळवळीचे योगदान	2018-19	2278-5655	Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal
61	Jagannath Abaso Patil	Rangey Raghav Ke Kahaniyo Me Chitrit Samajik Yatarth"	2018-19	2277-8063	Navjyot (19th Dec.2019)
62	Jagannath Abaso Patil	"Web Sahitya Ka Hindi Bhasha Ke Vikas Me Yogdan"	2018-19	2349-638x,	Aayushi International Peer reviewed and Indexed Journal

K.G.D.L. College, Kundal * Tal.Palus, Dist.Sangli *

Incharge Principal
Krantiagrani Dr. G. D. Bapu Lad
Mahavidyalaya, Kundal.
Tal.Palus, Dist.Sangli.

63	P. B.Lupane	SWOC Analysis of Kirana Shops	2018-19	2320-4168	International Journal of Commerce
64	Pratap Bhagwan Gaikwand and Pravinkumar B. Lupane	Recent Trends in Indian Banking	2018-19	2349-638x	aayushi International Interdisciplinary Reseaarch Journal
65	Pravinkumr B. Lupane and Pratap Bhagwan Gaikwad	Challenges Before Indian retail Industry	2018-19	2349-638x	aayushi International Interdisciplinary Reseaarch Journal
66	Dr. Mohan Sadamte	महाराष्ट्राचे आरोग्य कसे सुधारणार?	2018-19		स्वातंत्र्य संग्राम स्मृती संस्था, शांतीनिकेतन सांगली
67	J.A.Patil	चंद्रकांत देवतलेजी कि कविता मे मध्यवर्गीय जीवन कि त्रासदी	2018-19	978-93-86077-89-9	Dr. Anil Patil and Sudhakar Indi
68	Dr. Mohan G.sadamate	भारतातील सार्वत्रिक आरोग्य सुरक्षा	2018-19	978-81-907287-8-2	
69	Shri.K.N.Desai	Skills for LIS Professionals in the Digital Era	2018-19	978-81-933230-8-3	Dr.Mrs.S.B.Shahapure,Principal,Yashwantrao Chavan Warana Mahavidyalaya, Warananagar

K.G.D.L. College, Kundal * Tal.Palus, Dist.Sangli *

Incharge Principal
Krantiagrani Dr. G. D. Bapu Lad
Mahavidyalaya, Kundal.
Tal.Palus, Dist.Sangli.

70	Dr.Balksrishna Dada Waghmare	Ngugi's Petals of Blood as a Critique of Capitalism	2018-19	2347-7784	Journal of Current Science and Humanities
71	Dr. Dhananjay Honmane	आण्णाभाऊ साठे यांचे कादंबरी लेखन: आशय आणि वेगळेपण - काही निरीक्षणे	2018-19	2320-4494	Power of Knowledge
72	Vishwas D. Sawant	Yoga for People's Mental Health and Well Being	2018-19	2349-638x	aayushi International Interdisciplinary Reseaarch Journal
73	Vivekanand Mane	सांगली जिल्ह्याचा सांस्कृतिक वारसा	2018-19	2278-5914	Sanshodhan
74	R.R.Salunkhe, S. G. Chavare and S. B. Gaikwad	Spatial Patterns of Distribution and Concentration of Rural Population in Drought Prone Area of Sangli District (Maharashtra) : A Geographical Analysis”	2018-19	2349-638x	Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
75	Shri.K.N.Desai	Librarian Role Towards Digital Library System in It Based Society : Today and Tomorrow	2018-19	2349-638x	Aayushi International International Research Journal
76	Dr.Mohan Sadamate	सांगली जिल्हा मध्यवर्ती सहकारी बँकेचा विकास आणि आर्थिक स्थिती	2017-18	978-81-907287-8-2	

K.G.D.L.College,Kundal * Tal.Palus,Dist.Sangli *

Incharge Principal
Krantiagrani Dr. G. D. Bapu Lad
Mahavidyalaya, Kundal.
Tal.Palus, Dist.Sangli.

77	Dr. M.G.Sadamate	Impact of GST on Agricultural Sector	2017-18	2319-9318	Vidyawarta
78	Dr.M.G.Sadamate	Co-Operative Movement in Maharashtra	2017-18	2249-894X	Review of Research
79	Zhakirhusen hakim Sande	मुस्लीम मराठी (हुसेन अंबरखान) संत कवीचे कीर्तन परंपरेतील योगदान	2017-18	2249-0817	Varul
80	Navnath Gund	आजचा तरुण	2017-18	2320-9895	Krantiagrani Parv
81	Navnath Gund	कविता श्रमाची तील वैचारिकता	2017-18	2349-638x	Aayushi Internationbal Interdisciplinary Research Journal
82	J A Patil	रांगेय राघव के कथासाहित्या मी यौन संबन्धो कि अभिव्यक्ती	2017-18	2277-8063	Navjyot
83	J A Patil	रांगेय राघव के उपन्यासो मे चित्रित अर्थचेतना	2017-18		Bharatwani
84	Vivekanand Rajaram Mane	कोल्हापूर संस्थानातील १८५० ते	2017-18	2277-8063	Navjyot

K.G.D.L.College, Kundal * Tal.Palus, Dist.Sangli *

Incharge Principal
Krantiagrani Dr. G. D. Bapu Lad
Mahavidyalaya, Kundal.
Tal.Palus, Dist.Sangli.

		१८९५ या काळातील शैक्षणिक प्रगती			
85	Vivekanand Rajaram Mane	सांगली जिल्ह्यातील डाव्या पक्षाचे सामाजिक कार्य	2017-18	2277-8063	Navjyot
86	Dr.Mohan Sadamate	Watershed Development Programme in Maharashtra	2017-18	978-81-927211-8-6	Dr. Yojana Jugale
87	Shri. J. A. Patil	महानायक बाबासाहाब डॉ. आंबेडकर' उपन्यास मे चित्रित यथार्थबोध	2017-18	978-93-83796-41-1	Swachand Prakashan, Kolhapur
88	Shri. J. A. Patil	ओमप्रकाश वाल्मिकी के जुठन आत्मकथा में अभिव्यक्ती वर्ग वैषम्य	2017-18	978-81-933220-1-4	Dr. Surekha Sahapure Y.c College, Warnanagar
89	नवनाथ गुंड	असामान्य व्यक्तिमत्व	2017-18		
90	Kishor N. Desai	Research Methodology: Some Aspects	2016-17	978-93-86077-14-1	Pri. R. A. Shinde
91	Shri. J. A. Patil	चित्रा मुदगल के आवा उपन्यास मे चित्रित नारी समस्या	2016-17	978-81-927095-1-2	D.P.Bhosale College, Koregaon
92	Navnath Kisan Gund	श्रमिक शोषितांच्या व्यथांचा हुंकार म्हणजे नारायण सुर्वे यांची कविता होय	2016-17	978-81-927095-1-2	D.P.Bhosale College, Koregaon

K.G.D.L. College Kundal * Tal.Palus, Dist.Sangli *

Incharge Principal
Krantiagrani Dr. G. D. Bapu Lad
Mahavidyalaya, Kundal.
Tal.Palus, Dist.Sangli.

93	धनंजय महादेव होनमाने	एक उपेक्षित संत कवियत्री : संत निर्मला	2016-17	978-81-927095-1-2	D.P.Bhosale College, Koregaon
94	विवेकानंद माने	भारतातील डाव्या चळवळीचा उगम	2016-17	978-81-927095-5-0	D.P.Bhosale College, Koregaon
95	Vivekanand Rajaram Mane	वसंतदादा पाटील - एक स्वातंत्र्यसैनिक	2016-17	978-93-85456-23-7	Principal, Arts and Commerce College, Kadepur
96	Vivekanad Mane	संत कबिरांचे तत्वज्ञान	2016-17	978-81-927211-3-7	Prarup Publication, Kolhapur
97	Dr. M. G. Sadamate	ICT in Higher Education	2016-17	978-93-87322-09-7	Principal, Dr.R.S.Nilpankar
98	Zhakirhusen hakim Sande	भारतातील स्थानिक शासन संस्था : ७३ व्या घटना दुरुस्तीचे स्वरूप आणि फ्हाल निष्पती	2016-17	2277-8063	Navjyot
99	Zhakirhusen hakim Sande	७४ वी घटना दुरुस्ती : नागरी सामाजिक राजकीय परिवर्तनाची कोनशीला	2016-17	2277-8063	Navjyot
100	Mohan sadamate	Financial Inclusion Policy of RBI	2016-17	2347-7792	Journal of Current Science and humanities

K.G.D.L. College, Kundal * Tal.Palus, Dist.Sangli *

Incharge Principal
Krantiagrani Dr. G. D. Bapu Lad
Mahavidyalaya, Kundal.
Tal.Palus, Dist.Sangli.

101	K. N. Desai	Changing Trends in Academic Libraries in ICT Environment	2016-17	2394-8809	Vishwawarana National Research Journal
102	Balkrishna Waghmare	Stereotyping in Permchand's The Shroud	2016-17	2456-314x	Pune Research Scholar
103	Vivekanand Mane	भाई भगवानराव सूर्यवंशी यांचे जीवन व कार्य	2016-17	2393-8900	Histrocity
104	V.D.Sawant	The Role of Sport and Yoga in Human Life	2016-17	978-93-83796-42-7	Y.C. College Islampur
105	Vivekanand Mane	प्राचीन काळातील सांगली जिल्ह्यातील आढळणारी स्थळ	2016-17	2278-5914	Sanshodhan

K.S.D.L. College, Kundal * Tal.Palus, Dist.Sangli *

Incharge Principal
Krantiagrani Dr. G.D. Bapu Lad
Mahavidyalaya, Kundal.
Tal.Palus, Dist.Sangli.